पुष्टिमार्ग के आराध्य

श्रीमहाप्रभुजी – श्रीनाथजी – श्रीयमुनाजी

|| श्री कृष्णाय नमः ||

|| श्री गोवर्धननाथो विजयते ||

नि.ली.पू.पा. गोस्वामी १०८ श्री कृष्णरायजी महाराजश्री (बच्चू बावा)

जन्म : श्रावण कृष्ण त्रयोदशी ✸ वि.सं. १९५७ नि.ली. प्रवेश : मार्गशीर्ष कृ. सप्तमी ✸ वि.सं. २०१०

॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

नि.ली. पू.पा. गोस्वामी कुलभूषण

श्री १०८ श्री विट्ठलेशरायजी महाराजश्री

प्राकट्य - श्रावण कृष्ण एकादशी वि. सं. २००५ ❖ नि.ली.गो.पू.पा. २०५९

॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

शुभाशीर्वाद

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का पुनः प्रकाशन वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास द्वारा किया जा रहा है। पुष्टिमार्गीय जनों के लिये वार्ताजी का महत्व दैनिक सत्संग के रूप में सर्वोपरि रहा है। नित्य प्रति मन्दिर तथा घरों में शिक्षा पत्र, चौरासी एवं दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, षोडश ग्रंथ, मूल पुरुष वल्लभाख्यान इत्यादि का पठन पाठन होता आ रहा है।

पिछले चालीस वर्षों से दो सौ बावन वैष्णवन की तीन जन्म की भावना सहित वार्ता ग्रंथ की प्रतियाँ उपलब्ध होना अलभ्य हो गया था। अन्त में पू.पा. गोस्वामी नि.ली. श्री ब्रजभूषणलालजी महाराजश्री (कांकरोली) के सफल सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् कांकरोली वाले महाराजश्री से आज्ञा लेकर इसका प्रकाशन किया।

''प्रकट है मारग रीति दिखाई'' ऐसा गोस्वामी श्रीगुसांईजी के विषय में कहा जाता है। श्री ठाकुरजी के राग, भोग, श्रृंगार की रीति को श्री गुसांईजी ने बढ़ाया तथा उनके दो सौ बावन वैष्णवन ने आपके आशीर्वाद से उसे ग्रहण करके तदनुसार सेवा की और ठाकुरजी के स्वानुभव का भी लाभ उन्हें प्राप्त हुआ। यही सब उनके अनुभव इन वार्ताजी में कहे गए हैं अतः इन ग्रंथों का नित्य घरों में सत्संग होते रहने से पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों को वार्ताजी के माध्यम से ही वैष्णव ज्ञात कर लेते हैं, उन्हें संस्कृत के सैद्धान्तिक ग्रंथों को पढ़ने की तथा समझने की आवश्यकता नहीं होती है।

ऐसे अलभ्य ग्रंथ को वैष्णवों ने बहुत मानपूर्वक खरीदकर घरों में पधराया तथा उससे लाभान्वित हुए और ग्रंथ तो समाप्त होते रहे, परन्तु वैष्णवों के हृदय की लालसा समाप्त नहीं हुई, यह उन पर श्री ठाकुरजी की कृपा है तथा श्रीगुसांईजी के आशीर्वाद है। इसीलिये यह ग्रंथ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। अतः वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास के सदस्यों को एवं इस कार्य में जुड़े हुए अन्य सभी कार्यकर्ताओं को हम हृदय से आशीर्वाद देते हैं।

ग्रंथ के संग्रहकर्ता एवं ग्रंथ के सत्संग करने वाले सभी वैष्णव वृन्द को भी हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान करते हैं।

विजयादशमी वि.सं. २०६६ — गो. रुक्मणिबहुजी

दिनांक २८ सितम्बर २००९

|| श्री हरिः ||

नम्र निवेदन

पुष्टि प्रवर्तक जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी के परम पावन सिद्धांतों को अपने सदाचार से साकार रूप प्रदान करने वाले चौरासी कृपापात्र भगवदीय जनों की तथा पितृ प्रवर्तित पथ प्रचारक सुविचारक परम दयाल श्रीमद् प्रभुचरण श्रीगुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी के परम कृपापात्र भगवदीय दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ताएँ पुष्टि-सृष्टि के लिए नित्य सत्संग मंडली हेतु परमोपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन वार्ताओं के द्वारा पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली के साथ-साथ अत्यंत गूढ़ रहस्यों की, सिद्धान्त-भावनाओं का विशद विवेचन भी वैष्णव समाज को सहज रूप से प्राप्त होता है।

इधर पिछले लगभग ४० वर्षों से ब्रजभाषा और नागरीलिपि में दो सौ बावन वैष्णवों की तीन जन्म की भावना वाली वार्ता का मिलना सहज नहीं हो रहा था। अतः तृतीय पीठस्थ पू.पा.गो. श्री १०८ श्री व्रजेशकुमारजी महाराजश्री बड़ौदा की आज्ञा प्राप्त कर, न्यास ने इसका प्रकाशन कार्य अपने हाथ में लिया है। इसको प्रकाशित कर न्यास हर्ष और संतोष का अनुभव कर रहा है।

वैष्णव समाज में पुष्टिमार्ग का प्रचार, सेवा का प्रचार तथा संगठन की भावना को दृढ़ करना न्यास का मूल उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हम सतत् प्रयत्नशील हैं।

वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास ने एक अभिनव योजना प्रस्तुत की है जिसमें आजीवन सदस्य केवल रुपये १५०१/- जमा करके प्रति वर्ष भेंट स्वरूप एक विशिष्ट ग्रंथ प्राप्त कर सकते हैं।

पू.पा. द्वि. पीठाधीश श्री १०८ श्री कल्याणरायजी महाराजश्री की उपाध्यक्षता में न्यास को आपश्री के आशीर्वाद के साथ पूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। इसी प्रकार पू.पा.गो. १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री एवं पू.पा.गो. १०८ श्री देवकीनंदनजी महाराजश्री के महदनुग्रह

के साथ-साथ ग्रंथ प्रकाशन पर आपश्री का समुचित मार्गदर्शन भी न्यास को सदैव प्राप्त होता रहता है।

इस वार्ता ग्रंथ को साकार रूप देकर सम्पादन करने के महत्त्वपूर्ण कार्य में श्री घनश्यामदासजी मुखिया का नाम विस्मरित नहीं कर पाता हूं जिन्होंने न्यास के अनेक ग्रंथों को सुव्यवस्थित संपादित करके उत्तरदायित्व का निर्वाह नाम सेवा रूप में किया है।

मुद्रण कार्य को कुशलतापूर्वक करने का श्रेय अप्सरा फाईन आर्ट प्रिंटर्स के प्रबंधक श्रीमान् मुरलीधर माहेश्वरी को है जिन्होंने शीघ्रता से वार्ता के तीनों खण्डों को मुद्रित करने में सहयोग किया है। मैं सभी न्यासियों एवं अन्य सहयोगियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोग दिया है।

इन्दौर
विजया दशमी वि.सं. २०६६

श्री वल्लभ चरणानुरागी
दासानुदास
बालकिशन गब्बड़
का सादर जयश्रीकृष्ण
सचिव वै.मि.मंडल सा. न्यास

॥ श्रीमद् विठ्ठलेश प्रभुः सदा विजयते ॥

द्वितीय गृह पीठाधीश्वर गोस्वामी श्री १०८ श्रीकल्याणरायजी महाराजश्री के आशीर्वचन

ज्ञानेन साधनैश्चान्यैः शून्यान स्मान्मुदास्वयम् ।
अनुगृह्णाति सोऽस्माकं प्रभुः श्रीविठ्ठलेश्वरः ॥२५॥

- श्रीविठ्ठलनाथजी गुसाँईजी (नवमी विज्ञप्ति)

पुष्टिमार्गीय-साम्प्रदायिक साहित्य में चौरासी एवं दौ सो बावन वैष्णव वार्त्तायें अपने आप में प्रसिद्ध और सत्संग ग्रंथ हैं । इसीलिये इनमें स्वधर्म दर्शन के साथ ही तत्कालीन परिस्थिति को इंगित कराने वाली ऐतिहासिक घटनायें भी संलग्नित मिलती है । कुछ आधुनिक लोग वार्ताओं (भाषा ग्रंथों) को मात्र कहानी किस्सा मानने लगें हैं? किन्तु ऐसी उनकी धारणा को ज्ञानातिरेकता ही मान लेना चाहिए । क्योंकि ऐसे कितने ही कुतर्कित प्रश्न हैं ? तो सही तर्क के इतने ही समयोचित उत्तर भी हैं । ये तथ्य केवल परीक्षा की दृष्टि से या प्रश्नों से नहीं समझे जाते हैं, इन्हें तो सहज जिज्ञासा से ही समझना उचित होगा । तथापि चौरासी वैष्णव वार्ता ''ग्रंथ परिचय'' व दौ सो बावन वैष्णव वार्ता (तीन जन्म की लीला भावना) के विशेष तृतीय खण्ड में प.भ. द्वारकादासजी परिख द्वारा दिये गये ''२५२ वैष्णवों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' और सूचियों से जिज्ञासुओं को परितुष्टि हुवे

बिना नहीं रहेगी । इसके पृष्ठ २५,२६ के अनुसार और वार्ता साहित्य मीमांसा पृष्ठ १८ में टिप्पणी देकर स्वयम् संपादक महोदय भी तुलनात्मक अध्ययन कर इसी निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि (सम्प्रदाय कल्पद्रुम) ग्रंथ की अधिकांश घटनाक्रम, नाम, संवतें ऐतिहासिक दृष्टि से मेल नहीं खाती। हे भी कुछ ऐसा ही, यदि यह कृति श्रीहरिराय महानुभाव के समय काल में आपके श्री विट्ठलनाथभट्टजी ने लिखी होती तो, अप्रासंगिकता का प्रश्न ही नहीं उठता ।

यह तो सिद्ध ही है कि महानुभाव चरण से छट्टीपीढ़ी में प्रादुर्भावित रश्मिकार श्री योगी गोपेश्वरजी जं.सं. १८३५ कृत ग्रंथों का नामोल्लेख होने से उक्त ग्रंथ अति प्राचीन है ही नहीं । विशेष इसमें इन वैष्णव वार्ताओं के प्रकटयिता आद्य चतुर्थगृह पीठाधीश्वर श्री गोकुलनाथजी का, एवं द्वितीयगृह पीठाधीश्वर श्री हरिराय महाप्रभुजी द्वारा प्रकाशित भावप्रकाश का विस्तृत विवरण भी उपलब्ध होता है ।

प.भ. श्रीद्वारकादासजी परिख द्वारा वि.स. २००५ में मुद्रित वार्ता साहित्य मीमांसा के अंश-

श्रीविट्ठलमहं वंदे स्वकीयजन वल्लभं। चतुरशीति भक्तानां व्यक्ति कुर्वे यथार्थतः ।।१।।
दामोदर कृष्णदासौ पुनः दामोदरस्तथा। पद्मनाभश्च तुलसां पार्वती-रघुनाथकः ।।२।।
रजो पुरुषोत्तमो रुक्मिणि गोपालदासकः । सारस्वतो रामदासो गदाधरं महांस्तथा ।।३।।
वेणी माधवदासौ च अम्माक्षत्राणी वैष्णवी । हरिवंशश्चगोविंदो क्षत्री गज्जनधावनः ।।४।।
नारायणो ब्रह्मचारी क्षत्राणी जीयदासकः । देवाकपूर क्षत्री च दिनकरः पुरुषोत्तमः ।।५।।
मुकुन्दः प्रभुदासश्च प्रभु त्रिपुरादासकौ । पूर्णमल्लो यादवेंद्रः काश्मीरो माधवस्तथाः ।।६।।
गुसाँईदास गोपालो श्रीपद्मारावलस्तथा। जोशी पुरुषोत्तमो ज्ञेयो जगन्नाथो समन्वयः ।।७।।
नरहरि राणा व्यासः क्षत्राणी रामदासकौ। गोपालो कृष्णदासश्च प्रोहितो रामदासकः ।।८।।

बुलामिश्ररामानंदौ विष्णुजीवनदासकौ । सारस्वतौ भगवान भगवान मुख्य सेवकः ॥९॥
गौडो अच्युतादासश्च अच्युतश्चक्रतीर्थकः । कन्हैयाशालक्षत्री च नरहरिदासकस्तथा ॥१०॥
लघु पुरुषोत्तमो गोपालदास जनार्दनौ। कविराजो गडुस्वामी उत्तमश्लोकदासकः ॥११॥
ईश्वरोत्तम श्लोकाख्यो राजा माधवको तथा। सिहनंदे सासु बहु परमानंदसूर कौ ॥१२॥
बाबा वेणु कृष्णदास छकडा वासुदेवकः। एक क्षत्राणी आनंददासो विश्वंभरस्तथा ॥१३॥
ब्राह्मणी अथ कायस्थ नारायण स्त्रियस्तथा । अन्यमार्गीय कायस्थ दासो दामोदरस्तथा ॥१४॥
सिहनंदे च क्षत्राणि जगतानंदकस्तथा। इन्दप्रस्थै चैकक्षत्री जट गोपालदासकः ॥१५॥
कृष्णदासः कुंभनश्च वाडवो बादरायणः। वैष्णवो संतदासश्च सुन्दरदास मावजी ॥१६॥
नरहरिदास सन्यासी पांडे सद्भवानीका। श्रीमदाचार्य भक्तानां नामानि बहवस्तथा॥१७॥
तथापि स्वात्मपाठार्थेलिखितानिति क्षम्यतां। वार्तायां परिशोध्यानि सर्वदा वैष्णवैर्जनैः ॥१८॥

इति श्रीमद्वल्लभाचार्य भक्तानां श्रीमद्गोकुलनाथजी कृत नामावली-सम्पूर्ण ।

આ શ્રી ગોકુલનાથજી રચિત ૮૪ વૈષ્ણવોની નામાવલીથી એ સમજી શકાય છે કે શ્રીમદાચાર્યજીના અનેક સેવકો પૈકીમાંથી શ્રીગોકુલનાથજીએ ફક્ત ૮૪ વૈષ્ણવોના નામો ને જ તારવી તેને સ્વાત્મ પાઠાર્થે લેખવદ્ધ કર્યા હતા. અને પછી તેમની વાર્તાઓનું સંશોધન પણ કર્યું હતું. અતઃ એ. નિશ્ચિત થાય છે કે આધુનિક સમયમાં પ્રાપ્ત થતી ચોરાશી વાર્તાઓં - જેની એક પ્રતિ વિ.સં. ૧૬૯૭ માં લબેલી કાંકરોલી વિદ્યા-વિભાગમાં પ્રાપ્ત છે. શ્રી ગોકુલનાથજી દ્વારા કહેલી છે. અને તેનો રચનાત્મક મૂળ આધાર કૃષ્ણ ભટ્ટ દ્વારા લખાયલી પૂર્વોક્ત પ્રતિ છે.

શ્રી ગોકુલનાથજી ના સમય માં શ્રીમહાપ્રભુજી, અને શ્રીગુસાંઈજી ઉભયના અનેક સેવકો વિદ્યમાન હતા ઐથી પણ તેમને પિતા અને પિતામહના સેવકોનાં ચરિત્રોને વિશેષ રૂપથી જાણવામાં ઘણી મદદ મળી હતી. કેટલાક પ્રસંગોં ને તો તેમણે પ્રત્યક્ષ પણ જોયલા હતા. જેમકે અષ્ટછાપ આદિના ચરિત્ર પ્રસંગો વિગેરે.

શ્રી ગોકુલનાથજી તે મૂળપ્રતિના તેમજ શ્રુત એવં દષ્ટ પ્રસંગોના આધારે કેવલ ભકતોનાં સામાન્ય ચરિત્રો ને જનસમુહમાં કથારૂપ કહતા હતા અને તેમાં

રહેલી રહસ્ય ભાવનાઓને ગુપ્ત રાખતા હતા. પોતે વાર્તાઓને કથા રૂપ કહેતા તેની પુષ્ટિ નિમ્નાંકિત પુષ્ટ પ્રમાણોથી પણ થાય છે-

"तदपि भगवत्सेवा परैः श्रीगोकुलनाथैः शयनभोग सेवोत्तर लब्ध गाथावसरैः सुबोधिन्यादिना श्रीभागवत कथा कथान्तर श्रीमदाचार्य तदात्मज चारित्र कथापि नित्य नियमेन परिगृहिता वक्तुम्--प्रभुचरित्र चिंतामणी।"

"પ્રભુચરિત્ર ચિંતામણી" નું ઉક્ત ઉદ્ધરણ અત્રે પુષ્ટ પ્રમાણ રૂપ છે. કેમકે "ચરિત્ર ચિંતામણી" ની રચના શ્રીગોકુલનાથજીના જ ભત્રીજા અને સમકાલીન તથા નિકટવર્તી શ્રી દેવકીનંદનજીએ વિ.સં. ૧૬૬૦ ની આસપાસ કરેલી છે. અતઃ તે પુષ્ટ છે. આ કથનની પુષ્ટિ શ્રીગોકુલનાથજીના કુટુંબી અને મહાનુભાવ સેવક શ્રી હરિરાયજીના "ભાવપ્રકાશ" થી પણ આ રીતે થાય છે.

લલ્લુભાઈ દેસાઈ અમદાબાદ દ્વારા વિ.સં. ૧૯૭૪ માં પ્રકાશિત ૮૪, વૈષ્ણવોની ગુજરાતી વાર્તામાંથી ઉદ્ધૃત.

सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी चौरासी वैष्णवन की वार्ता करत कल्याण भट्ट आदि वैष्णवन के संग रसमय होई गये सो श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहने की सुधि नाहि। सो अर्धरात्रि होय गई।

આ કથને શ્રી હરિરાયજીએ "નિજવાર્તા" અને "શ્રી મહાપ્રભુજીની પ્રાગટ્યવાર્તા" ના સંકલનમાં પણ આ રીતે દોહરાયું છે-

और "श्रीगोकुलनाथजी आपु कथा कहते। सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी आपु दामोदरदास संभरवाले की वार्ता करते हुते। तब एक वैष्णव ने पूछ्यो जो महाराज! आज कथा न कहोगे? तब श्रीगोकुलनाथजी आपु श्री मुखते कह्मा जो आज कथा को फल कहत हैं।"

"तहां यह संदेह होय जो वैष्णवन के नाम क्यों नहीं कहे तहां कहत हे जो-चौरासी वैष्णवन वार्ता में कहुं वैष्णव को नाम नहीं कहे हैं। सो हीन

नाम वैष्णव के श्रीगोकुलनाथजी नहीं कहते । जो वैष्णव के नाम घसीटा फकारा मगन्या ऐसे हीन नाम होय तिनको श्रीगोकुलनाथजी वैष्णव कहि बुलावते तातें वैष्णव के नाम नहीं कहे हैं ।''

... ઉક્ત પ્રકારે આચાર્યશ્રી અને પ્રભુચરણ સમયમાં વાર્તાઓ કેવળ પ્રસંગાત્મક રૂપ વાળી રહી જ્યારે શ્રીગોકુલનાથજીના સમયમાં તે સંશોધિત સંખ્યાત્મક રૂપ વાલી પણ થઈ, આમ વાર્તાનાં બે રૂપોં થયાં અને તે બન્ને રૂપો આજ પણ પ્રાપ્ત થાય છે. તદુપરાંત વાર્તાનું એક તૃતીય રૂપ પણ પ્રાપ્ત છે. જેને શ્રી ''હરિરાયજીના ભાવનાવાળી વાર્તાઓ'' એમ કહેવામાં આવે છે. આ વાર્તાની પ્રાચીનતમ પ્રતિયો ઉપર પ્રારંભમાં આ પ્રમાણે લખેલું હોય છે.

''अथ चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी किये ताको भाव श्रीहरिरायजी कहत है सो लिख्यते।''

આ ઉદ્ધરણની પુષ્ટિ કાકા શ્રીવલ્લભજી મહારાજના રચેલા ૮૪ વૈષ્ણવોના ધોળની આ પંક્તિઓથી થાય છે.

ચોરાશી ચિત્ત લાવીને કરે પાઠ નિત્ય ધરી નેમ ।
પુષ્ટિ પંથ પ્રભુ પ્રસન્ન થાયે હદે બાઢે પ્રેમ ।
કૃપા શ્રી હરિરાયજી કરી દીન જાણી દાસ ।
મૂળ ચોરાશી ભક્તનાં તે નામ કર્યા પ્રકાસ।
શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનાં અંગ દ્વાદશ જેહ।
ધર્મ સાથે ધર્મી કહિયે, સાત દ્વાદશ તેહ।
ચોરાશી વ્રજ કોસ માટે ચોરાશી એ ભક્ત।
પ્રેમ લક્ષણા પુરી પુરે શ્રીવલ્લભપદ આસક્ત।
એ વૈષ્ણવ પદ કમલ રજ, રતીતણી છે આશ।
ગાય ગુણ હરિદાસના પદ રજ-શ્રીવલ્લભદાસ।

આ આખા ધોળમાં શ્રી હરિરાયજી નાં વાર્તામાં કહેલા ૮૪ વૈષ્ણવોનાં લીલાત્મક સ્વરૂપોનો ક્રમશઃ ઉલ્લેખ પ્રાપ્ત છે.

ઉક્ત ધોળના કથનની પુષ્ટિ ગુજરાતના કવિ સમ્રાટ સુપ્રસિદ્ધ ભક્તવર્ય શ્રીદયારામભાઈ (સં ૧૮૩૩) ના ''પુષ્ટિ ભક્ત રૂપમાલિકા'' નામક એક વૃહદ્ કાવ્યથી પણ થઈ રહે છે. તેમાં પણ શ્રી હરિરાયજીએ નિરૂપેલાં ૮૪ વૈષ્ણવોનાં લીલાનાં નામોનો સમ્પૂર્ણ ઉલ્લેખ છે. તેના અંતમાં કવિ તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રકારે કરે છે-

''श्री महाप्रभुजी के अति प्रिय चौरासी जो भक्त। श्रीराधावर रूप में, जाको मन आसक्त। सो श्रीगोकुलनाथजी कहे सबन के नाम। वरनी सबकी वार्ता,जाति जात अरू गाम। तामे कछु संदेह रहे,लीला में को रूप। सोहु श्रीहरिरायजी कहे प्रगट स्वरूप।''

ઉક્ત પ્રમાણોથી ૮૪ વાર્તાનું ભાવનાત્મક જે રૂપ પ્રાપ્ત થાય છે તેને પ્રકટ કરનાર ગો. શ્રી હરિરાયજી છે એ વાત નિશ્ચિત થાય છે. ''૮૪ વાર્તા'' નું આ તૃતીય રૂપ વિશેષ મહત્વપૂર્ણ છે કેમકે તેમાં ઐતિહ્ય સિદ્ધાંત અને ભાવના એમ ત્રણે, તત્વોના અત્યંત વિકાસ કરવામાં આવ્યો છે. આ વિકાસનો આધાર શ્રીગોકુલનાથજી દ્વારા ગુપ્ત રાખવામાં આવેલા ભાવો અને પ્રસંગો છે એથી શ્રીહરિરાયજી દ્વારા મૂળ વાર્તામાં જે ભાવો અને ઐતિહ્ય પરિવર્દ્ધિત થયેજ છે તે પણ પ્રામાણિક જ છે.

जैसे-८४ वैष्णव वार्ता में शुद्धाद्वैत साकार ब्रह्मवाद (पुष्टि भक्तिमार्ग) प्रवर्तक अखण्ड भूमण्डलाचार्य जगद्‌गुरु श्रीमद्‌वल्लभाचार्य महाप्रभु के दिग्विजय आदि प्रसंग हैं। यही नहीं और भी कुल देवाधिदेव श्रीनाथजी, श्रीनवनीतप्रियजी एवं सप्तस्वरूपों के निजेच्छा से प्रकट होने से प्रकट होने से लेकर सेवा प्रणालिका सहित नैसर्गिक वर्णन हैं ही। ''श्रीवल्लभदिग्विजय''

ग्रंथ में भी उद्‌धृत स्वजनों को पृथक् बतलाकर सम्बन्धित प्रमुख ८४ ग्रंथ, बैठक एवं वैष्णवों के समान संख्याओं की पुष्टि कर्ता आदि षष्ठपीठाधीश्वर श्रीयदुनाथजी विरचित श्लोक-

चतुरशीतिस्द् ग्रन्थाश्चतुर शीति रासिकाः।
चतुरशीति तद्भक्ता आहुरार्यास्तु तत्कथाः।।

(श्रीवल्लभदिग्विजय)

वैसे ही २५२ मुख्य वैष्णव वार्ता में साथ ही पंचमपीठाधिपति श्री देवकीनंदजी कृत ''प्रभुचरित्र चिंतामणि'' ग्रंथ में शास्त्रार्थ में विजयश्री प्राप्त कर्ता गोस्वामी श्रीविठ्ठलनाथजी प्रभुचरण के विविध यशोगान दर्शनीय हैं। इसी प्रकार उक्त निधि स्वरूपों का भाव व्यक्त करना, अनन्य कृपापात्र सेवकों तथा इतरीय भगवद् भक्तों को स्वेच्छित दर्शन, यथायोग्य नंदालय से भावित मंदिर या गृह सेवा,भेंट मनोरथ,महाप्रसाद,समाधान सहित उनके कीर्तन पदों को भी ग्रहणकर (भक्तों,दैवो,सर्वोद्धारक) पर्यंत भूमिका निभाते हुये आपने सभी को कृतकृत्य किया, जाने बृहद सेवा प्रकार के वास्तविक मूलभूत तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता।

अस्तु अपरंच-''हमारी वृजबानीही वेद'' की उक्ति को स्वयं पुष्टि प्रभु ने वृज में की गई बाललीलाओं के वचनामृतों से (वृज भाषा को पुरुषोत्तम भाषा के रूप में) व्यापकता दी ही है। उक्तोक्ति के अनुसार भी वेदादि शास्त्रों के समान उच्चस्तरीय होने के कारण हमारे आचार्यश्रीओं ने निःसाधन-सुसाधन वैष्णवों के लिये सत्संग की महत्ता पुरुषोत्तम भाषा में निर्देशित की।

ऐसी भी अपने श्रीवल्लभ संप्रदाय में भगवद् सेवा के बाद अनुसंधान के रूप में नाम सेवा की विशेष उपादेयता को उपेक्षित नहीं माना जा सकता। अतएव अपेक्षित साहित्य-वैष्णव वार्तायें, षोडशग्रंथ, शिक्षापत्र प्रभृति ग्रंथराज, सत्संग और नित्य पाठ हेतु प्रत्येक वैष्णवों के घर में संगृहणीय होने ही चाहिए।

सविशेष-इन्दौर स्थित वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास व अन्तरष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् शाखा द्वारा सुनिश्चित हुआ कि अप्राप्य (भाव प्रकाश सहित ८४और २५२ वैष्णव वार्ताओं) का पुनः क्रमशः प्रकाशन किया जाये। अतः विराजित आचार्यो की अध्यक्ष-उपाध्यक्षता में सभा मध्य विचार विमर्ष होकर अतिशीघ्र ही प्रस्ताव पारित हुआ तथा अब संस्था-शाखा द्वय के सुप्रयासों से वार्ताओं के तीनों खंड आपके हाथों में है। पुनश्च मुद्रित इन नूतन संस्करणों को अवलोकन कर मैं भी परितोष के साथ परमानंदानुभव कर रहा हूँ । आशा रखता हूँ कि प्रस्तुत ग्रंथों से हरि-गुरु-वैष्णव परायणतायुक्त अपने स्वधर्म, दर्शन, संस्कृति की हृदयंगम कर पुष्टि सृष्टि सत्संग का अलभ्यलाभ लेगी।

इन्ही शुभ कामनाओं के साथ

श्रीवल्लभाजयन्ति सं. २०५० **गोस्वामी कल्याणराय**

नाथद्वारा,इन्दौर

ग्रंथ में प्राप्त पुष्टि - भक्ति के अनुकरणीय और मननीय

सूत्रों की सूची

★

तृतीय खण्ड

सं.	सूत्र	वार्ता संख्या
२१७	' श्रीठाकुरजी कों काहू के भरोसे राखने नाहीं । '	४
२१८	' श्री ठाकुरजी कों इकले सर्वथा छोडने नाहीं । '	६
२१९	' यज्ञ में जीवहिंसा होत है तातें वैष्णव कों कर्तव्य नाहीं । '	६
२२०	' भगवदीय के आचारविचार देखने नाहीं । '	७
२२१	' श्रीगुंसाईजी बिचारे तिनकों ब्रजमण्डल की प्राप्ति होंई । '	१९
२२२	' सुगंधी अतर लगाय प्रभुन की सन्मुख जानो । '	२१
२२३	' प्रभुन को साक्षात् जानि उनकी सेवा में तत्पर रहनो । '	२१
२२४	' कृष्ण सों जो बहिर्मुख हैं उनको त्याग पुष्टिमार्ग में दूषण नाहीं ।	३५
२२५	' भगवत्सेवा में सहाय होई तापर प्रीति राखे । '	४४
२२६	' भगवद्धर्म की आगे स्त्री, द्रव्यादि तुच्छ पदार्थ है । '	५७
२२७	' स्थायी भाव बिना पुष्टिमार्ग कौ सुख मिले नाहीं । '	५९
२२८	' चित्त स्नेह - परायण रहे, मारग कौ आचार हू भलीभांति बनि आवे ता प्रकार वैष्णव को महाप्रसाद लिवावें । '	६४
२२९	' ब्रह्मसंबंध तें लीला कौ संबंध दृढ होई । '	६७
२३०	' जो कोऊ वैष्णव की निष्काम भावतें टहल करत हैं ताके प्रभु आधीन व्है रहत हैं । '	७६
२३१	' ह्रदय की भावना सों ही आश्रय और अन्याश्रय होत है । '	८६
२३२	' वैष्णव कौ आदर करनो, उनकों अपने तें बडो जाने । '	८८
२३३	' ब्रजयात्रा अवश्य करनी जातें ब्रज कौ स्वरूप ह्रदयारूढ होई । '	९८
२३४	' ब्रज भगवदीय हैं, तातें उनके दरसन मानसी किये तें भगवद्भाव उत्पन्न होई । '	९८
२३५	' वैष्णव वेषधारी हू होई तऊ घर आए पे वाको सत्कार करनो ' ।	१०७
२३६	' महाप्रसाद कवहू निघटे नाहीं । '	१०९
२३७	' निष्कंचन होंई तऊ सेवा करे । तब दीनता दासत्व सिद्ध होंई । '	१११
२३८	' कर्ता कारयिता हरि है । '	११३

सं.	सूत्र	वार्ता संख्या
२३९	' महाप्रसाद न छूवे । '	११७
२४०	' वैष्णवन की वार्ता कहे, सुने तें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होत हैं । '	१२१
२४१	' सगुण देखि के अपने कारज कों करे सो अन्याश्रय । '	१२४
२४२	' अधर्म करि द्रव्य जोरनो नाहीं । '	१२६
२४३	' शुद्ध प्रेम में ईंद्रियन के भोग को लेस हू गंध न होइ । '	१३९
२४४	' रसना ईंद्रिय के बस होइ सो गिरे । '	१४५
२४५	' सेवा बिना मार्ग में अंगीकार नाहीं । '	१६२
२४६	' श्रीयमुनाष्टक कौ पाठ अहर्निश करनो । तातें परम सौभाग्य पावें । '	१६७
२४७	' श्री वल्लभकुल के सरनि बिना पुष्टि रास में अंगीकार नाहीं । '	१६९
२४८	' श्रीयमुनाजी रसात्मक हैं । सो श्रीयमुनाजल हू रसरूप है । तातें वा जल में लौकिक बुद्धि करि बासन न मांजने, कुल्ला न करने । वासों रसोई आदि कछू न करनो । केवल झारी भरे । '	१७१
२४९	' श्री यमुनाजी कृपा करें तब जीव कों सेवोपयोगी नूतन देह की प्राप्ति होंई । '	१७५
२५०	' सेवा अर्थ देह गिरे तो श्रीनाथजी वाकों कबहू छोरत नाहीं । '	१७७
२५१	' श्रीगुसांईजी जाकी बांह पकरत हैं ताकों श्रीगोवर्द्धननाथजी कों निश्चै सोंपत हैं । '	१७९
२५२	' वैष्णव की जूंठनि लिए तें हृदय के नेत्र खुलत हैं । प्रसाद लिवाइ के ले सो जूंठन । '	१८०
२५३	' वैष्णव कों रसोई फूंक के नाहीं करनी । फूंक में छींटा आवत हैं । तातें सब जूंठन होंई । श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं । '	१८२
२५४	' अष्टाक्षर कै धारन किये तें जीव निर्भय होत है । '	१९५
२५५	' पुष्टिमार्ग में शीतल भाव उचित नाहीं । '	१९६
२५६	' भगवद्वार्ता धारण न करे तो कहवे वारे कों श्राप देत हैं । श्रीनाथजी कों अत्यंत श्रम होत है । '	२१७
२५७	' वैष्णव की सेवा तें ब्रजलीला में प्रवेश होंई ब्रज के सौभाग्य कों पावे । '	२४२
२५८	' प्रभु कर्तु, अकर्तु, अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्ययुक्त है । यामें संसय करनो नाहीं । '	२५०
२५९	' भगवद्धर्म में प्रतिष्ठा आदि बाधक है । '	२६१
२६०	' राज्यद्रव्य प्रभु अंगीकार करत नाहीं । '	२६३
२६१	' मानसी सिद्ध होई वाकों दूसरेन की सब बात खबरि परे । '	२८३
२६२	' आसक्ति भगवद्धर्म है । '	३४३
२६३	' श्रीगुसांईजी में स्वामिनी भाव और पुरुषोत्तम भाव दोनों है । '	३४९
२६४	' वेदोक्त कर्म मार्ग है सो भक्तिरूपी फूलन की कांटेन की बाड़ है । '	३५३
२६५	' भगवान में मन लाग्यो कब जानिये जब सगरो जगत् तुच्छ दीसे । '	३९०

२५२ वैष्णवों के आधिदैविक स्वरूपों की सूची

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुण वैष्णव	८४ वा. सं.
१६९	कान्हबाई	कन्हियाँ	ब्रजबिलासिनी कौ	तामसभाव	नारायणदास कायस्थ	५७
१७०	भीष्मदास क्षत्री	दृढव्रता	ब्रजविलासिनी कौ	राजस "	नारायणदास कायस्थ	५७
१७१	नारायनदास पांडे	नारायणी	ब्रजबिलासिनी कौ	सात्विक "	नारायणदास कायस्थ	५७
१७२	एक ब्राह्मण भागनगर कौ	कृष्णानुचरी	वानर कौ	सात्विक "	नारायणदास भाट	५८
१७३	माधुरीदास माली	कलिका	वानर "	राजस "	नारायनदास भाट	५८
१७४	धर्मदास ब्राह्मण	नयनप्रभा	वानर "	तामस "	नारायनदास भाट	५८
१७५	क्षत्री दक्षिण कौ	स्नेहप्रकाशिका	केतकीकौ	तामस "	नारायणदास लुहाणा	५९
१७६	मुकुंददास सेखड	आराधिका	केतकी "	सात्विक "	नारायणदास लुहाणा	५९
१७७	मानसिंघ राजा	सूर्या	केतकी "	राजस "	नारायणदास लुहाणा	५९
	(१)तेली की बेटी	तारिका				
१७८	कबूतर	प्रीतिनिवाहक	सुनंदाकौ	सात्विक "	एक क्षत्राणी सिंहनंद की	६०
	(१) कबूतरनी	प्रीतमगमनी				
१७९	एक सेठ राजनगर कौ	जलचर	सुनंदा "	राजस "	एक क्षत्राणी सिंहनंद की	६०
१८०	एक पुरुष दोई स्त्री	रंगदेवी,	सुनंदा "	तामस "	एक क्षत्राणी सिंहनंदकी	६०
	(१-२) दो स्त्री	गूढा-निगूढा				
	(३) विरक्त	प्रियतमा				
१८१	एक बनिया वैष्णव	रञ्जना	वनदेवीकौ	सात्विकभाव	वीरबाई	६१
१८२	रावलको ब्रजबासी	मनोहर गोप	वनदेवी "	तामस "	वीरबाई	६१
१८३	राजा भीम	नृदेवी	वनदेवी "	राजस "	वीरबाई	६१
	(१) स्त्री	स्नेहदेवी				
१८४	विरक्त ब्राह्मण	माया	रंगाकौ	सात्विक "	दोऊ स्त्री पुरुष क्षत्री	६२
१८५	राजा पूर्व को	संशयशीला	रंगाकौ	राजसभाव	दोऊ स्त्री पुरुष क्षत्री	६२
१८६	कायस्थ सूरत कौ	ब्रजप्रिया	रंगा कौ	तामस "	दोऊ स्त्री पुरुष क्षत्री	६२
१८७	बनिया वैष्णव	सिंदुरी	श्रीदामाकौ	तामस "	सुतार अडेल कौ	६३
१८८	हंस	हंसा	श्रीदामा "	सात्विक "	सुतार अडेल कौ	६३
	(१) हंसिनी	शिवा				

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुण वैष्णव	८४ वा. सं.
१८९	पारधी	विष्वकसेनी	श्रीदामाकी	राजस "	सुतार अडेल कौ	६३
१९०	पीतांबरदास	ब्रह्मवल्ली	मोहिनीकौ	सात्विक "	एक क्षत्री पूर्व कौ	६४
१९१	बेनीदास	साध्या	मोहिनी "	तामस "	एक क्षत्री पूर्व कौ	६४
१९२	एक वैष्णव गुजरात को	कमलाकांता	मोहिनीकौ	राजसभाव	एक क्षत्री पूर्व कौ	६४
१९३	एक वैष्णव गुजराती ब्राह्मण	मनोत्सवा	उमाशंकरकौ	तामस "	लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री	६५
१९४	गोपालदास	बलदेवी	उमाशंकर "	राजस	लघुपुरुषोत्तमदास क्षत्री	६५
१९५	मा बेटी	सुषमा-रतिक्रीड़ा	उमाशंकर "	राजस "	लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री	६५
१९६	दो ठग चोर	वामन हरि	शांडिल्यमुनिकौ	तामसभाव	कविराज भाट	६६
१९७	सेठ, विरक्त	मनङ्कामना, घोषरानी	शांडिल्य "	राजसभाव	कविराज भाट	६६
१९८	गोवर्द्धनदास, मन्नालाल	देवकी यशोदा	शांडिल्यमुनि "	सात्विकभाव	कविराज भाट	६६
१९९	ब्राह्मण वैष्णव	सगुना	नृत्यकला "	राजसभाव	गोपालदास	६७
२००	एक बाई बेटा	मरुवी गरुवी	नृत्यकला "	तामसभाव	गोपालदास	६७
२०१	उत्तमदास क्षत्री	श्रीरंगी	नृत्यकला "	सात्विकभाव	गोपालदास	६७
२०२	साहूकार को बेटा	रामा	कृष्णावती "	राजसभाव	जनार्दनदास चोपडा	६८
	(१)वजीर की बेटी	स्यामा				
	(२)बनिया को पुत्र	कामा				
२०३	एक सैवी ब्राह्मण को बेटा	सोनजूही	कृष्णावती "	तामसभाव	जनार्दनदास चोपडा	६८
२०४	निष्कंचन वैष्णव,सेठ	ब्रजभूषणा कामना	कृष्णावती "	सात्विकभाव	जनार्दनदास चोपडा	६८
२०५	कुनबी, लाडबनिया	सुगंधा-कामकुंतला	बंदीकौ	तामसभाव	गडूस्वामी	६९
२०६	आनंददास सांचौरा	तारा	बंदीकौ	राजसभाव	गडूस्वामी	६९
२०७	गोकुल भट	अरविंदी	बंदीकौ	सात्विकभाव	गडूस्वामी	६९
	(१) गोविंद भट	गोविंदी				
२०८	चांपाभाई क्षत्री	चर्चिका	कमोदिनीकौ	राजसभाव	कन्हैया शाल क्षत्री	७०
२०९	किसोरीबाई	किशोरी	कमोदिनी "	सात्विकभाव	कन्हैया शाल क्षत्री	७०
२१०	दोऊभाई पटेल	सुमंगल श्रीमंगल	कमोदिनी "	तामसभाव	कन्हैया शाल क्षत्री	७०
२११	गुलाबदास क्षत्री	श्रीदेवी	सुगंधरा "	तामसभाव	नरहरिदास गोडिया	७१

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुण वैष्णव	८४ वा. सं.
२१२	एक चूहडा	मनोहरगोप	सुगंधरा "	सात्विकभाव	नरहरिदास गोडिया	७१
२१३	धनी-धन्यानी	ईद्रा-चक्रा	सुगंधरा "	राजसभाव	नरहरिदास गोडिया	७१
२१४	एक क्षत्रानी प्रयाग की	अनंती	गुलाबी "	सात्विकभाव	नरहर सन्यासी	७२
२१५	द्वारकादास गौरवा क्षत्री	गोपा	गुलाबी "	राजसभाव	नरहर सन्यासी	७२
२१६	पुरुष -स्त्री बलाई	शुरी-पुरी	गुलाबी "	तामसभाव	नरहर सन्यासी	७२
२१७	एक साहूकार खंबाइच को	मयूरनी	चंद्रभान कौ	राजसभाव	सदू पांडे	७३
२१८	एक ब्राह्मण खंभाइच को	वत्सला	चंद्रभान "	तामसभाव	सदू पांडे	७३
२१९	एक क्षत्री वैष्णव	श्रीधरी	चंद्रभान "	सात्विकभाव	सदू पांडे	८३
२२०	एक क्षत्री वैष्णव	वसुमति	रसभद्रा "	सात्विकभाव	गोपालदास जटाधारी	७४
२२१	एक क्षत्राणी आगरे की	वधूटी	रसभद्रा "	तामसभाव	गोपालदास जटाधारी	७४
२२२	एक सेठ को बेटा दक्षिण कौ	ध्यानमग्ना	रसभद्रा "	राजसभाव	गोपालदास जटाधारी	७४
	(१) सेठ	रसमग्रा				
२२३	सेठ की बेटी, विरक्त	कृष्णहिता-गार्गी	नंदाकौ	सात्विकभाव	कृष्णदास स्त्री पुरुष	७५
२२४	सेठ	प्रभालल्ली	नंदाकौ	राजसभाव	कृष्णदास स्त्री पुरुष	७५
	(१) दासी	महाविद्या				
	(२) बेटा	आसा				
२२५	स्त्री पुरुष	नवांकुरी-चंचला	नंदा "	तामसभाव	कृष्णदास स्त्री पुरुष	७५
२२६	सरावगी की बेटी-पुरुष	निर्मला-आतुरी	चंद्रिका कौ	सात्विकभाव	संतदास	७६
२२७	एक वैष्णव गुजरात कौ	गोपाली	चंद्रिका "	तामसभाव	संतदास	७६
२२८	एक वै. गुजरात कौ बनिया	धरा	चंद्रिका "	राजसभाव	संतदास	७६
२२९	लाडबाई, धारबाई	मिंदुरा-जानकी	शीलाकी	राजसभाव	सुंदरदास	७७

वा.सं.	नाम	स्वरूप	कौन कौ	कौन सो भाव	निर्गुण वैष्णव	८४ वा. सं.
२३०	एक राजा गुजरातकौ	पीपासादेवी	शीला "	तामसभाव	सुंदरदास	७७
२३१	मदनगोपालदास कायस्थ	मनोरमा	शीला "	सात्विकभाव	सुंदरदास	७७
२३२	रूपमंजरी	रूपमंजरी	रूपा "	सात्विकभाव	मावजी	७८
२३३	जाडा कृष्णदास	कृष्णप्रवीना	रूपा "	राजसभाव	मावजी	७८
२३४	राघौदास	अधीरा	रूपा "	तामसभाव	मावजी	७८
२३५	कटहरिया	स्यामगोप	जशवंतकौ	तामसभाव	गोपालदास नरोडावारे	७९
२३६	ब्रह्मदास गौरवा	मनमोहिनी	जशवंत "	सात्विकभाव	गोपालदास नरोडावारे	७९
२३७	एक राजा	हरिदेवी	जशवंत "	राजसभाव	गोपालदास नरोडावारे	७९
	(१) रानी	हरिप्रिया				
	(२) साहूकार	बोधिनी				
	(३) स्त्री	प्रबोधिनी				
२३८	पृथ्वीसिंहजी	प्रभावती	श्रुतिरूपा "	राजसभाव	बादरायनदास	८०
२३९	तुलसीदास सारस्वत	तुलसां	श्रुतिरूपा "	तामसभाव	बादरायनदास	८०
२४०	वृंदावनदास	गोकुला	श्रुतिरूपा "	सात्विकभाव	बादरायनदास	८०
२४१	नंददासजी	चंद्ररेखा	चंपकलताकौ	सात्विकभाव	सूरदासजी	८१
२४२	सगुनदास	चंपा	चंपकलता "	राजसभाव	सूरदासजी	८१
२४३	धोंधी	धरा	चंपकलता "	तामसभाव	सूरदासजी	८१
२४४	छीतस्वामी	पद्मा	चंद्रभागाकौ	तामसभाव	परमानंददास	८२
२४५	रसखान	रससिद्धा	चंद्रभागा "	राजसभाव	परमानंददास	८२
२४६	यादवेंद्रदास	यादवी	चंद्रभागा "	सात्विकभाव	परमानंददास	८२
२४७	गोविंदस्वामी	भामा	विशाखा "	सात्विकभाव	कुंभनदास	८३
२४८	चतुरविहारी	चतुरा	विशाखा "	राजसभाव	कुंभनदास	८३
२४९	चतुर्भुजदास मिश्र	चारुमति	विशाखा "	तामसभाव	कुंभनदास	८३
२५०	चतुर्भुजदास	विमला	ललिता "	तामसभाव	कृष्णदास	८४
२५१	माधवदास दलाल	कोकिलकंठी	ललिता "	सात्विकभाव	कृष्णदास	८४
२५२	भगवानदासहित	वरदेश्वरी	ललिता "	राजसभाव	कृष्णदास	८४
	(१) रामराय	मुक्तेश्वरी				

ऐतिहासिक सूची - १

- २५२ वैष्णवों के सेव्य स्वरूपों की सूची -

★

संख्या स्वरूपों के नाम	कौन के सेव्य		विद्यमान स्थिति
१ श्रीबालकृष्णजी	कृष्णभट सांचोरा के	२	राजकोट में
(१) पादुकाजी			
२ श्रीनाथजी के वस्त्र	भीलनी के	३	?
३ श्रीबालकृष्णजी	मुरारीदास सूर्यद्विज के	४	?
४ श्रीठाकुरजी	नारायणदास दीवान के	५	?
(१) पादुकाजी			
★५ श्रीमदनमोहनजी	रूपमुरारीदास के	७	कच्छ मांडवी
★६ श्रीमदनमोहनजी	हरजी कोठारी के	८	गोकुल
७ श्रीबालकृष्णजी	भाईला कोठारी के	१०	अहमदाबाद
(१) पादूकाजी			
८ श्री बालकृष्णजी	माणिकचंद क्षत्री के	१२	वेरावल
★९ श्रीवज्रेश्वरजी	हरिदास खवास के	१५	कोटा
१० श्री गु. के चरण छाप के वस्त्र	रूपचंदनंदा के	१७	?
११ श्रीनवनीतप्रियजी	एक विरक्त डोल झूलाए जाके	२२	?
१२ श्रीठाकुरजी (श्रीद्वारकानाथजी)	हरिदास मेडता वारे के	२६	मथुरा
१३ हस्ताक्षर	राजा जेंवल की बहनि के	२६	चांपासेनी
★ (१) (श्री मदन मोहनजी)			
१४ श्रीठाकुरजी (श्रीमदनमोहनजी)	राजा जेंवल मेडता के	२६	पोरबंदर
१५ श्रीबालकृष्णजी	एक वै. हरिदास की बेटी के संगी के	२७	चांपासेनी
१६ श्रीबालकृष्णजी	माणेकचंद ओसवाल के	२७	चांपासेनी
१७ श्री गिरिराजजी	बडनगरा नागर ब्राह्मण के	२८	?
१८ श्रीयमुनाजी की रेणु का	एक सनाढ्य ब्राह्मण के	२९	?
१९ श्रीबालकृष्णजी	एक गुजरात को ब्राह्मण ताके	३४	?
२० श्रीठाकुरजी (शुभकनलालजी)	मा बेटा बहू के	३६	नडीयाद
२१ श्री वृंदावनचंदजी	पीरजादी के	३७	बंबई
★ (१)श्रीमदनमोहनजी	अलीखान के	३७	बंबई
२२ श्रीनाथजी के वस्त्र	एक ब्राह्मणी के	३८	?
२३ हस्ताक्षर	गोरवा क्षत्री के	४२	?
२४ श्रीबालकृष्णजी	साहूकार के बेटा की वहू के	४३	?

संख्या	स्वरूपों के नाम	कौन के सेव्य	वार्ता सं.	विद्यमान स्थिति
२५	श्रीवालकृष्णजी	बेनीदास छीपा के	४६	?
२६	श्रीठाकुरजी	एक क्षत्राणी के	४७	?
२७	श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र	दुर्गादास के	४८	?
★२८	श्रीमदनमोहनजी	पुरुषोत्तमदास पुस्करणा के	४९	जामनगर
२९	श्रीवालकृष्णजी	लक्ष्मीदास के	५०	?
३०	श्रीवालकृष्णजी	राजनगर के सेठ के	५२	?
३१	श्रीमदनमोहनजी	स्त्री - पुरुष कनोजिया ब्राह्मण के	५२	मथुरा
३२	श्रीवालकृष्णजी	रजपूत गरासीया के	५३	?
	(१) श्री. गु. के चरणाविंद के छपे वस्त्र			
३३	श्रीठाकुरजी	निहालचंदभाई के	५५	?
★३४	श्रीगोपालजी	एक बाई जाके ऊपर जदुनाथदास मोहित हुए ताके	५७	काशी
३५	श्रीठाकुरजी	धोबी राजा के	६०	?
३६	श्रीवालकृष्णजी	राजा भवैयावाले के	६२	गोकुल
३७	श्रीठाकुरजी (श्रीमदनमोहनजी)	दया भवैया के	६३	जूनागढ
३८	श्रीठाकुरजी	गंगाबाई के	६५	?
३९	श्रीठाकुरजी (श्रीमदनमोहनजी)	राजा जोतसिंह के	६६	नाथद्वारा
४०	श्रीठाकुरजी (श्रीगोपाललालजी)	जोतसिंह के प्रोहित के ६७	कडो	
४१	श्रीठाकुरजी	जोतसिंह के वेटा - बेटी के	६७	?
४२	श्रीठाकुरजी (श्रीमदनमोहनजी)	साठोदरा नागर के	७२	?
४३	श्रीठाकुरजी	एक वैष्णव के	७२	?
४४	श्रीवालकृष्णजी	वाघाजी रजपूत के	७४	बंबई
४५	श्रीठाकुरजी	स्त्री - पुरुष के	७४	?
४६	श्रीठाकुरजी	ब्राह्मण स्त्री - पुरुष के	७८	?
४७	श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र	एक गोडिया ब्राह्मण के	८२	?
४८	श्रीवालकृष्णजी (श्रीव्रजनाथजी)	बिलाईवारी क्षत्राणी के	८३	बेट शंखोद्धार
४९	श्रीठाकुरजी	कुणबी पटेल के	९०	?
५०	श्रीबालकृष्णजी	एक साहुकार मथुरावारे के	९१	?
५१	श्रीठाकुरजी	निष्किंचन स्त्री - पुरुष के	९१	?
५२	श्रीबालकृष्णजी	एके बनिया गुजरात को	९२	?
५३	श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र	बनिया की बेटी के	९२	?
५४	श्रीठाकुरजी	एक ब्राह्मण वैष्णव के	९३	
५५	श्रीनवनीतप्रियजी की कुल्हे	रेंडा उदंबर ब्राह्मण के	९६	?
५६	श्रीठाकुरजी	डोकरी के	९६	?
५७	श्रीमदनमोहनजी	स्त्री पुरुष साडीवारे के	९७	?
५८	पादुकाजी	अजबकुंवर के	९८	?

संख्या	स्वरूपों के नाम	कौन के सेव्य	वार्ता सं.	विद्यमान स्थिति
५९	श्रीबालकृष्णजी	एक ब्राह्मण पंडित के	९९	?
६०	श्रीठाकुरजी	देवाभाई कुणबी के	१०१	?
६१	श्रीठाकुरजी	दोऊ भाई सांचोरा के	१०३	?
६२	श्रीबालकृष्णजी	स्त्री पुरुष क्षत्री हीराकी धरतीवारे	१०५	कामवन
६३	श्रीमदनमोहनजी	एक वैष्णव के	१०६	?
६४	श्रीठाकुरजी	एक ब्राह्मणी उपरावारी के	११०	?
६५	श्रीठाकुरजी	दलाल बनिया के	११४	?
६६	श्रीठाकुरजी	बेनीदास - दामोदरदास के	११५	?
६७	श्रीबालमुकुंदजी	जनार्दनदास क्षत्री के	११६	?
६८	श्रीलालजी	एक क्षत्राणी के	११९	?
६९	श्रीमोहनजी	राजा आशकरण के	१२३	धोलका
★७०	नागरजी	राजा आशकरण के	१२३	बंबई
७१	श्रीशालीग्रामजी	मोची वैष्णव के	१२४	?
७२	श्रीमदनमोहनजी	एक सेठ खरबूजावारे के	१२५	बंबई
७३	श्रीठाकुरजी	विरक्त के	१२५	?
७४	श्रीबालकृष्णजी	एक वैष्णव गुजरातवारे के	१२६	?
७५	श्रीठाकुरजी	मधुसूदनदास के	१२८	?
७६	श्रीठाकुरजी (श्रीमदनमोहनजी)	मुरारी आचार्य के	१३०	राजनगर
७७	श्रीबालकृष्णजी	चेलीवारे वैष्णव के	१३१	?
७८	श्रीबालकृष्णजी	दो भाई पटेल देवीवारे के	१३१	अमरेली
७९	श्रीठाकुरजी	मेहा धीमर के	१३६	अमरेली
८०	श्रीमदनमोहनजी	ॠषिकेश के	१३७	मथुरा
८१	श्रीठाकुरजी	स्त्री - पुरुष राजनगर के	१३९	?
८२	श्रीबालकृष्णजी (श्रीमदनमोहनजी)	मोहनदास के	१४०	कृष्णगढ़
८४	श्रीबालकृष्णजी	हरिदास के	१४०	?
८५	श्रीबालकृष्णजी	एक डोकरी दांतिनवारी के	१४२	?
८६	श्रीबालकृष्णजी	स्त्री - पुरुष मथुरा के	१४३	?
८७	श्री बालकृष्णजी	एक डोकरी राजनगरवारी के	१४४	?
८८	श्रीबालकृष्णजी ★ (व्रजेश्वरजी)	सूरत के शाहूकार के बेटा की बहू के	१४९	कोटा
८९	श्रीठाकुरजी	सीताबाई के	१५१	?
९०	श्रीठाकुरजी	मोची बनिया के	१५४	?
९१	श्रीठाकुरजी	एक बनिया के	१५५	?
९२	वस्त्र सेवा	एक ब्राह्मण के	१५५	?
९३	वस्त्र सेवा	प्रेमजी भाई के	१५७	?

संख्या	स्वरूपों के नाम	कौन के सेव्य	वार्ता सं.	विद्यमान स्थिति
९४	श्रीठाकुरजी	वृंदावनदास छबीलदास के	१५८	?
९५	श्रीबालकृष्णजी	एक ब्राह्मण स्त्री पुरुष के	१५९	?
९६-९७	श्रीठाकुरजी	तादृशी-भगवदीय के	१६०	?
९८	श्रीठाकुरजी	एक अन्यमार्गी श्मशानवारे के	१६४	?
९९	कुंकुम सों छपे चरणारविंद	एक राजा के	१६५	?
१००	श्रीठाकुरजी	स्त्री पुरुष राजनगर के	१६८	?
१०१	श्रीनवनीतप्रियजी	कान्हबाई के	१६९	गोकुल
१०२	श्रीबालमुकुंदजी	भीष्मदास के	१७०	?
१०३	श्रीठाकुरजी (श्रीगोपाललालजी)	एक क्षत्री वैष्णव गुलाब के फूल वारे के	१७५	अहमदाबाद
१०४	श्रीमदनमोहनजी	राजा मानसिंघ के	१७७	अहमदाबाद
१०५	श्रीठाकुरजी	एक पुरुष दोय स्त्री के	१८०	?
१०६	श्रीठाकुरजी	राजा भीम के	१८३	?
१०७	श्रीठाकुरजी	पूरब के राजा के	१८५	?
१०८	श्रीठाकुरजी	वेणीदास के	१९१	?
१०९	श्रीबालकृष्णजी	एक ब्राह्मण वैष्णव के	१९३	?
११०	श्रीठाकुरजी	गोपालदास वडनगरा के	१९४	अमरेली
१११	श्रीठाकुरजी	मा-बेटी के	१९५	?
११२	श्रीठाकुरजी	एक विरक्त के	१९७	?
११३	श्रीठाकुरजी (मदनमोहनजी)	एक सेठ के	१९७	?
११४	श्रीठाकुरजी	गोवर्द्धनदास मन्नालाल के	१९८	?
११५	श्रीठाकुरजी	एक सेठ के	२०४	?
११६	श्रीठाकुरजी	कुनबी पटेल के	२०५	वेरावल
११७	श्रीठाकुरजी	लाडबनिया के	२०५	?
११८	श्रीठाकुरजी	एक गृहस्थ के	२०६	?
११९	श्रीमदनमोहनजी	चांपाभाई भंडारी के	२०८	श्रीजीद्वार
★१२०	श्रीबालकृष्णजी	शंकरभाई भंडारी के	२०८	?
१२१	रमनरेती	किशोरीबाई के	२०९	?
१२२	श्रीठाकुरजी	धनी-धनीयानी के	२१३	कामवन
१२३	श्रीठाकुरजी (श्रीबालकृष्णजी)	धानीपूनीवाली क्षत्राणी के	२१४	बंबई
१२४	प्रसादीउपरेना (१) पादुकाजी	बलाई स्त्री पुरुष के	२१६	?
१२५	श्रीठाकुरजी	एक साहूकार के	२१७	?
१२६	श्रीठाकुरजी	एक ब्राह्मण वैष्णव के	२१८	?
१२७	श्रीठाकुरजी	एक क्षत्री वैष्णव के	२१९	?
१२८	श्रीठाकुरजी	एक सेठ और वाकौ बेटा के	२२२	?

संख्या	स्वरूपों के नाम	कौन के सेव्य	वार्ता सं.	विद्यमान स्थिति
१२९	श्रीमदनमोहनजी	सेठ की बेटी (मानकुंवर) के	२२३	जामनगर
१३०	श्रीबालकृष्णजी	एक विरक्त के	२२३	गोकुल
१३१	श्रीठाकुरजी	सेठ,दासी,सेठकौ बेटा के	२२४	?
१३२	श्रीठाकुरजी	स्त्री पुरुष ब्राह्मण के	२२५	?
१३३	श्रीठाकुरजी	एक सरावगी की बेटी के	२२६	?
१३४	श्रीठाकुरजी	एक वैष्णव के	२२७	?
१३५	श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र	एक वैष्णव के	२२८	?
१३६	श्रीगोपाललालजी	लाडबाई धारबाई के	२२९	काशी
१३७	वस्त्र सेवा	एक राजा के	२३०	?
★१३८	(श्रीबालकृष्णजी)	कटहरिया के	२३५	जोधपुर
१३९	श्रीठाकुरजी	राजाराणी के	२३७	?
१४०	श्रीठाकुरजी	शाहूकार वैष्णव के	२३७	?
१४१	श्रीबालकृष्णजी	राजा पृथ्वीसिंघजी के	२३८	?
१४२	श्रीगोपीनाथजी	तुलसीदास आठ में लालजी के	२३९	सिंध
१४३	श्रीठाकुरजी (रसिकरायजी)	माधवदास के	२५१	वीरमगाम
१४४	श्रीठाकुरजी (१) श्रीमदनमोहनजी	सहजपाल दोषी	२५१	कोटा
१४५	श्रीठाकुरजी (१) (श्रीनवनीतप्रियजी)	जीऊ पारेख के	२५१	सूरत

विशेष -

१४६	श्रीवृंदावनचंद्रजी (चंद्रमाजी)	ताज	भावसिंधु में उल्लेख	उदेपुर
१४७	श्रीबालकृष्णजी★	रामदास वाणियां (?)		बंबई
१४८	श्रीमदनमोहनजी★ (श्रीलालजी ?)	महीधर फूलवाई	८४ वार्ता में उल्लेख	कोट, बंबई में
१४९	श्रीबालकृष्णजी★	दोभाई पटेल (?)		अमरेली
१५०	श्रीमदनमोहनजी★	एक पटेल (?)		वेरावल
१५१	श्रीबालकृष्णजी★	एक राजा (?)		राजकोट
१५२	श्रीनवनीतप्रियजी★	गदाधरदास मिश्र (संप्रदाय प्रदीपवारे)		जामनगर

इनके अतिरिक्त वैष्णवों के माथे नहीं बिराजे ऐसे श्रीगुसांईजी के अन्य सेव्य स्वरूपों (श्रीसत्यभामा, श्रीशोभा बेटीजी आदि के माथे बिराजे हुए श्रीगुसांईजी के सेव्य स्वरूपों) की विस्तृत यादी सम्प्रदाय में प्राप्त है !

★ इस चिह्नवारे स्वरूपों का उद्धरण गो. श्री. रमणलालजी (मथुरावाले) तथा लल्लुभाई छ. देसाई के ग्रंथों से दिया गया हैं। ( ) कौंस में दिए हुए नाम भी इन्हीं आधार पर दिए गये हैं। — सं.

- २५२ वैष्णवों की वार्ताओं की सूची -

(क्रमशः - ३)

वार्ता सं.	नाम	ज्ञाति	पृष्ठ सं.	प्रसंग सं.
१६९	कान्हबाई	(सनाढय ब्राह्मण)	१	६
१७०	भीष्मदास	(क्षत्री)	८	१
१७१	नारायणदास पांडे	(सनोढिया ब्राह्मण)	१५	१
१७२	एक ब्राह्मण दक्षिण भावनगर को	(ब्राह्मण)	१७	२
१७३	माधुरीदास माली	(माली)	१९	१
१७४	धर्मदास अड़ींग के	(ब्राह्मण)	२२	१
१७५	क्षत्रीवैष्णवगुलाब के फूलवारो	(क्षत्री)	२५	१
१७६	मुकुंददास सेखड़	(क्षत्री)	२९	१
१७७	राजा मानसिंघ दक्षिण के	(क्षत्री)	३१	१
१७८	कबूतर-कबूतरनी	(पक्षी)	४४	२
१७९	सेठ राजनगर को, कीड़ा भयो	(वैश्य)	४९	१
१८०	एक पुरुष दोई स्त्री	(क्षत्री)	५५	१
१८१	एक बनिया वैष्णव, प्रेम आसक्ति व्यसनवारौ	(वैश्य)	६०	१
१८२	एक ब्रजवासी रावल कौ	(?)	६४	१
१८३	राजा भीम स्त्री-पुरुष गुजरात के	(क्षत्री)	६७	१
१८४	विरक्त, दो वैष्णवकों घर लायो	(ब्राह्मण)	७४	१
१८५	एक राजा पूर्वकौ धर्म पूछतो	(क्षत्री)	७६	१
१८६	एक वैष्णव सूरत कौ, हांडीवारौ	(कायस्थ)	८१	१
१८७	एक बनिया वैष्णव भैरववारौ	(वैश्य)	८४	१
१८८	हंस हंसनी मानसरोवर के	(पक्षी)	८६	१
१८९	एक पारधी	(पारधी)	८८	१
१९०	पीतांबरदास	(ब्राह्मण)	९०	२
१९१	बेनीदास कड़ा के	(क्षत्री)	९८	१
१९२	एक वैष्णव, जाकों श्रीगुसांईजी ने माहात्मय दिखायो	(?)	१०२	१
१९३	वैष्णवगुजराती जाके ठग आए	(ब्राह्मण)	१०४	१
१९४	गोपालदास बड़नगर के	(?)	१०७	२
१९५	माँ-बेटी राजनगर की	(?)	१०९	१

१९६	ठग-चोर वीरां के गरे में फांसी डारी	(?)	१११	१
१९७	एक सेठ, एक विरक्त, मेंड पें ते कुत्ता निकसि गयो	(वैश्य, ब्राह्मण)	११५	१
१९८	गोवर्द्धनदास, मन्नालाल	(ब्राह्मण)	११९	१
१९९	एक ब्राह्मण वैष्णव सगुणवारौ	(ब्राह्मण)	१२१	१
२००	बाई, जाकौ बेटा बाट मारतो	(?)	१२५	१
२०१	उत्तमदास, गुजरात के बासी	(क्षत्री)	१२७	१
२०२	साहूकार कौ बेटा, वजीर की बेटी, बनिया कौ पुत्र	(वैश्य-क्षत्री-वैश्य)	१२९	२
२०३	एक सैवी को बेटा	(ब्राह्मण)	१३९	१
२०४	निष्कंचन वैष्णव, सेठ कों पून्य दियो	(वैश्य)	१४६	१
२०५	कुनबी पटेल, लाड बनियावारो	(कुनबी, वैश्य)	१५०	१
२०६	आनंददास सांचोरा	(ब्राह्मण)	१६०	१
२०७	गोकुल भट्ट गौविंद भट्ट	(साँचोरा ब्राह्मण)	१६२	१
२०८	चांपाभाई	(क्षत्री)	१६३	२
२०९	किशोरीबाई	(ब्राह्मण)	१६५	५
२१०	कुनबी पटेल, मलयागिरिचंदनवारे	(पटेल)	१७५	२
२११	गुलाबदास	(क्षत्री)	१७७	१
२१२	चूहडो, गोकुल कौ	(चूहडा)	१७९	१
२१३	धनी धन्यानी कोडी पैसा की थेली वारे	(?)	१८२	१
२१४	क्षत्राणी, प्रयागकी धानी पूनीवारी	(क्षत्री)	१८४	१
२१५	द्वारकादास गोरवा	(क्षत्री)	१८६	१
२१६	बलाई स्त्री-पुरुष	(बलाई)	१८७	१
२१७	एक साहूकार खंभाइच कौ	(वैश्य)	१९८	१
२१८	एक ब्राह्मण खंभाइच कौ	(ब्राह्मण)	२०४	१
२१९	एक क्षत्री वैष्णव कसेंडीवारो	(क्षत्री)	२०७	३
२२०	क्षत्री वैष्णव, चाचाजीकौ संगी	(क्षत्री)	२१३	१
२२१	एक क्षत्राणी आगरे की, नाम सुनावे सो आवे नाहीं	(क्षत्राणी)	२१७	१
२२२	एक सेठ दक्षिण कौ, जाके बेटा ने मानसी करी	(वैश्य)	२१८	१
२२३	सेठकी बेटी, जाने श्रीबालकृष्णजी कों श्रीमदनमोहनजी किये	(वैश्य)	२२४	१
२२४	सेठ, दासी, सेठ कौ बेटा	(वैश्य)	२३९	१

२२५	स्त्री-पुरुष, जाकों श्रीनाथजी सदेहे ले गए	(ब्राह्मण)	२४५	१
२२६	सरावगी की बेटी	(वैश्य)	२५३	१
२२७	वैष्णव गुजरात कौ, वैष्णवन कों कपड़ा उढ़ाए	(?)	२५६	२
२२८	एक वैष्णव जाने गुप्त भेट करी	(वैश्य)	२६०	१
२२९	लाड़बाई धारबाई	(क्षत्री)	२६२	२
२३०	एक राजा, चार पुत्र वारौ	(क्षत्री)	२६४	१
२३१	मदनगोपालदास कायस्थ	(कायस्थ)	२६६	१
२३२	रुपमंजरी	(क्षत्री)	२६८	१
२३३	जाड़ा कृष्णदास	(क्षत्री)	२७०	५
२३४	राघौदास, चतुर्भुजदास के बेटा	(गौरवाक्षत्री)	२७५	१
२३५	कटहरिया	(क्षत्री)	२७९	१
२३६	ब्रह्मदास	(क्षत्री)	२८१	१
२३७	राजा, जाकी रानी ने झारी कौ फल मांग्यो	(क्षत्री)	२८३	१
२३८	पृथ्वीसिंहजी	(क्षत्री)	२८५	२
२३९	तुलसीदास, आठमें लालजी	(सारस्वत ब्राह्मण)	२८८	१
२४०	वृदावनदास, चतुरबिहारी के भतीजा	(क्षत्री)	२९०	२
२४१	नंददासजी	(सनाढय ब्राह्मण)	२९२	६
२४२	सगुणदासजी	(ब्राह्मण)	३२०	१
२४३	घोंघी	(म्लेच्छ)	३२४	२
२४४	छीतस्वामी	(चौबे)	३२६	३
२४५	रसखान	(सैयद पठाण)	३४१	२
२४६	यादवेंद्रदास	(क्षत्री)	३४७	२
२४७	गोविंदस्वामी	(सनाढय ब्राह्मण)	३५०	१७
२४८	चतुरबिहारी	(क्षत्री)	३७३	१
२४९	चतुर्भुजदास मिश्र	(सारस्वत ब्राह्मण)	३७७	२
२५०	चतुर्भुजदास, कुंभनदासजी के बेटा	(गोरवा क्षत्री)	३८०	११
२५१	माधवदास दलाल	(वैश्य)	४१६	१
२५२	रामरायहित भगवानदास	(सारस्वत ब्राह्मण)	४२०	२

तृतीय खण्ड समाप्त

ला तिलक वाले पुष्टिमार्ग के संरक्षक चतुर्थलालजी वार्ताकार श्री गोकुलनाथजी महाराजश्री

प्राकट्य मार्गशीर्ष शुक्ल ७ वि.सं. १६०८ तिरोधान-फाल्गुन कृष्ण ९ वि.सं. १६९७

शिक्षा सागर वार्ता भावप्रकाश श्रीहरिरायजी महाप्रभु

प्राकट्य आश्विन कृष्ण पंचमी वि.सं. १६४७ ✶ तिरोधान – वि.सं. १७७२

।। श्रीहरिः ।।

★ श्रीकृष्णाय नमः ★ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ★

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता

★

(क्रमशः खण्ड -३)

★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी कान्हबाई, गोविंदस्वामी की बहनि, महावन में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त हैं । कुमारिका के यूथ में हैं । लीला में इनकौ नाम 'कन्हियाँ ' है । इन में वात्सल्य भाव बोहोत हैं । ये-'ब्रजबिलासिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

ये कान्हबाई गोविंदस्वामी की बहनि, आंतरी गाम में एक सनाढ्य ब्राह्मन के यहां प्रगटी । सो वर्ष नौ की भई। तब जाति के लरिका सों इनकौ ब्याह भयो । ता पाछें बरस पेंतालीस की भई । तब इनकौ धनी मर्‍यो । सो कोउ संतति नाहीं । तातें ये ब्रज में आई । सौ महावन में रही ।

वार्ता प्रसंग — १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आप महावन में पधारे हते। तब कान्हबाई कों श्रीगुसांईजी के दरसन भएं । तब कान्हबाई ने श्रीगुसांईजी सों बीनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों नाम सुनाइये, तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो-स्नान करि आवो। तब स्नान करि आई । तब श्रीगुसांईजीने कृपा करि कै नाम सुनायो। पाछे दूसरे दिन श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान ब्रह्मसंबंध करवायो । ता पाछें कान्हबाई श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों सेवा पधराय दीजिए। मेरो मनोरथ सेवाकरिवे को है । तब श्रीगुसांईजी आप कृपा

करि कै कान्हबाई के माथे सेवा पधराय दीनी। सो कान्हबाई के सेव्य स्वरूप श्रीनवनीतप्रयजी हते । सो तिनकी सेवा कान्हबाई नीकी भांति सों करती । सो कान्हबाई सों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। और श्रीठाकुरजी कान्हबाई सों बातें करते जो वस्तु चाहिये सो मांगि लेते।

सो कान्हबाई के घर नित्य श्रीगुसांईजी सखड़ी महाप्रसाद पठावते, सो वाही प्रसाद कों श्रीठाकुरजी आरोगे। पाछें उह पातरि ढांकि धरती। सो फिरि श्रीठाकुरजी माँगते, जो-अरी कान्हबाई ! मोकों भूख लागी है। तब कान्हबाई उही पातरि, श्रीठाकुरजी आगें धरती। सो या भांति कान्हबाई पांच सात बेर उही पातरि धरती। सो श्रीठाकुरजी भोजन करि चुकते, तब कान्हबाई आचमन कराय आप कहती, जो-लालजी ! अब तुम सुखेन खेलो, जब तुमकों भूख लगें, तब तुम मेरे पास माँगियो। सो या भाँति कान्हबाई सों श्रीठाकुरजी हिले रहते। तब कितनेक दिन में यह बात काहू वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के आगें कही, जो-महाराज ! कान्हबाई के यहां जो पातरि जात है, सो अपने श्रीनवनीतप्रियजी कों वह पातरि कितनीक बार समर्पत हैं! तब एक दिन श्रीगुसांईजी ने कान्हबाई सों पूछी, जो-कान्हबाई ! तू महाप्रसाद की पातरि अपने श्रीठाकुरजी कों बारबार समर्पत है ? तब कान्हबाई नें कही, जो-महाराज! लरिका एक पातरि कों दस बार जेंवत है। और दस बार

जेंमततें भाजि जात है। तब यह कान्हबाई के बचन सुनि कै आप चुप करि रहें। और श्रीगुसांईजी आप वैष्णवन सों कहे, जो-इनकी बात उनहीकों भावति है।

भावप्रकाश — यह कहि श्रीगुसांईजी आपु यह जताये, जो-इनकों बाल भाव है, तातें ठाकुर बालक ब्है (इनकों) लरिका की नाँई अनुभव जतावत हैं। सो याकौ कियो उनकों रुचत है। परि याकी देखादेखी और कोऊ मति करियो। या पर श्रीठाकुरजी वाही भांति प्रसन्न है। तुम पर मर्यादा ही सों प्रसन्न होइंगे।

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

वार्ता प्रसंग-२

और एक दिन कान्हबाई कों महावन में कछु काम हतो। सो अपने सेव्य स्वरूप कों श्रीगुसांईजी की बेटीजी श्रीदेवका बेटीजी के यहां पधराय कै आप तो महावन कों गई हती। तब देवका बेटीजी ने अपने श्रीठाकुरजी सैया ऊपर पोढ़ाये। तब कान्हबाई के श्रीठाकुरजी कों पोढ़ावनो भूलि गई। तब श्रीठाकुरजी सिंघासन ऊपर बैठे रहे। सो जब रात्रि आधी गई, तब श्रीठाकुरजी ने कान्हबाई कों जताए, जो-तू तो यहां आई है, परि मोकों जाड़ो बोहोत लागत है। और मोकों पोढ़ायो नाहीं। मोको सिंघासन ऊपर बैठारि राख्यो है। सो मैं सिंघासन की ऊपर अकेलो डरपत हों। तब यह सुनि कैं कान्हबाई तत्काल हीं उठि कै श्रीगोकुल आई। सो देवका बेटीजी के द्वार आई पुकारी, जो-बेटीजी! किंवाड़ खोलो। तब देवकाजी ने कही, जो-कान्हबाई! तू इतनी अवार आई सो कहा है?

तब कान्हबाई ने देवका बेटी सों कही, जो-महाराज ! मेरे लालजी कों ल्याओ । तब देवका बेटीजी ने कान्हबाई सों कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी तो पोढ़ें हैं । सो मैं कैसें देऊ ? तब कान्हबाई ने कही, जो-महाराज ! मेरे श्रीठाकुरजी तो सिंघासन ऊपर बैठे हैं । सो तुमने पोढ़ाए नाहीं है । तब देवका बेटीजी मंदिर में जाय देखें, तो श्रीठाकुरजी सिंघासन ऊपर बैठे हैं । तब देवका बेटीजी नें श्रीठाकुरजी कान्हबाई कों दीने । तब कान्हबाई अपने श्रीठाकुरजी कों पधराय कें अपने घर आई। तब कान्हबाई अपने श्रीठाकुरजी कों गोद में ले कै कहन लागी, जो-मेरे लालजी कों जाड़ो बोहोत लाग्यो होइगो । सो बोहोत मनुहार करि कै श्रीठाकुरजी कों हृदय सों चांपि कै सोई रही। पाछें दूसरे दिन कान्हबाई देवका बेटीजी के घर आय बोहोत लरी । सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती ।

भावप्रकाश —या वार्ता में यह जतायो, जो-श्रीठाकुरजी कों काहू के भरोसे राखने नाहीं । सेवा अपने हाथ अपने हाथ सों करनी । कदाचित् कोई बाहिर कौ काम आइ परे तो (श्रीठाकुरजी कों) बेगि पहोंचि कै जईए ।

वार्ता प्रसंग-३

और एक दिन श्रीगोकुलचंद्रमाजी ने कान्हबाई सों कह्यो, जो-मोकों तेरी खाट पर नीको लागत है । तातें मैं तेरी खाट पर सोउंगो । तब कान्हबाई ने कह्यो, जो-महाराज ! मेरी खाट पैं कम्मर बिछ्यो है, सो तिहारे श्रीअंग में चुभेगो। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी ने कान्हबाई सों कह्यो, जो अरी कान्हबाई!

मोकों मेरी सैया में कछू खूंचत है। तब कान्हबाई ने सवारे जाँइ के श्रीगुसांईजी सों कही, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सैया में कछु है। सो श्रीठाकुरजी के श्रीअंगमें खूंचत है। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सुपेदी खोली। तब वाके भीतर बनोरा निकस्यो। सो वा दिन तें सावधान होइ कै श्रीठाकुरजी की सैया सम्हारन लागे। तब कान्हबाई अपने हाथ सों रुई सम्हारि कै सुपेदी करती। तातें कान्हबाई को ऐसो संबंध हतो। सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

भावप्रकाश—यामें यह जतायो, जो-सेवा बोहोत सावधानी सों करनी।

वार्ता प्रसंग-४

और एक समै कान्हबाई श्रीगुसांईजी के इहां श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कों गई। सो ता समय श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलत हते। सो ताही समय श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कों कान्हबाई गई। तब देखे तो पालने के पास कोई नाहीं है। श्रीनवनीतप्रियजी अकेले पालने झूलत हैं। तब श्रीगिरिधरजी आप तो कछु सामग्री लेन कों भीतर गए हते। तब कान्हबाई श्रीनवनीतप्रियजी के पालने की डोरी पकरि कै झुलावन लागी। सो ताही समय भीतरिया आयो। सो-कान्हबाई कों देखी। तब श्रीगिरिधरजी सों जाँइ कही, जो-कान्हबाई ने श्रीनवनीतप्रियजी कों पालने झुलाए। सो सुनि कै श्रीगिरिधरजी आए। तब कान्हबाई ने श्रीगिरिधरजी सों कह्यो, जो-काहू कों पालने

के पास राखि जाइये। लरिका तो बालक है, तातें अकेले डरपे।

भावप्रकाश — यह कहि यह जतायो, जो-श्रीठाकुरजी कों इकेले सर्वथा छोडने नाहीं।

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

वार्ता प्रसंग-५

बोहोरि एक समै श्रीगोकुलनाथजी श्रीगिरिधरजी सों कहे, जो-दादा ! आज्ञा देउ तो मैं यज्ञ करूं। तब श्रीगिरिधरजी ने यज्ञ की नाहीं करी। तब श्रीगोकुलनाथजी उहां तें फिरि आए। तब साम्हें कान्हबाई कों देखि कै श्रीगोकुलनाथजी ठाढ़े रहे। तब कान्हबाई ने पूछी, जो-वल्लभजी ! तुम कहां गए हते ? तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-मैं दादा के पास यज्ञ की पूछिवे गयो हतो, जो-तुम कहो तो यज्ञ करूं ? तब दादा ने यज्ञ की नाहीं करी है। तब कान्हबाई ने श्रीगोकुलनाथजी सों कह्यो, जो-यज्ञ के करे तें कहा होत है? ता पाछें फेरि कान्हबाई ने कह्यो, जो-वल्लभजी ! तुम यज्ञ मति करो।

भावप्रकाश —सो काहेतें ? जो-यज्ञ तें जीव-हिंसा होत हैं। सो ब्रज के जीव मरेंगे। तातें नाहीं किये।

तब श्रीगोकुलनाथजी ने यज्ञ की बात रहन दीनी।

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती।

वार्ता प्रसंग-६

और एक समय कान्हबाई के घर नित्य श्रीगुसांईजी पातरि

पठावते। सो श्रीकृष्णरायजी महाप्रसाद की पातरि लै कै नित्य जाते। सो एक दिन तनक पाँव के नीचे (जूठो?) पतौवा आयो। सो श्रीकृष्णरायजी देख्यो तो सही, परि मन में कछू ग्लानी न ल्याए। और श्रीकृष्णरायजी अपने मन में बिचार कियो, जो-कान्हबाई के तो कछू आचार-बिचार है नाहीं। सो ऐसें मन में बिचारि कै कान्हबाई के घर पातरि धरि आए। सो वह पातरि कान्हबाई ने श्रीठाकुरजी के आगें धरी। तब श्रीठाकुरजी कान्हबाई सों कहे, जो-अरी कान्हबाई! पातरि तो छूई गई। तातें हों तो नाहीं आरोग्यो हूं। तब कान्हबाई ने तत्काल रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों आरोगाए। पाछें कान्हबाई श्रीकृष्णरायजी सों खीझी, जो-तुम्हारे पाँव के नीचे पतौवा आयो हतो, सो तुम छूई पातरि मेरे घर में काहे कों धरी? आज मेरो लालजी भूखो रह्यो है। तातें आज तें तुम मेरी पातरि मति ल्यायो करो। ऐसे बहोत खीझी। तब श्रीकृष्णरायजी विस्मित होइ रहे। और कहे, जो-यासों तो श्रीठाकुरजी साक्षात् बातें करत हैं। और हम तो आचार-बिचार देखन लागे।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीयन के आचार-बिचार देखने नाहीं। उनके तो भाव ही सों काम है।

पाछें श्रीकृष्णरायजी ने श्रीगोकुलनाथजी सों कह्यो, जो-कान्हबाई कों महाप्रसाद की पातरि पठावत हो, सो दोई तीन बेर करि कै श्रीठाकुरजी के आगें धरति है। तब

श्रीगोकुलनाथजी ने कान्हबाई सों पूछी, जो कान्हबाई! तू पातरि श्रीठाकुरजी आगें दोई चारि बेर धरति है ? तब कान्हबाई ने कही, जो-महाराज ! पातरि श्रीठाकुरजी के आगें धरति हों। सो श्रीगुसांईजी ने पूछी हती। और फेरि पातरि के ऊपर बैठे तो कहा भयो ? तब श्रीगोकुलनाथजी यह बचन सुनि के चुप होइ रहे। काहेतें, जो-श्रीठाकुरजी कान्हबाई कों साक्षात् अनुभव जनावते।

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१६९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक भीष्मदास क्षत्री, पूरब के बासी तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश—ये राजस भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'दृढव्रता' है। ये 'ब्रजबिलासिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये पूरब में एक द्रव्यपात्र क्षत्री के जन्मे। सो बरस बीस के भए तब माँबाप ने इनको ब्याह कियो। सो स्त्री सुपात्र मिली, दैवी। पाछें कछुक दिन में माँबाप मरे। तब भीष्मदास सगरो द्रव्य ले अपनी स्त्री, कुटुंबसहित यात्रा कों चले। सो पूरब के वैष्णवन को एक संग श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दरसन कों जात हतो। सो वा संग के साथ ये हू चले।

वार्ता प्रसंग-१

सो वह पूरब को साथ श्रीगुसांईजी के तथा श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के दरसन कों आयो। सो ता साथ में भीष्मदास क्षत्री हू श्रीगोकुल आए। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप तो

श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में हते। और संध्यार्ति कौ समय हतो। तब सब वैष्णवन ने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। ता पाछें वे सब वैष्णव अपने डेरा गए। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर कराय कै अपनी बैठक में पधारे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो सब वैष्णव ने दरसन करि कै अपनी अपनी यथाशक्ति भेट करी। तब तहां बैठे। तब श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवन कों यह आज्ञा किए, जो जा-जाऊ, महाप्रसाद लेऊ। तब श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में सब वैष्णवन ने महाप्रसाद लियो। सो अति अद्भुत सेनभोग को महाप्रसाद लेकै सब वैष्णव आनंद में अति प्रसन्न भए। ता पाछें सब श्रीगुसांईजी आप प्रसादी बीड़ा श्रीहस्त सों सबन कों दिये। तब सब वैष्णव दंडवत करि के अपने डेरा गए। तब अपने मन में बिचारि कै भीष्मदास ने कह्यो, जो-कब प्रातःकाल होई और कब मैं सरनि जाऊं ? तब इतने में प्रातःकाल भयो। तब श्रीगुसांईजी आप स्नान करि के मंदिर में पधारे। तब भीष्मदास हू सब कुटुंब सहित तहां गए। तब श्रीगुसांईजी स्नान करि संध्यावंदन करि कै बिराजे हते। ता समै हाथ जोरि कै भीष्मदास ने बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! हमकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आपने कृपा करि कै भीष्मदास और भीष्मदास के कुटुंब कों नाम सुनायो। और निवेदन की आज्ञा किये, जो-तुम काल्हि

ब्रत करो । ता पाछें निवेदन करावेंगे । तब दूसरे दिन सब कुटुंब सहित भीष्मदास उपवास किये । ता पाछें श्रीनवनीत-प्रियजी के सानिध्य ब्रह्मसंबंध करवायो । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम इहांई रहियो। पाछें श्रीगुसांईजी मंदिर में पधारे । सो श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग आर्ति किये । सो सब वैष्णवन कों दरसन करवाए। तब उन वैष्णवन ने और भीष्मदास ने दरसन किये । सो दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए । तब सब वैष्णव अपने डेरा आए । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अनोसर कराय कै अपनी बैठक में पधारे । तब भीष्मदास और सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तब साष्टांग दंडवत् करि कै बैठे । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे । तब सब वैष्णव अपने डेरा कों गए । फेरि भीष्मदास तों ऊहांई रहे । अपने कुटुंबसहित । पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोजन करि कै उठे, तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों खवास कों कहे, जो-भीष्मदास कों बुलावो। तब भीष्मदास आए । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम आज सब कुटुंब सहित महाप्रसाद इहांई लेऊ । तब भीष्मदास और उनके कुटुंब कों महाप्रसाद की पातरि धरी, सो सबनने महाप्रसाद लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़ें । तब भीष्मदास अपने डेरा आए। पाछें श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करि कै उठे । सो उत्थान कौ समय भयो । तब श्रीगुसांईजी स्नान करि कै मंदिर-में पधारे।

सो उत्थापन किये । ता पाछें सेन पर्यंत सब सेवातें पहोंचि कै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे । तब श्रीगुसांईजी के दरसन कों सब वैष्णव आए । सो दंडवत् करि कै बैठे । ता समै श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों आज्ञा किये, जो-काल्हि हम गोपालपुर चलेंगे । पाछें प्रातःकाल भयो । तब मंगला आर्ति करि कै श्रीगुसांईजी नाव मँगाए । तब नाव में बैठि कै पार उतरि कै श्रीगुसांईजी मथुराजी आए । सो तहां विश्रांतघाट स्नान करि कै श्रीगुसांईजी बैठक में भोग धरें । संध्यावंदन करि कै पाछें श्रीगुसांईजी असवार होई कै श्रीगोवर्द्धन पधारे। सो गोपालपुर आए । सो ता समै श्रीगोवर्द्धननाथजी की संध्यार्ति कौ समै हतो । सो आप तो स्नान करि कै मंदिर में पधारे । तब साथ के सब वैष्णवन ने संध्यार्ति के दरसन किये । तब सब वैष्णव दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए । तब सेन आर्ति करि कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए । तब साष्टांग दंडवत् करि कै बैठे । तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन कों पूछो, जो-वैष्णव ! तुमने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किए ? तब वैष्णव बोले, जो-महाराजाधिराज ! आपकी कृपा तें किये । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-रात्रि कों श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ सेन भोग को महाप्रसाद लीजो । पाछें सेन आर्ति पाछें सबन कों महाप्रसाद लिवायो । सो महाप्रसाद अति अद्भुत हतो । सो सब वैष्णव

महाप्रसाद लेके आनंद पाए। और कहन लागे, जो-धन्य हमारे भाग्य हैं, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ऐसो प्रसाद दिए। पाछें महाप्रसाद ले कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै सब वैष्णव अपने-अपने डेरा आए। और श्रीगुसांईजी आप पोढ़े। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब श्रीगुसांईजी आप जागे। सो देहकृत्य करि दंतधावन करि स्नान करि श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। सो मंगला आर्ति किये। तब सब वैष्णवन ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किए। पाछें सब वैष्णव श्रीगिरिराजजी की परिक्रमा कों गए। तब परिक्रमा करि आय कै राजभोग आर्ति के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब हमारो सबन को मनोरथ है, जो-ब्रजयात्रा करें। सो आप आज्ञा करो सो हम करे। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए , जो-ब्रजयात्रा तो अवश्य करि चाहिये। तब श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान ब्रजयात्रा किए। पाछें श्रीगोकुल आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन किये। ता पाछें सब वैष्णव अपने डेरा गए। तब श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। सो साष्टांग दंडवत् करि कै बैठे। तब ता समय उन वैष्णवन तें श्रीगुसांईजी पूछे, जो-तुम ब्रजयात्रा करि आए ? तब सब वैष्णवन ने हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो-महाराज की कृपा सों ब्रजयात्रा भली भाँति

सों करि आए । सो ऐसें कहि कै दंडवत करि कै अपुने डेरा आए । पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि कै पौढें। तब वह संग कितनेक दिन श्रीगोकुल रह्यो । पाछें एक दिन सब वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों विनती करी, जो-महाराज ! आज्ञा होई तो अपने देस कों जाँइ । तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन कों बिदा किये । सो सब बिदा होंइ कै तहां तें चले। और भीष्मदास तो श्रीगोकुल ही में रहे । सो श्रीगुसांईजी के दरसन करिवे कों आये। तब श्रीगुसांईजी पूछे जो भीष्मदास! तुम अपने देस कों न गए ? तब भीष्मदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि, जो-महाराज ! अब तो आप के चरनकमल छोरि कै कहूं न जाउंगो । पाछे भीष्मदास कुटुंब सहित श्रीगोकुल में ही रहे। तब उनके माथे श्रीगुसांईजी बालमुकुंदजी की सेवा पधराए। सो वे बोहोत प्रीति सों सेवा करते। तब एक समय श्री ठाकुरजी भीष्मदास कों स्वप्न में यह आज्ञा किए, जो-मंदिर आछौ बनवाय कै तामें मोकों पधराव । तब भीष्मदास प्रातःकाल उठि कै श्रीठाकुरजी कौ मंदिर सिद्ध करवावन लागे । सो कितनेक दिन में मंदिर सिद्ध भयो। तब ठाकुरजी कों नये मंदिर में पधराये । सों बड़े आनंद सों ता दिन उत्सव कियो । तब वैष्णव कों महाप्रसाद लिवायो। तब ये समाचार श्रीगुसांईजी सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए । तब भीष्मदास श्रीगुसांईजी के दरसन को आए। तब श्रीगुसांईजी ने भीष्मदास सों पूछी,

जो-आज तेरे कहा उत्सव है ? तब भीष्मदास ने श्रीगुसाईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! श्री ठाकुर जी आप कहें, जो- मोकों दूसरो मंदिर बनवाय देऊ। तब आज्ञा प्रमान मंदिर सिद्ध करवायो। तब तहां श्री ठाकुर जी कों पधराए हैं। सो वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो है। यह सुनि कै श्री गुसांईजी भीष्मदास के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। और आप कहन लागे, जो -तुम श्रीठाकुर जी प्रसन्न होंई ऐसेई सेवा करियो। सो वे दोऊ स्त्री-पुरुष परम आनंद सों भगवत्सेवा करते। सों उन सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। और जो चाहिए सो मांग लेते। बातें करते। बोहोत कृपा करतें। सो वे भीष्मदास बोहोत स्नेह संयुक्त सेवा करते। सो श्री गोकुल छोरि कै कहूं न गए। और सांझ के समै नित्य 'रमनस्थल' जाते। सो उहां रमनरेती में रास कौ दरसन होतो। परि वे काहू सों कहते नाहीं।

भावप्रकाश -यामें यह जतायो, जो-वैष्णव कों गोप्य रीति सों रहनो। काहू के आगे अपने अनुभव की बात करनी नाहीं।

सो वे भीष्मदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए। वार्ता।। १७०।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक नारायणदास पांडे, सनोढिया ब्राह्मण, आन्योर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - सात्विक भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'नारायणी' है। ये 'ब्रजबिलासिनी' तें प्रगटी है। तातें उनके भावरूप है। ये आन्योर में एक सनाढ्य

ब्राह्मन के जन्मे । सो वह ब्राह्मन सदू पांडे के कुटुंब कौ हतो । सो नारायण पांडे बरस बीस बाईस के भए । तब इनके माता-पिता मरे।

वार्ता प्रसंग-१

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें आन्योर पधारे हते। तब नारायणदास पांडे ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो साक्षात् श्रीपूरनपुरुषोत्तम के दरसन भए। तब नारायणदास ने अपने मन में विचार कियो, जो -ये तो साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर श्रीनंदकुमार दीसत हैं। सो ताही तें इनकी सरनि जैये तो आछो है। तब नारायणदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आप कृपा करि कै नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो तुम स्नान करि आवो। तुम कों नाम सुनावेंगे। तब नारायणदास गोविन्दकुंड में स्नान करि कै श्रीगुसांईजी आपके आगे आय ठाड़े भए। तब नारायणदास कों श्रीगुसांई जी आपने कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करवाय कै निवेदन कराए। ता पाछें नारायणदास पांडे कों कृपा करि श्रीगोवर्द्धननाथजी के अलौकिक दरसन करवाए। सो दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु स्नान करि कै मंदिर में पधारे। सो सेवा सिंगार करि कै श्रीठाकुरजी कों राजभोग समर्प्यो। ता पाछें भोग सराय आर्ति करि कै अनोसर करवाय कै पाछें श्रीगुसांईजी आप गिरिराज तें नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी-तकियान के ऊपर बिराजे। तब नारायनदास पांडे सों

श्रीगुसांईजी कहे जो-उठो महाप्रसाद लेऊ। पाछें श्रीगुसांईजीने नारायनदास कों महाप्रसाद लिवायो। और श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै बीड़ा आरोगिके पोढ़ें। सो श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करि कै उठे। पाछें उत्थापन कौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धन- नाथजी के मंदिर में पधारे । तब संखनाद करवाये। ता पाछें सेन पर्यंत सब सेवा सों पहोंचि कै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी-तकियान के ऊपर बिराजे। सो कितनेक दिन तांई उहां रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। तब नारानदास पांडे सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो-तू पीछे आइयो। जो-हम सवारे श्रीनवनीत- प्रियजी की सेवा सों पहोंचेंगे। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिदा होंइ कै श्रीगोकुल कों पधारे। तब नारायनदास पाछें पाछें आइ पहोंचे। सो श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे। सो सेवा-सिंगार करि कै राजभोग धरि, आर्ति करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन नारायनदास पांडे कों करवाए। तब नारायनदास दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें अनोसर करवाय कै श्रीगुसांईजी के दरसन को आए। सो साष्टांग दंडवत् किये। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों आज्ञा किए, जो-नारायनदास महाप्रसाद इहांई लीजियो। तब श्रीगुसांईजी आप सब बालकन सहित भोजन

किये। पाछें आचमन करि बीड़ा आरोगि कै ता पाछें नारायनदास कों महाप्रसाद की पातरि धरी। सो नारायनदास ने महाप्रसाद लियो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारें, पाछें आप पोढ़ें। तब छिनक विश्राम करिकै श्रीगुसांईजी आप जागे। सो देखें, तो नारायनदास ठाढ़े पंखा करत है। तब श्रीगुसांईजी आप नारायनदास के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए, जो-नारायनदास ! बेठो। हारि गए होउगे। सो याही भांति सों नारायनदास ने बोहोत दिन लों सेवा कीनी। सो श्रीगोकुल छोरि कै कहूं न गए। सो नारायनदास पांडे ने देह छोड़ी तहां तांई कहूं न गए। जो-श्रीगुसांईजी आपकी सेवा में तत्पर रहे। तब श्रीनवनीतप्रियजी नारायनदास पांडे कों अनुभव जतावन लागे।

भावप्रकाश—या वार्ता में गुरु के आश्रय को स्वरूप दिखाये। जो-वैष्णव कों या प्रकार गुरु को आश्रय दृढ होंइ तो श्रीठाकुरजी आपही तें अनुभव जतावे।

सो वे नारायनदास पांडे श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की बार्ता कहां तांई कहिये।

वार्ता ॥१७१॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक ब्राह्मन, दक्षिण भावनगर कौ बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश—ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'कृष्णानुचरी' है। ये श्रीगोकुल के 'बानर' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये दक्षिन में भावनगर गाम है, तहां एक ब्राह्मन के जन्मे। सो बरस आठ के भए। तब पिताने इनकों एक पंडित के उहां पढ़िवे कों बैठाए। सो ये वेद के मंत्र पढे। उच्चार सुद्ध करे। परि इनको अर्थ को बोध भयो नाहीं। पाछें माता-पिता

मरे। तब ये माता-पिता की अस्थी ले कै सोरोंजी आए । तहां गंगाजी में अस्थी कों डारे । पाछें उहांई रहे । काहे तें, जो-घर में कोऊ हतो नाहीं । सो वेद-पाठ करि श्रीगंगाजी के किनारे अपनो निर्वाह करन लागे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी सोरोंजी पधारे हते । तब तहां एक ब्राह्मन श्रीभागवत कौ पाठ करन लाग्यो । तब श्रीगुसांईजी आप कों वाकौ पाठ सुनि कै दया आई । जो-यह ब्राह्मन पाठ भलो करत है, परंतु याकों ज्ञान नहीं है । तातें इन को निजधर्म बताईये तो भलो है । सो यह श्रीगुसांईजी आप अपने मन में बिचारतही वा ब्राह्मन को ज्ञान भयो । सो श्रीगुसांईजी के दरसन वा ब्राह्मन को साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्य के भये । सो दरसन करत ही अपने मन में कह्यो, जो-मैं इनकी सरनि जाऊं तो बोहोत भली बात है। सो ताही समै आय के श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि कै वह ब्राह्मन दोऊ हाथ जोरि कै बिनती करन लाग्यो, जो- महाराजाधिराज! कृपा करि कै मोकों अपनो दास करिए। तब श्रीगुसांईजी आपुने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो । पाछें निवेदन करवाए । तब वा ब्राह्मन की बुद्धि निर्मल भई। सो नित्य श्रीगुसांईजी आप के श्रीमुख तें श्रीभागवत कौ पाठ तथा कथा सुनन लाग्यो । पाछें गोपालपुर आई, भलो वैष्णव कृपापात्र भयो।

वार्ता प्रसंग - २

ता पाछें एक दिन श्रीठाकुरजी आपुने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-यह ब्राह्मन पाठ आछौ करत है । सो या ब्राह्मन कों

कहो, जो-हमारे निजमंदिर आगें यह वेद-पाठ कर्यो करे। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो-भले। पाछें ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी आपुने कह्यो, जो-तू निजमंदिर के आगे नित्य पाठ करिबो करि। तब वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी आप तें कह्यो, जो-महाराज ! ऐसेही करूंगो। सो नित्य सिंगार के समै वह ब्राह्मन बैठि के राजभोग तांई पाठ करतो। सो श्रीठाकुरजी वा वैष्णव ऊपर प्रसन्न रहते। और श्रीगोवर्द्धन-नाथजी हू प्रसन्न रहते कदाचित् पाठ में भूल होंई तो आप जतावते। ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी आप करते। सो वह दैवी जीव ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१७२॥

भावप्रकाश—सो या वार्ता में यह जताए, जो-जिन कों श्रीगुसांईजी आप बिचारे तिनकों ब्रजमंडल की प्राप्ति होंई। अरू चारों पदारथ हू सिद्ध होंई। सो गोंपालदासजी गाए हैं —

" जेने श्रीविट्ठलनाथ विचारे रे, तेने प्रगट पदारथ चारे रे।
उपरांत भजन फल आपे रे, ब्रजमंडल स्थिर करी स्थापे रे॥"

सो या वैष्णव कों श्रीगुसांईजी की कृपा तें निज धर्म को ज्ञान भयो, अरू ब्रजबास हू भयो। ता उपरांत श्रीगोवर्द्धननाथजी आप साक्षात् अनुभव करावन लागे। सोई भजन को फल जानिए। तातें वैष्णव कों एक श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी को दृढ आश्रय राखनो। उनके बचन में विश्वास राखनो। तो सर्व फल की सिद्धि होंई।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक माधुरीदास माली, गोपालपुर को, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है—

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है। लीला में इनकौ नाम ' कलिका ' है। ये श्रीयमुनाजी के यूथ की है। ये श्रीगोकुल के'बानर' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गोपालपुर में एक माली के जन्म्यो। सो वह माली श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। सो वाने माधुरीदास हू कों श्रीगुसांईजी कौ सेवक करायो। सो माधुरीदास बड़ो भयो। तब वह पिता के संग बगीची में जाइवे लाग्यो। फल फूल सँवारे। इकट्ठे करि ताकों बेचि आवे। ऐसे तरत कछूक दिन में वाको पिता मर्यो। तब माधुरीदास सुतंत्र भए। सो ये नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जातो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन नित्य निरखि कै करतो। सौ जैसी माला-हार श्रीगोवर्द्धननाथजी आप धारन करें, तैसी माला-हार फूल के घर आइ बनावे। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां दे आवे। या प्रकार इन कौ मन श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में लग्यो हतो। सो बगीचा में फल-फूल होंई सो सब श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां दे आवे। आप सूकी लकड़ी बेचि निर्वाह करे। ऐसो प्रेम वाकौ श्रीगोवर्द्धननाथजी में भयो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी माधुरीदास पै बोहोत प्रसन्न भए। सो बगीची में पधारते। वाको दरसन देते। सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी बगीची में पधारे। ता समै माधुरीदास श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ हार करत हतो। सो वाने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पधारे जाने नाहीं। ऐसो सेवा में तन्मय भयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वाकी बाँहि पकरि कहे, जो-माधुरीदास ! ये हार या प्रकार करि। सो माधुरीदास कों चेत भयो। तब वाने, श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कह्यो ता प्रकार हार कर्यो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वा हार कों देखि कै बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी वासों कहे, जो-तू ये हार श्रीगुसांईजी कों दीजो। यों कहि आप तो मंदिर में पधारे।

वार्ता प्रसंग - १

सो माधुरीदास माली गोपालपुर में रहतो। सो एक समै वह माधुरीदास श्रीनाथजी के लिये फूलन कौ हार ले कै आयो हतो। सो वह हार श्रीगुसांईजी आप के आगें धर्यो। तब श्रीगुसांईजी आपने कृष्णदास अधिकारी कों दियो। और कह्यो, जो-भीतरिया कों देऊ। जो-श्रीनाथजी कों पहरावें।

तब भीतरियाने पहरायो । सो पूरो न आयो । तब फेरि कै श्रीगुसांईजी आपु सों आई के कह्यो, जो-महाराज! यह हार तो ओछो भयो । तातें आवत नाहीं । तब आप कहे, जो-फेरि पहरावो । तब फेरि पहरायो । तब बोहोत बड़ो भयो । तबहू न आयो । तब भीतरियाने कह्यो, जो-महाराज ! अब तो बड़ो भयो है। तब श्रीगुसांईजी आपु पधारे । तब हार पहरायो। तब पूरो भयो । तब श्रीगुसांईजी आप पूछे, जो बावा ! यह कहा कारन है ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-एक तो हों तुम्हारे बिनु रहि सकत नाहीं हों । दूसरो, या भांति को रत्न कौ हार करावो । तीसरो, मुखिया के मुख में तें बास आवत है । सो ता दिनतें सुगंधी लगाय बीड़ा खाय कै पाछें सेवा तें पहोंचन लागे । पाछें हार हू ऐसो करवायो सो श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए । सो वा हार को नाम अजहू ' माधुरीदास ' सगरे कहत हैं ।

भावप्रकाश—सो या वार्ता कौ भाव यह है, जो-वैष्णव कों सेवा बहोत सावधानी सों करनी । मुख तें बास आवे नाहीं । मलीन वस्त्र पहेरने नाहीं । सुगंधी अतर लगाय प्रभुन की सन्मुख जानो । प्रभुन कों साक्षात् जानि उनकी सेवा में तत्पर रहनो । और वस्त्र आदि नाप तें करने । छोटे बड़े न करने । या प्रकार साक्षात् जानि सेवा करे तो प्रभु अनुभव जतावे ।

सो उन माधुरीदास के ऊपर बड़ी ही कृपा हती । सो वे हार नित्य करन लागे । सो वे माधुरीदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय भए । तातें इनकी वार्ता को पार

नाहीं, सो कहां तांई कहिए । वार्ता ॥१७३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक धर्मदास ब्राह्मण, अडींग को, जाकों श्रीगुसांईजी नें आंखि दीनी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है । लीला में इन कौ नाम ' नयनप्रभा ' है । ये श्रीगोकुल के ' बानर ' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप है ।

ये अडींग में एक ब्राह्मन के जन्म्यो । सो कछूक दिन में सरीर में सीतला को उपद्रव भयो । तातें आंधरो भयो । सो माता-पिता बोहोत दुःख पावे, चिंता करे । ऐसे करत यह बरस पंद्रह-सत्रह को भयो । तब इनके माता-पिता मरे । तब ये मथुरा-गोवर्द्धन के मारग में बैठि भीख माँगन लाग्यो । सो, को-कछू आवे तामें निर्वाह करतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें श्रीनाथजी-द्वार पधारे हते। सो मार्ग में एक आंधरो ब्राह्मन बैठ्यो हतो। तब श्रीगुसांईजी के मन में दया आई, जो-बापड़ो आंखिनि बिना दुःखी है । सो ताही समै श्रीगुसांईजी की इच्छा तें वा ब्राह्मन की आंखि नीकी भई । और आछो देखन लाग्यो । तब देखे । सो कहन लाग्यो, जो-मोकों कहा भयो? ता पाछें प्रसन्न भयो । तब श्रीगुसांईजी आप देखें तो वह ब्राह्मन आछो भयो है । तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए । पाछें श्रीगुसांईजी मन में बिचारी, जो-याकों आंखिनि को सुख दिखाइए । तब वा ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी आप बुलाए। तब वह ब्राह्मन आयो। सो श्रीगुसांईजी को साष्टांग दंडवत् करि के पाँवन पर्‍यो । और बिनती करी, जो-महाराज ! आप मो पर बड़ी कृपा करी, जो

मोकों आपने आंखि दीनी। तब श्रीगुसांईजी आपनो वा ब्राह्मन सों कही, जो-तू हमारे साथ रहेगो ? तब वा ब्राह्मन ने कही, जो-महाराज ! मोकों और कहा चाहिए ? तब श्रीगुसांईजी आप वाकों संग ले कै पधारे। सो श्रीनाथजीद्वार आए । सो उत्थापन के समय पहोंचे । सो तत्काल स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। तब संखनाद करवाए। तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के कपोलन पै श्रीहस्त स्पर्स किये। और परस्पर कुसल पूछे । तब कहे, जो-भली करी, आंखि दीनी । अब सेवक करो । तब श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारि कै वा ब्राह्मन कों नाम दीनो । तब वाकों सुधि भई । जो-भलो भयो। तब ता दिन जेष्ठ सुदी दसमी हती । तब वा ब्राह्मन कों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-काल्हि तू निर्जल ब्रत करियो।

भावप्रकाश- काहे तें, जो आंधरो हतो। तातें खानपान कौ कछू बिचार रहतो नहीं। तातें निर्जला ब्रत करवाये।

तब वा ब्राह्मन ने निर्जल ब्रत कियो। तब द्वादसी के दिन वाकों ब्रह्मसंबंध करवायो। समर्पन किया। तब श्रीगुसांईजी आपने वा ब्राह्मन सों कही, जो-तू वैष्णवन सों चर्चा वार्ता सुनियो। तब वह ब्राह्मन वैष्णवन के मुख तें वार्ता - कीर्तन सुनन लाग्यो। पाछें वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोको कोई ग्रंथ सिखावो । तब श्रीगुसांईजी आप वा ब्राह्मन कों 'श्रीवल्लभाष्टक' सिखाए । तब वाकी बुद्धि निर्मल भई । और सब समझन लाग्यो । और श्रीगुसांईजी

आप वासों चरन-सेवा करवावन लागे। सो वाही कों वाकों अधिकार दीनो।

भावप्रकाश — यह कहि यह जताए, जो-'वल्लभाष्टक' कै पाठ किये ते श्रीआचार्यजी कौ स्वरूप हृदय में आवे। तब बुद्धि निर्मल होंई, एक निष्ठा हू होंई। और सगरो मारग स्फुरे। श्रीगुसांईजी के स्वरूप हू को बोध होई। तब प्रभु अपनो जानि या प्रकार दास-भाव को दान करे।

और वाकों श्रीनवनीतप्रियजी कौ महाप्रसाद देते। ता पाछें वाने देह छोड़ी। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-सेवा भली भांति करत हतो। तब श्रीगुसांईजी आपके पास श्रीबालकृष्णजी बैठे हते। तब श्रीगुसांईजी सों पूछे, जो-ऐसी सराहना क्यों करत हो ? जो वापें कृपा तो आपही ने कीनी। जो-वाकों आंखि दीनी। फेरि संग हू राख्यो, और सेवा हू करवाए ? तातें यह सब उपकार आप कौ है। सो सराहना करिवे कौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहें, जो-हम कों याकों देनो हतो। जो श्रीवसुदेवजी के घर हम प्रगट भए हते। तब याने पक्षपात कीनो हतो। कोन पक्ष? जो-यह कंस कौ खवास हतो। सो याने कही हती, जो-बेटा नहीं भयो, बेटी ही भई है। तब याकों कंस ने मार्‍यो हतो। याके लिये हमनें बड़ो मोह कियो। अब मुरारीदास (?) याकौ नाम होयगो, और हमारो खासा वैष्णव होइगो।

सो वे धर्मदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई

कहिए। वार्ता ॥१७४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव, दक्षिण को, लक्ष रुपैया कौ गुलाब कौ फूल ल्यायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त हैं। लीला में इनको नाम ' स्नेह प्रकाशिका' है। ये स्नेह को प्रकाश करति हैं। ये 'केतकी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भाव रूप हैं।

ये दक्षिन में पंढरपुर में एक मजलि उरे में एक गांव है, तहां एक क्षत्री के जन्म्यो। सो क्षत्री बहोत द्रव्यमान हतो। सो बेटा बरस तीसको भयो, तब वह मर्‍यो। सो याने ब्याह तो कियो नाहीं सुतंत्र रहे।

वार्ता प्रसंग — १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें दक्षिन कों पधारे हते। सो रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। समय भए भोग सराय आप भोजन किये। और सब ब्रजबासी टहलुवान कों महाप्रसाद लिवायो। तब वा क्षत्री कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोको सरनि लीजिए। मैं तो महा अपराधी जीव हों। तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो-तू स्नान करि कै आउ। तब हम तोकों नाम सुनाइ, सरनि लेइंगे। तब वह क्षत्री स्नान करि कै आयो ठाढ़ो भयो। सो बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों नाम सुनाइए। तब श्रीगुसांईजीने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो। पाछें दूसरे दिन ब्रत कराय निवेदन कराए। तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजी कों बोहोत भेट करी। पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी,

जो-महाराजाधिराज ! मोकों सेवा पधराय दीजिए । तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णव के माथे स्वरूप सेवा पधराय दिए । और सब सेवा की रीति-भांति सिखाई । और सखड़ी अनसखड़ी को सब प्रकार कह्यो । सो वा क्षत्री वैष्णवने सब सीख्यो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वेष्णव कों आज्ञा किये, जो-उत्तम तें उत्तम वस्तु श्रीप्रभुन कों समय पर अंगीकार कराइयो । तामें न्यूनता आवे नाही । ऐसें आप आज्ञा किए । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किए । सो आगें कों पधारें। सो दैवी जीवन कौ उद्धार करिवे कों । तब फेरि कितनेक दिन में आप श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजी कौ सेवा सिंगार करन लागे । और यह क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजी की सेवा भली-भांति सों करन लाग्यो। जगावतो, मंगला भोग धरतो । और उत्तम तें उत्तम आभरन पहरावतो । और समयानुसार सामग्री सिद्ध करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पतो । समय भए भोग सराय आर्ति करि अनोसर करि वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावतो । या प्रकार नित्य करतो । पाछें और सामग्री सिद्ध करि कै राखे, सो सेन में श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पे । पाछें भोग सराय श्रीठाकुरजी कों पोढ़ावे । अनोसर करि कै बाहिर आवे ।

और पुष्प फलादि बस्तू लेइ सौ अपने हाथ सों ले आवतो। और काहू तें न मंगावतो । कछू द्रव्य कौ संकोच न करतो ।

सो एक समै गुलाब को फूल एक प्रथम ही आयो हतो। तब याने देख्यो । सो माली सों वा क्षत्री वेष्णव ने कह्यो, जो-याकौ मोल कहा है ? सो इतने में एक मनुष्य और कोई ये उत्तम फूल देखि कै लेवे कों आयो । तब उनने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-ये पुष्प तो मैं लेउंगो । सो आपुस में चढत रुपैया १०) तथा रुपैया २०) तथा रुपैया १००) तथा रुपैया १०००) तथा रुपैया लक्ष लों बढ़े । तब तो वह मनुष्य पाछो फिर्‍यो । सो ऐसें, वैष्णव तो रुपैया लक्ष दे कै गुलाब कौ फूल ले कै आयो । सौ श्रीठाकुरजी को समर्पे । तब वह वैष्णव तो बोहोत प्रसन्न भयो। जो-मेरो बड़ो भाग्य है, जो-श्रीठाकुरजी फूल कों अंगीकार किये हैं ।

और उहां श्रीगुसांईजी आप ताही समै श्रीगोवर्द्धनाथजी कौ सिंगार करत हते । सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के मस्तक ऊपर गुलाब कौ फूल धर्‍यो है । सो फूल के भार सौं श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झुकि रहे हैं । सो ऐसी छबि देखि कै, दरसन करि कै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी सों पूछे, जो-बावा ! ऐसें क्यों झुकि रहे हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-फलानो अमूक गाम में तुम्हारो सेवक रहत है, सो वाने एक लक्ष रुपैया दे कै गुलाब कौ फूल ले कै समर्प्यो है । सो ताके भाव (भार) करि कै हम झुकि रहे हैं । सो वाकी वैष्णवता की कहां तांई सराहना करिए ? सो

ऐसें बचन श्रीगोवर्द्धननाथजी के सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करांये कै पर्वत तें नीचे पधारे। सो एक ब्रजबासी कों बुलाय कै एक पत्र वा वैष्णव के नाम कौ लिख कै वा ब्रजवासी कों समाचार दे कै बिदा किये। सो वह ब्रजबासी पत्र ले कै चल्यो। सो कितनेक दिन में वा गाम में जाय पहोंच्यो। सो वा वैष्णव कों श्रीगुसांईजी कौ पत्र दिये। सो वा वैष्णवने मांथे चढाय कै लियो। और बोहोत ही प्रसन्न भयो। श्रीगुसांईजी आप के हस्ताक्षर देखि कै साष्टांग दंडवत् कियो। और गाम के वैष्णव बुलाइ कै कीर्तन करवाए। ता पाछें सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। और वा ब्रजवासी कौ बोहोत समाधान किये। पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी कों पत्र लिख्यो, जो-महाराज ! यह सब आपही की कृपा तें भयो है। सो पत्र लिख कै वा ब्रजवासीं के हाथ में दियो। तब वह ब्रजवासी पत्र ले कै चल्यो। सो कितनेक दिन में श्रीगुसांईजी के पास आयो। और वह पत्र श्रीगुसांईजी के आगे धर्‍यो। सो पत्र श्रीगुसांईजी बांचि कै बोहोत प्रसन्न भए। जो-धन्य है, वा वैष्णव कौ भाग्य। जो-वाकौ समर्प्यो फूल श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु अंगीकार किये। सो वाके भाग्य को कहां तांई कहिए? सो या प्रकार श्रीमुख तें आप वा वैष्णव की बोहोत सराहना किए।

भावप्रकाश- या वार्ता में यह जताए, जो-वैष्णव अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा

श्रीगोवर्द्धननाथजी के समयानुसार करें, और श्रीगोवर्द्धननाथजी के भाव सों प्रीतिपूर्वक बस्तु समर्पे, तो श्रीगोवर्द्धननाथजी या प्रकार वा बस्तू कों साक्षात् अंगीकार करत हैं, अनुभव जतावत हैं। जैसे वा ब्राह्मन ने श्रीनाथजी के राजभोग के समय अपने घर बंगाले में श्रीनाथजी को ध्यान करि गुड़-बडा भोग धरे। तब श्रीनाथजी तत्काल अपनो राजभोग छोड़ि के उहां पधारे। ता भांति समय अनुसार भाव प्रीति पूर्वक जो कोऊ वैष्णव अपने घर श्रीगोवर्द्धननाथजी के भाव सों सेवा करत हैं, तिनकी समर्पी बस्तू या प्रकार आप तत्काल अंगीकार करत हैं, यह सिद्धांत जनायो।

और भगवत्सेवा में द्रव्य कों तुच्छ करि जाननो यहू कहे।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥१७५॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक मुकुंददास सेखड़ (क्षत्री), तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश- ये सात्विक भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'आराधिका' है। ये श्रीचंद्रावलीजी की सखी है। 'केतकी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये पूरव में एक क्षत्री के जन्मे। सो बरस बारह के भए। तब इनके माता-पिता मरे। पाछें केतेक दिन में ये यात्रा कों चले। सो प्रथम श्रीगोकुल आए।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय मुकुंददास सेखड़ श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आए हते। सो ठकुरानी घाट के ऊपर श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो साक्षात् श्रीपुरुनपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्य ऐसें दरसन भए। तब मुकुंददास सेखड़ ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! मोकों सरनि लीजिए। मैं बोहोत दिन तें भटकत डोलत हूं। तब आप आज्ञा किए जो-श्रीयमुनाजी में स्नान करि आओ। तब

मुकुंददास सेखड़ तत्काल श्रीयमुनाजी में स्नान करि आए। और दोऊ हाथ जोरि कै बिनती करी, जो-महाराज ! मो पर कृपा करि कै नाम देऊ। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै मुकुंददास सेखड़ कों नाम सुनाए। पाछें आप मंदिर में पधारे। तब श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान ब्रह्मसंबंध करवाए। तब मुकुंददास सेखड़ ने यथासक्ति भेट करी। ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किए। सो दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा तें पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। पाछें आपु भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै मुख-सुद्धार्थ आचमन करि कै पाछें मुकुंददास सेखड़ कों जूठनि की पातरि धरी। तब मुकुंददास ने महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी पास आइ दंडवत करि बैठे। तब श्रीगुसांईजी आप मुकुंददास सेखड़ कों अपनी खवासी में राखे। सो जहां आप पधारते तहां साथ रहते। सो श्रीगुसांईजी आप मुकुंददास सेखड़ के उपर सदैव प्रसन्न रहते। और कृपा करि कै मार्ग की गोप्य वार्ता होंई सो मुकुंददास सौं कहते। सो मुकुंददास श्रीगुसांईजी कों छोरि कै कहूं नाहीं गए।

भावप्रकाश- सो या वार्ता में यह जताए, जो-सेवक कों प्रभुन तें छिन एक न्यारो न रहनो।

सो वे मुकुंददास सेखड़ श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां ताई

कहिए। वार्ता ॥१७६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक राजा मानसिंघ दक्षिन के, जिनके एकसौ आठ रानी हती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश- ये राजस भक्त है। लीला में इनको नाम 'सूर्या' है। सूर्य जैसो इनको प्रकाश है। और 'सूर्या' की एक अंतरंगिनी सखी है। वाकौ नाम है 'तारिका'। सो इहां तेली की बेटी भई। ये दोऊ 'केतकी' तें प्रगटी है। तातें इनके भाव रूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो उन राजा मानसिंघ के एकसौ आठ रानी हती। तिन एक-एक के महल न्यारे-न्यारे हते। सो एक-एक महल में ओसरा सों राजा जातो। तब एकसौ आठ दिन में एक महल में ओसरा आवतो। परि बेटा बेटी काहू के न भयो। और बेटा बेटी के लिये तो राजा एकसौ आठ रानी ब्याह्यो। परि भाग में नाहीं। सो काहू के कछू भयो नाहीं। तब राजाने उपाय बोहोत किये। परि तऊ न भयो। सो वा राजा को दक्षिन कौ राज द्रव्य बोहोत। परि संतान न होंइ। सो तासों राजा बोहोत दुःखी भयो। तब दुःख करि कै राजा ने यह मनोरथ कियो, जो-श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करें। जो-श्रीजगन्नाथरायजी कृपा करें तो करे। तब दीवान सों कहीं जो-लसकर की तैयारी करो। जो-श्रीजगन्नाथरायजी जायेंगे। तब दीवान ने राजा को हुकुम मानि कै डेरा तंबू की तैयारी करी। तब तैयारी करि कै राजा सों कह्यो, जो-लसकर की तैयारी है। तब राजा एकसौ आठ डोला करि उनमें रानीन कों बैठाय कै लसकर ले कै

श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों चले। सो उहां आय पहोंचें। तब एक मैदान में राजा ने डेरा किये। फेरि सब रानीन कों ले कै श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन को आए। तब सब रानीन कों श्रीजगन्नानथरायजी के दरसन कराय कै डेरा कों पठाय दिए। पाछें राजा ठाढ़े ठाढ़े श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करत हुतो। तब श्रीगुसांईजी अड़ेल सों श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन को पधारे हते। तब उहां अपनी बैठक में बिराजे हते। तब राजा दरसन करत हुतो। ताही समय आप हू दरसन कों पधारे। सो आप हू श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करत हुते। पाछें राजा ने पण्ड्या सों पूछी, जो-ये कौन है ? तब पण्ड्या ने कही, जो-ये श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी हैं। तब राजा ने वाही समै दंडवत् करी। तब आप वाही समै कृपादृष्टि सों राजा कों देखे। सो देखत ही राजा तो मोहित भयो। सो आप दरसन करि कै पधारे तब राजा पीछें पीछे आपकी बैठक में चल्यो आयो। तब राजा ने दोई मोहोर दोई श्रीफल ले कै भेट धरे। तब आपने खवास सों आज्ञा करी, जो-राजा सों कहो, जो-हमारो सेवक होइ, वाकी भेंट हम अंगीकार करत हैं। बिना सेवक की नाहीं लेत। तब खवास नें राजा सों कही, जो-आप तो सेवक को अंगीकार करत हैं। बिना सेवक नाहीं लेत। तब राजा ने बिनती करी, जो-महाराज आप कृपा करि कै मोकों सेवक करिए। तब आपने कृपा करि कै वाही समय राजा कों

नाम सुनायो। फेरि राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! अब तो भेट अंगीकार करोगे ? अब मैं आप कौ सेवक भयो। तब आपने कृपा करि कै कंठी दीनी, जो राजा ! यह पहरि लेऊ। तब पहरि लीनी। तब आपने कृपा करि कै प्रसाद मँगायो। तब राजा ने माथें चढाय कै लियो। फेरि अपने डेरा में पठायो। पाछें राजा ने दंडवत् करि बिनती करी, जो-महाराज ! अब तो मैं जाँय कै महाप्रसाद लेऊंगो। और सांझ कों आप के पास आऊंगो। तब आपने आज्ञा कीनी, जो-बोहोत आछो। तब राजा डेरा आयो। तब डेरा आय कै महाप्रसाद लियो। पाछें फेरि सांझ कों असवारी भई, सो आय कै श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन किये। तब दरसन करि कै राजा श्रीगुसांईजी की बैठक में आयो। तब आपके आगें आय कै दंडवत् कीनी। तब आपने बैठवे की आज्ञा दीनी। तब राजा बैठे। तब आपने कथा कौ आरंभ कियो। सो कथा बांची। सो राजा ने श्रवन कियो। सो कथा में नाम-निवेदन कौ प्रसंग कह्यो। सो राजा ने सुन्यो। सुनि कै बिनती कीनी, जो-महाराज ! नाम तो सुनाए परि निवेदन करावो। तब आपने आज्ञा करी, जो-आछौ। राजा ! काल्हि ब्रत करो। परसों ब्रह्मसंबंध करावेंगे। तब राजा कों दूसरे दिन ब्रत करवाय कै तीसरे दिन ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब आपने आज्ञा करी, जो-राजा ! अब तुम्हारो

कहा मनोरथ है ? तब राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! मेरे संतान कोउ नाहीं है इनके काजें एकसौआठ रानी ब्याह्यो परि तोउ मेरे संतान न भई । सो या बात सों मैं बोहोत दुःखी भयो । पाछें मेरो मनोरथ भयो, जो-मैं श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करों । सो आपकी कृपा सों श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन भए और आपने कृपा करि कै दरसन दिये । सो मेरो अहोभाग्य । तातें अब आप जो आज्ञा करो सो मैं करूं । तब आपने आज्ञा करी, जो-राजा ! अब श्रीठाकुरजी पधराय कै सेवा करो । तब राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! बोहोत आछो । आप सेवा पधराय देउ । तब आप कृपा करि कै वाके माथे सेवा के लिये श्रीठाकुरजी पधराय दिये । सो श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप पधराय दिये । तब राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! भीतरिया दोइ तथा जलघरिया दोइ राखि दीजिए । तब आपने कृपा करि कै जलघरिया भीतरिया राखि दिये । सो दोई भीतरिया । सो एक तो सखड़ी करे । एक अनसखड़ी करे । जलघरिया दोइ, एक खासा को जल भरे, एक , सेवकी कौ जल भरे । और राजा कों श्रीठाकुरजी कौ सिंगार आपने करि कै बताय दियो । जो-या भांति सेवा करियो। और तो वाकी रीति-भांति भीतरियान ने राजा कों सिखाय दीनी । सो राजा श्रीठाकुरजी कौ सेवा-सिंगार सब करे। पाछें राजा ने एक सौ आठ रानी सबन सों पूछी, जो-तुम

कोऊ श्रीगुसांईजी की सेवक होइंगी ? तब सबन ने नाहीं करी। जो-हम तो सेवक न होइंगी। जो-हम और पुरुष पास जाइ कै कान न धरेंगी। तब राजा श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। आय कै दंडवत् करी। पाछें बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे एक सौ आठ रानी हैं। सो मैनें सबन सों पूछी। परि कोई आपकी सेवक न भई। तब आपने आज्ञा करी, जो-राजा! जो जीव आसुरी होंई ते सरनि नहीं आवे। तातें तुम दैवी जीव हो सो सहज ही में सरनि आए और सेवा करन लागे। ता पाछें राजा श्रीगुसांईजी सों बिदा भए। और आज्ञा मांगी, जो-महाराज ! अब आज्ञा होंई तो अपने देस दच्छिन में जायँ। तब आपने आज्ञा दीनी, जो-अब तुम अपने देस में जाँई कै श्रीठाकुरजी की सेवा करो। और राजा ! अब तू एक रानी और ब्याहेगो। सो तेरे सेवा में अनुकूल होइगी।

भावप्रकाश- काहे तें ? ए लीला की जीव है। तेरे उनके पूर्व को संबंध दृढ है।

तब राजा प्रसन्न होई यथाशक्ति भेंट करि आज्ञा मांगि दंडवत् करि कै चले। सो कितनेक दिन में अपने देस आय पहोंचे। तब आय कै महल में श्रीठाकुरजी कों पधराय कै सेवा करन लागे। एकसौ आठ रानी हती सो तिनके पास राजा कबहू न जाँई।

भावप्रकाश- काहेतें ? जो-ये सब भगवद्विमुख हैं। तातें उन के पास जाइवें तें, उन के छिनक संग तें, बहिर्मुखता होंई। तातें मन सों त्याग किये। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किये हैं, 'तत्त्यागे दूषणं नास्ति यतः कृष्णबहिर्मुखाः'। यातें कृष्ण सों

जो बहिर्मुख है उन को त्याग पुष्टिमार्ग में दूषण नाहीं। सो राजा ने सब रानीन को या प्रकार त्याग कियो।

तब रानी सब बोहोत उदास में रहे। जो-राजाने हमारो त्याग कस्यो। सो रानी सब सूकि गई। और गहना कपड़ा द्रव्य बोहोत। परि चिंता के मारे रानी सब सूकि गई।

सो एक तेली की बेटी इन के महल के नीचे गोबर लेत हती। तहां रानी महल में गोरव में बेठी देखत हती। सो कैसी रूप-सुंदर देखी ! सो देखि कै रानी ने बुलाई, जो-तू हमारे महल में आऊ। तब बाने कह्यो, जो -मोकों महल में कौन आइवे देइगो ? तब रानी ने कही, जो-दासी कों पठावे हैं। सो तोकों बुलाय ले जायगी। तू ठाढ़ी रहि। तब रानी ने दासी कों पठाई, जो-वह गोबर वारी ठाढ़ी है। तोकों तू ले आउ। तब रानी पास वाकों दासी बुलाय कै ले आई। तब रानी ने पूछी, जो-तू कौन की बेटी है ? तब वाने कह्यो, जो-मैं तेली की बेटी हूं। तब रानी बोली, जो-तेली की बेटी ऐसी रूपवंती ? ऐसी पुष्ट? तासों तोकों ऐसों कहा सुख है ? तब तेली की बेटी बोली, जो-मोकों सुख है। तब तो मैं ऐसी पुष्ट हूं। फेरि तेली की बेटी ने कह्यो, जो-मेरे बापके मैं ही हूं। और कोई संतान नहीं है। तातें मोकों खाइवे, पीवे, पहरिवे कों, ओढिवे कों, जो मांगों सो मोकों देत है। तासों मैं बोहोत सुखी हूं। परि तुम राजा की रानी होई कै ऐसी सूकि रही हो ? सो तुम कों ऐसो कहा दुःख है ? तब रानी बोलीं, जो-तू बैठि, तोसों हमारो दुःख सब कहें।

तब रानीन ने कही, हम एकसौ-आठन कों राजा ब्याहे । परि बेटा-बेटी काहू के न भयो, तासों राजा बोहोत दुःखी भए । सो श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन राजा ने हम कों कराए । फेरि राजा श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो । तब हम सबन सों कह्यो, जो-तुम कोई श्रीगुसांईजी की सेवक होउगी ? तब हमने नाहीं करी । तासों राजा ने हमारो त्याग कियो है । यासों हम सब सूकी हैं । नाँतर पहरिवे ओढ़िवे की तो कछू कमी नाही है । परि कोई रानी के महल में राजा आवे नाहीं है । तब तेली की बेटी बोली, जो-तुम एक सौ आठ रानी हो, सो तुमसों एक राजा बस न भयो? जो-मैं ब्याहों तो मानसिंघ राजा कों ही ब्याहों, सो राजा कों बस करों । सो इतनो कहि कै वह अपन घर चली आई । सो आय कै अपने माबाप सों कही, जो-ऐसें ऐसें रानीन ने बुलाई और ऐसें ऐसें मेरे जुवाब-सवाल भए । और ऐसें मैं रानीन कों कहि आई हों, तासों मैं ब्याहोंगी तो मानसिंघ राजा, कों ही ब्याहोंगी । तब याकौ बाप बोल्यो, जो कहां मानसिंघ राजा, कहां तुम तेली की बेटी ! यह बात कैसें बनेंगी ? तब तेली की बेटी ने कह्यो, जो-बाबा ! यह बात ऐसी ही है, तासों तू मोसों गहना कपड़ा ल्याय दे । सो गहना कपड़ा पहरोंगी । और मानसिंघ राजा कों बस करोंगी । और मैं ब्याहोंगी । तब तुम को कछू द्रव्य की कमी नाहीं । तब तेली ने कही, जो-बेटी तोकों जो चहिए सो गहना कपड़ा पहरिवो

करि । तब या बेटी ने कह्यो, सो गहना कपड़ा सब ल्याय दियो। सो तेली की बेटी सब गहना कपड़ा पहरि कै एक टोकरा ले कै बन में ऊपरा बीनवे कों गई । तहां राजा श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाय बाग में जात हते । तहां गेल में उपरा बीनत हती। सो राजा कों देखि कै दोऊ हाथ सों मुझरा कियो । पाछें राजा ने सन्मुख ठाढ़ी रही । मंद मुसकानि हसति जाँय । हाव-भाव कटाक्ष करति जाँय । सो राजा घोड़ा ठाढ़ो करिकै देखत ही रह्यो । पाछें राजाने पूछी, जो-तुम कौन हो ? तब कही, जो-मैं तेली की बेटी हूं । तब राजा ने इन कों बुलाई, जो-तू बाग में तो आउ । तब वह बाग में आई । और असवारी हूं बाग में आई । तब राजा ने इन कों एकांत में बुलाई । बुलाइ कै कही, जो-तेरो कहा मनोरथ है ? तब तेली की बेटी बोली, जो-मेरो यह मनोरथ है, जो-मैं ब्याहों तो तुम कों ब्याहों, नाँतर योंही रहों । तब राजा बोल्यो, जो-आछौ, ठीक है । मैं तोही कों ब्याहूंगो । तब राजा याकों सुखपाल में बैठाय कै अपने महल में ले गयो । तब जोतसीन कों बुलाय के ब्याह के मुहूर्त पूछ्यो। और ब्याह की तैयारी करी । बड़ी धूमधाम सों ब्याह कर्‌यो । ब्याह करि कै निज महल जो राजा कौ हतो तामें राखी । तब राजा वाके महल में नित्य जाय, रात्रि कों उहांई सोवें । तब वह राजा के पांव दाबे । पंखा करे । सेवा-टहल बोहोत करे । तब राजा याके ऊपर बोहोत प्रसन्न रहे ।

भावप्रकाश- यामें सेवा को प्रभाव जताए, जो-याने सेवा करि कै राजा कों

प्रसन्न कियो । सो सेवा ऐसो पदार्थ है ।

तब राजा सों याने पूछी, जो-तुम श्रीगुसांईजी के सेवक हो और श्रीठाकुरजी की सेवा करो हो । सो मोकों हूं सेवक करावो, तो मैं सेवा में सहायक होऊं । तब राजा प्रसन्न भयो। जो-बोहोत आछो । तब राजा ने कासिद की जोड़ी तैयार करि पत्र लिखि के कासिद कों अड़ेल पठायो । सो पत्र में यह लिख्यो, जो-आपकी कृपा ते मैं रानी एक और ब्याहों हूं । सो आप याकों सेवक करो तो सेवा में सहायता होंई । परि आप कृपा करि कै श्रीजगन्नाथरायजी पधारो तो मैं दीवान कों संग दे के रानी को पठाऊं । यह बिनती कौ पत्र राजा ने लिख्यो। सो आप पत्र बांचि कै वाकौ प्रति उत्तर लिख्यो । जो - हम रथयात्रा कौ उत्सव श्रीजगन्नाथरायजी कौ आय करेंगे । तुम रानी कों दीवान कों श्रीजगन्नाथरायजी पठाओगे । हम रानी कों सेवक करेंगे । तब कासिद श्रीगुसांईजी कौ पत्र ले कै राजा के पास आयो । तब राजा ने पत्र बांच्यो । सो पत्र बांचि कै प्रसन्न भयो । तब दीवान कों बुलाई कै कह्यो, जो-श्रीजगन्नाथरायजी की तैयारी करो । तुम रानी कों ले कै संग जाऊ । तब दीवान ने सब तैयारी करी । तब रानी कों ले कै दीवान श्रीजगन्नाथरायजी आयो । तब श्रीगुसांइजी आप कृपा करि कै श्रीजगन्नाथरायजी पधारे । तब श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन रानी कों करवाए और दीवान ने किये । तब रानी कों तो डेरा में पठाई । और दीवान ने श्रीगुसांईजी के आगें आय

के दंडवत् करी। और बिनती करी, जो-महाराज ! मैं रानी कों ले कै आयो हूं। तातें कृपा करो। तब आपने दीवान सों आज्ञा करी, जो-रानी कों काल्हि तुम ब्रत करावो। परसों नाम-ब्रह्मसंबंध करावेंगे। तब दीवान ने बिनती करी, जो-महाराज ! मेरे ऊपर कृपा करो। तब आपने आज्ञा करी, जो-ठीक है। तुम हू ब्रत करो। तुम कों नाम - ब्रह्मसंबंध करावेंगे। तब दीवान ने बिनती करी, जो-महाराज! श्रीजगन्नाथरायजी कौ प्रसाद कोई ल्यावे तो वाकों लेवे की आज्ञा है? तब आपने आज्ञा करी, जो-कनिका महाप्रसाद लियो करो। पेट भरि के मति लेऊ। तब दीवान डेरा में गयो। जाय कै सबन सों कह्यो, जो-काल्हि ब्रत करियो। आपनो आज्ञा करी है, सो सेवक करेंगे। तब रानी तथा दीवान ने ब्रत कियो। ता पाछें दूसरे दिन दोऊन कों आपने कृपा करि कै नाम-ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें रानी ने श्रीगुसांईजी के आगे नाम ब्रह्मसबंध की भेट धरी। दीवान ने हू भेट धरी। पाछें आज्ञा मांगी। जो-महाराज। रानी कों सेवा में न्हवावे ? तब आपने आज्ञा दीनी, जो-अब सुखेन सेवा में न्हवावो। तब दीवान ने बिनती करी, जो-महाराज ! एक पत्र राजा कों लिखि दीजिए। जो-रानी कों, मोकों, सेवा में न्हवावें। तब श्रीगुसांईजी आप एक पत्र लिखि कै दीवान कों दियो। जो-जाऊ, तुम दोऊन कों राजा सेवा में न्हवावेगो। तब

कितनोक द्रव्य रानी ने भेट कियो । कितनोक दीवान ने भेट कियो । पाछें बिदा भए । तब श्रीगुसांईजी ने उपरेना उढ़ाए। पाछें श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि कै चले । सो अपने देस दक्षिन में आए । आइ कै रानी अपने महल में गई । दीवान, राजा के पास गयो । तब राजा ने सब समाचार पूछे। तब दीवान ने श्रीगुसांईजी तथा श्रीजगन्नाथरायजी के सब समाचार कहे । तब दीवान ने श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त कौ पत्र राजा कों दियो। तब राजा बांचि कै बोहोत प्रसन्न भयो । प्रसन्न होंइ कै राजा ने दीवान सों कही, जो-तेनें यह बोहोत आछो कियो । जो-श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आए । हम कों सेवा में सहायता भई । अब तुम सुखेन सेवा में न्हाओ । तब वैष्णव मंडली सब करि कै, प्रसाद सब बांटि कै, कंठी चरनामृत बांटि कै वैष्णवन की आज्ञा ले कै, रानी तथा दीवान कों सेवा में न्हवाए । तब राजा तो सेवा सिंगार सब करे । और दीवान राजा के आगें मंदिर में परचारगी करें। और रानी ने रात्रि कों राजा सों पूछ्यो, जो-हम कों कौनसी सेवा सोंपो हो ? तब राजा ने कही, जो-दूध घर की सेवा तुम करो । सो तुम्हारे हाथ को श्रीठाकुरजी सब आरोगेंगे। दोई भीतरिया है सो सखड़ी, अनसखड़ी करेंगे । और राजा जब सेवक भयो तब बीस पचीस इन की जाति कै श्रीगुसांईजी के सेवक राजा ने करवाए हते । सो सब सेवा में सहायता भई । कोई पानघर करें, कोई फूलघर करें, कोई

भंडार करें। कोई बाहिर सों सामग्री ल्यावे। सो ऐसें सब सेवा में तत्पर रहे। राजा के यहां। तब श्रीठाकुरजी के आरोगे पाछें सब महाप्रसाद लेई। वैष्णव आवे, सो कोई सखड़ी लेई, कोई अनसखड़ी लेई। कोई दूधघर की सामग्री लेई। तिन सबन कौ समाधान राजा करे। ता पाछें दीवान और राजा महाप्रसाद लेई। पाछें दीवान और राजा राज कौ काम करते। पाछें राजा उठि कै उत्थापन के समै न्हाय। तब दीवान हू न्हाय। तब दोऊ मिलि कै उत्थापन तें सेन पर्यंत सेवा में पहोंचि कै श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाई कै बाहिर आवें। पाछें महाप्रसाद ले कै राजा और दीवान दोऊ राजकाज करे। फेरि रात्रि कों राजा रानी के पास जाँय। सो राजा कहे, जो-दूधघर की सामग्री तुम बोहोत सुंदर करत हों। आछी सेवा करो हो। सो या वैष्णव रानी के पास राजा नित्य जाँई, सोवे, बैठे। सो या रानी ने राजा कों प्रसन्न किये। सो सेवा करि कै प्रसन्न किए।

सो एकसौ-आठ रानी हती, सो या वैष्णव रानी तें बोहोत ईर्षा करती। जो-हम राजा की बेटी, हम राजा की रानी, सो हमतें राजा बस न भयो। और या तेली की बेटी ने बस करि लियो। सो तेली की बेटी मिले तो दोई बात तो करें। सो कोई एक दिन तेली की बेटी कौ महल हो सो खूट्यो हो। सो दोई चारि रानी महल में गई। तब तेली की बेटी सों कही, जो-तोकों स्याबास है, जो-तैनें राजा कों बस करि लियो। तब तेली की

बेटी बोली, जो-मैं तुम सों कह्यो हो सोई भयो। तब उन रानीन ने प्रसन्न होइ के कह्यो, जो-तू बड़ी बहनि हैं हम छोटी हैं। तासों कछू राजा सों हमारी हू अरज करि, जो-राजा ने हमारो त्याग कियो है। तातें अब राजा कहे सो हम करें। तब वाने कही, जो-हम कहेंगे। तब उन रानीन ने यासों कही, जो-हम एकसौ आठ हैं तिन में तू बड़ी हैं। तातें कोई बेर हमारे पास आयो करि। तब याने कही, जो-जब मेरो अवकास होइगो तब मैं तुम्हारे पास आउंगी। तब उनने कही, जो-हम एकसौ आठ सब तुम्हारे पास आवें। जब तुम्हारो अवकास होंई तब आवें। तब याने कही, जो-जब मेरो अवकास होइगो तब में बुलाइ लेउंगी, पाछें। तब रानी ने कही, जो-अब तुम जाओ, मैं सेवा में न्हाउंगी। तब वे गई। तब ये सेवा में न्हाई। पाछें दूधघर की सामग्री सब सिद्ध करी। केसरी सामग्री सब सोना के डबरा में साजे। और सुफेद सामग्री रूपा के डबरा में साजें। सो पात्र को, सामग्री को, एक ही रंग देखिवे में आवें। या प्रकार तेली की बेटी ने सेवा करि कै राजा कों बस करि लियो। जब रात्रि कों राजा रानी के पास जाइ तब बोहोत बड़ाई करें। रानी तें कहे, जो-मैं एकसौ आठन के बस न भयो। परि तेरे बस भयो। सो तू सेवा बोहोत आछी करत है। या भांति बोहोत बड़ाई करे। और राजा नौतन सामग्री नौतन वस्त्र और द्रव्य की हुंडी वर्ष के वर्ष श्रीगुसांईजी कों पठावते। और

श्रीठाकुरजी की सेवा हू भली भांति सों करते । सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे । और चहिए सो मांगि लेते । सो वे राजा मानसिंघ श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए? वार्ता ॥१७७॥

भावप्रकाश- या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-स्त्री, पुत्र, माता-पिता जो कोऊ अवैष्णव होंई ताकौ संग सर्वथा न करें । तिन पर प्रीति हू न राखें । और वैष्णव कों सेवा ही बड़ो पदार्थ हैं । तातें जो कोऊ भगवत्सेवा में सहाय होंइ ता पर प्रीति राखे । और सेवा बिनु छिन एक रहे नाहीं । यह सिद्धांत जताए ।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक कबूतर-कबूतरनी हते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश- ये दोऊ सात्विक भक्त हैं । लीला में हू ये कबूतर-कबूतरनी हैं । ये श्रीचंद्रावलीजी कों बहोत प्रिय हैं । काहेंते ? जो-ये श्रीठाकुरजी तथा श्रीस्वामिनीजी दोऊन कों गुप्त प्रीति के समाचार पहुँचावत हैं । भाव के पोषक हैं । तातें श्रीचंद्रावलीजी इन दोऊन कों बोहोत लाड लडावत हैं । सो दोऊन के नाम धरे हैं । सो कबूतर कौ नाम 'प्रीतिनिवाहक' है, और कबूतरनी को नाम 'प्रीतमगमनी' है । वे दोऊ 'सुनंदा' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें गुजराति कों पधारत हुते । सो मही नदी बीच में आई । सो भरपूरि आई । सो राति दिना उतराइ न देय । तब मही नदी के कांठे ही डेरा किये । तब दूसरे दिन सवेरे रसोई भई और भोग आयो । तब श्रीगुसांईजी आपु भोग धरि कै बिराजे । संध्या जप-पाठ करत हुते । तब भीतरिया ने आय कै कही, जो-महाराज ! भोग

सरावो । समय भयो है । तब आपने आज्ञा करी, जो-तुम ही सरावो । तब भीतरिया ने कही, जो-महाराज ! यह कहा ? हम कैसें सरावेंगे ? तब आपने आज्ञा करी, जो-आज हमारे भोजन नाहीं करनो है । तब भीतरिया पूछे ऐसो क्यों ? तब आपने आज्ञा करी, जो-आज कोई जीव सरनि नाहीं आयो है।

भावप्रकाश- कह कहि यह जताये, जो-हमारो प्रागट्य दैवी जीवन के उद्धारार्थ है । तातें एक हूं दैवी जीव सरनि आवे तो हम भोजन करें। नाँतर-वह दिन वृथा जाँय। तातें भोजन की नाहीं किये ।

तब अधिकारी भंडारी सब बैठे हते । तिनने बिनती करी, जो-महाराज ! यहां कौन है ? कोई गाम हू नाहीं । तासों महाराज! यहां कौन है, सो सरनि आवे ? तब आपने आज्ञा करी, जो-इहां कोई पसु-पंछी हू नाहीं है कहा ? तब खवास ने कही, जो-महाराज ! सो तो हाजिर है । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो वाकों ल्यावो । तब खवास ने भंडारी पास उठि कै चुगो मँगायो। सो कबूतर-कबूतरनी कों डार्‍यो । सो चुगो चुगते चुगते आपके आगे आय गए । सो उहां चुगा कों लगि गये । तब आपने कृपा करि कै दोऊ कबूतर-कबूतरनी कों नाम सुनायो । तब दोऊन कों अपने स्वरूप कौ ज्ञान भयो । सब बातें जानिवे लगे । ता पाछें आप तो उहां तें उठि कै भीतर पधारे । भोग सरायो । पाछें भोजन किये । तब भोजन करि कै आप बाहिर पधारे । और कही, जो देखो ! नदी उतरी है

के नाहीं ? तब मनुष्य देखिवे कों गए । पाछें कही, जो-महाराज! उतरे है । सो अब सांझ ताई उतरि जाइगी । तब आपने कही, जो-तैयारी राखो । सांझ तांई पार उतरि रहेंगे । तब सब तैयारी करी । तब सांझ कों नदी उतरी । तब पार उतरे । तब कोस दोई कोस पर एक गाम हतो । तहां डेरा किए। रात्रि कों बिराजे । पाछें सवारे उहां तें कूंच भयो । सो राजनगर पधारे । सो भाईला कोठारी के घर बिराजे । ता पाछें आप तो श्रीद्वारकाजी होंई कै श्रीगोकुल पधारे । तब वे कबूतर- कबूतरनी उड़ि कै कोई गाम में वैष्णव मंडली होत हती, तहां गए ।

भावप्रकाश- काहेतें ? जो-उन ने जान्यो, जो-हम लीला के जीव हैं । तातें भगवल्लीला-कीर्तन, श्रवन किये बिना इतने दिन हमारे वृथा गए । परि अब तो भगवद् गुणानुवाद सुनि कै कछु सुख लेईं। तातें वैष्णवन की मंडली में गए ।

तहां जाय वैष्णव मंडली में भगवद्वार्ता होत हती । तहां ऊपर बैठि कै सुनी । भगवद् वार्ता-कीर्तन किये सो सब सुने। पाछें वैष्णवन ने प्रसाद बांट्यो । तब कबूतर-कबूतरनी कों देखि कै वैष्णवन ने कही, जो-ये उड़े नहीं हैं । भगवद् वार्ता-कीर्तन सुने हैं । तब वैष्णवन ने इनके आगें प्रसाद धर्‍यो। सो चुगि गए । पाछें इनके ऊपर हाथ फिरायो । सो उड़े नाहीं। पाछें सब वैष्णव जैश्रीकृष्ण करि कै चले । तब कबूतर-कबूतरनी ने माथो नँवायो । उड़ि कै बाग-बगीचा में गए । तहां रूख हतो । सो तामें घोंसला करि कै रहे । सो उहां

कबूतर-कबूतरनी सों कहे, जो-आज आपुन ने यह वार्ता सुनी और कीर्तन सुने। सो ऐसें आपुस में वार्ता करे, कहे और सुने। फेरि रात्री कों तहां रहि कै सवेरे उड़ि कै जाय। सो चुगो करि आवे। फेरि आय कै माला में बैठे। फेरि रात्रि कों वैष्णव मंडली में आवे। तब ऊपर बैठि के भगवद्वार्ता कीर्तिन सुनते। तब वैष्णव उनके ऊपर हाथ फेरते। पुचकारते। परि उड़ते नाहीं। ता पाछें वैष्णव सब अपने अपने घर जाते। तब कबूतर-कबूतरनी अपने माला में जाते।

वार्ता प्रसंग - २

अब या गाम कौ एक राजा हतो सो वह कोढ़ी हतो। सो वाने बोहोत औषधि करी। बोहोत उपाय कियो। वैद्यन सों पूछ्यो। परि कोढ़ न गयो। तब एक वैद्य कोई दक्षिन कौ आय निकस्यो। सो वासों राजा ने बुलाय कै पूछी, जो-हमारो कोढ़ नाहीं मिटे है। सो कहा उपाय करें ? तब वा वैद्य ने कही, जो-राजा ! यह सहज कौ उपाय है। यामें कहा ? तब राजा ने कही, जो-उपाय करो तो कोढ़ मिटे। तब वैद्य ने कही, जो-एक कबूतर-कबूतरनी कौ जोड़ा पकरि कै पिंजरा में धरो। तब वाकों मारि कै औषधि करेंगे। तब राजा ने कही, जो-आछौ, पकरि मँगावेंगे। तब वैद्य ने कही, जो-काल्हि मैं आउंगो, तब औषधि बनावाउंगो। तब राजा ने , जो-आछौ, काल्हि तुम आइयो। तब राजा ने मनुष्यन सों कही, जो-कबूतर-कबूतरनी कौ जोड़ा जहां मिले तहां तें पकरि

ल्यावो । तब राजा के मनुष्य गए । परि कोई पकरिवे में आयो नाहीं । तब एक वैष्णव मंडली में आवतो । और राजा के पास जातो आवतो । सो वाने कही, जो-राजा ! कबूतर-कबूतरनी कौ जोड़ा मँगाय के कहा करोगे ? तब राजा ने कही, जो-हम तो देखिवे कों मंगावे हैं । तब वैष्णव ने कही, जो-हमारे वैष्णव मंडली में आवे हैं । सो काल्हि मैं लाऊंगो । तब तुम देखि लीजो। तब रात्रि को वह वैष्णव मंडली में गयो । और वे कबूतर-कबूतरनी हू गए । सो भगवद्वार्ता-कीर्तन सुनि कै जब उठे तब वा वैष्णव ने कबूतर-कबूरतनी पकरि लिये । तब सब वैष्णवन ने कही, जो-तू क्यों पकरत है ? छोरि देउ। तब कही, जो-राजा ने देखिवे कों मँगाए हैं । सो दिखाय कै छोरि देउंगो । तब वह कबूतर-कबूतरनी कों राजा के पास ले गयो । तब राजा ने देखें । तब कह्यो, जो-पिंजरा में राखो । पाछें संध्या कों वार्ता कौ समय भयो तब कबूतरनी-कबूतर सों कह्यो, जो-आपुन कों पिंजरा में क्यों धरे हैं ? तब कबूतर ने कह्यो, जो-अपुनो राजा कोढ़ी है । सो वैद्य ने कही है, जो-कबूतर-कबूतरनी कों मारि के औषधि करेंगे । तब कोढ़ जाइगो । सो अपनो सरीर आज दूसरे के काम आवेगो ।

भावप्रकाश- यह कहि यह जताए, जो-वैष्णव धर्म ऐसो है । तामें यह जाने, जो-काहू के हित ये सरीर आवें तो जन्म सुफल होंई । नांतर जन्म लेनो वृथा है । परोपकार जैसो और कोऊ धर्म नाहीं । सो यह ज्ञान श्रीगुसांईजी जी की कृपा तें या कबूतर-कबूतरनी कों भयो है । और श्रीगुसांईजी की कृपा तें इनकों भविष्य को ज्ञान हू हैं । तातें धीरज राखि या प्रकार कहे ।

पाछें कबूतर बोल्यो, जो-अपनी बीट राजा लगावे तो कोढ़ मिटे। सो राजा बात सुनी। पंछीन की बोली समुझत हतो। सो वाने तब पिंजरा में ते बीटि ले कै लगाई। सरीर कों। जहां-जहां कोढ़ हतो तहां-तहां लगाई। तब वह कोढ़ मिटि गयो। तब राजा ने वाही समै पिंजरा खोलि दिया। सो उड़ि के वे दोऊ वैष्णव मंडली में जाइ बैठे। फेरि भगवद्वार्ता सुनी। तब कबूतर-कबूतरनी कों देखि के वैष्णव प्रसन्न भए। पाछें आपुस में वैष्णव कहन लागे, जो-उपद्रव तो सुन्यो हो। इनके मारिवे कौ उपाय हो। परि ये श्रीगुसांईजी की सरनि हैं, तासों काहू की सामर्थ्य है ? और ईनकी बीटि लगाए तें कोढ़ मिटि गयो। ऐसो श्रीगुसांईजी कौ प्रताप है। सो कबूतर-कबूतरनी परम सुख सों रहते, श्रीगुसांईजी को अहर्निश ध्यान करते।

भावप्रकाश- तातें वल्लभाख्यान में गोपालदासजी गाये हैं-

'जे जीव जाति होइ कोई ए, तेने ततक्षण सर्व सुख होई रे।'

सो जीवजंतु जो कोई श्रीगुसांईजी की सरनि आवे सो या प्रकार अलौकिक सुख कों प्राप्त होत हैं।

सो वे कबूतर-कबूतरनी श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं। सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१७८॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ राजनगर कौ बासी, जो कीड़ा भयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं —

भावप्रकाश- ये राजस भक्त है । लीला में ये 'जलचर' है, श्रीयमुनाजी कौ । सो एक समे ठाकुर श्रीस्वामिनीजी प्रभृति ब्रजभक्तन के संग जल-बिहार करत हे, तहां यह आयो । सो इन कों देखि श्रीस्वामिनीजी बोहोत डरपे । ता अपराध तें यह भूतल पर आयो । ये 'सुनन्दा' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भाव रूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी पधारे हते । सो द्वारिकाजी सों राजनगर पधारे । तब भाईला कोठारी के घर अपनी बैठक में बिराजे । तब तहां सब वैष्णव दरसन कों आए। तिन में एक सेठ हू आयो । तब श्रीगुसांईजी आप वा सेठ कों देखि कै कहे, जो-सेठजी आए ? तब सेठने बिनती करी, जो-महाराज ! इन वैष्णवन की कृपा तें आप के दरसन आज पाए । तातें अब मोकों सेवक कीजिए । तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम सुनाए । तब वह वैष्णव भयो । तब भेट धरि दंडवत् करि कै बेठ्यो । तब आपने आज्ञा करी, जो-सेठजी ! अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो । और श्रीगोकुल चलो। ब्रजयात्रा करो । जमुनाजल पान करो । तब सेठ ने कही, जो-महाराज ! आप कृपा करोगे तो करेंगे । तब श्रीगुसांईजी आपने कही, जो-हां सेठजी ! हम तो तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे। और हमारे साथ ही चलो। हम तुम कों दरसन करावेगें । तब सेठजी बोले, जो-महाराज ! हम गृहस्थ हैं । सों अब ही तो हम सौं कहां चल्यो जाय ? परि कोई समै आप की कृपा सों आवेंगे । तब श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे । सो आय कै श्रीनवनीतप्रियजी कौ सेवा-सिंगार किये । पाछें अपनी

बैठक में गादी- तकियान के ऊपर बिराजे । तब सब वैष्णव दरसन कों आए । तब एक विरक्त वैष्णव सों आपने आज्ञा करी, जो-राजनगर में एक सेठ है । तासों मैनें कही, जो-तुम श्रीगोकुल चलो । तब वाने कही, जो-अबही तो मोसो न चल्यो जाइगो । पीछे कोई समय आउंगो । तासों वा सेठ कों श्रीगोकुल ल्यावो । तब वा विरक्त ने कही, जो-महाराज ! बोहोत आछौ। आप की कृपा तें ल्याउंगो । तब कोईक दिन में यह विरक्त वैष्णव आप सो आज्ञा मांगि कै राजनगर आयो । सो भाईला कोठारी के घर उतर्यो। तब भाईला कोठारी सों पूछ्यो,जो-वह कौनसो सेठ है ? जासों आपने आज्ञा करी ही श्रीगोकुल जायवे की । तब भाईला कोठारी ने एक वैष्णव कों वा विरक्त के संग पठायो । सो वाने वा सेठ कौ घर बताय दियो । तब वा विरक्त ने घर में जाइ कै वा सेठ कों श्रीकृष्ण-स्मरन कियो । पाछें सेठ सों कह्यो, जो-सेठजी ! तुम कों श्रीगुसांईजी ने बुलाए हैं । तातें श्रीगोकुल चलो । तुम कों मैं लेवे कों आयो हूं । तब सेठ ने कही, जो-हां वैष्णव ! श्रीगोकुल तो चलेंगे । तब विरक्त ने कही, जो-अब चलो । तब सेठ ने कही, हमारे बेटा आवें तो चले । तब विरक्त वैष्णव यह सुनि कै द्वारिकाजी दरसन कों गयो । तब फिरि कै यात्रा करि कै बरस डेढ़ बरस में आयो । तब वा सेठ कों बेटा भयो । तब वैष्णव ने सेठ सों यह कही, जो-अब तुम्हारे बेटा भयो । तातें अब तो चलो । तब कही,

जो-हां ! श्रीगोकुल चलेंगे । परि बेटा बड़ो होंइ तो याकों कारबार दे कै चलें । तब विरक्त वैष्णव पाछो श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी के आगें दंडवत् करी । और बिनती करी, जो-महाराज ! में वा सेठ सों कही, जो-तुम कों श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी ने बुलाए हैं । तब सेठ ने कही, जो एक बेटा होय तब चलें । तब मैं द्वारिकाजी गयो । सो बरस डेढ़ बरस में यात्रा करि कै आयो । तब मैनें कही, जो-चलो । तब कही, जो बेटा बड़ो होई तो कारबार सोंपि कै चले। तब मैं श्रीगोकुल आयो । तब आपने आज्ञा करी, जो-आयो तो सही, परि फेरि जाइगो ? तब विरक्त ने कही, जो-हां महाराज ! में जाउंगो । तब यह विरक्त वैष्णव फेरि कोईक दिन में श्रीगोकुल तें चल्यो। सो राजनगर आयो । तब सेठ सों मिल्यो । पाछें सेठ सों कह्यो, जो-सेठजी ! अब तो श्रीगोकुल चलो । तब कही, जो-हाँ ! श्रीगोकुल चलेंगे । अब तो बेटा बड़ो भयो कारबार सोंप्यो है। परि एक नाती को सुख होय तो श्रीगोकुल चले । तब विरक्त वैष्णव फेरि श्रीद्वारिकाजी गयो । सो बरस दिन उहां रह्यो पाछें आयो । तब सेठ के नाती भयो । तब विरक्त वैष्णव ने कही, जो-सेठजी ! अब तो चलो । अब तुम्हारे नाती भयो । तब वा सेठ ने कही, जो, हां वैष्णवजी ! श्री गोकुल चलेंगे परि नाती बड़ो होइ तो खिलायवे को सुख देखि कै चले । तब तो वैष्णव उहांई रह्यो । भाईला कोठारी के घर । तब कोईक दिन में

सेठजी की तो देह छूटी । तब वैष्णव ने बिचारी, जो देह तो वाकि छूटि गई । परि अब ये कौन कौ अवतार भयो । तब यह सेठ सर्प कौ अवतार भयो । ऐसें या विरक्त वैष्णव ने जान्यो । तब वा वैष्णव ने वाके पास जाई कै छांटि कै सर्प कों बुलायो । और कह्यो जो-सेठजी अब तो तुम मरि कै सर्प भए । तातें अब तो श्री गोकुल चलो । तब सेठ ने कही, जो-अब ही तो द्रव्य की रक्षा करत हैं । पाछें श्री गोकुल चलेंगे । तब कोईक दिन में सर्प की देह छूटि गई । तब कुत्ता कौ अवतार भयो । तब या वैष्णव ने कुत्ता कों बुलायो और कह्यो, जो सेठजी अब तो श्रीगोकुल चलो । अब तुम कुत्ता कौ अवतार भए । तब सेठ ने कही, जो-हां, श्रीगोकुल तो चलेंगे परि चोर कौ डर बोहत है । तातें हवेली की चौकी करत हूं । तब कोईक दिन में कुत्ता की देह हू छूटि गई । तब पनारे कौ कीड़ा भयो। तब फेरी वह विरक्त वैष्णव आयो । सो बाने कही, जो कुत्ता की तो देह छूटि गई अब कौन कौ अवतार भयो ? तब देखें तो पनारे कौ कीड़ा भयो । तब वाने आय के पनारे के कीड़ा कों बुलायो । तब कही, जो-सेठजी ? अब तो तुम पनारे के कीड़ा भए । तातें अब तो श्रीगोकुल चलो । तब कही, जो अब ही तो श्रीगोकुल नहीं चलेंगे। जो-अब तो सबन की जूंठिनि लेत हों । तातें प्रसन्न हों । तब वैष्णव एक डाबी ल्याइ कै जल भरि कै पनारे में सों वह कीड़ा में धस्यो । पाछें न्हाय कै डाबी

ले कै श्रीगोकुल कों चल्यो । तब कितनेक दिन में श्रीगोकुल आयो । तब श्री गुसांईजी के पास गयो । जाँय कै वह डाबी दिखाई, जो महाराज ! मैं सेठजी कों श्रीगोकुल ल्यायो हूं । तब आप ने सब समाचार पूछे । जो-कैसें कैसें भयो ? तब वा वैष्णव ने आपके आगें बिनती कीनी, जो-महाराज ! इन के नाती भयो । तब नाती के खिलायवे कौ सुख ले कै, तब याकी देह छूटी । सो सर्प भयो । सो द्रव्य की रक्षा करी । तब मैं कह्यौ, जो-सेठजी ! श्रीगोकुल चलो। तब कही, जो-श्रीगोकुल तो चलेंगे परि अब तो मैं या द्रव्य की रक्षा करत हूं । फेरि सर्प की योनी छूटि गई । तब कुत्ता कौ अवतार भयो । तब फेरी मैनें कही, जो-सेठजी ! अब तो श्रीगोकुल चलो । तब कही, जो-श्री गोकुल तो चलेंगे परि चोर कौ डर बोहोत है । तातें घर की रखवारी करत हों । पाछें ये कीड़ा भयो । सो अब मैं इनकों आपकी पास ल्यायो हूं । तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो-अब याकों श्रीयमुनाजी में डारि देऊ । तब वह विरक्त जाय श्रीयमुनाजी में डारि न्हाय कै चल्यौ आयो । तब वा सेठ की गति भई ।

भावप्रकाश - या वार्ता में बड़ो संदेह है, जो-श्रीगुसांईजी या सेठ कों कहे, जो-(तुम) श्रीगोकुल चलो । तऊ यह सेठ न गयो । पाछें वा विरक्त ने कह्यो, जो-सेठजी! गोकुल चलो । तऊ वाकी बुद्धि फिरी नाहीं । गृह में आसक्त रह्यो । सो या विरक्त में हू अलौकिक सामर्थ्य ही । यह चाहतो तो सेठ की बुद्धि नेक में फिरि जाती । तब इतनो श्रम क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो-या सेठ के मिष करि जीव कौ स्वरूप जताए । जो-जीव ऐसो है । वाकों आप तें लौकिक आसक्ति सर्वथा छूटत

नाहीं। परि श्रीगुसांईजी को संकल्प- बानी मिथ्या कैसे होंई ? तातें आपने वैष्णवद्वारा या प्रकार वाकों श्रीगोकुल बुलवायो। सो श्रीगुसांईजी आपु अपने जीव कों कब हू छोरत नाहीं। कैसो हू संसार में आसक्त होंई , तोऊ आप वाकी सुधि करि या प्रकार उद्धार करत हैं। और या जीव कों श्रीयमुनाजी में डारिवे की आज्ञा करी सो यातें, जो-ये लीला में हू श्रीयमुनाजी को जीव है। तातें श्रीयमुनाजी द्वारा लीला में वाको संबंध दृढ होइगो।

सो वह सेठ श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। ता:तें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१७९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक पुरुष दोई स्त्री, क्षत्री वैष्णव, पूर्व के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में पुरुष कौ नाम 'रंगदेवी' है, और दोऊ स्त्रीन कौ नाम 'गूढ़ा', 'निगूढ़ा' हैं। ये तीनों 'सुनन्दा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये तीन्यों पूर्व में द्रव्यमान, क्षत्रीन के प्रगटे। सो वा पुरुष को इन दोऊन तें ब्याह भयो। पाछें माता-पिता मरे। तब ये तीन्यों यात्रा कों चले। सो श्रीगोकुल आए। तहां श्रीगुसांईजी के सेवक भए। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि श्रीठाकुरजी पधराय अपने घर आए। सो तीनों प्रीतिपूर्वक भगवत्सेवा करते। वैष्णव कों आग्रहपूर्वक नित्यनेम सों प्रसाद लिवावते। या प्रकार रहते।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत प्रीति स्नेह सों करते। सो जो-कोई वैष्णव जहां आवे तहां तें ढूंढ़ि कै ल्यावते। पाछें बोहोत मनुहार करि कै महाप्रसाद लिवावते। सो एक दिना वैष्णव कों बुलाइवे कों गए। तब एक वैष्णव बावड़ी पै सोयो हतो। सो इन गुदड़ी उठाय कै देखी। तब कंठी देखी। तब

जान्यो, जो-वैष्णव है। तब वा वैष्णव तें कही, जो-वैष्णव ! उठो। तब वह वैष्णव तो बोले नाहीं। तब हाथ पकरि कै जोरावरी सों उठायो। तब वह वैष्णव तो गारी देत जाँय। तोउ जोरावरी घर ल्याये। पाछें लोटा भरि दीनो। और कह्यो, जो-खरचू जाओ। तब वह गयो। पाछें आयो सो उन के हाथ धुवाए। दाँतिन करवायो। पाछें न्हवाए। फेरि तिलक छापा कौ साज आगें धस्यो। और कह्यो, जो वैष्णवजी ! तिलक करो, जप करो। पाछें या वैष्णव ने जाय कै दोऊ स्त्रीन सों कही, जो-ये वैष्णव लीला के हैं, मैं ल्याया हूं। तातें ये कहे सो हाथ जोरि रहियो, टहल करियो।

भावप्रकाश - यामें यह जतायो, जो-कदाचित् या वैष्णव की उपर की क्रिया तें स्त्रीन कों अभाव आवे तो उनको बिगार होई, वैष्णव को अपराध होंई। तातें समुझाई कै कह्यो। और यह वैष्णव लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं। 'प्रियतमा' इनकौ नाम है। सो ये स्त्री-पुरुष तीनों प्रियतमा की सखी हैं। सो बात यह पुरुष जानत है। तातें इनके स्वरूप को ज्ञान करायो, जो-इनके द्वारा अपनो कार्य सिद्ध होयगो। तातें तुम दोऊ इनकी टहेल में तत्पर रहियो।

पाछें वे न्हाए। सो न्हाय कै भोग सराए। भोग सराय कै वैष्णव कों बुलाई कै दरसन करवाए। पाछें आर्ति करि अनोसर करि बाहिर आए। तब वैष्णव सों कही, जो-वैष्णवजी ! महाप्रसाद लेऊ। तब वह वैष्णव बोल्यो, जो-हम तो सर्वथा नाहीं लेइंगे। तब वाने कही, जो-तुमकों कहा चहिए ? सो माँगि लेउ। तब वा वैष्णव ने कही, जो-मोकों तेरी स्त्री चहिए। तब कही, जो-स्त्री हाजिर है। तब स्त्री हाथ जोरि कै आइ

ठाढ़ी भई। तब कही, जो-मोकों तेरी दूसरी स्त्री चहिए। तब दूसरी स्त्री हाथ जोरि कै आय ठाढ़ी भई। तब वा वैष्णव ने कही, जो-तुम अपने पुरुष कों छोरि कै हमारे विरक्त के संग आय कै कहा करोगी ? तब वे दोऊ स्त्री बोली, जो-तुम सेवा टहल बतावोगे सो करेंगी। तुम वैष्णव हो। परि हमारे घर महाप्रसाद लेऊ। तब वा वैष्णव ने कही, जो-तुम्हारो द्रव्य हमकों देऊ। और घर देऊ। तब वह वैष्णव बोल्यो, जो-यह द्रव्य, घर स्त्री, सब तुमकों दियो। परि प्रसाद लेऊ। तब वह वैष्णव बोल्यो, जो-आछौ। तुम घर में सों निकसि जाऊ। तब प्रसाद लेई। तब यानें कही, अब ही झांपी में श्रीठाकुरजी कों पधराय के जात हैं। तुम प्रसाद लेऊ। तब वह वैष्णव बोल्यो, जो-तुम श्रीठाकुरजी को पधराय के जाओगे तब मैं प्रसाद लेउंगो। तब यह वैष्णव न्हाय कै मंदिर में गयो, श्रीठाकुरजी कों पधरायवे कों। तब श्रीठाकुरजी बोले, जो-महाप्रसाद लेइ तो लेई, नांतर भले भूखौ रहे। तू मोकों पधराय कै कहां जात है ? तब इनने कही, जो-महाराज ! महाप्रसाद तो वैष्णव कों अवस्य करि के लिवावनो। वैष्णव घर तें भूखौ कैसें जाई ? ये वैष्णव कहेगो सौ मैं करूंगो। परि महाप्रसाद तो लिवाउंगो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जतायो, जो-वैष्णव घर ते भूखौ जाय सो सेवक कौ धर्म नाहीं। और भगवद्धर्म की आगे स्त्री, द्रव्यादि तुच्छ पदार्थ हैं सोऊ कहे।

तब श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न होंई कै बोले, जो-ऐसी तेरी दृढ़ता वैष्णव ऊपर है, तातें मैं तो पर प्रसन्न भयो, तू माँगि।

सो मैं देउंगो । तब कही, जो-महाराज ! मैं यह माँगत हूं, जो-वैष्णव मेरे घर तें भूखौ न जाय । और आप जैसे प्रसन्न भए वैसे वैष्णव मेरे ऊपर सदा प्रसन्न रहे ।

भावप्रकाश - यामें भगवदीय वैष्णव कौ उत्कर्ष कहे, जो-भगवदीय वैष्णव सब तें पर हैं । काहे तें ? जो-उनके हृदय में ठाकुर आप रहत हैं । तातें वे सर्वोपरि हैं। सो वे प्रसन्न होई तब ठाकुर हू आपतें प्रसन्न होई, यह जताए ।

पाछें वा वैष्णव ने महाप्रसाद प्रसन्न होइ कै लियो । और बोहोत प्रसन्न होइ कै आसीर्वाद दियो, जो-याही भांति भगवद्सेवा, गुरुसेवा, वैष्णवसेवा सदा सर्वदा तुम करत रहियो । और मैं तो इतनी परीक्षा देखी । परि धन्य है तुम्हारी दृढ़ता । पाछें वा वैष्णव ने कही, जो-अब हम जाइंगे । तब या वैष्णव ने कही, जो आज तो हम सर्वथा न जाइवे देइंगे । पांच-सात दिन राखूंगो । ता पाछें बिदा करूंगो । तब वैष्णव रह्यो । पाछें दोई घड़ी आराम कर्‍यो । ता पाछें उठि कै उत्थापन कियो । स्त्रीने ताती सामग्री करी । सेनभोग धर्‍यो । पाछें भोग सराय कै वैष्णव कों दरसन कराय कै श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाय कै वैष्णव कों महाप्रसाद लिवायो । तब दोऊ स्त्री तथा पुरुष ने महाप्रसाद लियो । फेरि भगवद्वार्ता करिवे कों बैठे । तब यह वैष्णव भगवद्वार्ता करे और वे स्त्री-पुरुष सुने । सो सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए । पाछें वैष्णव सों कह्यो, जो-वैष्णवजी! तुम तो सदा ही हमारे पास रहो । सत्संग लायक हो । हमकों ऐसो सत्संग कहां ? हमारे ऊपर तुमने बड़ी कृपा करी है । तब

वैष्णव पांच-सात दिन रहे। पाछें कही, जो-अब तो हम कों बिदा करो ? अब हम सर्वथा न रहेंगे। तब कही, जो-कछूक दिन हमारे पास रहो तो आछो। तब इन कह्यो, जो-आछो। हमारो हू मन यही है, जो-कोई दिन तुम्हारे पास रहे। परि अब हम ब्रज में जाइ, श्रीमुख निरखि, श्रीजमुनाजल पान करि, ब्रजजात्रा करि, श्रीगुसांईजी के दरसन करि, फेरि तुम्हारे पास आवेंगे। सो कछूक दिन रहेंगे। क्यों, जो-तुम्हारो स्नेह वैष्णव पर बोहोत है। और अब तो हम कों बिदा करो। हम जायंगे। तब पुरुषने हाथ जोरि कै बिनती करी, तुम कों खरच तथा वस्त्र चहिए सो आज्ञा करिए। तब वैष्णव बोले, जो-हमारे तो कछू मांगिवे की रीति नाहीं।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताये, जो-हमारे आकास-वृत्ति है। सो कहा ? प्रभु जा समै जो बिनु माँगै देई, ताही में निर्वाह करत हैं। काहू कौ आश्रय नाहीं। बस्तु हू की अपेक्षा नाहीं।

तब बिना मांगे कछू खरची वस्त्र प्रसाद सब दीनो। पाछें बिदा करे। पाछें दोऊ स्त्री तथा पुरुष घर में आइ कै श्रीठाकुरजी की सेवा किए। सो वे बोहोत प्रीति सों सेवा करते। तब तें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे। कृपा करि कै जो चहिए सो मांगि लेते। ऐसी कृपा इनके ऊपर सदैव करते।

भावप्रकाश - सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीठाकुरजी में पूरन प्रीति भई कब जानिए, जब भगवदीय वैष्णव पर तन-मन-धन न्योछावरि करिए। उन ही कों सर्वोपरि जानि उनसों निष्काम प्रीति करे। भगवदीय वैष्णव के कैसे हू आचरन देखे, परि अभाव न आवें। तब भाव स्थायी भयो जानिए। स्थायी भाव बिना पुष्टिमार्ग को सुख मिले नाहीं। तातें इन स्त्री-पुरुष को श्रीगुसांईजी की कृपा तें या

प्रकार कौ भाव हतो । तातें ठाकुर हू उनपैं प्रसन्न भये ।

सो वे स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥१८०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक बनिया वैष्णव, सो गुजरात के संग में आयो, जाको श्रीगुसांईजी प्रेम, आसक्ति, व्यसन को भेद कहे, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक-भक्त है । लीला में इनको नाम 'रञ्जना' है । ये 'वनदेवी' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है ।

सो ये गुजरात में एक द्रव्य पात्र बनिया के जन्म्यो । सो बरस बीस कौ भयो। तब इनके माता-पिता मरे । पाछें ये श्रीरनछोररायजी के दरसन कों आयो । तब ता समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीरनछोररायजी के दरसन कों पधारे हते । तहां इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब इह जाने, जो-ये कोई महापुरुष हैं । तातें इनकी सरनि जइए तो आछो। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीरनछोररायजी सों बिदा होंई अपनी बैठक में आए । सो ये हू श्रीगुसांईजी के पाछें पाछें उहां आयो । पाछें समय पाय बिनती कियो, जो-महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी उनको कृपा करि दैवी जीव जानि सरनि लिये । पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां ते श्रीगोकुल कों पधारे ।

वार्ता प्रसंग - १

ता पाछे वह वैष्णव एक गुजरात के संग में श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो । तब आय कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये । पाछें श्रीगुसांईजी के आगे दंडवत् करि कै भेट धरी । पाछें बैठ्यो । पाछें श्रीगोकुल में पांच-सात दिन दरसन करे । तब श्रीगुसांईजी के आगें बिनती करी, जो-महाराज ! सातों स्वरूपन कौ मनोरथ कछू कराइए । तब

वस्त्र -सामग्री कछू रोक आपके आगें राखे । जो-महाराज ! यामें बने सो करो । तब आपने या वैष्णव कौ सब मनोरथ सिद्ध कर्‍यो । वागा-वस्त्र धराए । सामग्री आरोगाई । पाछें आप श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब यह वैष्णव साथ गयो । पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । और श्रीगुसांईजी आप सेवा-सिंगार किये । पाछें रात्रि कों श्रीगुसांईजी के पास आय कै या वैष्णव ने वागा-वस्त्र- सामग्री-रोक-सब आप के आगें राखे । जो-महाराज ! यामें बने सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ मनोरथ करिये । तब आपने वागा-वस्त्र धराए । सामग्री आरोगाई । सब मनोरथ सिद्ध कर्‍यो। फेरि पांच-सांत दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किए । तब श्री गोकुल आए । पाछें श्रीगुसांईजी तथा सब बालकन कों केसरि स्नान करवाए। भेट धरी । आर्ति करी । ता पाछें भीतर सब बहू-बेटीन कों साड़ी-चोली भेट पठाय दीनी । तब आप के आगें बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब आज्ञा होंई तो मैं ब्रजयात्रा करि आऊं ? तब आपने आज्ञा दीनी, जो-सुखेन करि आवो । सो संपूर्ण ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आयो । तब श्रीगुसांईजी के आगे दंडवत् करी । और बिनती करी, जो-महाराज ! आप की कृपा तें ब्रजयात्रा तो करि आयो । अब एक मेरो मनोरथ है । सो कृपा करि कै सिद्ध करिए । तब आपने आज्ञा करी, जो-अब तेरो कहा मनोरथ है ? तब वा वैष्णव ने बिनती करी,

जो-महाराज ! मेरो यह मनोरथ है, जो-कोई सुपात्र ब्राह्मन आप ऐसो बतावो सो वा ब्राह्मन कों भोजन कराऊं । इच्छा-भोजन कराउंगो । तब आपने आज्ञा करी, जो-ठीक है, तेरो मनोरथ है तो हम आज्ञा करें । तू करे तो हम कहें । तब वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! आप आज्ञा करेंगे सोई करूंगो। तब आपने आज्ञा करी, जो-एक नामधारी वैष्णव होंइ तिन कों तुम आछी भांति सों प्रसाद लिवाउ, तो तेरे सौ ब्राह्मन को ब्रह्म-भोज भयो जानिए । तब वा वैष्णव ने बिनती करी, जो-महाराज ! सौ नामधारी कों लिवाऊं ? तब आप आज्ञा किए, जो-एक समर्पनी कों लिवावे तो सौ नामधारी भए जानिए । तब वा वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! सौ समर्पनी कों लिवाऊं । तब आप आज्ञा किए, जो-श्रीआचार्यजी के मर्यादा सों जो-सेवा करत होंई वैसे एक मर्यादी, सेवा करिवेवारे कों लिवावे, तो सौ समर्पनी भए जानिए । तब या वैष्णव ने कही, जो-मैं सौ मर्यादा सों सेवा करिवेवारे कों लिवाऊं । तब आप आज्ञा किए, जो-एक प्रेमी भगवन्नाम प्रेम सों लेत होंई, प्रेम सों सेवा करत होंइ, और आकासवृत्ती होय, निष्कंचन होंइ, ऐसे एक को लिवावें तो सौ भगवत्सेवा वारे भए जानिए। तब याने कही, जो-महाराज ! ऐसे सौन कों लिवाऊं । तब आपने आज्ञा करी, जो-ऐसें सौ तो मिलने दुर्लभ हैं । तब वा वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! लक्षावधि सृष्टि है । सो मैं तो

ढूंढि लेउंगो । तब आप आज्ञा किए, जो-एक आसक्ति अवस्थावारे कों लिवावे तो सौ प्रेमी भए जानिए । तब याने बिनती करी, जो-महाराज ! सौ आसक्ति अवस्थावारेन कों लिवाऊं । तब आपने कही, जो ऐसें सौ मिलने तो दुर्लभ हैं । तब वा वैष्णव ने बिनती करी, जो-महाराज ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी, और आपु, साठि लाख जीवन कों अंगीकार किये हैं । सो सब पृथ्वी में फिरि कै मैं तो उनको ढूंढि लेउंगो । तब आपने कही, जो-एक छेली अवस्था कहत हूं, तातें तू फेरि मति बोलियो । जो-एक व्यसन अवस्थावारे कों लिवावे तो सौ आसक्ति अवस्था वारे भए जानिए। तब वाने बिनती करी, जो-महाराज ! बोहोत आछौ । आपने आज्ञा करी सोई करूंगो। तातें अब आप बताइये । तब आपने आज्ञा करी, जो-आसक्ति अवस्था तो कुंभनदास कों भई । और व्यसन अवस्था गज्जनधावन कों भई । सो ऐसें तो मिलने बोहोत दुर्लभ हैं । सो तोकों बताय दियो । सो यह छेली अवस्था है । सो मैं तोसों कही ।

भावप्रकाश - या वार्ता में उत्तरोत्तर दुर्लभता बताई । जो-चारों वर्ण में ब्राह्मन श्रेष्ठ कहें हैं । परि उनतें श्रेष्ठ नामधारी वैष्णव है । जिनने प्रभुन कौ शरन ग्रहन कियो है । तातें ब्राह्मन तें नामधारी वैष्णव हूं श्रेष्ठ है । उनतें श्रेष्ठ समर्पनी कहे, जिनने प्रभुन कों सर्व वस्तू समर्पन कीनी है । उनतें हू श्रेष्ठ सेवा करिवेवारे कहे । जो-श्रीआचार्यजी की मर्यादा के अनुसार खासा-सेवकी पूर्वक प्रभुन की सेवा करत हैं। सो वा सेवा करिवेवारेन में हू जो-प्रीति पूर्वक सेवा करे, स्मरन करे, ऐसो जो प्रेमी भक्त है सो श्रेष्ठ हैं । काहे तें ? जो-प्रेम सर्वोपरि हैं । प्रेम ही सों प्रभु बस होत है । सो प्रेमी भक्त रस-धर्मी होत हैं । तातें उनकों श्रेष्ठ कहे । उनतें श्रेष्ठ आसक्तिवारेन

कों कहे। जिनकों प्रभुन के स्वरूप में दृढ निष्ठा है । प्रभु बिना सब बस्तू तुच्छ लागत है। गृहादिकनमें अरूची रहत हैं । वा हू तें परे व्यसन अवस्था है । सो व्यसन अवस्था वारेन कों प्रभुन के स्वरूप बिना एक छिन हू कल परत नाहीं । ऐसी दसा होंइ तब जीव कृतार्थ होंई । सो श्रीआचार्य जी 'भक्तिवर्द्धिनी' में कहत हैं - ''यदास्याद्व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात्तदैवहि ।'' सो व्यसन अवस्था गज्ञनधावन जैसे कोई एक कों सिद्ध भई है । तातें उनकों दुर्लभ कहे । और एक की संख्या कहि यह जताया, जो-ज्यादा वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायवे में चित्त चंचल रहत है । आचार हू सिद्ध नाहीं होत । तातें जैसे चित्त स्नेह-परायन रहे, मारग कौ आचार हू भलीभांति बनि आवे, ता प्रकार वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावें ।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ।। १८१।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक रावल कौ ब्रजबासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'मनोहर' गोप है । ये 'वनवेदी' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक दिन वह श्रीगोकुल आयो । तब आय के श्रीगुसांईजी के दरसन किए । पाछें बिनती करी, जो-महाराज! मोकों कृपा करि कै नाम सुनाइए । तब आपने कृपा करि कै नाम सुनायो । पाछें आपने पूछी, जो-तू रावल में ही रहत है कहा ? तब वा ब्रजवासी ने कही, जो-महाराज ! मैं तो रावल ही में रहत हूं । तब आपने कही, जो-तू कहा काम करत है ? तब याने कही, जो-महाराज ! मैं तो सब गाम की गाय चरायवे कों जात हूं । तब आपने कही, जो-आछौ, कोई-कोई दिन

आयवो करि। तब वा ब्रजवासी ने कही, जो-महाराज ! अब मैं आपको सेवक भयो । सो नित्य तो मोसों न बने परि कोई-कोई दिन आयवो करूंगो । तब आपने आज्ञा दीनी, जो-अब तू जा । तब वह रावल गयो । सो रावल जाय कै नित्य गाय चरायवे कों जाय । सो एक समै फागुन के दिन हते। सो गाय दूरि 'चिंताहरन' तांई चरावत हतो । और बन में फिरत हतो । तहां गुलाल बरस्यो हतो । सो गुलाल-अबीर-चोवा सब के याकों दरसन भए । सो देखत देखत आगें चल्यो । तब एक रत्नजटित पिचकाई पाई । सो दंडवत् करि हाथ में लीनी । पाछें देखि कै कह्यो, जो-यह तो श्रीगुसांईजी के श्रीहस्त में देऊंगो । सो वह गुलाल-अबीर हू रंच लियो । पाछें दंडवत् करि कै रावल आयो । सो रावल आय, गाय सब अपने-अपने घर पहोंचाय, पाछें श्रीगोकुल आयो । तब श्रीगुसांईजी आप को दंडवत् करी । तब दंडवत् करि कै बिनती करी, जो-महाराज ! मैं 'चिंताहरन' गाय चरावत हुतो । तहां में दूरि निकसि गयो । तहां गुलाल बोहोत बरस्यो । और अबीर-चोवा चंदन सब देख्यो । तब महाराज! मैं दंडवत् करि वस्त्र रंग ल्याओ । और कछू गुलाल ल्यायो । सो श्रीगुसांईजी कों दिखायो! वह वस्त्र दिखायो । और वह पिचकाई आप के श्रीहस्त में दीनी । तब आप दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भए । और वा ब्रजबासी सों कही, जो-चलि, हम

कों दिखाउ । तब उन कह्यो, जो-महाराज ! पधारिये । तब आप घोड़ा ऊपर असवार होइ कै पधारे । सो ब्रजबासी आगें और आप को घोड़ा पाछें । सो जहां वह गुलाल बरस्यो हतो तहां ब्रजबासी ठाढ़ो होंइ रह्यो । तहां आप पधारे । सो आप पधारि कै सब देखें । सो जहां गुलाल-अबीर बरस्यो हतो सोऊ देख्यो । तब दरसन करि कै आप वामें लोटि गए। पाछें कछू अबीर गुलाल ल्याए । कछू वस्त्र रंग ल्याए । पाछें आप श्रीगोकुल पधारे । तब रात्रि को अपनी बैठक में आय कै कथा बांची । तब वा ब्रजबासी ने सुनी । पाछें कथा होंइ चुकी तब श्रीगुसांईजी के आगें आय कै दंडवत् कियो । तब आपने आज्ञा करी, जो-अब तू रावल मति जाय । अब तो रात्रि बोहोत गई है । सवेरे बेगो उठि कै जइयो । अब तू महाप्रसाद ले । तब आपने खवास सों आज्ञा करी, जो-इनकों अनसखड़ी महाप्रसाद ठोर लडुवा आछी रीति सों जो मांगे सो लिवाइयो। तब खवास इनकों ले गयो । और भंडारी सों कही, जो-याकों महाप्रसाद जो यह लेइ सो याकों लिवाय दीजियो । तब भंडारी ने महाप्रसाद लिवायो । पाछें ब्रजबासी आपके पास आयो । पाछें आपने प्रसादी उपरेना केसरि सों चोवा सो लपट्यो दियो, उढ़ायो । तब ब्रजबासी बोहोत प्रसन्न भयो । तब आपने आज्ञा करी, जो-तू रात्रि कों या बैठक में सोय रहि । पाछें आपने आज्ञा करी, जो-तू बैठक में नित्य आयो करि । और ऐसें बन

की खबरि ल्यायो करि। तब कही, जो-आछो महाराज ! ऐसे करूंगो । तब ब्रजबासी बैठक में सोय रह्यो । पाछें प्रातःकाल उठि कै रावल कों गयो । पाछें गाय लै कै बन में गयो । सो बन में तें सांझ कों घर आवे । पाछें रात्रि कों नित्य श्रीगुसांईजी के पास आवे । पाछें श्रीगुसांईजी याके ऊपर सदैव कृपा करते। तब याकों अपने स्वरूप कौ ज्ञान भयो । तब वा ब्रजबासी ने बिनती करी, महाराज ! मोकों ब्रह्म-संबंध करावो ।

भावप्रकाश - काहेतें, जो लीला कौ संबंध दृढ़ होई ।

तब आपने आज्ञा करी, जो-आछौ । काल्हि तोकों ब्रह्म-संबंध करावेंगे । तब दूसरे दिन आपने कृपा करि कै वा ब्रजबासी कों ब्रह्मसंबंध करवायो । पाछें आज्ञा करी, जो-जूंठनि यहांई लीजो । और बांट दिवायो, जो-जा, तू वन में ले जैयो । पाछें वन में सों आयो तब रात्रि को जूंठनि लीनी। पाछें जब नित्य नेम सों आवे तब श्रीगुसांईजी के दरसन करे। तब आप इनको नित्य बांट दिवावे । सो ले कै नित्य रावल जाय ।

सो वह ब्रजबासी श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं । सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१८२॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक राजा भीम स्त्री-पुरुष, गुजरात के जिनकों पूर्व जन्म को ज्ञान हतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये दोऊ राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'नृदेवी' और 'स्नेहदेवी' हैं। सो 'नृदेवी' तो राजा भीम भए, और 'स्नेहदेवी' उनकी स्त्रीको प्रागट्य जाननो। ये ' बनदेवी ' तें प्रगटी हैं , तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो उन राजा भीम कों माता के गर्भ तें उत्पन्न होत मात्र ही पूर्व जन्म कौ ज्ञान भयो हतो। और स्त्रीकों हू पूर्व जन्म की सुधि रही हती। सो वे दोऊ स्त्री-भरतार पूर्व जन्म की सुधि करि कै अपने मन में ताप क्लेश कर्‍यो करते। जो-अब हम कौन उपाय करि श्रीठाकुरजी आपकी सेवा करें। तब रात्रि कों उन दोऊ स्त्री-पुरुषन कों श्रीठाकुरजी आपने जताई, जो तुमकों पूर्व जन्म को समाचार कहेंगे, तिनकी सरनि जइयो। और वे कहें तेसेंई तुम आचरन करियो। तब उन दोऊ स्त्री-पुरुषने अपुने मन में विचार कियो, जो-यहां ऐसो कौन है, जो-हमकों पूरव जन्मकी बात कहेगौ ? सो याहीतें आपुन तीर्थयात्रा कों जइए। सो उहां कोऊ कहे, तो-जाने। सो ताही तें आपुन तीर्थयात्रा कों चलिए। तब ऐसो बिचारि, वे दोऊ स्त्री-पुरुष विचार करिकै उन राजा भीमसेन ने अपने पिता सों कही , जो-हमकों तो तीर्थयात्रा कौ मनोर्थ है। सो याही तें तुम आज्ञा देऊ तो हम जांय। तब याके पिता ने कही, जो-भले जाउं। तब वे दोऊ स्त्री-भरतार तीर्थयात्रा करिवे कों निकसे। सो जहां जहां कोई बड़ो स्थल होई, जहां कोई बड़ो पंडित होंइ, सो जहां जाय ताही सों संवाद चलावे। और चर्चा करते। परि कोऊ पूर्वजन्म की बात कहे नाहीं। सो ऐसें सब तीर्थयात्रा

फिरि के राजा भीम श्रीगोकुल आए । तब राजा भीम ने श्रीठकुरानी घाट ऊपर डेरा किये । तब श्रीगुसांईजी मध्याह्न की संध्यावंदन करिवे कों पाऊं धारे । तब राजा भीम की दृष्टि परी । तब राजा भीम कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब महा अलौकिक स्वरूप कौ तेज देखि कै राजा भीम ने श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् किये । तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहे, जो-तुम जा बात कौ खौज करिवे कों तीर्थ-जात्रा कों निकसे हो, सो खोज कहूं नहीं पायो ? तब राजा भीम ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो महाराज नहीं पायो । तब श्रीगुसांईजी आपने श्रीमुख तें कही, जो-तुम बैठक में आईयो । तुम कों सब बात कहेंगे । तब राजा भीम ने अपने मन में निश्चै जान्यो, जो यहां श्रीगुसांईजी आप ने पूछ्यो है, सो यह बात निश्चै होइगी । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो मंदिर में पधारे । तब राजभोग आर्ति किये । ता पाछें अनोसर भयो तब श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै पोढ़ें । ता पाछें उत्थापन कौ समै भयो । तब श्रीगुसांईजी उत्थापन के समै पहिले गादी तकियान के ऊपर बिराजे हते । सो यह राजा भीम बैठक में बैठि रह्यो हतो, सो इन नें श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् कीनी । और बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब आपकों हमारे ऊपर कृपा करनी होंई सो कृपा करि कहिये । तब श्रीगुसांईजी ने सब कोई वैष्णव कों दूरि किये । तब

श्रीगुसांईजी आपने उन राजा भीम कों तथा रानी कों पूर्व जन्म की सब बात कही।

जो-पूर्वजन्म में एक गाम में तुम कुनबी हते। और यह तुम्हारी स्त्री, सो एक बनिया की स्त्री हती। सो तुम्हारे और या स्त्री सों व्यभिचार बुद्धि हती। सो यह नित्य खेत पै आवती। तब ऐसें करत कितनेक दिन बीते। सो एक दिन खेत खोदत में उत्तम भूमि देखी। तब एक बड़ी सिला निकसी। ताके नीचे एक सुंदर भोंयरा हतो। सो ताही में मंदिर हतो। सो ता मंदिर में एक सुंदर श्रीठाकुरजी कौ मंदिर हतो। सो देखि कै तुम आपने मन में बोहोत आश्चर्यवंत होइ रहे। तब इतने ही में यह स्त्री आई। तब तुमने याकों सब दिखायो। जो-यह कहा है ? तब याने कही, जो-यह श्रीठाकुरजी श्रीकन्हैयालाल कौ स्वरूप हैं। सो अपने बड़े भाग्य हैं। सो फलित भए हैं। जो-यह स्वरूप प्राप्त भयो है। ता पाछें उहां तें माटी सब काढि कै जल ल्याय कै वा मंदिर कों धोयो। पाछें न्हाय के श्रीठाकुरजी कों स्नान करवाय कै ता पाछें उहां तें बनफल सुंदर ल्याय कै सम्हारि कै भोग धरे। और कहूं तें पुष्प ल्याय कै माला करि कै श्रीठाकुरजी कों पहराए। सो ऐसी भांति सों तुम नित्य सेवा करन लागे। और कछु नौतन बस्तु सामग्री ले आवे सो समर्पते। सो श्रीठाकुरजी कौ सिंगार करते भोग धरते। पाछें मंदिर में बुहारे झारे। और कहुं तें पुष्प बीनि ल्यावते। सो ऐसी भांति

सौं तुम दोऊ गोप्य रीति सों भली भांति तें सेवा करत हते। सो कोऊ जाने नाहीं। सो ऐसी ऐसी कितनीक वार्ता हैं। सो ऐसें करत श्रीठाकुरजी आपके विषे परम आनंद में आसक्ति भई। और विषय धर्म सब छूट्यो। श्रीठाकुरजी आपकी सेवा में मन लाग्यो। तब ऐसें करत एक दिन तुम भगवद् सेवा कौ कार्य करत हते और भगवद्नाम मुख तें कहत हते। सो ऐसे में भगवदीच्छा सों अकस्मात् ऊपर तें भोंयरा धसि पर्‍यो। तब ता समय तुम दोऊ जनेन ने देह छोरी। तब तुम कौं धर्मराय के दूत लेवे कों आए। तब उन दूतन के पाछें विष्णुदूत आये। तब विष्णुदूतन सों यमदूतन ने कही, जो-इन तो परस्त्री सों व्यभिचारगमन कियो है। और बोहोत ही वेद विरुद्ध आचरन किये हैं। तब विष्णुदूतन ने यमदूतन तें कही, जो-इनकों तो श्रीठाकुरजीने परम गति दीनी है। सो इन दोउ जनेंन कों तो याहू तें परम गति होइगी। जो-इनने तो श्रीठाकुरजी कौ मंदिर मार्जन कियो है। तातें इन कों तो परम पदवी होइगी। यामें संदेह नाहीं। इतनो कहि कै तुम दोऊ जनेंन कों विष्णुदूत ले गए। सो उहां ले जाइ कै श्रीठाकुरजी के आगे ठाढ़े किये। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-तुम कों चहिए सो तुम मांगों, मैं तुम ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो हूं। तब तुम दोऊ जनेंन ने हाथ जोरि कै श्रीठाकुरजी सों बिनती करी, जो-महाराज! हम पर इतनी दया क्यों करत हो? जो-हमने तो बड़ो नीच कर्म

कियो है। सो कारन कहा है ? तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-तुम नें नीच कर्म तो कियो है, परि भगवत् मंदिर कौ मार्जन कियो है। तातें तुम्हारी करी सेवा हमने मानि लीनी है। तो तुम ऊपर हम बोहोत प्रसन्न हैं। तातें तुम दोऊ जने कछू मांगो। तब तुम दोऊ जनेंन ने कही, जो-महाराज ! तुम हम ऊपर प्रसन्न होंई के देत हो तो हम यह मांगत हैं, जो-हम कों मनुष्य जन्म होउ। सो यह मृत्युलोक में जाइ कै दोऊ जने स्त्री-पुरुष होइ कै श्रीठाकुरजी की सेवा करें। भगवद् भजन करें। तातें हम तो दोऊ जनें यह मांगत हैं। जो-हमकों मनुष्य जन्म देऊ।

भावप्रकाश — काहे तें, जो-मनुष्य जन्म बिना आपकी सेवा दुर्लभ है। तातें देवता हू या भूतल ऊपर जन्म लेइवे की ईच्छा करत है। सो गोपालदासजी गाए हैं-

'विबुध वांछे वास वसुमति ऊपरे, श्रीवल्लभकुंवरनी टहल करवा।'

सो ऐसो उत्तम यह मनुष्य देह है। तातें उन दोऊ मनुष्य जन्म मांगे। और भगवद् भजन-सेवा की श्रेष्ठता हू कहे, जो-भगवान के दरसन भए पाछें हू ये सेवा ही मांगे। सो सेवा ऐसो पदार्थ है, जातें भगवान हू बस होत हैं। तातें वैष्णव कों सेवा बिनु छिनु एक रहनो नाहीं, यह सिद्धांत जताए।

तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-तुम्हारो मनोरथ है सो सब पूरन होइगो। तब पृथ्वीं पर आय कै तुमने जन्म लियो।

सो ऐसें विस्तार पूर्वक राजा भीम आगें कही। तब सुनि कै राजा भीम कों ज्ञान भयो। तब राजा भीमने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी। जो-महाराज ! हमारे ऊपर कृपा करिये। और हमकों अब अपनी सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने

उन राजा भीम कों तथा रानी कों कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करवाय कै श्रीनवनीतप्रियजीकी सन्निधान ब्रह्मसंबंध करवायो। ता पाछें राजा भीम ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! हमारे माथे कृपा करि कै श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय दीजे। तब श्रीगुसांईजी उन राजा भीम के माथे कृपा करि कै श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय दिये। ता पाछें राजा भीम कों श्रीगुसांईजी आपने कृपा करि कै सेवा की रीति भांति सिखाई। पाछें राजा भीम ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! अब आज्ञा होंइ तो हम अपने देस कों जाय। तब श्रीगुसांईजी आप उन राजा भीम कों बिदा किए। तब राजा भीम ने श्रीगुसांईजी की बोहोत भेट करी।

ता पाछें कितनेक दिन में अपने देस आय पहोंचे। तब इन अपने महल में एकांत में श्रीठाकुरजी कौ मंदिर सम्हरायो। तहां श्रीठाकुरजी कों पधराए। ता पाछें वे दोऊ स्त्री-पुरुष मिलि कै श्रीठाकुरजी की सेवा भली-भांति सों करन लागे। और श्रीगोकुल की मानसी नित्य करते। सो इन ने श्रीगुसांईजी के तथा श्रीगोकुल के अनेक पद किये हैं। सो कछूक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे। जो चहिए सो मांगि लेते।

सो वे राजा भीम श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र

भगवदीय हे। तातैं इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

॥ वार्ता १८३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक विरक्त ब्राह्मन, गोवर्द्धन कौ, सो वह श्रीगिरिराज की परिक्रमा करत दोई वैष्णव कों अपने घर लिवाय ल्यायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये सात्विक भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'माया' है। ये 'रंगा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गोवर्द्धन में एक सनाढ्य ब्राह्मन के प्रगट्यो। सो बालपने सों ही वैराग्य दसा में रहे। मा-बाप जानें, जो-ये पूरव जन्म कौ वैरागी है। तातें इन पर स्नेह करे नाहीं। पाछें ये बरस सत्रह कौ भयो। तब इनके मा-बाप मरे। तब ये गोपालपुर में आई श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो। पाछें उहांई रह्यो।

वार्ता प्रसंग - १

सो यह विरक्त नित्य एक परिक्रमा श्रीगिरिराज की करतो। पाछें चुकटी मांगि कै निर्वाह करतो। और एक वैष्णव गृहस्थ हतो। सो श्रीगोकुल आयो। सो वाके मन में रुजगार करिवे की हती। सो यह रुजगार श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के घर को तो करतो नाहीं। तब वह श्रीगिरिराज गयो। जो-यहां रुजगार करों। सो उहांऊ श्रीनाथजी कौ तथा श्रीवल्लभकुल के घर कौ रुजगार हतो। और तो कछु रुजगार हतो नाहीं। तब सब छारि कै भगवद् भजन करिवे कौ बैठ्यो।

भावप्रकाश — यामें यह जताए, जो-देवअंस, गुरुअंस निषिद्ध है। सो वैष्णव कों सर्वथा न लेनो।

सो रात्रि-दिन एक आसन बैठ्यो रहतो। सो वह विरक्त वैष्णव परिक्रमा कों आवे। सो नित्य देखे। सो देखत देखत

दिन पांच भए। तब वा विरक्त वैष्णव के मन में आई, जो-यह महाप्रसाद कहां लेत होइगो ? सो ऐसें जानि कै वासों कहीं, जो-चलो, उहांई भगवद् भजन करियो। और उहांई महाप्रसाद लीजियो। सो ऐसे कहि कै अपनी कोठरी में ले गयो। सो चुकटी लावे सो रसोई करे, भोग धरे, महाप्रसाद की पातरि वा वैष्णव कों धरे, आप लेय। तब ऐसें करत कितनेक दिना भए। तब एक तीसरो वैष्णव उहां आइ के भगवद् भजन करिवे कों बैठ्यो। तब वा विरक्त वैष्णव ने कही, जो तुम्हारी यहां रहिवे की इच्छा है कहा? तब वाने कही, जो-है तो सही। तब वाहू कों पातरि धरे। अब वे वैष्णव तो बैठे भगवद् भजन करें। महाप्रसाद लेई। और वह विरक्त वैष्णव चुकटी मांगे, रसोई करे। सो वाकों बड़ो परिश्रम होइ। सो वाकौ श्रम देखि कै श्रीठाकुरजीने कही, जो-तू रसोई करि, मैं परचारगी करूंगो। तब यह बात उन दोऊ वैष्णवनने सुनी। तब कही, जो-यह दूसरो कौन है ? तब देखें तो श्रीठाकुरजी हैं। तब उन दोऊनने बिनती कीनी, जो-महाराज। हम को आज्ञा करो तो हम तीन्यों मिलि कै करे। तब श्रीठाकुरजीने कही, जो-तू रसोई करि, यह दूसरो परचारगी करेगो, और यह विरक्त चुकटी ल्यावेगो। ऐसें तीन्यों मिलि कै करो। तब ऐसें ही करन लागे।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ वैष्णव भूखौ होंई, वाके खाइवे, पीवे कौ कछू साधन न होंई तो वाकों घर ल्याई प्रीतिपूर्वक प्रसाद लिवावनो। यह वैष्णव मात्र को धर्म कहै। और प्रसाद लेइवेवारे कों वा वैष्णव के घर की कछू टहल करि कै प्रसाद लेनो, यहू कहे। काहे तें ? जो-प्रभु बड़े कोमल

स्वभाव के हैं । तातें सेवा करत श्रम होंई तो आप व्याकुल होत हैं । सो कछू टहल करि कै प्रसाद लेइ तो वा वैष्णव कों श्रम न होंई । और प्रभुन की भक्तवत्सलता हू जताए । सो कैसे ? जो कोउ वैष्णव की निष्काम भाव तें टहल करत है, ताके प्रभु आधीन व्है रहत हैं । सो आप हू परचारगी करन की कहे । यातें वैष्णव की सेवा सर्वोपरि है ।

सो वे तीन्यों श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ॥१८४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक राजा पूर्व कौ, सो वह गृहस्थी तथा विरक्त कौ धर्म पूछ्तो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है । लीला में इनको नाम 'संशयशीला ' है । ये 'रंगा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है ।

सो ये पूरब में एक राजा के जन्म्यो । पाछें, बरस बाईस को भयो तब वाको पिता मर्‍यो । तब यह राजा भयो । सो केतेक दिन पाछें ये श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पुरुषोत्तमपुरी आयो । सो उन दिनन श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमपुरी में बिराजत हते । सो या राजा कों दरसन भए । सो महा अलौकिक दरसन भए । तब राजा दंडोत् कियो । पाछें बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप इनकों सरनि लिये । पाछें राजा के कुटुंब के और हू सेवक भए । ता पाछें राजा ने बिनती करीं, जो-महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब आप आज्ञा किये, जो-राजा ! भगवत्सेवा करो । पाछें आप कृपा करि कै राजा के माथे श्रीठाकुरजी पधराय दिए । और आज्ञा किये, जो-इनकी सेवा प्रीति सों करियो। और आए गए वैष्णव कों संग करियो। पाछें वह राजा श्रीठाकुरजी कों पधराय अपने देस आयो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह राजा श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सो करतो सो जो कोई वैष्णव आवतो ताकों बोहोत प्रीति स्नेह सों महाप्रसाद लिवावतो । पाछें आछें बिछौना बिछाय कै बेठावतो, आछौ समाधान करतो । महिना पंद्रह दिन राखतो। पाछें जब

बिदा व्है वैष्णव जाते तब राजा पूछतो, जो-कहो वैष्णवजी! विरक्त कौ धर्म आछौ के गृहस्थी कौ धर्म आछौ? सो राजा कों तो या बात कौ संदेह ही रह्यो । परि एक निरनय न भयो। पूछे तो बोहोत वैष्णवन सों और उत्तर हू बोहोत दिये । परि एक निरनय न भयो । तब कोई समै अद्‌भुतदासजी ब्रज में डोल्यो फिर्‌यो करते,सो राजा के यहां आय निकसे । तब राजा ने अद्‌भुतदासजी कौ बोहोत समाधान कियो । और महाप्रसाद लिवायो । तब अद्‌भुतदासजी तो जायवे लगे, तब राजा ने यह बिनती करी, जो- महाराज ! मेरे इहां कछुक दिन बिराजो। तब अद्‌भुतदासजी ने कही, जो-हम तो एक रात्रि हू काहू के घर रहत नाहीं । तब राजा ने यह बिनती करी, जो-महाराज! कृपा करि कै एक बात मैं आप सों पूछत हों, सो ताकौ प्रति-उत्तर मोकों आप दे कै आप पधारो । तब अद्‌भुतदास ने कह्यो, जो-कहो राजा ! तुम कहा पूछत हो ? तब राजा ने यह कही, जो-महाराज ! मैं बोहोत वैष्णवन सौं पूछ्यो , जो विरक्त कौ धर्म आछौ के गृहस्थी को धर्म आछौ सो कहो? सो बोहोतनतें पूछ्यो और उत्तर हू दिये । परि एक निरनय न भयो। मेरो संदेह न गयो । सो आप कृपा करिकै मेरो संदेह मिटावो । तब अद्‌भुतदासजी ने कही, जो-राजा! कहि दिखाऊं के करि दिखाऊं ? तब राजा ने बिनती करि, जो-महाराज ! करि दिखावो । तब अद्‌भुतदासजी ने राजा सों कही, जो हम

कहे तेसें करो तो करि दिखावे । तब राजा ने बिनती करी, जो-महाराज ! आप कहोगे सो मैं करूंगो । तब अद्भुतदास ने कही, जो-एक तेरी घुड़सार में आछो घोड़ा होंइ सो ल्याइ कै असवार होउ । पाछें अकेले ही घोड़ा दोरावो। सो दोरावत दोरावत कोई गाम आवे ता गाम में चले जैयो । तब राजा ने ऐसे ही कियो । तब सांझ कों एक रूख आयो। ताके नीचे घोड़ा ठाढ़ो रह्यो । तब राजा तहां रूख नीचे घोड़ा बांधि कै बैठ्यो । सो वा रूख में एक भीलो हतो । सो वा भीला में होला-होली उनके बेटा-बेटी हे । सो बन में गये । सो बन में सों चारि फल ल्याए । सो उन चारयोन ने एक-एक फल बांटि लियो । पाछें, राजा रूख नीचे बैठ्यो हतो । तब होले ने कही, जो-आज अपने मेहमान आए हैं। सो मैं तो याकों फल देत हूं। सो वा होले ने तो फल दियो। तब होली ने कही, जो-मैं हूँ वाकों फल देत हूं । सो वा होली ने हूँ फल दियो । पाछें होली के बेटा-बेटी नें हू फल दिये । सो उन चारयो जनेंन ने चारि फल दिए । तब राजा ले कै बोहोत प्रसन्न भयो । तब रात्रिकों उहांई रहे । फेरि उहां सों सवारे ही असवार होई कै घोड़ा दोरायो । सो दोरावत दोरावत एक गाम आयो । सो ता गाम में यह राजा चल्यो गयो । सो ता गाम में सब राजा भेले भये हते । सो ता गाम में यह राजा जाय बैठ्यो । सो वा गाम को राजा हतो । सो ताके एक बेटी हती । सो वा बेटी कौ विवाह हतो । तब

तेल की कढ़ाई ताती करी हती । तामें मूंदरी डारी ही । और कह्यो, जो-या मूंदरी कों कोऊ काढ़े ताकों मैं बेटी देऊं । यह संकल्प राजा ने कियो हतो । सो राजा तो बोहोत भेले भए । परि काहूकी सामर्थ्य नाहीं, जो-तेल की कढ़ाई में सों मूंदरी काढ़े । तब अद्‌भुतदासजी आय निकसे । सो आय कै तेल की कढ़ाई में बैठि गये । सो तुंमी भरि भरि कै न्हाए। न्हाय कै मूंदरी हाथ में ले कै बाहिर आए । तब वे सब राजा हाथ जोरिकै दंडवत् किये, जो-महाराज ! तुम धन्य हो । पाछें वह राजा, जिनकी बेटी को विवाह हतो सो हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो-मेरी बेटी तुमकों दीनी । तब अद्‌भुतदास ने कही, जो-हमकों दीनी? तब राजा ने कही, जो-हां दीनी । तब अद्‌भुतदास ने वह राजा दिखाय दियो । जो-याकों ब्याहि दीजो। तब अद्‌भुतदासजी तो वाही समै बन में चले गए । और वह राजा ब्याहि कै अपने घर आयो। तब आय कै फेरि श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो । और वैष्णव आवें ताकों महाप्रसाद लिवाय कै पूछे, जो-कहो वैष्णवजी ! गृहस्थी कौ धर्म आछौ के विरक्त कौ धर्म आछो? सो कोऊ कछू कहे, कोऊ कछू कहे । सो संदेह निवृत न होंई । तब एक समै अद्‌भुतदासजी फेरि आय निकसे । तब राजा ने अद्‌भुतदास कों महाप्रसाद लिवायो । आछौ समाधान करि कै फेरि विनती करी, जो महाराज ! गृहस्थी कौ धर्म आछौ के विरक्त कौ धर्म

आछौ? तब अद्भुतदास ने कही, जो-राजा ! एक वैष्णव आयो हतो सो तू भूलि गयो ? तब राजा ने कही, जो-मैं तो भूलि गयो। तब अद्भुतदास ने बतायो, जो-तू घोड़ा दोराय कै गयो हतो सो तहां रूख के नीचे बैठ्यो हतो । सो वा वृक्ष में चारि पक्षी रहत हते, सो तिनके पास चारि फल हते। सो वे चार्‍यो फल तुम कों दिए। और वे चार्‍यों भूखे रहे । सो राजा! यह गृहस्थी कौ धर्म है । फेरि तू घोड़ा दोराय कै वा गाम में गयो हतो, सो तहां सब राजा बैठे हते । सो तहां तेल की कढ़ाई ताती करी हती। सो काहू की सामर्थ्य मूंदरी काढ़िवे की न हती। तब तहां एक विरक्त आय तेल की कढ़ाई में बैठि गए। तो तुंमी भरि भरि कै न्हाए । पाछें मूंदरी हाथ में ले कै बाहिर आये। तब वा राजा ने आय कै बिनती करी, जो-मेरी बेटी तुम कों दीनी । तब वा विरक्त वैष्णव नें तुम कों बेटी ब्याहि दीनी। सो राजा ! यह विरक्त कौ धर्म है । सो राजा अब तू समझ्यो? यह गृहस्थी तथा विरक्त के धर्म हैं । तोकों बताय दिये । तब राजा ने यह सुनि कै कही, जो-महाराज ! यह तो विरक्त कौ तथा गृहस्थी कौ धर्म दोऊ बोहोत कठिन हैं । तब अद्भुतदास ने कही, जो-राजा । तेरे तो द्रव्यादिक बोहोत है। और बोहोत आवत हैं । तामें तू वैष्णवन कौ समाधान करत रहे । तातें बेर-बेर क्यों पूछत है ? अब तू वैष्णवन सों मति पूछियो । तब राजाने कही, जो-अब न पुछूंगो ! तब अद्भुतदासजी तो

ब्रज कों चले गए । और वह राजा फेरि काहू वैष्णव सों न पूछतो । और वह राजा श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लाग्यो ।

भावप्रकाश — या वार्ता में यह जतायो, जो-परोपकार बड़ो पदार्थ है । वाके समान और धर्म नाहीं । और जो कछू करनो सो संसय रहित होंय करनो, यहू कहे।

सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र हतो। तातें इन की वार्ता कौ पार नाहीं । सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१८५॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव कायस्थ, सूरत कौ, जो रसोई करि कै हांड़ी संग राखतौ, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है -

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'ब्रज-प्रिया' है । ये 'रंगा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं ।

ये सूरत में एक कायस्थ के जन्म्यो । सो वह बालपने सों वैराग्य दसा में रहे। सो ये बरस चौदह को भयो । तब श्रीगुसांईजी आप सूरत पधारे । सो या कायस्थ कों दरसन भए । तब याने बिचार्‍यो, जो-इनकी सरनि जइए तो आछो । पाछें याने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि कै मोकों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जानि सेवक किये । नाम सुनाय निवेदन कराए । पाछें यह कायस्थ श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आयो पाछें गोपालपुर गयो । तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । पाछें ब्रजयात्रा कियो । सो याकों बोहोत सुख भयो । तातें वह प्रतिवर्ष ब्रजयात्रा कों श्रीगोकुल आवे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह कायस्थ वैष्णव सूरत सों बरस के बरस प्रति हिंडोला जन्माष्टमी आय के सदा श्रीगोकुल में करतो । पाछें ब्रजयात्रा करतो । सो एक समै वह कामवन गयो । तब उहां सों एक हांडी ल्याय कै दारि करी, पाछें बाटी करि कै भोग

धरी। सो दारि ठलाय कै कटोरा में भोग धरी। पाछें हांडी कों धोय कै रज लगाई कामरि में बांधि कै रूख में धरि कै पाछें भोग सराय महाप्रसाद लियो। पाछें कपड़ा पहरि कै चल्यो। सो ऐसें सदैव ब्रजयात्रा करि कै पाछें अपने घर सूरत आवतो, परि वह हांडी संग ही ल्यावतो। और ब्रज में आवे तब हू संग ही ल्यावे। ताही में दारी करे।

सो एक समै वह वैष्णव श्रीगोकुल आयो। तब श्रीगुसांईजी आगें दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी आपने पूछी, जो-वैष्णव ! तू बरस के बरस आवत है ? तब वा वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! आप की कृपा तें बरस के बरस ही आवत हों। तब आयकै हिंडोला जन्माष्टमी करि कै पाछें अन्नकूट करि फेरि जात हूं। सो जाय कै पांच रुपैया कमाय कै पाछें फेरि आवत हूं। तब दूसरे वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी! जो महाराज ! यह वैष्णव तो बोहोत आछौ है, परि एक कार्य बोहोतही अनुचित करत है। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-ऐसो अनुचित कार्य कहा करत है ? तब कही, जो-महाराज ! यहां सों एक हांडी लिये जात है। और उहां सों ले आवत है। ताही में दारि करे। तब श्रीगुसांईजी आपने वा वैष्णव सों पूछी, जो-क्यों रे ! तू ऐसे ही करत है? तब वा वैष्णव ने बिनती करी, जो-कृपानाथ ! ऐसे ही करत हों। तब आपने आज्ञा करी, जो-यह मार्ग की रीति नाहीं। तब वा वैष्णव ने

श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! मेरे ब्रजरज की हांडी है। सो सोना की है। और कृपानाथ ! मेरे बरस दिन में आयवो और जायवो, तामें पांच रुपैया मेरे सहज में लगि जाय। सो पांच रुपैया की सामग्री ले कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अंगीकार कराई। और कृपानाथ ! मेरे तो ब्रजरज की ही सही। ता पाछें आप जैसें आज्ञा करो,तैसे करों। तब श्रीगुसांईजी आपने आज्ञा करी सब वैष्णवन सों, जो-यह करे सो तुम मति करियो, याकी देखादेखी, याके भाव सों यह करे सो सही। तुम इन कों कछू कहियो मति। सो श्रीगुसांईजी याकी बात सुनि कै बोहोत प्रसन्न भए। और प्रसन्न होय कै आपने आज्ञा करी, जो-देखो वर्ष के वर्ष प्रति ब्रज में आयवो, याको बड़ो भाग्य है। और याकौ भाव देखो ! ब्रजरज कौ भाव याही ने जान्यो। और पांच रुपैया ल्याय हांडी के बचाय कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री अंगीकार करावत है। सो यह वैष्णव धन्य है। या प्रकार आपने या वैष्णव की बोहोत सराहना करी। तब वे सब वैष्णव प्रसन्न भए। जो-यह वैष्णव दैवी है।

भावप्रकाश - या वार्ता को अभिप्राय यह है, जो-ब्रज अलौकिक है। सो जिन कों ब्रजकौ भाव स्पुर्द होई ताकों कछु बाधक नाहीं। और जो कोऊ देखादेखी करें तों वाकों अपराध लगें, बहिर्मुख होई। और यहू जताए, जो-वैष्णव भगवदीय की क्रिया नाहीं देखनी।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं , सो कहां

तांई कहिए। वार्ता ॥१८६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक बनिया वैष्णव, जिनने भैरव कों नारियल चढ़ायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है । लीला में इनको नाम 'सिन्दुरी' है । ये 'श्रीदामा' तें प्रगटी हैं । तातें उन के भावरूप है ।

ये गुजरात में एक बनिया के जन्म्यो । सो बरस अठारह को भयो । तब याके माता-पिता मरे । पाछें यह इकलोई रह्यो । सो ये द्वारिका चल्यो, श्रीरनछोरजी के दरसन कों । सो ता समै श्रीगुसांईजी आप श्रीद्वारिकाजी बिराजत हुते । सो इन दरसन पाये । तब मन में कहे, जो-इन के सेवक हूजिए । पाछें ये श्रीगुसांईजी सौं बिनती कियो, जो-महाराज ! कृपा करि सेवक कीजिए । तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो-तेरे संग और कोऊ नाहीं है ? तब याने कह्यो , जो-महाराज ! मेरे संग कोऊ नाहीं है । मा-बाप अब ही मरे हैं । इकलोई हूं । तातें कृपा करि अपनी सेवा-टहल कछू दीजिए तो आछो । तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम-निवेदन कराय सेवक किये । पाछें अपनी पास राखे । सो ये श्रीगुसांईजी की टहल करें । सो कछूक दिन में श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी तें श्रीगोकुल पधारे । तब ये हू श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आयो । तब इन श्रीगोकुल के दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप इनको साथ ले श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे । सा गोपालपुर आये । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि और श्रीगोवर्द्धन-नाथजी की टहल करि । ता दिन तें वह श्रीगोवर्द्धननाथजी की टहल करतो सामग्री लावतों और जो कछू टहल होती सो सब करतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक दिन वह बनिया वैष्णव श्रीगिरिराज सों आगरे सामग्री लेवे कों गयो । सो उनके संग दोइ वैष्णव और हते। सो दोइ गाड़ा सामग्री के भरि कै गेल में आवत हते । सो गाड़ा अटकि गए । तब या बनिया वैष्णव ने काहू सों पूछी, जो-गाड़ा क्यों अटके ? तब वाने कही, जो-यहां एक भैरव है । सो भैरव

कों एक नारियल चढ़ावे तब गाड़ा चले । तब या वैष्णव ने कही, जो-एक नहीं दोय । तब नारियल चढ़ाए। तब दोऊ गाड़ा चले । तब श्रीगिरिराज आए । सो सामग्री भंडार में धरी। पाछें श्रीगुसांईजी के आगें दंडवत करी । तब आपने पूछी, जो-सामग्री ल्याए ? तब वाने कही, जो-हां, महाराज ! दोइ गाड़ा भरि ल्यायो । सो उतारि के आपके पास आयो हूं । तब संग के वैष्णव तहां ठाड़े हते, तिननें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो- महाराज! सामग्री तो ल्यायो । परंतु या वैष्णव ने एक अन्याव कियो है । तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो-अन्याव कहा कियो ? तब उन वैष्णव ने कही, जो भैरव कों दोइ नारियल चढ़ाए हैं । तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव तें पूछे, जो-ये वैष्णव कहा कहत हैं? तब वा वैष्णव ने कही, भैरव कों दोइ नारियल चढाए हैं तब सामग्री ल्यायो हूं । तब श्रीगुसांईजी वासों पूछे, जो-तेनें क्यों अन्याश्रय कियो ? तब वा वैष्णव ने कही, जो-महाराज! गेल में सामग्री के गाड़ा अटके । तब मैं काहू सौं पूछी, जो-गाड़ा क्यों अटके ? तब वाने कही, जो-यहां एक भैरव है ताकों नारियल चढ़ावें तो गाड़ा चले । नहीं तो अटकि जाय । तब राज ! मैनें दोइ नारियल चढ़ाए । तब दोऊ गाड़ा चले । सो महाराज ! मजूर कों मजूरी देतो तो दोई रुपैया लगते । सो तो दोई नारियल दिए तें काम भयो ! सो तो मजूर कों मजूरी दिए । यामें अन्याश्रय कहा भयो ? तब श्रीगुसांईजी

मुसिक्याय कै कह्यो, जो-मजूर कों मजूरी दिए तामें अन्याश्रय कहा ?

भावप्रकाश — यह कहि यह जताए, जो-भगवद् संबंधी संकल्प होई तो अन्याश्रय नहीं होई । तातें या वैष्णव ने भैरव की मजूरी समझ कै नारियल दिए । कछू चमत्कार जानि कै नाहीं । तातें अन्याश्रय नाहीं भयो । जो-चमत्कार जानि नारियल चढावतो तो अन्याश्रय होतो । तातें हृदय की भावना सों ही आश्रय और अन्याश्रय होत हैं । तामें क्रिया प्राधान्य नाहीं ।

सो यह वैष्णव श्रीगिरिराज में सदैव रहतो । श्री-गोवर्द्धननाथजी के भंडार में जो सामग्री चहियत सो लावतो। सो सामग्री बोहोत सुंदर ल्यावतो । तातें श्रीगुसांईजी वा वैष्णव के ऊपर बोहोत प्रसन्न रहते । सो वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के दरसन सेवा सदैव करतो ।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो, तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥१८७॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक हँस-हँसनी, मानसरोवर पै रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये दोऊ सात्विक भक्त हैं । लीला में इनको नाम 'हंसा' और 'शिवा' हैं । ये दोऊ 'श्रीदामा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप मानसरोवर पै संध्यावंदन करत हते । सो तहां एक हंस-हंसनी कौ जोड़ा श्रीगुसांईजी के आगें आइ कै जल पीवत हतो । तब आपने कृपा करि कै

वाकों नाम सुनायो सो वे मानसरोवर के रूखन पर रहतें। तब एक पारधी आयो । तब हंस-हंसनी कों बान मारे । सो सब दिन पच्यो । परि इनके बान न लागे । तब संध्या कों घर गयो। तब फेरि सवेरे मन में कही, जो-याके बान क्यों न लागे ?

सो वे हंस-हंसनी ब्रजयात्रा में वैष्णव आवते, सो मानसरोवर पै जब वैष्णव आवते पाछें मानसरोवर में न्हाते, तब वैष्णवन कें पाँवन की रज में लोटते । तब पारधी ने जान्यो, जो-ये वैष्णवन की रज में लोटत हैं । सो मैं वैष्णवन कौ स्वांग करि कै जाऊं । सो मेरे पाँवन की रज में लोटेंगे। तब मैं पकरि लेउंगो । तब याने वैष्णवन कौ स्वांग ले कै वैष्णवन के संग में यहू चल्यो आयो । तब हंस बोल्यो, जो-यह कौन है ? ताकों जानों हो ? तब हंसनी बोली, जो-यह पारधी है । जाने अपन कों बान मारे हते । सो वह वैष्णवन कौ स्वांग ले कै वैष्णवन के संग आबत है । सो याके पाँवन की रज में कैसें लोटे ? तब हंस बोल्यो, जो-आगें आपुन श्रीगुसांईजी के सेवक ब्राह्मन ब्राह्मनी हते । और श्रीठाकुरजी की सेवा करत हते । जो-महाप्रसाद अपुन वैष्णवन कों लिवावत हते। सो ब्राह्मन वैष्णवन कों आदर करि लिवावत हते । औरन कों साधारन पक्ष करि कै लिवावत हते । सो ता अपराध सों अपुन हंस-हंसनी भए हैं । और वैष्णव को बानो ले कै पारधी आयो है । सो याके पाँवन की रज में लोटेंगे । और यह पकरि कै

मारेगो तो सुखेन मारो। एक बार मरनो है। पाछें फेरि वे आए। तब वैष्णवन की पाँवन की रज में लोटे। पाछें पारधी की पाँवन की रज में लौटे। तब पारधी पकरिवे लग्यो। तब हंस-हंसनी दोऊन की पांख पारधी कों लागी। सो परस मात्र तें पारधी की बुद्धि निर्मल होई गई। तब पारधी ने कही, जो-अब मैं वैष्णव होऊं तो भलो है। सो उन हंस-हंसनी के संग तें पारधी भलो वैष्णव भयो।

सो वे हंस-हंसनी मानसरोवर के वृक्षन ऊपर बैठे रहते। सो जो-कोई वैष्णव आवतो ताकी पाँवन की रज में लोटते। ऐसे सदैव करते। पाछें हंस-हंसनी की देह छूटी। तब भगवद्चरनारविंद को प्राप्त भए।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव के संग तें बुद्धि निर्मल होत है। तातें वैष्णव को संग अहर्निस करनो। और वैष्णव-भाव में जाति कौ बिचार नाहीं है। काहेतें, जो-वैष्णव कौ स्वरूप ही महा अलौकिक है। क्षूद्र हू जो वैष्णव होई तो ताकों आदर करनो। वाकों अपने तें बड़ो जाने। यह सिद्धांत जताए।

सो वे हंस-हंसनी श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१८८॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक पारधी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है, लीला में इनको नाम 'बिष्वकसेनी' है। ये 'श्रीदामा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है। ये लोहबन में एक पारधी के जन्म्यो। सो जन्मत ही तें दुष्ट कर्म करे। ऐसे करत बह बरस बीस को भयो। तब एक दिन

मानसरोवर शिकार कों गयो । सो ऊपर कहि आए हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वा पारधी कों परस मात्र ते बुद्धि निर्मल भई । ज्ञान भयो । तब पारधीने कह्यो, जो-मैं अब वैष्णव होऊं तो भलो। तब वैष्णवन सों पूछी, जो-वैष्णव कैसे हूजिए ? तब वैष्णवनने कही, जो-श्रीगोकुल जाइ कै श्रीगुसांईजी के पास नाम पावो। तब वैष्णव होंय । तब वह पारधी श्रीगोकुल गयो तब श्रीगुसांईजी श्रीठकुरानी घाट पें संध्याबंदन करिवेकों पधारे हते । तब पारधी ठकुरानी घाट ऊपर आयो। तब वैष्णवन सों पूछी, जा-श्रीगोकुल के गुसांईजी येही हैं? तब वैष्णवन कह्यो, जो-हां ! येही हैं । तब पारधी ने आय कै दंडवत कीनी । और बिनती करी, जो-महाराज! मैं आपकी सरनि आयो हूं । तातें मो पर कृपा करि नाम सुनाइए। तब आपने आज्ञा करी, जो-तू तो पारधी है। हंस-हंसनी कों बान मारतो आयो है । तातें हम तोकों नाम कैसे सुनावे? तब पारधीने बिनती कीनी, जो-कृपानाथ ! हो तो मैं ऐसो ही । आप आज्ञा किए तैसोही। परि अब मैं जीव-हत्या कबहू न करूंगो । तातें कृपा करि मोकों नाम देहु । तब आपने कही, जो-तू जीवहत्या कबहू मति करियो। और चाकरी खेती करि कै निर्वाह करियो । तब पारधी ने कही, जो-राज ! आपने आज्ञा करी है तैसे ही करूंगो ! तातें अब मोकों सरनि लीजिए । तब आपने आज्ञा करी, जो-तू श्रीयमुनाजी में न्हाइ आउ । तब वह श्रीयमुनाजी में स्नान करि

आयो। तब आपने कृपा करि कै बुलाय कै नाम सुनायो। पाछें फेरि आज्ञा करी, जो-मैं तोंसों फेरि कहत हूं, जो-तू जीवहत्या कबहू मति करियो। जाउ, चाकरि करि कै निर्वाह करियो। सो उन हंस-हंसनी के संग तें यह पारधी भलो वैष्णव भयो। भलो कृपापात्र भगवदीय भयो। अष्टाक्षर निरंतर लियो करे।

भावप्रकाश — या वार्ता में यह जताए, जो-कैसोउ पतित जीव होई, परि श्रीगुसांईजी की सरनि आवे ताकौ श्रीगुसांईजी आप निश्चय उद्धार करत हैं। तातें 'नामरत्नाख्य' में श्रीरघुनाथजी आपुकौ नाम 'महापतितपावनः' ऐसें लिखे हैं। और वैष्णव कों जीव-हत्या सों डरपत रहनो, यहू कहे।

सो वह ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ॥१८९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक पीतांबरदास ब्राह्मन, गुजरातके, जिनने श्रीगुसांईजी के संग ब्रजयात्रा करी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश — ये सात्विक - भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'ब्रह्मवल्ली' है। ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्मे। सो बरस बीस के भए तब इनकों वैष्णवन कों संग भयो। सो वैष्णवन की मंडली में जाई, नित्य भगवद्वार्ता सुने। तब इनके मन में आई, जो-हों कब श्रीगुसांईजी के दरसन करों ? वैष्णव होउं ? पाछें कछूक दिन में माता-पिता मरे। तब एक साथ वैष्णव कौ श्रीगोकुल जात हतो। तिन के संग ये हू श्रीगोकुल कों चले।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै पीतांबरदास वैष्णवन के संग में श्रीगोकुल आए। सो श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै साष्टांग दंडवत करि कै बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइये। मैं बोहोत दिनन तें भटकत डोलत हों। सो अब मेरो अपराध

क्षमा करिये । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै पीतांबरदास कों नाम सुनायो । और निवेदन करवाए । सो श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान बैठाय कै समर्पन करवाए। तब पीतांबरदास ने यथासक्ति भेट कीनी । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों सेवा तें पहोचि कै अपनी बैठक में पधारे । सो गादी तकियान के ऊपर बिराजे । तब सब वैष्णव दरसन करिवे कों आए । तब पीतांबरदास हू आय कै साष्टांग दंडवत् किये । पाछें आप भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै पीतांबरदास को महाप्रसाद जूठनि की पातरि धरी । तब पीतांबरदासने महाप्रसाद लियो । सो पीतांबरदास कों महाप्रसाद लेत ही ज्ञान भयो । जो श्रीगुसांईजी तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं । तब पीतांबरदास ने अपने मन में विचार कियो, जो-श्रीगुसांईजी कों छोरि कै कहूं जानो नाहीं । जो-इनही के चरणकमल कौ आश्रय राखनो । सो पीतांबरदास कहूँ गए नाहीं । ता पाछें श्रीगुसांईजी पीतांबरदास कों अपनी खवासी में राखे । सो पीतांबरदास बोहोत प्रसन्नता सों सेवा करते ।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें एक समय पीतांबरदास को मनोरथ यह भयो, जो ब्रजयात्रा करिये । सो श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी । तब श्रीगुसांईजी आप कहें, जो-हम हूँ ब्रजयात्रा करिवे कों चलेंगे। तब तुम हू चलियो । तब श्रीगुसांईजी पीतांबरदास की आतुरता देखि कै आपने मन में बिचार किये । सो सब सिद्ध

कियो। सो चैत्र मास के दिन हते। सं. १६२८ फागुन वदि ७ कों श्रीगोकुल कौ बास किये हते। तब ता उपरातं भाद्रपद वदि १२ के दिन सेन आर्ति करि कै पाछें श्रीगोकुलनाथजी कों संग ले कै समै देखि कै संकोच तें चले। सो कोऊ जाने नाहीं। सो ऐसे श्रीगुसांईजी आप पधारे। तब रात्रि को श्रीमथुराजी में रहे। पाछें पास ही 'उजागर' चौबे कों बुलाए हते। सो धर्म स्थापन कों वासों बचन लिए। सम्मति पूर्वक परम प्रीति सों विधिपूर्वक 'विश्रामघाट' न्हाय कै पधारे। तब चौबे ने कही, जो-मैं आप के साथ आऊं ? तब श्रीगुसांईजी उन सों कहे, जो-तुम काहे को श्रम करो, तुम्हारो बचन लियो चाहिए। और तुम कों निस्वार्थ काहे कों करावे ? तब उन कह्यो, जो-महाराज ! पहिले तो 'भूतेश्वर' के दरसन कों पधारिये। तब आप ने कह्यो, जो-भूतेश्वर यहां तें भलो मानेंगे। सो तहां नाहीं पधारे। सो उहांइ तें उन कों बिदा किये। और आप पधारे। सो भूमि सुंदर और मयूर पंछीगन को सब्द होत है, ऐसें परमस्थल विषे पधारे। और इतने सेवक श्रीगुसांईजी आप के साथ हते-जो-

१ चाचा हरिवंसजी २ पीतांबरदास ३ कान्ह ४ मलहा भंडारी ५ खवो तिवारी ६ गोपीनाथदास ग्वाल ७ केसोदास बिसल नगरा ८ रूपा रजपूत ९ मुरारीदास ग्वाल १० लीलाधरदास वैष्णवन की रसोई करत हते। ११ और नारायनदास

पांडे आन्योरिया १२ कृष्णदास मोली १३ जशरथ, ये तीन्योजने श्रीगोकुल के कीर्तनीया हते । १४ नारायनदास, १५ रामदास कों श्रीमथुराजी तें संग लिये । और १६ गीयाजाट टोक बोहोत करत हतो, सो मार्ग में हसावत जातो १७ केसवभट, १८ झांझा मारु नीको, ताको पुत्र १९ भगवानदास गोरवा और २० भबानी, ये तिलंग ब्राह्मन । और २१-२२ गोविंदी, मथुरनी, गान आछो करत हती । और एक छकड़ा एक कोठी, एक अश्व २३ जीवनदास नबारा, २४ यह रूपा, एक सैया समाज सहित ।

सो प्रथम तो 'मधुवन' पधारे । सो कुंड के ऊपर स्नान किये। जो भगवत्स्वरूप 'श्रीकल्याणरायजी' के दरसन किये। सो उहां सों स्थल देखत ही पधारे । सो 'तालवन' पधारे । तहां कुंड में स्नान किये । ता पाछें 'श्रीबिहारीलालजी' के दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप 'कमोदवन' पधारे। सो कुंड में स्नान किये । ता पाछें 'श्रीगोपीनाथजी' तथा 'श्रीकल्याणरायजी' के दरसन । किये सो उहां तें स्थल देखत ही पधारे, सो पाछें फेरि 'मधुवन' पधारे । तब रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो । ता पाछें भोग सराय भोजन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े । ता पाछें प्रातःकाल उठि कै देह कृत्य करि के 'सतोये' कों 'सांतनुराजा के धाम' कों पधारे । सो सांतनराजा की कामना सिद्ध करि कै ता पाछें

'सूर्य' दरसन करि कै श्रीगुसांईजी 'बहुलावन' पधारे। सो तहां 'बहुला गाय' को स्वरूप है। सो तहां गौदान करि कै पूजन करि कै 'श्रीमदनमोहनजी' के दरसन करि कै 'रिन' 'अरिष्ट निवारन' श्रीगुसांईजी आप किये। ता पाछें तहां ते 'राधाकुंड', 'श्रीकृष्णकुंड', स्नान करि कै ता पाछें 'श्रीराधाजी', 'श्रीकृष्णजी' के दरसन किए। ता पाछें 'श्यामढ़ाक' के पास ही पकवान आरोगे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप 'गोवर्द्धन' पाऊं धारे। सो वा दिन श्रम बोहोत भयो हतो। जो-सूर्य बोहोत तप्यो हतो। सो श्रीगुसांईजी के श्रीअंग कों संताप बोहोत ही भयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे। सो श्रीगुसांईजी अपने घर तें बिचार कियो हतो, सो श्रीगोकुलनाथजी ने 'धर्मादताप' चूरन करि लियो हतो। जो-धनिया, जीरा आमला सोंठि, जेठी, मिश्री सब कौ समान चूरन करि लियो हतो। सो श्रीगुसांईजी आप कों लिवायो। और आप लिये। तब तत्काल ही स्वास्थ्य भई। तब श्रीगुसांईजी आप कों निद्रा आई। सो भूमि सेज आप पोढ़े। ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी कों निद्रा आई हती। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उठि कै रसोई करी हती। सो श्रीठाकुरजी कों भोग धरि आप भोजन किए। सो रात्रि कों श्रीगुसांईजी आप उहांई पोढ़े। ता पाछें प्रातःकाल उठि के स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता पाछें

मंदिर में तें आय श्रीगुसांईजी आप 'श्रीगिरिराज की परिक्रमा' आरंभ किये । सो श्रीगोवर्द्धन कों दक्षिणावर्त राखि कै, 'मानसीगंगा तीर्थ' 'ब्रह्मकुंड' संध्यावंदन करि कै आप श्रीरसिकरायजी श्रीदानीरायजी के स्वरूप के दरसन करि कै ता पाछें श्रीगुसांईजी आप 'संकर्षन कुंड' को स्नान करि कै धोती पहरि कै तिलक-मुद्रा धारन करि कै परिक्रमा कर कै आप निजमंदिर में पधारे । पाछें वैष्णव सहित आप भोजन किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप गांठौली जाय बसे । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रात्रि कों उठि कै 'परमदरा' होंइ कै पर्वत 'सुगंधी सिला' दाहिनी ले 'स्वेत पर्वत' कों 'बद्रीनारायन' बांई और छोडि कै पाछें 'इंद्रौली' पधारे । ता पाछें श्रीगुसांईजी 'इंद्र कूप' को जल-स्नान करि कै श्रीगुसांईजी आप 'विमलकुंड' कौ स्पर्स करि कै 'सूर्यकुंड' कौ स्नान करि कै 'श्वेतकुंड' श्वेतबंधरामेश्वर होई नंदगोप के कुंड कों देखि कै 'चौरासी कुंड' देखि कै आप भाद्रपद सुद १ कों 'सुनहेरा' की कदमखंडी कों देखि कै 'सुनहेरा' गाम पधारे । सो 'चित्र-विचित्र' सिला देखि कै पाछें श्रीगुसांईज़ी आप अपुने डेरा पधारे । प्रातः 'देहकुड़ं' में स्नान करि 'रतनकुंड' में होइ कै जलस्पर्स करि कै तहां 'चिकसोली' 'नोवारी चोवारी' कौ स्पर्स करि कै 'दोबन' होय कै आप 'संकेतबन' पधारे । तहां 'संकेतबट' के नीचे 'रासमंडल कौ चौंतरा' है तहां 'बैठक' है । 'संकेत' 'बिलास

बट' है। तहां 'कृष्णकुंड' में स्नान करि कै सबबन होइ कै पाछें श्रीगुसांईजी 'मधुकुंड' 'यशोदाकुंड' स्नान करि कै 'श्रीनंदरायजी' 'श्रीयशोदाजी' 'ललिताकुंड' 'बजवारी कुंड' होय कै 'श्रीगोपेश्वर' होइ पाछें 'अक्रूरघाट' 'उत्तरेश्वरघाट' होय कै 'अक्रूरस्थल' है तहां पधारे। पाछें श्रीगुसांईजी 'इस्वरा की पोख्रर' में 'रागी की क्यारी' सो तहां उद्धवजी ने ब्रजभक्तन कों ज्ञान उपदेस कियो है, सो तहां 'मदनकुंड' है, 'जलबिहारी' श्रीठाकुरजी की कदमखंडी है, तहां पधारे। पाछें श्रीगुसांईजी 'पानसरोवर' पधारे। सो तहां श्रीगुसांईजी ने रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय आप भोजन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी भाद्रपद सुद ३ कों 'खिदरवन' मूल नानाकुंड स्नान करि कै ता पाछें श्रीगुसांईजी आप परिक्रमा, नागवली कौ दान करि कै पाछें श्रीगुसांईजी 'करहेला' और 'अंजनोंखर' पधारे। सो तहां श्रीठाकुरजी कों श्री यशोदाजी अंजन देत हैं। सो नौतन कल्प विषे रास को स्थल है। सो सब दाहिनी दिसा छोरि कै तहां श्रीयशोदाजी कौ पीहर है। सो तहां श्रीगुसांईजी डेरा किए। प्रातः तहां बलभद्र कुंड को स्पर्श किये। ता पाछें 'चरणपहाड़ी' देखि कै श्रीगुसांईजी आप 'दधिगाम' 'श्रीव्रजभूषनजी' के दरसन करि कै 'संखचुड' स्थान देखि कै 'सेषसाई' बांई और देकै आप 'सेई गाम' पधारे। सो वन १७ भए। तहां 'अलीखान गोरवा'

को स्थल है। आगे श्रीगुसांईजी तहां खीर करवाई हती। तब मेह बोहोत बरस्यो हतो। सो वह खीरि बहि गई हती। पाछें श्रीगुसांईजी आप सुदी ५ कों आप प्रातःकाल उठि कै 'रासोली' 'बच्छवन' छोड़ि कै 'सेईगाम' तें 'रामघाट' पधारे। तहां श्रीबलदेवजी ने उलटी जमुना प्रवाह बहाए हैं। तहा 'अक्षयबट' है। तहां प्रलंबासुर कों मारे हैं। सो ता स्थल होई कै फैरि 'बलभद्रघाट' श्रीयमुनाजी के तीर उतरे हते। वन १८ भये। पाछें श्रीगुसांईजी 'बलभद्रकुंड' मदसूदनकुंड कौ स्पर्स कियो। सो 'भांडीरवन' कों श्रीगुसांईजी पधारे। आगे 'भांडीरकूप' है, सो भांडीरबन की परिक्रमा करि कै पाछें श्रीगुसांईजी ने रसोई करि कै भोग समर्प्यो। भोग सराय भोजन किये। पाछें बेलवन कों पधारे। वन २० भए। पाछें सूर्य उदय 'मानसरोवर' होइ कै श्रीगुसांईजी स्नान किए। तहां तें श्रीगुसांईजी 'रासस्थल' पधारे। सो यह स्थल सारस्वत कल्प विषे कहे हैं। सो ताही तें सर्वथा देखनो। सो 'बछरोर' के विषे बच्छासुर कौ वध किये हैं। सो सब बांई और छोरि कै श्रीगुसांईजी 'लोहबन' पधारे। सो कुंड कौ स्पर्स किये। बन २१ भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप 'महावन' पधारे। सो 'ब्रह्मांडघाट' होंई कै 'यमुलार्जुन' होई कै 'श्रीमथुरानाथजी' के दरसन किये। तहां तें 'नंदकूप' श्रीगुसांईजी पधारे। सो 'उखल' के सन्मुख 'श्रीरोहिनीजी कौ मंदिर' देखि कै

'सप्तसमुद्र' होई कै 'उत्तरेश्वर घाट' होइ कै 'रमनरेती' के दरसन करि कै 'श्रीगोकुल' कों पधारे। सो श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय भोजन करि कै रात्रि कों श्रीमथुराजी में जाइ के रहे। वन २२ भये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आय कै 'वृंदावन' पधारे। सो 'धर्मकुंड' 'वेणुकूप' श्रीगोविंदजी के दरसन करि कै ता पाछें केसी घाट होइ कै बंसीबट पधारे। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमथुराजी पधारे। सो भाद्रपद सुदि ७ कों बन २४ भये। ता पाछें सब वैष्णव और पीतांबरदास कों संग ले कै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन करवाए। सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी पीतांबरदास के ऊपर करते। ता पाछें पीतांबरदास श्रीगुसांईजी कै चरनकमल छोरि कै कहूं न गये। रात्रि-दिवस सेवा में अहर्निश तत्पर रहते।

भावप्रकाश — सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों एक बेर ब्रज की यात्रा अवस्य करनी। तातें ब्रज कौ स्वरूप हृदयारूढ़ होंई। सो ब्रज भगवदीय हैं। तातें उनके दरसन, मानसी, किए तें भगवद्‌भाव उत्पन्न होंई।

सो वे पीतांबरदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१९०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक बेनीदास क्षत्री, कड़ा में रहते, जिनको मार्ग में भूत मिले, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'साध्या' है। ये

'मोहिनी' तें प्रगटी है । तातें उनके भावरूप हैं । सो ये पूरब में एक क्षत्री के जन्मे। सो बरस चालीस के भये । तब उनके माता-पिता मरे ।

वार्ता प्रसंग - 1

पाछें एक समै पूरव कौ साथ श्रीगुसांईजी के दरसन निमित्त श्रीगोकुल आयो । सो ता साथ में बेनीदास हू अपने घर तें द्रव्य ले कै चले । सो कितनेक दिन में श्रीगोकुल आय पहोंचे । तब बेनीदास ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये । सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कंदर्प लावन्य के दरसन भये। तब बेनीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! मोकों नाम सुनाइए । तब श्रीगुसांईजी बेनीदास सों आज्ञा किये, जो-तू स्नान करि आऊ । तब बेनीदास श्रीयमुनाजी में स्नान करि आए। और दोऊ हाथ जोरि कै बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी बेनीदास कों नाम सुनाये । ता पाछें दूसरे दिन उपवास कराय के श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान समर्पण कराए । तब बेनीदास के पास जो द्रव्य हतो सो सब श्रीगुसांईजी की भेट कियो । ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करवाए । सो दरसन करि कै बेनीदास बोहोत प्रसन्न भये । पाछें कछूक दिन वैष्णवन के संग में बेनीदास श्रीगोकुल रहे । तहां श्रीगुसांईजी के श्रीमुख तें सुबोधिनीजी की कथा सुनते और पंखा की सेवा करते । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब ये हू श्रीनाथजीद्वार आये । सो वैष्णवन के संग में इन श्रीगोवर्द्धन-

नाथजी के दरसन किये। सो श्रीगुसांईजी की कृपा सों श्रीगोवर्द्धननाथजी इन कों अलौकिक दरसन दिए । सो देहानुसंधान भूलि गए । ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि ब्रजयात्रा कों चले । सो कितनेक दिन में संपूर्ण ब्रजयात्रा करि आए । तब आय कै श्रीनाथजी के दरसन किये । तब श्रीगुसांईजी बेनीदास सों पूछे, जो-तुम ब्रजयात्रा करि आए? तब बेनीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! ब्रजयात्रा तो आप की कृपा सों बोहोत आछी करी है । तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवाए । ता पाछें श्रीगुसाईजी आप श्रीगोकुल पधारे । और सब वैष्णव श्रीनाथजी सों बिदा भये । सब वैष्णव यथाशक्ति अपने अपने प्रमान भेट धरे । पाछें सब संग श्रीगोकुल कों चल्यो । सो आय कै श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये । तब एक दिन बेनीदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों सेवा पधराय दीजे । तब श्रीगुसांईजी आप सेवा पधराय दिए। और सब सेवा की रीतिभांति सिखाई । तब बेनीदास कों श्रीठाकुरजी के स्वरूप कौ ज्ञान भयो। जो साक्षात् पुरुषोत्तम हैं । सो ऐसी नेष्टा स्वरूप ऊपर भई । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों सब वैष्णव बिदा होंई कै चले । सो मार्ग में एक दिन मेह बोहोत आयो । तब बेनीदास के पास श्रीठाकुरजी की सेवा हती । सो मेह में बाहिर कैसें रहे ? और मेह तो बोहोत आयो। सो बाहिर

रह्यो जाय नाहिं। सो तहां एक ब्राह्मण रहतो। सो ब्राह्मन सों बेनीदास ने कह्यो, जो-जगह होंइ तो हम को बताय देउ। तब वा ब्राह्मन ने बेनीदास सों कह्यो , जो- ऐसी जगह बड़ी तो नाहीं है। जो-जामें सब संग साथ रहे। और एक ऐसी हवेली है। परि उहां भूत रहत हैं। तब बेनीदासने वा ब्राह्मन सों कही, जो-याकी तो कछू चिंता नाहीं। तब वा ब्राह्मन ने वह हवेली बताई। तब बेनीदास ने वह जगह झारि बुहारि कै स्वच्छ कीनी। और बेनीदास पें श्रीठाकुरजी की सेवा हती। सो श्रीठाकुरजी कों पधराय कै रसोई करी। पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कै सब वैष्णवनने और बेनीदास ने महाप्रसाद लियो। और रात्रि कों उहांई सोय रहे। तब सवारे भए वैष्णव चलन लागे। तब वह भूत आये। तब बेनीदास ने श्रीआचार्यजी श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसांईजी की सपथ दीनी। तब वे जात रहे। सो वे भूत रोयकै गये।

भावप्रकाश — यामें बड़ो संदेह है, जो-बेनीदास ने भूत कों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की सपथ क्यों दिवाई ? यामें तो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी कों श्रम होंई। सो यह मार्ग की रीति नाहीं। तहां कहत हैं, जो-बेनीदास अब ही नए वैष्णव भए हैं। तातें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के नाम को प्रताप देखन कों या प्रकार कहे। और दूसरो अभिप्राय यह है, जो-बेनीदास के पास श्रीठाकुरजी बिराजत हैं सो श्रीठाकुरजी कों कछू श्रम होई , यातें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की सपथ दिवाई। सो श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की सपथ सों भूत डरपि के भाजे, कछू उपद्रव कियो नाहीं। ऐसो आपके नामको प्रताप है। जैसे जीवनदास ने मेह कों श्रीआचार्यजी की आन दिवाई तब मेह रहि गयो, ता प्रकार यहां हू जाननो। यामें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के नाम कौ अलौकिक सामर्थ्य कहै।

ता पाछें सब वैष्णव अपने घर कों गए । सो ऐसो प्रताप श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ है । तब बेनीदास श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे । सो कछूक दिन में श्रीठाकुरजी बेनीदास कों सानुभावता जतावन लागे । जो-चहिए सो मांगि लेते । पाछें बेनीदास कों भगवद्ईच्छा तें श्रीठाकुरजी के चरनारविंद की प्राप्ति भई ।

सो वे बेनीदास श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१९१॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव, गुजरात कौ, जिनकों श्रीगुसांईजी ने अपनो माहात्म्य दिखायो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये राजस भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'कमलाकान्ता' है । ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिका श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे हते । सो मारग में एक गाम आयो । सो ता गाम में श्रीगुसांईजी ने डेरा किये । सो ता गाम में वैष्णव बोहोत रहत हते, तामें येहू रहत हुतो । सो याकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब याने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों नाम सुनाइए । और मोकों अपनी सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो-तू स्नान करि आऊ। तब वह वैष्णव स्नान करि आयो । तब श्रीगुसांईजी ने

कृपा करि कै वाकों नाम-निवेदन करवायो। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-श्रीठाकुरजी की सेवा करो । तब वा वैष्णव ने बिनती करी, जो-महाराज! मैं तो आपकी सेवा करूंगो । और आपके साथ ब्रज कों चलूंगो । तब आपने कही, जो-आछो। ता पाछें आप तो श्रीद्वारिकाजी पधारे । और यह वैष्णव श्रीगुसांईजी की सेवा में तत्पर रहतो। श्रीगुसांईजी की भली भांति सों सेवा करतो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां कितनेक दिन रहि कै श्रीरनछोरजी के दरसन किये । पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें श्रीगोकुल कों विजय किये । सो मार्ग में एक दिन एक जगह श्रीगुसांईजी आप डेरा किये । सो तहां श्रीगुसांईजी ने रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो । और सब ब्रजवासी टहलुवा रसोई करन लागे। तब इतने ही में अकस्मात् मेह चढ़ि आयो । सो अंधियारो होय गयो । तब या वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब कहा प्रकार कीजिए ? तब श्रीगुसांईजी बोले, जो-अरे मेह ! तू सम्हरि कै आइयो । हम आन्योर के हैं।

भावप्रकाश — यह कहि श्रीगुसांईजी आपु अपने स्वरूप जताए । सो कहा? जो-आप साक्षात् नंदराजकुमार हैं । सो पहिले सात दिना तांई आपने श्रीगोवर्द्धन कों धारन करि मेघ-वृष्टि कौ निवारन कियो है । सोई यह स्वरूप हैं । सो गोपालदासजी गाए हैं -

'श्रीपुरुषोत्तम स्वतंत्र क्रीडा, लीलाद्विजतनुधारी ।
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो, वासव वृष्टि निवारी ॥ '

सो या प्रकार वेही श्रीपुरुषोत्तम आप द्विजरूप धारन करि प्रगट भए हैं। सो जताए।

तब ताही समय सब घटा उतरि गई। सो तहां श्रीगुसांईजी ने या भांति अपने स्वरूप कौ माहात्म्य दिखायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोग सराय भोजन किए। ता पाछें सब ब्रजबासी टहलुवान कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। तब यह वैष्णव हू साथ आयो। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब वह वैष्णव हू साथ आयो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णव कों श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में राखे। सो वह वैष्णव सेवा भली भांति सों करन लाग्यो। सो जहां तांई वाकी देह चली तहां तांई सेवा करी।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१९२॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव, गुजराती ब्राह्मन, जाके घर ठग वैष्णव कौ स्वांग धरि कै आयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'मनोत्सवा' है। ये श्रीनंदरायजी के भाट 'उमाशंकर' की बेटी है। उनते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये गुजरात में एक द्रव्यमान् ब्राह्मन के जन्म्यो। सो वा ब्राह्मन के और संतति न हती। तातें वह या लरिका पर बोहोत प्यार करें। ऐसें करत यह बरस दस-बारह कौ भयो। तब मा-बाप ने याकौ ब्याह कियो। तब गाम में रोग कौ उपद्रव भयो। तामें या ब्राह्मन के मा-बाप मरे तब, घर में वह ब्राह्मन स्त्री-पुरुष रहे।

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हते । सो मारग में या ब्राह्मन कौ गाम आयो । सो तहां आप डेरा किये, तलाव पें । सो ता समै यह ब्राह्मन तलाव पर न्हाइवे कों आयो हतो । सो इन श्रीगुसांईजी के दरसन पाये । तब मनमें कहे, जो-यह कोई महापुरुष हैं, तातें इनकी सरनि जइए तो आछो । तब ये न्हाई के श्रीगुसांईजी के पास आयो। पाछें बिनती कियो, जो-महाराज ! कृपा करि कै हम कों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम-निवेदन कराए । ता पाछें घर आइ वह अपनी स्त्री तथा पुत्र कों हू ल्यायो। पाछें उनहू कों नाम-निवेदन करवायो । तब या ब्राह्मन ने बिनती कीनी, जो-महाराज! अब हम कहा करें, जातें यह धर्म सिद्ध होंई? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तुम भगवत्सेवा करो और वैष्णवन कौ संग करो। और मुख सों अष्टाक्षर कौ अहर्निस उच्चार करो । तातें तुम कों भगवद्धर्म सिद्ध होइगो। तब वा ब्राह्मन ने कही, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए । तब आपने एक लालजी पधराय दिये । और सेवा की रीति बताई । तब यह ब्राह्मन तथा उनकी स्त्री श्रीठाकुरजी की बड़ी प्रीति सों सेवा करन लागे। आए गए वैष्णवन कौ बहोत समाधान करे । उनकों सत्संग के तांई घर में प्रीति सों राखे । और अष्टाक्षर हू नित्य लेई । क्षण एक भूले नाहीं । सो कछूक काल में इनको भगवद्धर्म सिद्ध भयो। सो वानी हू सिद्ध भई, जो-कहे सोई होइ । और निर्दोष दृष्टि भई। काहू के औगुन न दीसे । सब भगवल्लीला रूप दीसे । सो प्रभु तत्काल अनुभव जतावन लागे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक ठग वा वैष्णव के घर आइ उतर्‍यो । सो वैष्णव कौ स्वांग धरि कै आयो । सो वा वैष्णव ने वाकी बोहोत ही आगता-सागता कीनी । अपने घर राखे । सो वह ठग नित्य घर में देखे । परि दाव पावे नहीं । सो एक दिना 'ग्वालिया एकादसी' आई । तब वा वैष्णव के एक बरस डेढ़ कौ लरिका हतो । ताकों गहना बोहोत ही पहरायो । तब वा ठग ने अपने मन नें कही, जो-आज दाव है । तब स्त्रीसों कही, जो-मैं लरिका कों खिलाय ल्याऊं । तब उनने कही, जो-सुखेन खिलावो । तब वह ठग वा लरिका कों वाड़ा में ले गयो । सो जाँई के

फांसी दई। गहनो सब उतारि लियो। खाड़ो खोदि कै वाकों गाड़ि कै उहां सों चल्यो। सो रस्ता में भागजोगि तें वह वैष्णव मिल्यो। सो वाने कही, जो-तुम प्रसाद लिए बिनु क्यों जात हो? राजभोग कौ समय है। तातें ऐसें हमारे कहा अभाग्य है, जो-हमारे घर सों तुम भूखे जाउ ? तब ठग ने कही, जो मैं तो जाउंगो। इनने कही, जो-नहीं वैष्णव ! महाप्रसाद लिये बिना तो नहीं जाइवे दउंगो। ऐसें कहि कै वह वैष्णव वाकों घर ले आयो। पाछें स्त्रीसों पूछी, जो-कहा समय है ? तब स्त्री ने कही, जो-राजभोग आए हैं। और स्त्रीने वा ठग सों पूछी, जो-लरिका कहां है ? तब वाने कही, जो-इहांई सोयो होयगो। सो इत में उत में देखे सो दीसे नाहीं। पाछें वा वैष्णव ने वाड़ा में जाय के देख्यो, तो धूरि खुदीसी देखी। सो धूरि सरकावे तो भीतर लरिका गड्यो है। तब कही, जो-उठि। इन वैष्णव कों जैश्रीकृष्ण करि। इतने में लरिका उठ्यो। सो वाकों जैश्रीकृष्ण कियो। तब वह ठग कांप्यो। तब वाने कही, जो-वैष्णव ! तुम्हारो ऐसो सांचो धर्म है ? सो ऐसें कहि कै गहना आगें धर्‍यो। और कह्यो, जो-मोहू कों वैष्णव करो। तब वा वैष्णव ने कही, जो-वैष्णव तो श्रीगुसांईजी करेंगे। तब वा ठगने कही, जो-मोकों श्रीगुसांईजी आप कहा जानें? तुम पत्र लिखि देऊ। तब वा वैष्णव ने पत्र लिख दियो। सो पत्र ले कै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आयो, पाछें बिनती करी,

जो-महाराज ! मोकों कृपा करि के सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजीने कही, जो-तू ठग है । तब वाने कही, जो-अब मैं ठगपनो न करूंगो । तब आपने कही, जो-तू निर्वाह कैसे करेगो ? तब वाने कही, जो-राज ! चाकरी करि कै खाउंगो। तब आपने कृपा करि कै नाम सुनायो । या प्रकार वा वैष्णव के संग तें यह ठग हू वैष्णव भयो ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव वेषधारी हू होई, तऊ घर आए पैं वाकौ सत्कार करनो । भूखे जान नहीं देनो । और भगवदीय वैष्णव के छिनक संग तें कैसोहू अधम जीव होंई सोहू कृतार्थ होत है, यहू जताए ।

सो वह गुजराती वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए । वार्ता ॥१९३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोपालदास, बड़नगर के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है—

भावप्रकाश — ये राजसी भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'बलदेवी' है । ये 'उमाशंकर' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आप बड़नगर पधारे हते । तब गोपालदास ने बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों सरनि लीजिए। तब आपने गोपालदास कों नाम-ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें गोपालदास नें श्रीगुसांईजी सों श्रीठाकुरजी पधरायवे की बिनती करी । तब आप ने कृपा करि कै श्रीठाकुरजी पधराय दिये । और आज्ञा किए, जो- श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी

भांति सों करियो। पाछें आप उहां सों श्रीद्वारिकाजी पधारे। फेरि उहां सों श्रीगोकुल पधारे।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें एक समय गुजरात तें संग श्रीगोकुल कों आवत हतो। सो ता संग में गोपालदास हू आये। सो आय कै श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो वैष्णव ! महाप्रसाद इहांई लीजियो। तब वैष्णवन कही, जो-आज्ञा। तब गोपालदास ने कही, जो-महाराज ! आज्ञा होंइ तो मैं पहोंचि आऊं। तब आपने कही, जो-आछौ। सो यों कहि कै आप तो भोजन कों पधारे। सो भोजन करि कै सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। फेरि आप पोंढ़ि कै उठे। तब गोपालदास पहोंचि कै आयो। तब आपने कही, जो-महाप्रसाद लेवे कों ना आयो ? तब कही, जो-महाराज! जूठनि महाप्रसाद की तो इच्छा है। तब आपने जूठनि की पातरि धरी। तब गोपालदास जूठनि लेवे कों बैठे। सो पातरि में सों जूठनि निघटे नाहीं। तब आपने पधारि कै कही, जो-कैसे हैं ? तब गोपालदास ने कही, जो-महाराज ! जूठनि तो पातरि में न छोड़ूंगो। तब आप की कृपादृष्टि सों बराबरि व्है रही। तब आपने कही, जो-तेरो मनोरथ सिद्ध भयो ? तब कही, जो आप बिना कौन करे? ता पाछें गोपालदास ने श्रीगुसांईजी की आज्ञा माँगि श्रीनाथजी के दरसन करि कै ब्रजयात्रा करी।

पाछें श्रीगोकुल आए । पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है गोपालदास और सब वैष्णव अपने घर कों गए ।

भावप्रकाश — या वार्ता में महाप्रसाद कौ स्वरूप दिखायो । जो-महाप्रसाद कबहू निघटे नाहीं । तातें महाप्रसाद में लौकिक बुद्धि करनी नाहीं ।

सो वे गोपालदास श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ॥१९४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी मा-बेटी, राजनगर की, सो वे राजनगर में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं-

भावप्रकाश — ये दोऊ सात्विक भक्त हैं । लीला में इनके नाम 'सुषुमा' और 'रतिक्रीडा' हैं । सो 'सुषुमा' मा कौ प्रागट्य और 'रतिक्रीडा' बेटी कौ जानना । ये दोऊ 'उमाशंकर' तें प्रगटी हैं । तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप राजनगर में भाईला कोठारी के घर बिराजत हते । सो सब गाम की लुगाई दरसन करिवे कों आवती । तामें मा-बेटी हू दरसन करिवे कों आवती । सो वाकी मा तें आपने कही, जो-या बेटी के भाग्य है । तब वा डोकरी ने कही, जो-महाराज ! आप कही, तातें ये सभाग्य होइगी । तब आपने वाकों नाम सुनायो । दूसरे दिन दोऊन कों ब्रह्मसंबंध करवायो । पाछें आपने कही, जो-सेवा करो । तब उनन कही, जो- महाराज! सेवा काहे सों बने ? हमारे पास तो कछू है नाहीं । तब आपने कही, जो-दारि रोटी तो घर में करो हो ? तब माने कही, जो-हां महाराज ! दारि रोटी तो घर में करे हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो-दारि रोटी

भोग धरो परंतु श्रीठाकुरजी पधरावो । तब कही, जो-राज ! मंगला में, बंटा में, उत्थापन में कहा धरे ? तब आपने कही, जो-बाजरी तो घर में है । तब वाने कही, जो-महाराज ! बाजरी तो घर में है । तब आप कहे, जो-एक मुठी दोई मुठी भींजोय दियो करि । सो मंगला में, उत्थापन में बंटा में धर्‍यो करि । तब उन कही, जो-राज ! वस्त्र कहां तें ल्याऊं ? तब आप कहे, जो-साड़ी तो पहरति हो ? वामें सों एक हाथ पहले फारि लियो करो। ताके वस्त्र करो । तब वाने कही, राज ! बोहोत आछो । कृपा करि के श्रीठाकुरजी पधराय दीजे । तब आपने आज्ञा करी ता प्रमान सेवा करन लागी ।

सो श्रीगुसांईजी छट्ठी बेर राजनगर पधारे । तब एक वैष्णव के घर पधरावनी कों पांऊ धारे । तब आपने पधारत में मार्ग में घंटानाद सुने । तब आपने पूछी, जो-यहां कोई वैष्णव रहे है कहा ? तब कही जो-राज ! एक मा-बेटी रहत हैं । तब आपने कही, जो-वाके घर पधारेंगे । सो आप कृपा करि के वाके घर पधारे। पाछें पूछी, जो-कहा समय है ? तब कही, जो-राज ! उत्थापन भोग धर्‍यो है । तब आप पधारि कै देखें तो वामें सों बाजरी के दाना श्रीठाकुरजी आप आरोगि रहे हैं। सो दोनों हाथन सों दाना कों उठावत हैं । सो देखि के श्रीगुसांईजी आप कौ हृदय भरि आयो । सो फेरि बाहिर पधारि कै बिराजे । तब आप वा डोकरी कों आज्ञा किए, जो-भोग

सरे तब महाप्रसाद ले कै इहां आइयो। पाछें वा डोकरी ने भोग सरायो। तब उत्थापन की कटोरी ल्याय कै आप के श्रीहस्त में दिए। तब आपने वैष्णवन सों पूछी, जो-तुम्हारों इन सौं ब्यौहार है ? तब उनन कही, जो-राज ! नाहीं है। तब आपने कही, जो हमारे तो है। यों कहि कै आप बाजरी के दाना श्रीमुख में मेले तब वैष्णवन कही जो राज ! हम कों कृपा करि कै दीजिए। तब आप कृपा करि कै सबन कों दिये। सो अति अलौकिक स्वाद भयो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब तो सभाग्य भई? तब वा डोकरी ने कही, जो-आपने करी तब भई। पाछें आप उहां सौं पधरावनी में पधारे। फेरि भाईला कोठारी के घर पधारे। सो ऐसें निष्कंचन वैष्णवन के ऊपर आप सदैव कृपा करते।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों सेवा किये बिनु सर्वथा न रहनो। निष्कंचन होंई तोऊ या मा-बेटी की नांई सेवा करे, तातें दीनता दासत्व सिद्ध होंई। तब प्रभु या प्रकार साक्षात् अनुभव जताए। और वैष्णव सभागी होंई। यह जताए।

सो वे दोऊ मा-बेटी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥१९५॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दो ठग-चोर, जाने वीरां के गरे में फांसी डारी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये दोऊ तामस भक्त हैं। लीला में ये दोऊ बहिरंग गोप हैं। एक कौ नाम 'वामन' और दूसरे कौ नाम 'हरि' हैं। सो एक दिन इनने शांडिल्य

मुनि कों ठगे । ता अपराध तें ये भूतल पर आए । ये 'शांडिल्य मुनि ' तें प्रगटे हैं। तातें उन के भावरूप हैं ।

सो ये दोऊ गुजरात में हीन जाति में जन्मे । सो बालपने सों चोरी, ठगाई करन लागे , पाछे ये दोऊ बड़े भये तब इकठोरे भये ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय गुजरात के दो ठग-चोर वैष्णव के वेष धारन करि कै नारायनदासके घर गए । तब नारायनदास ने वह चोर वैष्णव जाने न हते । उन ने वैष्णव जानी कै बोहोत आदर सन्मान कियो । सो वह रात्रि दिन भगवद्वार्ता करे । और नारायनदास के यहां महाप्रसाद ले । सो ऐसे करत बोहोत दिन बीते । परि कब हू इन ठग वैष्णव कौ दाव परे नाहीं । जो-घर में तें कछु ले जाई । पाछें एक दिन नारायनदास की स्त्री वीरां सों कही, जो-आज एकांत में भगवद्वार्ता गोप्य करिये । तब वाने कही, जो-भले । सो ता समै नारायनदास तो राजदरबार में गए हते । सो वे दोऊ ठग और वीरां एकान्त में भगवद्वार्ता करन लागे । सो वीरां कौ मन भगवद्वार्ता में लाग्यो । सो रस में बिवस भई । तब एक जनें ने बीरां के गरे में फांसी डारी । सो ता समय वीरां जितनो गहना पहेरे हती, सो सब ठग ने उतारि लियो । उतारि कै अपनो दाव देखि कै निकसि चले । सो पेंड़े में नारायनदास राजद्वार तें आवत हते। सो साम्हे मिले । तब नारायनदास ने उन ठग वैष्णवन कों पूछी, जो-तुम महाप्रसाद लियो ? तब उन के मुख तें नाहीं निकसी। तब उन ठग वैष्णवन सों नारायनदास ने कही, जो-महाप्रसाद

लिये बिना क्यों जात हो ? सो यह तुम कों उचित नाहीं। तुम हम पास तें बिदा भए बिनु कैसे जाउगे ? तब नारायनदास उन ठग वैष्णवन कों पाछें ले आए। तब तुरत ही उन ठग वैष्णवन कौ महोडो सूकि गयो। और अपने मन में अति डरपन लागे। जो-मति हम कों मारे। सो ऐसें सोच करत नारायनदास के संग आए। तब नारायनदास ने अपनी स्त्री कों देखी नाहीं। सो लोंडी सों पूछी, वे कहां है ? तब लोंडी ने डरपि के कही, जो-घर में मरी परी हैं। इन ने गरे में फांसी डारी है। तब नारायनदास घर भीतर गए। सो देखे तो गरे में फांसी लागी है। और मरी परी है। तब नारायनदास ने गरे की फांसी काढ़ी। और ऊपर चरनोदक छिरकि कै भगवन्नाम ले कै कह्यो, जो-उठो, वैष्णव भूखे हैं। सो सगरे मिलि कै महाप्रसाद लेई। सो इतनो सुनत मात्र ही वीरां उठि ठाढ़ी भई। तब वह ठग नारायनदास के पाँवन पर्‍यो। तब उन ठग वैष्णवन कों नारायनदास ने कही, जो-हाय-हाय ! तुम ऐसो अनुचित क्यों करत हो ? जो-तुम वैष्णव होइ के हम कों अपराध में क्यों डारत हो ? सो हम कों तो अब बड़ो अपराध पर्‍यो है। और तुम तो बड़े भगवदीय हो। सो तुम तें ऐसी बात कबहूँ होई नाहीं आवे। जो-यह तो कोई इन कौ भोग होइगो। सो तुम ने थोड़े ही में छुराई दियो है। सो याकौ सब दोष निवृत्त भयो।

भावप्रकाश — या वार्ता में सर्वात्मभाव जताए, सो कहा ? जो-कर्ता कारयिता तो हरि हैं। तातें, जो-कछू होत है सो भगवदीच्छा तें प्रारब्ध बस होत हैं। तातें

मनुष्य तो निमित्त मात्र है । और वैष्णवन में गाढ़ी प्रीति दिखाई । जो-वैष्णव ऐसो काम सर्वथा न करे । या प्रकार अलौकिक बुद्धि होई तो मार्ग फले ।

ता पाछें नारायनदास ने उन दोऊन कों महाप्रसाद लेवे कों बैठारे । तब उनन भली भांति महाप्रसाद लियो । ता पाछें उन ठगन ने नारायनदास सों कही, जो-अब तुम हम कों वैष्णव करो । सो ताही समै बोहोत ही हठ कियो । और फांसी तो तोरि कै बाहिर डारि दीनी । तब नारायनदास ने उन ठगन सों कह्यो, जो-तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के पास जाँय कै नाम पाय आवो । पाछें नारायनदास ने श्रीगुसांईजी कों एक बिनती पत्र लिखि दियो । और वाट की खरची दे कै बिदा किये । तब वे चोर उहां ते चलें । तब श्रीगोकुल आइ कै श्रीगुसांईजी कों वह पत्र देकै बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! हम तें यह अपराध नारायनदास की स्त्री वीरां कौ भयो है । सो हमारो अपराध क्षमा करि कै हम कों सरनि लीजिए । सो ऐसे कहि कै बोहोत ही आग्रह कीनो । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो । तब वे चोर-ठग भले भगवदीय भए । तातें संग करनो सो भगवदीय कौ करनो । सो नारायनदास के संग तें वे चोर ठग भले भगवदीय भए । ता पाछें उन चोरन ने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करे । सो दरसन करि कै बोहोत ही प्रसन्न भए । ता पाछें उन वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें वे चोर-ठग वैष्णव श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है कै श्रीनाथजी के दरसन कों आए । ता पाछें दिन दोई चारि उहां

रहि कै फेरि श्रीगोकुल आए । सो आय कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज्ञा होंइ तो हम अपने देस कों जाँई । तब उन कों एक पत्र श्रीगुसांईजी ने नारायनदास के नाम कौ लिखि दीनो । सो वे वैष्णव पत्र ले कै नारायनदास के पास आए । सो नारायनदास कों वह पत्र दीनो । सो नारायनदासने अपने माथे चढ़ाय कै वह पत्र लियो । और उन वैष्णवन को महाप्रसाद लिवायो ।

भावप्रकाश — या वार्ता में भगवदीय के संग कौ उत्कर्ष कह्यो, जो-भगवदीय वैष्णव के संग तें सर्वथा कारज होंई । तातें भगवदीय वैष्णव कौ संग करनो ।

सो वे ठग वैष्णव श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय भए । सो इन की वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥१९६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक सेठ, एक विरक्त, जिनकी मेंड के ऊपर होंई कै कुत्ता निकसि गयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये सेठ राजस भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम ! 'मनःकामना' है । और विरक्त मनःकामना की सहचरी 'घोषरानी' है । ये दोऊ 'शांडिल्य मुनि' तें प्रगटी हैं । तातें उनके भावरूप हैं ।

सो सेठ गुजरात में एक द्रव्यपात्र बनिया के घर प्रगट्यो । और विरक्त एक निष्कंचन ब्राह्मन के जन्म्यो । सो विरक्त बरस दसको भयो तब इनके मा-बाप मरे । पाछें ये चुकटी मांगि के अपनो निर्वाह करे । ऐसे करत ये बरस तीस कौ भयो । तब श्रीगुसांईजी द्वारिका कों पधारे, सो वा गाम में डेरा किये । सो तहां मायावादी बहोत हते । सो श्रीगुसांईजी सों सास्त्रार्थ करिवे कों आये । तब श्रीगुसांईजी आप सास्त्रार्थ करि उन सबन कों निरुत्तर किये । सो आपको तेज प्रताप देखि सगरो गाम वैष्णव भयो । सो सेठ और विरक्त दोऊ श्रीगुसांईजी के पास बिनती करि नाम-निवेदन पाए । पाछें इन दोऊन पूछ्यो, जो-महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी

आप दोऊन कों श्रीठाकुरजी पधराय दिए । पाछें आज्ञा किए, जो-तुम इनकी नीकी भांति सों सेवा करियो । तब दोऊन बिनती किये, जो-महाराज ! हमतो सेवा में कछू समुझत नाहीं । तब आप उहां तीन दिन और बिराजे । दोऊन कों सेवा की रीति सिखाए । पाछें आप द्वारिका पधारे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें श्रीगोकुल कों आवत हते । सो गुजरात तें सेठ तथा विरक्त वैष्णव दोऊ जनें आवत हते । सो श्रीगुसांईजी आपके संग हते । सो विरक्त वैष्णव संग में ते चुकटी मांगि ल्यावतो । पाछें स्नान करि कै रसोई करतो । तब रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग धरतो। पाछें भोग सराय श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाय कै महाप्रसाद लेतो। और कोई वैष्णव महाप्रसाद लेवे कों बुलावतो सो काहू के जातो नाहीं । सो एक दिन रात्रि कौ महाप्रसाद धर्‍यो हतो, लीनो न हतो । पाछें कुत्ता आयो । सो मेंड़ के भीतर होंइ कै निकसि गयो । तब या वैष्णव ने काहू कों रखवारी राखि कै श्रीगुसांईजी कों बिनती कीनी, जो-महाराज ! महाप्रसाद धर्‍यो हतो सो मेंड़ में होंइ कै कुत्ता निकसि गयो । ताकी कहा आज्ञा है ? तब आपने आज्ञा करी, जो-महाप्रसाद लेऊ । प्रसाद न छूवे । तब या वैष्णव ने जाय कै महाप्रसाद लियो । तब फेरि कछूक दिन में वा सेठ के रसोई भई। सो इनने भोग धरि, भोग सराय, महाप्रसाद धरि राख्यो हतो । काहू ने लीन्हो न हतो । तब कुत्ता आयो। सो मेंड के ऊपर होंइ कै निकसि गयो । तब सेठ ने जाँइ कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज !

भोग सराय महाप्रसाद धरि राख्यो हतो। काहू ने लीनो न हतो। तब कुत्ता आया। सो मेंड के ऊपर होंइ कै निकसि गयो। सो जैसें आपु आज्ञा करो तैसें करे। आज्ञा होंई तो महाप्रसाद लेई। तब आपने आज्ञा करी, जो-मति लेहू, महाप्रसाद छूयो। तब सेठ ने आइ कै सब महाप्रसाद गायन कों दीनो। और वा सेठ के फेरि दूसरी रसोई भई। पाछें पुस्तक कों भोग धरि कै, भोग सराय कै, महाप्रसाद लियो। फेरि दूसरे दिन श्रीगुसांईजी के आगें सेठ ने बिनती कीनी, जो-महाराज! विरक्त वैष्णव के चौका भीतर होंइ कै कुत्ता निकसि गयो और रसोई छुई नाहीं और हमारे मेंड़ ऊपर होंइ कै कुत्ता निकसि गयो तोऊ छूय गई। सो याकौ कारन कृपा करि कै कहिए ? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, जो-या विरक्त वैष्णव कों फेरि रसोई न बनती, भूखो रहतो। और कहूँ महाप्रसाद लेवे कों जातो नाहीं। और तुम्हारे रसोई तुरत बनि गई। भोग धर्‍यो। भोग सराय कै महाप्रसाद लियो। तातें तुम तो सेठ हो सो छूय जाय। और विरक्त के न छूवे।

भावप्रकाश — यह कहि यह जताए, जो-अपरस सामर्थ्य अनुसार है। जैसी सामर्थ्य होंई तैसी अपरस राखे। परि छल कपट करें नाहीं। सामर्थ्य होंई और कहे, जो-हम सों तो ऐसी अपरस बनत नाहीं। ऐसो न करिए। नाँतरु अपराध होंई। काहे तें,जो-अपरस तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप प्रगट किये हैं। तातें वैष्णव यथासक्ति आग्रहपूर्वक अपरस राखे, जो श्रीआचार्यजी प्रसन्न व्है। पुष्टिमार्ग के धर्म सिद्ध होंई। एक दृढ़ आश्रय होंई। अन्य संबंध सब छूटे। श्रीआचार्यजी कृपा करें। और महाप्रसाद न छूवे यहू कहे।

पाछें सेठ श्रीगुसांईजी के संग आय कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। तब दरसन करि कै नानाप्रकार के मनोरथ किए। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे । तब आप के संग श्रीगोकुल आए । तब श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किए । पाछें सातों स्वरूपन कों मनोरथ कियो । और आपने कृपा करि कै जूठनि महाप्रसाद सब वैष्णवन कों लिवायो । पाछें वैष्णवन ने आज्ञा मांगी जो-महाराज ! आप की आज्ञा होइ तो ब्रजयात्रा करि आवे । तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा दीनी, जो-सुखेन करि आवो । सो आप की आज्ञा ले कै ब्रजयात्रा करि कै पाछें श्रीगोकुल आये। तब आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी, पाछें बिनती करी, जो-महाराज ! आप की कृपा तें ब्रजयात्रा करि आए । तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो-ब्रजयात्रा तो तुम करि चुके। अब कछुक दिना श्रीगोकुल रहो । तब वैष्णवन ने बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै बिदा करोगे तब जाँईगे । पाछें कछुक दिन श्री गोकुल रहि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होइ तो अब हम अपने देस कों जाँई। तब आप उन कों बिदा किये । पाछें वे सब गुजरात कों आये । पाछें वह सेठ और विरक्त अपने श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लागे ।

सो वह सेठ और विरक्त श्रीगुसांईजी के ऐसें परम

कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥१९७॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोवर्द्धनदास मन्नालाल, दोऊ भाई, गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है -

भावप्रकाश - ये दोऊ सात्विक भक्त हैं। लीला में यो दोऊ श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। सो गोवर्द्धनदास कौ नाम 'देवकी' है और मन्नालाल कौ नाम 'यशोदा'। ये शांडिल्य मुनि तें प्रगटे हैं ताते इनके भावरूप हैं ।

ये दोऊ गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्मे । सो बरस बीस - बाईस के भए तब इनके माता-पिता मरे। तब ये दोऊ यात्रा कों चले ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे दोऊ भाई श्रीगोकुल आए। सो ता समय श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै श्रीयमुनाजी स्नान संध्या-बंदन करिवे कों पधारे हते। सो वैष्णवन के संग में गोवर्धनदास, मन्नालाल दोऊ भाई आए। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो दरसन कै इनके मन में आई, जो-इनकी सरनि जैये तो आछो है। तब श्रीगुसांईजी तो राजभोग कौ समय जानि कै मंदिर में पधारे और साथ वैष्णव डेरा करि कै दरसन कों आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करि कै अपनी बैठक में पधारे। तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तब गोवर्द्धनदास, मन्नालाल हू आए। तब इनने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज! हम कों कृपा करि कै सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने उन दोऊ भाईन कों नाम सुनायो। तब उन

दोऊ भाइन ने बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! हमकों कृपा करि कै निवेदन कराइए। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-काल्हि तुम उपवास करो। पाछें तुम कों निवेदन करावेंगे। तब उन दोऊ भाइन ने उपवास कियो। पाछें आये कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! काल्हि उपवास कर्‍यो है और अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-श्रीयमुनाजी में स्नान करि आवो। तो अपरस के वस्त्र पहरि कै आइयो। तब वे दोऊ भाई स्नान करि अपरस ही में आए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान निवेदन करवायो। तब वे दोऊ भाई बड़े कृपापात्र भगवदीय भए।

पाछें जब कछू उन के मन में संदेह पड़तो तब वे श्रीगुसांईजी सों पूछते। सो ताकों प्रतिउत्तर श्रीगुसांईजी आप कहे सो सुनते। और अपने मारग की सब प्रनालिका सीखे। पाछें वे श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले ब्रजयात्रा कों गए। सो कछूक दिन में ब्रजयात्रा पूरी करि कै श्रीनाथजीद्वार आये। तहां कछूक दिन रहि कै श्रीनाथजी के दरसन किये। पाछें वे दोऊ भाई श्रीगोकुल कों आए। सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन किये। पाछें केतेक दिन में वह साथ अपने देस कों चल्यो और गोवर्द्धनदास, मन्नालाल दोऊ भाई इहांई रहे। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! हमारे माथे

श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए। तब श्रीगुसांईजी उन के माथें श्रीठाकुरजी पधराय दिए। सो वे दोऊ भाई भली भांति सों सेवा करन लागे। ता पाछें केतेक दिन तांई श्रीगोकुल में रहि कै पाछें श्रीगुसांईजी सों दोऊ भाई हाथ जोरि बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो हम अपने देस को जाई। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-बोहोत आछौ। तब वे दोऊ भाई कछूक दिन में अपने घर आय पहोंचे। सो श्रीठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लागे। और कोई वैष्णव आवे तो तिन को बोहोत भलीभांति सों समाधान करते। राखते। उन सों मिलि कै वैष्णवन की वार्ता पूछते। कहते। या भांति रहते। सो उन दोऊ भाईन कों श्रीठाकुरजी तत्काल सानुभावता जतावन लागे।

भावप्रकाश — सो या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णवन की वार्ता कहे सुने तें श्रीठाकुरजी आप प्रसन्न होत हैं। सानुभावता जतावत है। तातें वैष्णवन की वार्ता नित्य कहनी, सुननी।

सो वे दोऊ भाई गोवर्द्धनदास, मन्नालाल श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सों कहा तांई कहिए। वार्ता ॥१९८॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन वैष्णव, गुजरात कौ, सगुन देखि कै चलतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'सगुना' है। इन में नृत्यादि गुन बोहोत हैं। ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है।

ये गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्म्यो। सो इनको बालपने में एक सगुन

जानिवेवारे कौ संग भयो । सो उह सगुन आछौ जानत हो । सो ये ब्राह्मन हू सगुन विद्या में कुसल भयो । पाछें ये बरस बीस कौ भयो तब इनकी माता मरी । पाछें कछूक दिन में पिता हू मर्‍यो । तब ये यात्रा कों अपने गाँव तें निकस्यो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी के दरसन कों एक गुजरात को साथ आयो । सो ता साथ में वह ब्राह्मन हू आयो । सो वह सगुन में बोहोत समझत हतो । और बोहोत ही पढ्यो हुतो । सो श्रीगोकुल आयो । तब श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै वाने बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों सरनि लीजिए । और मोकों कृतार्थ करिये । तब आप वा ब्राह्मन सों आज्ञा किये, जो-स्नान करि आवो । तब वह स्नान करि आयो । तब वाने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो- महाराजाधिराज ! मोकों नाम दीजिए । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो । तब वाने यथासक्ति भेट करी । ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये, तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों महाप्रसाद की पातरि धरी । तब वा वैष्णव ने महाप्रसाद लियो । ता पाछें समय भए उत्थापन के दरसन किए । ता पाछें सेन आर्ति के दरसन करि कै वह वैष्णव बिदा होंइ कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चल्यो । सो गाम के बाहिर आयो । तब वा वैष्णव कों सगुन आछौ नाहीं भयो हतो । तब वह पाछौ श्रीगोकुल आयो । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-कैसें आयो? तब वा वैष्णव ने कह्यो, जो-महाराज! सगुन आछौ नाहीं भयो। तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी

के दरसन में सगुन कहा है ?

भावप्रकाश — यह कहि वह जताए, जो-प्रभु तो भक्तवत्सल हैं। भक्त आर्ति करि दरसन कौ जब ही मनोरथ करे तब ही आप दरसन देत है। और जो आर्ति बिना केवल सगुन देखि कै जात है ताकों मार्ग में अंतराय हू परत है। तातें वैष्णव कों आर्ति करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जानो।

तब वा वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! आपकी आज्ञा प्रमान सत्य है। तब वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों गयो। ता पाछें वह वैष्णव फेरि श्रीगोकुल आयो। पाछें श्रीगुसांई सों बिदा होंइवे आयो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो काल्हि जैयो। तब वाने कही, जो-महाराज ! बोहोत ही जरूरी काज है। तातें कृपा करि कै बिदा करिये। तब श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णव कों बिदा किये। सो वह चल्यो। सो गाम बहार एक गधा पायो। सो वह पाछौ आयो। तब दूसरे दिन फेरि वह श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। तब श्रीगुसांईजी पूछे जो-तू गयो नाहीं ? तब वाने कही, जो-महाराज ! कारज तो उतावलि कौ हो, परि गधा सामने आयो। तातें सगुन आछे नाहीं भये। सो मैं काल्हि नाहीं गयो। तब वा वैष्णव सों श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-हमने कह्यो, जो-काल्हि जइयो। तब तो तेंने मान्यो नाहीं, और गधा के सगुन कों मान कै तू गयो नाहीं। सो कहा, हमारे बचन पर तोकों इतनो हू विश्वास नाहीं रह्यो ? और सगुन पर तोकों इतनो विश्वास है ? तब वाने कही, जो-महाराज! जीव बुद्धि सों ऐसो भयो तो सही। परि आज पाछें मैं कबहू सगुन न देखूंगो। तब श्रीगुसांईजी कृपा

करि कै कह्यो, जो-भगवन्नाम अष्टाक्षर ले कै चलनो। पाछें वह वैष्णव बिदा होंइ के अपने देस कों भगवन्नाम अष्टाक्षर ले कै चल्यो। सो वह अपने घर आयो। सो वह वैष्णव तब तें सगुन देखि के कबहू न चलतो। भगवन्नाम अष्टाक्षर ले श्रीगुसांईजी कौ स्मरन करि चलतो। सो श्रीगुसांईजी के बचन सत्य करि के मानतो। और सब वृथा जानतो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय है, जो-वैष्णव कों गुरुन के बचन पर दृढ़ विश्वास राखनो। तातें सर्व कार्य की सिद्धि होंई। और जो-कोऊ सगुन देखि कै अपने कारज कों करे तो अन्याश्रय होंई। तातें एक भगवन्नाम कौ आश्रय करनो, यह जताए। और पुष्टिमार्गीय वैष्णवन कों तो जा दिन प्रभुन कौ दरसन होंई, सेवा होंई, स्मरन होंई, वही दिन नीकौ है। सो सूरदासजी गाए हैं -

— बिहाग —

मिले गोपाल सोई दिन नीकौ।
वेद पुरान जोतिष बड़े ठग जाने फांसी जिय कौ॥
जो बूझे तो उत्तर देहों बिनु बुझे मत फीको।
कमल मीन दादुर यों तरसत, सब घन परत अमी कौ॥
भद्रा भली भरनी भव हरनी चलत मेघ अरु छींकौ।
अपने ठौर सबे ग्रह नीके हरन भयो क्यों सीय कौ।
सुन मूढ़ मधुकर ब्रज आयो, ले अपयस कौ टीकौ।
'सूर' जहां लों नेम धरम ब्रत, सो प्रेमी कौड़ी कौ॥

तातें वैष्णव कों सकाम बुद्धि करि वेद-पुरान-जोतिष कौ आश्रय सर्वथा न करनो। उन में जो फल-श्रुति देखियत हैं सो तो अज्ञानी जीव कों धर्म में प्रवृत्त करनार्थ हैं। जैसे कोई बालक करुई औषधि न ले तो वाकों मिश्री की लालच देत है। ता प्रकार शास्त्रन में हू फल के बचन कहे हैं। परि जो वैष्णव है सो तो फल की चाहना राखत नाहीं। उन कों तो एक श्रीठाकुरजी ही फल हैं। सो श्रीठाकुरजी मिले वही दिन वाके भाए नीकौ है। और सर्वोपरि तो श्रीठाकुरजी की इच्छा है। श्रीठाकुरजी की इच्छा न होंई तो सगुन देखि कै कार्य करे तऊ फले नाहीं। जैसे श्रीरामचंद्रजी के राज्याभिषेक के समय सब ही ग्रह नीके हते, वशिष्टजी जैसे देखनहार।

तऊ बनबास भयो। सीताजी कौ हरन भयो। तातें जानि परत है, जो-भगवद् इच्छा ही सर्वोपरि है। तातें वैष्णव कों एक भगवान कौ आश्रय ही कर्तव्य है, यह सिद्धांत कहे।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ १९९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक बाई, जाको बेटा बाट मारतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये मा-बेटा दोऊ तामस भक्त हैं। लीला में ये दोऊ पुलिंदिनी के यूथ के हैं। मा कौ नाम लीला में 'मरुवी' है और बेटा कौ नाम 'गरुवी' है। सो ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी हैं, तातें उन के भाव रूप हैं।

वार्ता प्रसग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे हते। सो मार्ग के बीच गोड़वार के गाम हते। सो तहां श्रीगुसांईजी ने जाइ कै डेरा किये। सो आप रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। समय भए भोग सराय आप भोजन किए। तब रात्रि कों उहांई पोढ़े। ता पाछें प्रातःकाल उठि कै देहकृत्य करि दंतधावन करि संध्यावंदन करि कै जप-पाठ करत हते। तब वा बाई कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब वा बाई कौ ऐसो विचार भयो, जो-इनकी सरनि जैये तो आछी बात है। तो मेरो कार्य सिद्ध होय। तब वा बाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै नाम सुनाइए। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-तू

स्नान करि आउ । तब वह बाई स्नान करि आई । तब श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै मोकों नाम सुनाइये । मोकों कृतार्थ करिये । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो । तब वा बाई ने यथासक्ति भेंट धरी । और वा बाई कौ बेटा मुखिया हतो ।

सो वह बाट मारतो, रस्ता लूटतो, ऐसो कर्म करतो । सो वा बेटा कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । सो दरसन होत मात्र वाकी बुद्धि फिरी । सो वह श्रीगुसांईजी के पास आइ कहे, जो-महाराज ! कृपा करि मोहू कों नाम सुनाइ सेवक कीजिए! तब श्रीगुसांईजी कहे, तू बाट लूटत है, तातें हम तोंको सेवक नहीं करेंगे । तब वाने दोऊ हाथ जोरि बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज तें मैं या काम कों छोरत हूं । खेती करूंगो, चाकरी करूंगो । परि यह काम सर्वथा न करूंगो । तब श्रीगुसांईजी वाके ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । कहे, जो-आज पाछें ऐसो काम सर्वथा करियो मति। पाछें आप ने कृपा करि वाकों नाम दे सेवक कियो । तब वाकी देखादेखी सगरो गाम श्रीगुसांईजी को सेवक भयो । सबन ने बाट मारनो, चोरी करनो छोर्‍यो । सब खेती करन लागे। और घर में रसोई करें सो तामें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी कौ चरनामृत मिलाय लेते । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीद्वारिकाजी कों पधारे । पाछें उहां तें कछूक दिन में विजय किये, सो श्रीगोकुल पधारे ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों अधर्म करि

द्रव्य जोरनो नाहीं । खेती, चाकरी, बानिज्य करि निर्वाह करे तो प्रभु प्रसन्न होंई । और काहू कों कष्ट पहोंचे सो कार्य सर्वथा न करनो ।

सो वह बाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती जाके संग तें सगरो गाम सरनि भयो । वार्ता ।।२००।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक उत्तमदास क्षत्री गुजरात के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है—

भावप्रकाश — ये सात्विक भक्त है । लीला में इन कौ नाम 'श्रीरंगी' है । ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी है । तातें उन के भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आप गुजराति श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे हते । तब उत्तमदास कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब उत्तमदास ने अपने मन में बिचार कियो, जो-श्रीगुसांईजी की सरनि जैये तो आछौ । तब उत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिए । मैं बोहोत दिन तें भटकत फिरत हों । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-तू स्नान करि आऊ । तब उत्तमदास स्नान करि अपरस ही में आए । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै उत्तमदास कों नाम सुनायो । पाछें दूसरे दिन ब्रह्मसंबंध करवायो । तब उत्तमदास ने यथासक्ति भेट करी। ता पाछें आप तो बिदा व्है के द्वारिकाजी श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। सो कितनेक दिन लों श्रीरनछोरजी के दरसन किए। ता पाछें उहां तें बिदा होई कै श्रीगोकुल पधारे। सो श्रीनवनीतप्रियजी कौ सेवा-सिंगार किये । और उत्तमदास तो अपने देस ही में

रहे । ता पाछें उहां एक जरी कौ परकालो बिकान आयो । तब उत्तमदास ने मन में बिचार कियो, जो-यह परकालो तो श्रीगुसांईजी लायक है । सो उत्तमदास ने वाकों मोल लियो । पाछें उत्तमदास श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल चले । सो कछुक दिन में श्रीगोकुल आय पहोंचे सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग आर्ति के दरसन किये । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा तें पहोंचि कै अपनी बैठक में पधारे। तब उत्तमदास ने आय कै साष्टांग दंडवत् करि कै वह परकालो श्रीगुसांईजी के आगें धर्‍यो । तब श्रीगुसांईजी वह परकालो देखि कै बोहोत प्रसन्न भए । और श्रीमुख तें कहे, जो-यह परकालो तो श्रीनाथजी लायक है । ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आप उत्तमदास कों संग ले कै श्रीनाथजी द्वार पधारे। तब श्रीगुसांईजी ने वह परकालो श्रीनाथजी को अंगीकार करायो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन सब वैष्णवन कों कराए । तब उत्तम श्लोकदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए । और अपने जन्म को सुफल करि मानत भये । ता पाछें कितनेक दिन तांई उत्तमदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे । तब उत्तमदास श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आए । तब श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किए । ता पाछें कितनेक दिन तांई श्रीगोकुल में रहे।

पाछें उत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! आज्ञा होंई तो ब्रजयात्रा करि आऊं। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो-आछो। तब उत्तमदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै ब्रजयात्रा कों चले सों कितनेक दिन में संपूर्ण ब्रजयात्रा करि कै श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो-तुम ब्रजयात्रा करि आए ? तब उत्तमदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! आप की कृपा तें ब्रजयात्रा भलीभांति सों करी। ता पाछें कितनेक दिन तांई उत्तमदास ने श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन किए। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होय अपने घर आए। सो घर में श्रीगुसांईजी की कृपा तें श्रीनाथजी अनुभव करावते।

भावप्रकाश — या वार्ता में यह जताए, जो-उत्तम बस्तु प्रभुन कों अंगीकार कराइए। यह सेवक कौ धर्म कहे।

सो वे उत्तमदास श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हे। तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२०१॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक साहूकार कौ बेटा, वजीर की बेटी और बनिया कौ पुत्र,तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है—

भावप्रकाश — ये तीनों राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'रामा' 'स्यामा' और 'कामा' हैं। सो 'रामा' इहां साहूकार कौ बेटा भयो। औरा 'स्यामा' बजीर की बेटी कौ प्रागट्य जाननो। और 'कामा' बनिया कौ पुत्र भयो। ते तीनों 'कृष्णावती' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

ये तीनों गुजरात के एक गाम में जन्मे। सो एक पण्ड्या के घर पढ़िवे जाते। सो तीन्योंन के परस्पर अत्यंत स्नेह हतो। सो साहूकार श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो । सो एक समै श्रीगुसांईजी आप वा गाम में पधारे। सो वा साहूकार के घर उतरे।

तब एक दिन श्रीगुसांईजी कौ जन्मदिन आयो । सो श्रीगुसांईजी आप तहां केसरि स्नान करि कै, 'मार्कंडे-पूजा' करि कै बधाई के कीर्तन गावत हते। सो ता समै यह वजीर की बेटी साहूकार के बेटा के संग हती। सो तहां सब लोग दरसन कों आए। सो ता समै कितनेक वैष्णवन के छोरा-छोरीन ने नाम पायो। सो ता समय इन तीन्यो जनेंन ने हू श्रीगुसांईजी के पास नाम पायो। ता पाछें सबन को महाप्रसाद दीनो। पाछें श्रीगुसांईजी आप तो उहां थोरेसे दिन रहि कै दैवी जीवन कों अंगीकार किए । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये सो श्रीगोकुल पधारे।

वार्ता प्रसंग - २

सो वह साहुकार के बेटा और वजीर की बेटी में परस्पर बोहोत ही स्नेह हतो। सो क्षन एक देखे बिना चैन न परे। सो वह साहुकार कौ बेटा बड़ो भयो सो उद्यम करन लाग्यो। और वह बजीर की बेटी हू बड़ी भई । सो अपने महल परदान में रहन लगी परि उन दोउन कों परस्पर देखें बिना चैन न परे।

तब एक दिन वा बजीर की बेटी सों साहुकार के बेटा ने कह्यो, जो-आजु पाछें तेरे यहां कबहू न आउंगो। सो काहेतें? जो-अब आपुन नवजोबन भए हैं। और तू स्त्री-जन है। और तू बड़ेन की बेटी है। और मैं हू बड़ेन कौ बेटा हूं।और लोग तो दुराचारी हैं। सो अपबुद्धि करत हैं। और आपुन तो निर्दोष हैं, और भाई-बहनि हैं। गुरुभाई दोऊ बहनि हैं। सो यह बात तो कोऊ जानत नाहीं, जो-सब कोऊ दोष बिचारत हैं। सो ताही तें कछूक दिन में विघ्न उठे तो महा कठिन होंई। और मैं यहां आवत हूं सो मेरे देह संबंधी मोसों बोहोत खीझत हैं, जो-मोसों सब कोऊ अप्रसन्न होत हैं। परि कहा करे ! तोकों, हमकों, देखे बिना चैन नाहीं परत है। सो अब कहा उपाय कीजिए ? तब वा बजीर की बेटी ने कही, जो-तोकों देखे बिना चैन नाहीं परत है सो ताही तें तू सुखेन आइयो। परि आये बिना मति रहियो, जो-या गेल तू सुखेन आइयो। तू अपने मन में चिंता मति करियो। ऐसो कौन है, जो-तोकों कछू कहेगो ? और हौं रजपूत की बेटी हौं। सो तो दुष्ट-दृष्टि सों देखत होंइ, ताकों में ठौर मारूंगी। और आपुन तो निर्दोष हैं। और अपने माथे ऊपर श्रीगुसांईजी सदा सर्वदा बिराजमान हैं। सो उनकी कृपा बलतें कहा चिंता है ? सो ऐसें वा बजीर की बेटी ने साहूकार के बेटा सों कही। तब वह साहूकार कौ बेटा बोहोत प्रसन्न भयो। और अपने मन में निश्चै जान्यो, जो-या

बात में कछू बिगाड़ नाहीं है । सो ऐसें जानि कै वा साहूकार कौ बेटा नित्य रात्रि कों आवतो। सो दोऊ मिलि कै नित्य भगवद् वार्ता कीर्तन करते । और श्रीभागवत की कथा वार्ता करते । ता पाछें वह साहुकार कौ बेटा अपने घर जातो । सो वा साहूकार के बेटा के कुटुंबी वाके ऊपर बोहोत ही अप्रसन्न रहते । ता पाछें बेटा की ताक राखते, जो-ऐसे यह काम करत है । इतनी रात्रि लों कहां रहत है? सो ऐसें कहि कै बोहोत ही खीझते । परि वह साहूकार कौ बेटा काहू कौ बचन मानतो नाहीं । सो ऐसें करत बोहोत दिन भए । पाछें उहां के राजा के मनुष्यन ने वा वजीर के घर तें वा साहुकार के बेटा कों उतरत देख्यो । सो पकरि लियो । तब महा भय दिखायो, जो-भले साहुकार कौ बेटा होंई कै ऐसो काम करत है ? जो लोगन की बहू-बेटीन के घर में जात है ? सो ताही तें तू राजद्वार में राजा के पास चलि, ऐसें कह्यो । तब वा साहुकार के बेटा कौ मुख उतरि गयो । तब राजा के मनुष्यन ने अपने मन में विचार कियो, जो-इनके मन में पापदृष्टि तो नाहीं है ? सो तातें पहले भय तो दिखावो । तब यासों राजा के मनुष्यन ने कही, जो-अब तो राजा सोयो होयगो । तोकों रात्रि में आपद परेगी । तातें तेरो कोई जामिन होइ तो तोकों छोड़े । ता पाछें सवारे राजद्वार में राजा कों उत्तर दीजियो । तब वह साहूकार कौ बेटा अपने घर आयो । तब अपने देह संबंधीन सों कही, जो-तुम मेरे

जामिन होउ । तब माता-पिता सबन ने नाहीं करी, जो-भावे सो होउ, परि हम तेरे जामिन नाहीं होइंगे, जो-हम तोसों नित्य कहत हते, तेनें हमारो कह्यो मान्यो नाहीं। ता पाछें वह राजा कौ मनुष्य हाथ पकरि कै आगें करि कै चल्यो । और कह्यो, जो-तेरो कोई जामिन होत नाहीं है। तातें तू खोटो है । तब फेरि कह्यो, जो-और कोई तेरो जामिन होंइ तो तोकों छोड़े । तब वा साहूकार के बेटा ने कही, जो-एक मेरो गुरुभाई मित्र है । सो वह मेरो जामिन होइगो। तातें उहां चलो । तब वह साहूकार कौ बेटा वा बनिया वैष्णव के घर आयो । और आय कै पुकार्‍यो । तब वा बनिया वैष्णव ने किवाड़ खोले। तब उन पूछ्यो, जो-इतनी बिरियां तुम कहां ते आए हो ? तब वा साहुकार के बेटा ने कही, जो-मैं तो वा बहनि के घर तें आवत हतो । सो अब मोकों राजा के मनुष्यन ने पकर्‍यो है । सो रात्रि कों तुम मेरे जामिन होऊ तो ये मोकों छोड़े । ता पाछें मैं सवारे राजा कों उत्तर देऊंगो । तब वा बनिया वैष्णव ने कही, जो-मै याको जामिन हूं । सो ऐसे कहि कै जामिन लेकै वा साहूकार के बेटा कों छोरि कै वे राजा के मनुष्य तो चले गए । ता पाछें वा बनिया वैष्णव ने कही, जो-अब तुम सुखेन घर जाउ। या बात कौ कछू अटकाव नाहीं है । तब वा साहुकार के बेटा ने कही, जो मैं तो यहांई सोंऊगो । तब वा बनिया वैष्णव ने कही जो तिहारो घर है सुखेन सोऊ। तब रात्रि कों उहांई सोय रहे।

तब वा बनिया वैष्णव ने साहुकार के बेटा कौ बहुत आदर सन्मान कस्यो। तब राजा के मनुष्यन ने अपने मन में विचास्यो, जो-भले ! आज तो और हू देखिये, जो-इन के कैसी प्रीति है?

ता पाछें दूसरे दिन उहांई वह साहुकार कौ बेटा वा बनिया वैष्णव के घर रह्यो। सो दोऊ जनें भगवद्वार्ता करन लागे। सो भगवद्रस में छकि गए। ता पाछें महाप्रसाद लियो। सो ऐसें करत रात्रि भई। तब वा बनिया वैष्णव ने साहुकार वैष्णव सों कही, जो-तुम वा वजीर की बेटी के घर जाउ, जो-वह वाट देखत होइगी। सो वा वजीर की बेटी कों हू चैन न परेगो। सो वह चिंता करेगी। तातें तुम सुखेन वाके घर जाउ। तब वह साहुकार कौ बेटा वा वजीर की बेटी के घर आयो। तब राजा कौ मनुष्य हू वाके पाछें पाछें गयो। पाछें वा वजीर की बेटी सों साहुकार के बेटा ने कही, जो-सुनि बहनि ! काल्हि मैं यहां तें नीचे उतस्यो, तब मोकों राजा के मनुष्यन ने पकस्यो हतो। सो वाने मोकों बोहोत भय दिखायो, जो-तुम ऐसें काम करत हो ? जो-तुम लोगन की बहु-बेटीन के महलन में नित्य जात हो ? तातें तू राजा के पास चलि। ता पाछें फेरि कह्यो, जो-अब तो राजा सोयो होइगो, जो-भले! सवारे उत्तर दीजियो। तातें अब तो तेरो कोई जामिन होंइ तो तोकों छोड़े। तब मैं अपने मन में बिचार कै अपने देह संबंधीन सों बोहोत कह्यो। परि मेरो कोई जामिन भयो नाहीं। तब मैं वा बनिया

वैष्णव के घर गयो । सो वा बनिया वैष्णव ने कही, जो-तुम अपने घर जाऊ, मैं याकौ जामिन हूं । तातें काल्हि कौ मैं वाके घर हूँ। अपने घर नाहीं गयो । उनही के इहां महाप्रसाद लियो है । सो आज तो कोऊ राजद्वार तें आयो नाहीं है । अपने मन में तो भय बोहोत ही है । सो ऐसें सब बिस्तारपूर्वक वा वजीर की बेटी सों साहूकार के बेटा ने कही। सो याही तें तो मेरो मन उदासीन है । तब वा वजीर की बेटी ने साहुकार के बेटा सों कही, जो-भाई ! आपुन तो निर्दोष हैं । और भगवद् संबंधी हैं । परि लोक तो दुराचारी हैं । सो या बात में कहा जाने ? जो-अपने माथे तो श्रीगुसांईजी सदा सर्वदा बिराजत हैं । सो इन कौ दृढ निश्चय करि राख्यो है और अपने निर्दोष राखे हैं सो उन कों अपनो सामर्थ्य प्रगट करिवेकों । जो-अति ही कल्यान करेंगे । और अब तू काहू बात की चिंता मति करे । और निश्चय करि कै श्रीप्रभुजी भलाई करेंगे । जो-काल्हि दासी पास राजद्वार की घड़ी-घड़ी की खबरि मंगाउंगी । जो-राज में कोऊ तेरो कहा करि सकेगो । जो-मोहू में तो श्रीगुसांईजी की कृपा कौ बल है । सो ताही तें मैं तोकों आय के छुड़ाई लेउंगी । तू अपने मन में डरपे मति । जो-राजा तो तुच्छ मनुष्य है । तू देखि तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी श्रीगुसांईजी आप कैसी बनावत हैं ? जो-हों अकेली हजारन कों भारी हूं । ऐसें कहि कै वा साहूकार के बेटा को बोहोत

समाधान कियो। ता पाछें श्रीकृष्ण-स्मरन करि कै उठे। ता पाछें फेरि वह साहुकार कौ बेटा वा बनिया वैष्णव के घर आय के सोय रह्यो। ता पाछें वा बनिया वैष्णव ने वा साहुकार के बेटा की बोहोत भलीभांति सों अत्यंत प्रीति सों सेवा करी।

ता पाछें दूसरे दिन वा राजा ने इनकी परीक्षा लेवे के लिये अपने मनुष्य पठाए। तब वा बनिया वैष्णव सों वा मनुष्य ने कह्यो, जो-वह साहुकार कौ बेटा कहां है ? जाकौ तू जामिन भयो है। सो वा साहुकार के बेटा कों बुलायो है। तब वा बनिया ने राजा के मनुष्यन सों कह्यो, जो-वाकी वेई राजद्वार में मैं उत्तर देऊंगो। जो-राजा कौ चार होई तो मैं वाकौ जामिन भयो हूं। सो ऐसें कहि कै उठि चल्यो। सो ता समै वह साहुकार कौ बेटा घर में सोयो हतो। सो वह बनिया वैष्णव राजद्वार में जाय के ठाढ़ौ भयो। तब वा बनिया कों देखि कै राजा ने कही, जो-वह साहुकार कौ बेटा कहां है ? वाकों बुलावो। जो-तू तौ वाकौ जामिन भयो है। सो तोसों काम नाहीं। सो ऐसी रीति सों बोहोत ही कही। तब इतने में वह साहुकार कौ बेटा घर में सोयो हतो सो जाग्यो। तब वा बनिया वैष्णव की स्त्री सों पूछी, जो-भाई कहां है ? तब वा बनिया वैष्णव की स्त्री ने कह्यो, जो-तुम्हारे बदले वे राजद्वार में गए हैं। तब वह साहुकार कौ बेटा राजद्वार में जाय ठाढ़ो भयो। तब राजा ने अपने मनुष्यन सों कही, जो-या बनिया कों तो बाहरि काढ़ि

देऊ। और वा साहुकार के बेटा कों बुलाओ। सो वह ठाढ़ो करि राख्यो हतो। तब राजा ने साहुकार सों कही, तू पर स्त्री सों अन्याय क्यों करत है ? तोकों मेरो भय नाहीं है ? तब वा साहुकार के बेटा ने कही, जो-मेरी तो उह बहनि हैं। तब राजा ने अपने लोगन सों कही, जो-यह तो अन्याय है। जो-यह बहनि कहत है। पाछें स्त्री सों विषय भोग करत है। तातें या साहकार के बेटा कों तो ठौर मारो, जो-यहां ते ले जाउ। तब बाहिर ले जाय कै वा साहुकार के बेटा कों महल के नीचे ठाढ़ो कियो। तब राजा ने अपने मनुष्यन तें कही, जो-तुम याकों समझाईयो। परि सर्वथा याकों मारियो मति। जो-यह तो अन्याई नाहीं है। परस्त्री सों पक्षपात करत है। सो ताही तें या साहुकार के बेटा कौ धीरज देखनो। तातें याके कंठ सों खडग लगाइयो। सो ऐसे वा राजा नें मारनवारेन सों कही। पाछें वह सब बात राजद्वार में भई, सो ये बातें सब वजीर की बेटी ने सुनी। सो अपनी दासी पास ये समाचार मँगवाए हते।

ता पाछें वा वजीर की बेटी ने पुरुष कौ भेख करि कै और सब वस्त्र पहरि कै हाथ में खड़ग और ढाल ले कै जो बोहोत ही अबलख घोड़ा के ऊपर सवार होइ कै चली। सो दूरि तें घोड़ा कों ऐंड देकै चली हती। और चाबुक द्वै-चारि वा घोड़ा कै खेंचि कै मारे। सो घोड़ा कौ मुरायो पर्‌यो हतो सो ताहू कों घोड़ा उल्लंघि कै निकसि गयो। सो या साहुकार के बेटा के

पास आय के ठाढ़ो भयो । और खड़ग ढाल फिरावति है । और कह्यो, जो-धर्म तें एक पिता तें उत्पन्न भयो होइ सो मेरे सन्मुख अइयो । परि कोउ आइ नाहीं सके । और वे मारनवारे तो सब भाजि गए । और वे राजा और वजीर झरोखा में बैठे हते । सो राजा ने अपने वजीर सों कही, जो-यह सिपाईगिरी के बल कों कहा कियो है ? और यह कौन है ? तब वजीर ने उनसों कही, जो-मैं तो पहचान्यो नाहीं । और कह्यो, जो-मोकों तो ठीक नाहीं है । ता पाछें वजीर ने राजा कों एकांत ले जाइ कै सब बात विस्तार सों कही । ता पाछें राजा ने अपने सिपाइन सों कही, जो-तुम सब यहाँ तें दूरि होऊ । जो-तुम कछू इनसों बोलो मति । तब राजा ने उन दोऊन सों कही, जो हों तुम ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो हों । और कह्यो जो-तुम धन्य हो । और तुम्हारी प्रीति धन्य है । ओर तुम्हारो धीरज धन्य हैं। सो ताही तें तुम मो पास मांगो । तब उन दोऊ जनेन ने कही, जो-हमारे तो काहू बात की ईच्छा नाहीं । तब राजाने अपने वजीर सों कही, जो-अब इन दोऊन कौ विवाह करि देऊ। तो प्रीति भली होई । और इन दोऊन के परस्पर स्नेह रहे। तब इन कही, जो-राजा ! तुम तो भोले भए हो । जो-ऐसी बात कहत हो, जो-हम तो आपुस में बहनि भाई हैं । सो तातें तुम धर्मसील राजा होइ कै अधर्म की बात क्यों कहत हो? पाछेंराजा उन दोऊन ऊपर बोहोत प्रसन्न भयो । तब दोऊन

कों सीखि दीनी । तब वे दोऊ जन अपने अपने घर कों गए। ता पाछें ये दोऊ जनें मिलि कै बैठते भगवद्वार्ता करते । और निर्भय भए रहते । सो उन दोऊन के परस्पर परम आनंद भयो। सो वे दोऊ जन भगवद्वार्ता में सदा छके रहते । सो वे दोऊ जनें कौ जोबन-रूप बोहोत ही सुंदर हतो । परि उन दोऊन के कछू देहाध्यास बाधा नाहीं कियो । जो-मिलि कै एकांत में बैठते ! भगवद्वार्ता कीर्तन करते। सो ऐसें करत श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । जो-चहिए सो मांगि लेते ।

भावप्रकाश — या वार्ता में प्रेम कौ स्वरूप जनाए, जो-शुद्ध प्रेम, त्याग कों कहत है । जामें इंद्रियन के भोग कौ लेस हू गंध न होंई । ऐसो त्याग सर्वोपरि है । और श्रीगुसांईजी के सेवक वैष्णवन पै निर्दोष बुद्धि रहे, तब कार्य सिद्ध होंई । और भगवद्वार्ता-कीर्तन में लोकलज्ञा-कुलकानि वैष्णवन कों सर्वथा करनी नाहीं, यहू कहे।

सो वह साहूकार कौ बेटा, वजीर की बेटी और बनिया कौ बेटा, ये तीन्यों श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए । वार्ता ॥२०२॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक सैवी ब्राह्मन कौ बेटा, कासी में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है । लीला में इन कौ नाम 'सोनजूही' है । सो इन कौ स्वरूप परमानंदस्वामी की वार्ता में आगे कहि आए हैं । 'कृष्णावती' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो उन सैवी ब्राह्मन के आगें संतान न हती । सो जब वा

सैवी की स्त्री के उदर में या छोरा कौ वास भयो तब याकों बोहोत पश्चात्ताप भयो।

काहेतें, जो-जब जीव कौ गर्भवास होवें तब जीव कों सौ जन्म तांई कौ ज्ञान होई। जो-मैं ऐसे ऐसें जन्म भुगत्यो हूं। तातें या लरिका कों पूर्वजन्म कौ ज्ञान भयो। तब यह अपने मन में दुखित भयो। दीन भयो। तब मनमें बिचार कियो, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु धनी मेरे भए सो तिन की कानि तें श्रीनवनीतप्रियजी मोकों सानुभावता जतावते। सो मैं जीभ की लालच-स्वाद के लिये, मोकों यह अपराध पर्‌यो, तातें मेरो अन्यमारगीय के घर में बास भयो। तातें अब यह जन्म होइगो। तब मैं मूंगो रहूंगो। बोलूगों नाहीं। ता पाछें जब याकौ जन्म भयो तब रोवे नाहीं। बोले नाहीं। सो याकौ दूध पिवावे, अथवा न पिवावें। तो हू बोले नाहीं। तब याके मा-बाप सैवी हते। सो अपनी मति अनुसार कछू वेद सास्त्र में समझत हते। सो मन में विचारे, जो-यह लरिका हमारो कछू माँगत नाहीं। सो पलत नाहीं। और सबन के बालक होत है सो कदाचित् गूंगो होवे तोहू रोवे। भूख लगे तब दूध मांगे। परि यह तो रोवे बोले कछू नाहीं। सो या प्रकार वह ब्राह्मन के चित्त में यह सोच बिचार सदा ही रह्यो आवे। तब ऐसें करत बरस दिन कौ वह लरिका भयो। तब वा ब्राह्मन ने वा लरिका की बरस गांठि के दिन अपनी ज्ञाति के ब्राह्मन बुलाइ कै कछू पूजा

करन लाग्यो। तब वा लरिका कों अपनी गोदी में ले कै बैठ्यो हतो। तब इतने में वह लरिका अचानक एक शब्द बोल्यो। सो सीरे उसास ले कै। सो बचन - 'श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी' इतनो कह्यो। फेरि चुप होंई रह्यो। तब वा लरिका के बाप कों याकी ज्ञाति के ब्राह्मन कहन लागे, जो-तेरो लरिका बोल्यो सो संस्कृत कौ सब्द, परंतु जानी न परी। जो याने कौन कौ नाम लियो। सो ऐसें कहन लागे। ता पाछें फेरि दूसरो जन्म दिन आयो। तब फेरि तैसे ही ज्ञाति के ब्राह्मन बुलाय कै वह ब्राह्मन कछू पूजा करन लाग्यो। तब वह लरिका फेरि बोल्यो। जो 'श्रीआचार्यजी महाप्रभु', 'श्रीगुसांईजी'। ये दोइ नाम लिये। फेरि तीसरे बरस तीन नाम लिये सो नाम 'श्री आचार्यजी महाप्रभु' 'श्रीगुसांईजी', 'श्रीनाथजी'। यह तीन नाम लिये। फेरि चौथे बरस चारि नाम लिये, 'श्रीआचार्यजी महाप्रभु', 'श्रीगुसांईजी', 'श्रीनाथजी', 'श्रीनवनीतप्रियजी'। ये चारि नाम लिये। तब वा लरिका के बापने यासों पूछी, जो-बेटा ! हमारे और कोई संतान है नाहीं। तुम एक मेरे घर में जन्म लियो। सो तू जानि कै बूझि कै गूंगो होय रह्यो है। और बरस दिन में एक एक सब्द अधिको बोलत है। सो तेरे मन में जो होई सो तू हम सों कहि। हम करेंगे। तब या लरिका ने पृथ्वी पर आंक मांडे। तामें लिख्यो, जो-तुम मोकों श्रीगोकुल ले चलो। तब हों बोलूंगो। तब वह ब्राह्मन अपनी स्त्री और लरिका

कों ले कै गोकुल आयो । तब वा लरिका सों कही, जो-अब तेरे जहां चलनो होइ तहां चलि । तब वह लरिका श्रीयमुनाजी के तट पर 'श्रीठकुरानी घाट' हैं तहां आय बैठ्यो । तब उनके मा-बाप हू तहां बैठे रहे । तब कोई श्रीनवनीतप्रियजी कौ जलघरिया जल भरन कों आवे अथवा और कोई वैष्णव घाट पर आवे तिन सों वह लरिका पूछे, जो-श्रीनवनीतप्रियजी के इहां कहा समय है ? और श्रीगुसांईजी कहां बिराजे हैं ? तब सेवक जलघरिया देखि रहे । जो- यह छोरा सैवी कौ है, और याकों यहां की खबरि कैसे परत है ? तब इतनें में श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै 'श्रीगोविंदघाट' ऊपर पधारे । तब उन वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों वा छोरा की सब बात कही । तब श्रीगुसांईजी मुसकाई कै उन वैष्णवन सों पूछे, जो-वह यहां आयो है कहा ? तब वैष्णवन ने कही, जो-महाराज ! वह ठकुरानी घाट उपर बैठ्यो है । तब श्रीगुसांईजी नें उन वैष्णवन सों आज्ञा करी, जो-वाकों यहां बुलाओ । तब उन वैष्णव ने लरिका सों कही, जो-अरे भैया! तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत है । तब वह लरिका उठि कै अति आतुर होइकै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो । सो श्रीगुसांईजी के दरसन करत मात्र ही नेत्रन में तें जल कौ प्रवाह चल्यो । सो धीरज न रह्यो । तब श्रीगुसांईजी ने वासों कृपा करि कै कही, जो-अब तू क्यों रोवत है ? अब तो तू आय

पहोंच्यो है। चिंता मति करे। आगें तू सावधान रहियो। पाछें वाकों कृपा करि कै नाम सुनायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी खवास सों आज्ञा किये, जो-याकों न्हवाय कै अपरस में मंदिर में ले आवो। सो ऐसें कहि कै आप तो मंदिर में पधारे। सो भोग सराय बीड़ा अरोगाए। तब इतने में खवास वाकों अपरस में मंदिर में ले आयो। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान बैठाय कै ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें वासों कहे, जो-तू बाहिर जा। तब वाने तो श्रीनवनीतप्रियजी के द्वार की चोखटि पकरी राखी। सो छोड़े नाहीं। तब श्रीगुसांईजी कहे, बोहोत दिनान कौ बिछुर्‍यो है तातें याकों बाहिर निकसिवे कौ मन नाहीं करत है। तातें अब तो याकों याही ठौर रहन देऊ। तब उहाई ठाढ़ो रहन दियो। ता पाछें दरसन खुले। तब सब वैष्णवन ने श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आरति करि चुके। अनोसर करन लागे। तब वासों भीतरिया ने कही, जो-तू बाहिर निकसे तो अनोसर होवें। परंतु याके हाथ सों तो चोखट छूटे नाहीं। तब भीतरिया वाकों पकरि कै जोर सों चोखटि छुड़ाई कै वाकों चौक में आए। सो जब वह चोक में आयो तब वाकी देह छूटि गई। तब श्रीगुसांईजी जाने, जो-मंदिर छूई गयो। और या वैष्णव कौ जीव तो लीला में पहोंच्यो। तब श्रीगुसांईजी वाकी देह में अपनी सत्ता धरि कै वा देह कों सिंघपोरि तें बाहिर एक कूंआ

है, तहां पहोंचाय अपनी सत्ता ले लीनी। तब वाकी देह उहांई परी रही। तब वाके मा-बाप तो देखि कै रोवन लागे। तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मन सों कहे, जो-काहे कों तेरो बेटा है ? यह तो हमारो जीव हतो। सो कोई अपराध तें तेरे घर आयो हतो। सो अब हम कों आय मिल्यो। तब वा ब्राह्मन ने बिचारी, जो-ये लरिका कौ तो जन्म सों ही ऐसो सुख दीसतो। सो वह ब्राह्मन वेद-सास्त्रन में समुझत हतो। परंतु जीव दैवी न हतो। दैवी जीव होतो तो ऐसो सुख छोरि कै कहां जाय ? पाछें वह ब्राह्मन अपनी स्त्री सहित कासी गयो।

ता पाछें श्रीगोकुल में जो वैष्णव रहत हुते, तिन सबन ने मिलि कै तथा चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! यह वैष्णव आगें कौन हतो ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो-यह वैष्णव पूरव जनम में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ सेवक हतो। सौ यह श्रीनवनीत-प्रियजी कौ खासा जलघरीया हतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजी यासों सानुभाव हते। सो ऐसें सानुभाव हते, जो-इनकी गोदि में बैठि कै श्रीनवनीतप्रियजी परमानंद स्वामी के कीर्तन सुने। सो परमानंद स्वामी कौ इन द्वारा उद्धार भयो। सो परमानंद स्वामी की वार्ता में प्रसिद्ध है। सो जीभ की लालच सों स्वाद करि गिर्‌यो। तब चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी,

जो-महाराज! यह कौन अपराध पर्‍यो ? तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहें, जो-एक समय अडेल में वैष्णवन कौ साथ आयो हतो। सो श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग आरति कौ समय हतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो हतो। तब कछू घी दूध इत्यादि श्रीअक्काजी ने इनकी पातरि में थोरो धर्‍यो। सो जब यह महाप्रसाद लेन बैठ्यो, तब पातरि देखि कै याके मन में आई, जो-मेरे कांधे कौ जल श्रीनवनीतप्रियजी आरोगत हैं। सो आज मेरी पातरि में ओछी बस्तू क्यों धरी है ? सो यह बात उनने श्रीअक्काजी तें कही। सो ताही समै श्रीनवनीतप्रियजी जैसी कृपा आगें करते तैसे पाछें सानुभाव कछू न जनावे। सो जितने दिन इनकी देह रही तितने दिन सेवा तो करी। परि प्रभु सानुभावता न जताए। पाछें इनकी देह छूटी। तब या ब्राह्मन के घर कासी में जन्म लियो। परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभु बड़े हैं। सो याके अपराध साम्हे न देखें। थोरो दंड दिवाइ फेरि अंगीकार करि लियो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ ऐसा सुभाव है। सो कहां तांई कहिए।

भावप्रकाश — तातें जीव कों सर्व कार्य बिचारि कै करनो। और रसना इन्द्रिय के बस होय सो गिरे यहू कहे। तातें वैष्णव कों सावधान रहनो।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२०३॥

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक निष्कंचन वैष्णव, बनिया, गुजरात कौ, जिनने ब्रजयात्रा कौ पून्य सेठ कों दियो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश — ये सात्विक भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'ब्रजभूषणा' है। और ब्रजभूषणा की एक सखी है। सो वाकौ नाम 'कामना' है। सो यहां सेठ भयो। ये दोऊ 'कृष्णावती' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

सो वह गुजरात में एक बनिया के जन्म्यो। सो वह निष्कंचन हतो। पाछें ये बरस बीस कौ भयो तब इनके पिता की देह छूटी। और माता जन्मत ही मरी ही। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलनाथजी कों संग ले गुजरात पधारे हे। सो वाके गाम में डेरा किए हते। तब ये सेवक भयो है।

वार्ता प्रसंग - १

सो ये निष्कंचन वैष्णव हतो। सो उन कौ मन श्रीगुसांईजी के बालकन कों वागा वस्त्र समर्पिवे कौ तथा ब्रजयात्रा कौ बोहोत हतो। परि द्रव्य नाहीं। सो सबन के आगे कहत फिरे, जो-कैसे करें ? ब्रजयात्रा की मन में लागी है। द्रव्य पास नाहीं है। सो ऐसें सबन कों कहत फिरे। तब एक दिन एक सेठ ने कही, जो-तेरे ब्रजयात्रा करनी होइ तो द्रव्य मैं देऊ। परि जितनो धर्म करें सो सब मेरो। तब इन वैष्णव ने और वैष्णव कों पूछी, जो-फलानो सेठ कहत हैं, जो-द्रव्य मैं देऊ। धर्म मेरो होईगो। तब वा वैष्णव ने कही, जो-ठीक है। कहे, जो-धर्म होइगो सो तेरो।

भावप्रकाश — काहेतें, जो-पुष्टिमार्गीय ब्रज कों तीर्थ रूप जानि ब्रज-यात्रा करत नाहीं। क्यों, जो-ब्रज तो प्रभुकौ निजधाम है। तातें सुतः फलरूप है। परि सेठ कों तीर्थ-बुद्धि है, काहेतें, जो-अजहू वैष्णव नाहीं है। तातें उनकों धर्म देवेकी कही।

तब वा निष्कंचन वैष्णव ने सेठ तें ऐसेई आय के कह्यो।

तब सेठ ने कही, जो-लिखि देऊ। तब ऊन वैष्णव ने लिख दीनो। जो-पून्य तेरो। राजदरबार में सही भई। सो वह सेठ सेवक न हतो। तब सेठ ने वैष्णव तें पूछी, जो-तोकों कितनो द्रव्य चाहिए ? जितनो चहिए इतनो लेऊ। तब वा वैष्णव ने भली भांति सों जितनो द्रव्य चहियत हतो तितनो लियो। पाछें ब्रज में आयो। सो श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के तथा सब बालकन के तथा सातों स्वरूपन के दरसन किये। नाना भांति के जो मनोरथ हते सो सब किए। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज्ञा होंइ तो मैं ब्रजयात्रा करि आऊं। ता पाछें उहां तें श्रीनाथजीद्वार आयो। सो श्रीनाथजी के दरसन किये। वागा वस्त्र मनोरथ आभूषन जो-जो मनोर्थ हते सो सब किये। ता पाछें ब्रजयात्रा भलीभांति सों करी। फेरि श्रीगोकुल आयो। श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता पाछें कितनेक दिन तांई श्रीगोकुल में रहे। सो जो-जो मनोरथ मन में हते सो सब करि लिए।

और उहां सेठ इनकी बाट देखे। जो-अजहु वह वैष्णव आयो नाहीं। ता पाछें यह वैष्णव श्रीगुसांईजी सों तथा सब बालकन सों बिदा होंई कै अपने देस कों चल्यो। सो ऐसें फिरत-फिरत बरस डेढ़ दोइ में अपने घर आयो। तब वा सेठ सों मिल्यो। तब सेठने कही, जो-हमारो पून्य देऊ। तब फेरि इन वैष्णव ने और वैष्णव तें पूछी, जो-सेठ पून्य मांगत हैं।

तब वा वैष्णव ने कही, जो-देऊ ! तब या निष्कंचन वैष्णव ने सेठ कों पून्य दियो । तब सब लोग कहन लागे, जो-यामें या वैष्णव कों कहा फल मिल्यो ? यह तो वृथा हेरान भयो । सों ता समै और वैष्णव बैठे हते । सो उनने कही, जो-सेठ कों तो पून्य भयो । परंतु नाना भांति के मनोरथ, सेवा कौ और जमुना पान, साक्षात् अधरामृत कौ पान, नेत्रन तें श्रीमुख निरखवे कौ सुख, सो तो याकी देह तें भयो । सो सुख सेठ कों तो न भयो ? इतनो पून्य सेठ कों, जो-तीर्थ में कुंड में स्नान करि कै ब्राह्मन भोजन कराए होंइ , दक्षिना देय, सो पून्य होंई सो ये देत है । सो सेठ कों मिले । और तो सब सेवा है सो या वैष्णव की भई ।

पाछें वा सेठ के मन में आई, जो-अब मैं वैष्णव होंउ तो भलो है । तब सेठ ने उन निष्कंचन वैष्णव तें कही, जो-तुम मोकों सेवक करावो । तब वा वैष्णव ने कही, जो-चलो ब्रज में श्रीगुसांईजी सेवक करेंगे । तब वह सेठ अपनी स्त्री कुटुंब ले कै द्रव्य ले कै अपने देस तें चल्यो । सो या वैष्णव कों संग ले कै ता पाछें ब्रज में आये । तब श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता पाछें वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! यह सेठ आप की सरनि आयो है । सो कृपा करि कै सरनि लीजिये। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वा सेठ कों नाम सुनायो । ता पाछें ब्रत करवाय कै ब्रह्मसंबंध

करवायो । ता पाछें राजभोग के दरसन किए । ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे । तब उन सेठ ने भेंट करी, ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे । सो भोजन करि कै उन सबन कों जूठनि की पातरि धरी । तब इन महाप्रसाद लियो । ता पाछें कितनेक दिन श्रीगोकुल में रहे । तब एक दिन सेठ ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-सेवा करो। तब इनने कही, जो महाराज ! सेवा पधराय दीजे । तब श्रीगुसांईजी उन सेठ के माथे सेवा पधराय दिए । ता पाछें इन सेठ ने बिनती करी, जो-महाराज ! सेवा की रीति भांति जानत नाहीं । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-यह वैष्णव तुम्हारे संग है सो इन कों न्हवावो । यह सब सेवा करेगो । तब सेठ ने उन वैष्णव कों न्हवायो । तब दोऊ मिलि कै सेवा करन लागे । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै आज्ञा ले कै ब्रजयात्रा करी । श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । नाना भांति के मनोरथ किये । फेरि श्रीगोकुल में आय के कछूक दिन रहे । ता पाछें श्रीगुसांईजी कौ तथा सब बालकन कौ मनोरथ किये। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा व्है कै गुजरात आए । तब भलीभांति सों सेवा करन लागे । सो जैसें वह वैष्णव कहतो तैसेंई सेठ करतो । सो या प्रकार दोऊ जने भले वैष्णव भए । सो उन वैष्णव के संग तें सेठ हू भलो वैष्णव भयो ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-सेठ ने वा वैष्णव की सकाम

बुद्धि करि कै हू बित्तजा सेवा करी तो याकौ भाग्य फल्यो । ये वैष्णव भयो । ब्रज के, श्रीगुसांईजी के दरसन भए । जमुना-पान भयो । ऐसो फल मिल्यो । तो, जो-कोऊ निष्काम भाव तें वैष्णवन की प्रीतिपूर्वक तनुजा-वित्तजा सेवा करें तो कहा न होई? तातें निष्कचंन, विरक्त वैष्णवन की निष्काम बुद्धि तें जैसे बने तैसे सेवा करनी, यह सिद्धांत जतायो ।

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२०४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक कुनबी पटेल, जाके परोस में लाड़ बनिया रहतो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये तामसभक्त है । लीला में इनकौ नाम 'सुगन्धा' है । और सुगन्धा की एक सखी है । ताकौ नाम 'कामकुन्तला' है । सो यहाँ लाड़ बनिया भयो। सो सुगन्धा 'बन्दी' तें प्रगटी हैं । तातें उनके भावरूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात में पधारे हते । तब वा कुनबी पटेल ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मोकों कृपा करि कै नाम सुनाइए । मैं बोहोत दिन तें भटकत फिरत हों । सो आप तो परम दयाल हो सो मो पर कृपा कीजिए । तब आपने वाकों और वाकी स्त्रीकों नाम सुनायो । पाछें एक उपवास करवाय कै निवेदन करवायो । और श्रीठाकुरजी की सेवा पधराए । और मार्ग की रीति सिखाई । पाछें आप तो आगे कों पधारे । ता पाछें वह कुनबी पटेल और उनकी स्त्री श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे । सो वे मार्ग की रीति सों सेवा करते । और सुंदर उत्तम तें उत्तम

सामग्री करि कै श्रीठाकुरजी कों समर्पते । ता पाछें भोग सराय वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावते । सो ऐसे उन कौ नित्य नेम हतो सो भलीभांति सों श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सब कार्य करतें । और अहर्निस भगवद्रस में सदा छके रहते । सो वा कुनबी वैष्णव सों श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे ।

सो वा कुनबी वैष्णव के परोस में एक लाड़ बनिया रहतो। सो वह अन्यमार्गीय हतो । और वह लोभी बोहोत हतो । सो वह लाड़ बनिया द्रव्य के लोभ सो मलीन जंत्रमंत्र बोहोत ही करत हतो । और 'अविद्या देवी' कौ पाठ करवावतो । और 'तामसी देवी' की पूजा करतो । और गुगल उरद की धुप देई। ताकी गंध सब मंदिर में आवे । सो श्रीठाकुरजी आप उदासीन बिराजे रहते । तब एक दिन वा कुनबी वैष्णव ने श्रीठाकुरजी सों पूछ्यो, जो-महाराज ! आप उदास क्यों बिराजे हो? तब श्रीठाकुरजी ने वा कुनबी वैष्णव तें कह्यो, जो-यह तेरो परोसी लाड़ बनिया अन्याश्रय बोहोत ही करत है । और अविद्या देवी कौ पाठ करवावत है । और मलीन जंत्र-तंत्र के सब्द (और गंध) मेरे मंदिर में आवत हैं । सो यातैं हों उदास होत हों । तब ऐसें आप के श्रीमुख के बचन सुनि कै वा पटेल वैष्णव ने लाड़ बनिया सों कही, जो-तुम मलीन जंत्र-मंत्र और अविद्या देवी कौ पाठ मति करो । सो यातें कछू अर्थ सरेगो नाहीं । उलटो परमार्थ कों बिगारत हो । सो ऐसें बोहोत ही प्रकार सों वह

लाड़ बनिया कों कहन लाग्यो। परि वह लाड़, बनिया मानतो नाहीं। तब एक दिन वा कुनबी ने लाड़ बनिया सो कही, जो-तुम वैष्णव होउ तो भली बात है। जो-तुम्हारे काम होइंगे सो सब सरेंगे। तब वा लाड़ बनिया ने कुनबी वैष्णव सों कही, जो-आज मोकों रात्रि में मुकतोसो द्रव्य मिले तो सवारे ही वैष्णव होऊँ और जो नाहीं मिले तो कबहू न होऊंगो। जो-वैष्णव तो दरिद्री होत है। तब वा कुनबी वैष्णव ने लाड़ बनिया सों कही, जो-कदाचित् रात्रि में द्रव्य मिले तो कहा करनो ? काहे तें, जो-श्रीप्रभुजी तो सर्व करन समर्थ हैं। तब वा लाड़ बनिया ने कुनबी वैष्णव सों कही, जो-कदाचित् रात्रि में द्रव्य मिले तो सवारे वैष्णव निश्चै होऊं। सो यामें कछू संदेह नाहीं। और तुम कहोगे सो करूंगो। तब वा कुनबी पटेल वैष्णव ने लाड़ बनिया सों कही, जो-भले, तू बचन दे। तब वा लाड़ बनिया ने कही, जो-मेरो बचन ही है। तब लाड़ बनिया ने कुनबी वैष्णव कों बचन दियो। और कह्यो, जो-रात्रि में द्रव्य मिले तो सवारे वैष्णव सर्वथा होनो। ता पाछें भगवद् ईच्छा तें रात्रि कों वा घर की भींती चोक में गिरी। सो ताही में द्रव्य फेल्यो देख्यो। तब सवारे उठि कै देखे तो भींति गिरी है। सो ताही में द्रव्य चौक में फेल्यो पर्‌यो है। तब लाड़ बनिया ने बोहोत ही बेगि बेगि द्रव्य उठाय लियो। सो ठिकाने धर राख्यो। पाछें वा लाड़ बनिया ने अपने मनमें बिचार कियो,

जो-देखो भाई ! मैंने द्रव्य के लिये इतनो जतन कियो । और जंत्रमंत्र किए । और द्रव्य हू मैंने बोहोत खरच्यो । परि मोकों द्रव्य नाहीं मिल्यो । और इन कुनबी ने काल्हि मोसों कह्यो, भगवद् ईच्छा प्रबल है, और प्रभु सर्वकरन समर्थ हैं, सो याही तें रात्र ही कों सर्व कार्य भयो । और याकों मैंने बचन दीनो है और या कुनबी वैष्णव के कहेते मोकों तुरत ही द्रव्य मिल्यो है । तब व्रा लाड़ बनिया कों विश्वास आयो । सो यह कुनबी वैष्णव कहत हैं सो तो सब सांची बात है और इनकौ धर्म साँचो है । सो याके कहेते तुरत ही द्रव्य मिल्यो है । तातें अब या कुनबी वैष्णव सों सांचो रहनो । और यह कहे, सो करनो। तातें वैष्णव हूजिये । पाछें वह लाड़ बनिया कुनबी वैष्णव के पांवन पर्यो । और कह्यो, जो-तुम बड़े महापुरुष हो । और बोहोत ही साँचे हो । जो-तुम्हारी कृपा बलतें मोकों बोहोत ही द्रव्य मिल्यो है । ता पाछें वा लाड़ बनिया ने सब समाचार वा कुनबी वैष्णव सों कहे । और कह्यो , जो-अब तुम कहो सो करों । तब वा लाड़ बनिया सों कुनबी वैष्णव ने कह्यो, जो-कह्यो करेगो तो बोहोत ही सुख पावेगो । और द्रव्य हू तेरे नित्य सवायो होइगो । और कदाचित् कह्यो नाहीं मानेगो तो द्रव्य हू कौ नास होइ जायगो । सो ऐसें वा कुनबी वैष्णव ने वा लाड़ बनिया सों कही । ता पाछें वा लाड़ बनिया कों श्रीठाकुरजी के सन्निधान नाम सुनायो । और वैष्णव कर्यो ।

ता पाछें वा लाड़ बनिया कों श्रीगोकुल पठायो। ता पाछें उन दोऊ स्त्री-पुरुषन तथा पुत्रादि सबन ने श्रीगुसांईजी के पास नाम-निवेदन कस्यो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे। और ब्रज की परिक्रमा करी। पाछें थोरे दिन रहि कै सब मार्ग की रीति सीखी। ता पाछें श्रीगुसांईजी कों बोहोत भेंट करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! आज्ञा होंइ तो मैं अपने घर जाऊं। तब श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कै श्रीठाकुरजी पधराइ अपने देस कों गयो। सो कितनेक दिन में अपने देस आय पहोंच्यो। तब वा कुनबी वैष्णव सों मिले, भेटे। ता पाछें श्रीगोकुल के सब समाचार कहे। पाछें अपने श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो। सो जो कछू कार्य करें सो कुनबी वैष्णव सों पूछि कै करे। सो वा कुनबी वैष्णव पै बोहोत ही दृढ़ विश्वास हतो। ता पाछें वा कुनबी वैष्णव नें लाड़ बनिया सों कही, जो-अब तुम्हारे घर में बरजियो, जो-स्त्री पुत्रादि रंच हू अन्याश्रय न करे। क्यों? जो-श्रीठाकुरजी और द्रव्य दोनों रहेंगे नाहीं, सो तुम या बात तें सर्वथा डरपत रहियो। और श्रीठाकुरजी के विषे दृढ़ विश्वास राखेगो तो द्रव्य हू बोहोत बढ़ेगो। और श्रीठाकुरजी हू सानुभावता जनावेंगे। सो याही तें सर्व कार्य में सर्व ठौर श्रीआचार्यजी कौ आश्रयही मुख्य है। और या मार्ग में कछू भय नाहीं है। जो-अन्याश्रय भय है। सो महाभय है। सो वा

समान और कछू भय नाहीं। सो दिन में तो श्रीठाकुरजी आपकी सेवा करते। और रात्रि कों दोऊ एकांत ठौर बैठि के भगवद् वार्ता कीर्तन करते। और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवकन की वार्ता करते। और ग्रंथन की टीका देखते। और आश्रय कौ प्रसंग करते। और श्रीगुसांईजी के सेवकन की वार्ता करते। सो या प्रकार श्रीठाकुरजी सों सानुभावता बढ़ी। सो श्रीठाकुरजी मांगि-मांगि कै आरोगते। और द्रव्य हू बोहोत बढ़्यो। सो द्रव्य के लिये स्तुति करिवे कों बोहोत ही भले भले आवन लागे। सो द्रव्य के लिये बिनु बुलाए आवते। परि सेठ काहू सों कछू बोले नाहीं। और काहू सों कछू पूछे नाहीं। और वे तो सेठजी कों रिझायवे के लिये अनेक बातें करते। और देह संबंध तो माया संबंध तें ममत्व बढावे। और कह्यो, जो-कछू ज्ञाति कुटुंब में सगेन में तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। और स्त्री पुरुष तें कहे, जो-हम कों कछू गहना बनवाय देऊ। तामें तुम्हारी सोभा बढ़ेगी। और गाढ़े काम में द्रव्य अर्थ काम आवेगो। और ब्राह्मन कहे, जो-सेठजी ! कछू ब्राह्मन भोजन करवावो। तो बोहोत ही आछो है। जो-दान करे तें द्रव्य बोहोत ही भेलो होयगो। और बोहोत ही द्रव्य-लाभ होयगो। और गोदान सिज्यादान ये बताये हैं। सो तुम देऊ। सो याही तें तुम्हारों जस बढ़ेगो। और परलोक में पावोगे। यह लोक परलोक दोऊ सुधरेंगे। जो-हम तों साँची कहत हैं। सो तुम

हमारी बात मानो। और वेद सास्त्रन में कह्यो है, जो-दान बड़ो पदारथ है, और भाट चारन पुरखान कौ जस बोले। और बोहोत ही कवित्त दोहा बनाय कै कहे। ओर उदर भरन के अर्थ बोहोत ही परपंच करे। और जोतसीन आवे सो ग्रह लगावे। सो ऐसें अपने स्वारथ के लिये सब कोऊ बतावे। परि कछू न देय। और यह लाड़ बनिया तो कुनबी वैष्णव पैं विश्र्वास राखि कै वह लाड़ बनिया वा कुनबी वैष्णव सों कहे। तब वा कुनबी वैष्णव ने वा लाड़ बनिया सों कही, जो-ये तो अपने अपने सब स्वारथ के लिये परपंच करत हैं। सो तुम इन बातन में चित्त मति देऊ। इन बातन में एक हू सांचि मति मानियो। तू इन बातन तें मन मति डिगाइयो। इन बातन में तेरो बिगाड़ है। सो ऐसी बात वा कुनबी वैष्णव ने लाड़ बनिया सों कही। सो वे तो लोभ जानि कै नित्य माथो चढावे। और जोतसी आवे सो ग्रह लगावे। और कहे, जो-सेठजी ! तुम कों राहु-केतु बोहोत ही खोटे हैं। और दुःख दे हैं। सो याकौ दान करो तो बोहोत ही भली बात है। जो-तुम्हारी कुसल होइ। और हमारो मन है सो प्रसन्न होय। जो-हम तो तुम्हारे सुभचिंतक हैं। सो ऐसें सेठ कौ बोहोत ही भलो मनायवे कै लिये और अपने स्वारथ के लिये अनेक प्रकार की वे जोतसी बातें करे। और बिना बुलाये आवें। सो ऐसें सगरो दिन हाथ पै हाथ धरि बैठेई रहे। परि सेठजी तो सुनेई नाहीं। तब वे ब्राह्मन उन के

मुखिया कामदारन सों कहे, जो-तुम हमारी बिनती सेठजी सों करो, जो-हम नित्य फिरि जात हैं। सो तो खाली हाथन जात हैं। हम ब्राह्मन तुम्हारे सुभचिंतक हैं। सो ऐसें सेठजी सों बोहोत ही कहे, जो-तुम हमारो बचनसत्य करि कै मानियो। जो-हम तिहारे ग्रह कौ तो नित्य जप करत हैं। सो ऐसें बोहोत ही बातें करें। तब वा कामदार ने सेठजी सों कही, भलो, ये ब्राह्मन जोतसी सुभचिंतक हैं, सो इन कों कछू ग्रह निमित्त दीजिए। सो ऐसी बोहोत ही कहि, जो-मनुष्य राजद्वार कौ आवे तब वाकों भाग दीजे, ऐसें इन कों हू कछू द्रव्यादिक दिवावो तो बोहोत ही आछौ है। सो ऐसें बोहोत ही कहि कै कामदार ने उन कों कछू दिवायो। तब इतने में वा लाड़ बनिया के घर में चोरी भई। तब तो लाड़ बनिया कों बोहोत ही दुःख क्लेस भयो। तब वा कुनबी ने लाड़ बनिया के समाचार सुने। तब वा कुनवी वैष्णव ने लाड़ बनिया सों कही, जो-तुमने अन्याश्रय कर्‍यो होइगो। सो याही तें यह तो ऐसो भयो है। पाछें वे जोतसी फेरी आए। तब सेठजी सों जोतसीन ने कही, जो-तुम दीनो हतो सो तो धर्म भयो। सो याही तें यह तो कछू कुसल भई है। नांतरु बोहोत ही हानि होती। जो-तुम कों सनिश्चर दुःख देत है। सो याही तें तुम दान-पून्य देउगे सो तुम्हारी कुसल होइगी। नांतरु बोहोत ही हानि होइगी। तब सेठजी सों कहि कै कामदार ने इन कों और हू दिवायो। और वा वानोतर ने

जप करवायो हतो। सो वा वानोतर ने सेठजी सों कही, जो-तुम नाहीं देउगे तो इतनो हम देइंगे। जो-हमारे हजार रुपैयान में तें हम भरि देइंगे। जो-तुम या ग्रह कौ जप करवावो। जो-तुम कों हम रुजगार में तें भरि देइंगे। तब सेठ तो कछू बोले नाहीं। ता पाछें स्त्रीने गोप्य अन्याश्रय कियो। पाछें वा वानोतरने जोतसीन सों कही, जो-तुम या ग्रह कौ जप करो। इतनो हम तुम कों देइंगे। तुम सुखेन करो। वा पाछें सेठजी कौ मन प्रतिष्ठा में गयो। तब सेठ के सेव्य श्रीठाकुरजी ने वा कुनबी वैष्णव सों कह्यो, जो-हम तो यहां तें जात हैं। जो-यहां तो अब अन्याश्रय बोहोत होत है। सो ऐसें वा कुनबी वैष्णव सों श्रीठाकुरजी ने कही। तब वा कुनबी वैष्णव ने श्रीठाकुरजी सों कही, जो-'निजेच्छातः करिष्यति'। जो-मैं तो इन सों कहत हुतो परि इन मानी नाहीं। याही तें अब आप अपने पधारो। अब मेरो चारो नाहीं है। तातें आप प्रभु हो, भली जानो सो करो। तब श्रीठाकुरजी आप तो श्रीगोकुल पधारे। और द्रव्य हू जैसें आयो हतो तैसें ही गयो। जो-द्रव्य तो श्रीठाकुरजी के पाछे हैं। ता पाछें बोहोत ही उपद्रव भयो। सो जो-वस्तु जाके हाथ आई सोई गई। और कछू घर कौ द्रव्य हतो सो सब ऋणिया ले गए।

और एक तुरक कौ बोहोत ही द्रव्य हतो। सो वा तुरक ने सेठजी पास मांग्यो। तब द्रव्य तो रह्यो नाहीं। सब मांगवेवारे

ले गए। सो वा तुरक ने सेठ कों बंदीखाने में दियो। सो बोहोत दिन भए। तब खायवे कों कछु दिन वाके सगे ने बंदीखाने में पहोंचायो। ता पाछें पहोंचावते हू नाहीं। घर सों कछू न आवतो। तब सेठ कछु दिन चवेना चवाय कै रह्यो। तब वा सेठ ने अपने मन में कही, जो-देखो ! मैंने सगे-सोदरें सब कों खवायो। परि मेरी या समै सगो कोऊ न भयो। तब वा सेठ कों सब ज्ञान भयो। तब कितनेक दिन में और दूसरों हाकिम बैठ्यो। तब हाकिम ने कही, जो-बंदीखाने में तें सब कों छोरि देऊ। तब उहांतें सब बंदीखाने तें छूटे। तब सेठ हू छूट्यो। तब अपने घर आयो। तब घरकेन सों कह्यो, जो-मेरो सगो कोऊ नाहीं भयो। यातें अब मेरे तुम सों कछू प्रयोजन नाहीं है। तब वह लाड़ बनिया वा कुनबी वैष्णव सों मिल्यो। और कह्यो, जो-मेरो तो यह हवाल भयो। तब वा कुन्बी वैष्णव ने कही, जो-मैं तो तुम सों पहले ही कह्यो हतो, जो-तुम अन्याश्रय तें डरपत रहियो। जो-तुम अन्याश्रय करोगे तो यह द्रव्य हू न रहोगो और श्रीठाकुरजी हू न रहेंगे। सो सब गयो। तब वह लाड़ बनिया कुनबी वैष्णव के पाँवन पर्‍यो। जो-मेरो कियो मैं पायो। परि अब तुम मेरो अपराध क्षमा करो। तब वा कुनबी वैष्णव ने कही, जो-अब तुम सेवा करो। तब वह सेठ वा कुनबी वैष्णव के उहां श्रीठाकुरजी की टहल करन लाग्यो। सो बोहोत दिन लों टहल कीनी। तब श्रीठाकुरजी सानुभावता

जनावन लागे । पाछे कितनेक दिन में वाकी देह छूटी । सो भगवतचरणारविंद में प्राप्त भयो।

भावप्रकाश - तातें अन्याश्रय ऐसो बाधक है । जो-अन्याश्रय कामदार-द्वारा भयो तातें ऐसो भयो । सो सब सत्यानास होइ गयो । और श्रीठाकुरजी हू अप्रसन्न भए । और द्रव्य हू कौ नास भयो । तातें वैष्णव कों अन्याश्रय सर्वथा नाहीं करनो। जो-करे तो ऐसी दसा होंई ।

सो वे कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२०५॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक आनंददास सांचोरा ब्राह्मन, गुजराति में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त है । लीला में इन कौ नाम 'तारा' है । ये 'बन्दी' तें प्रगटी है । तातें उन के भाव रूप है ।

ये गुजरात में एक साँचोरा ब्राह्मन के घर जन्म्यो । सो वा ब्राह्मन के परोस में एक वैष्णव गृहस्थ रहतो हुतो । सो आनंददास कौ पिता वाके घर नौकरी करतो । सो कितेक दिन में आनंददास कौ पिता मर्‍यो । तब आनंददास वाके घर रहे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय गुजरात कौ संग श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आयो हतो । सो ता साथ में आनंददास हू आये । सो आनंददास गृहस्थ वैष्णव के संग आए हुते । सो वह वैष्णव के घर श्रीठाकुरजी कीं सेवा हती । और वा वैष्णव के बेटा-बेटी बोहोत हते । सो आनंददास हू उन के घर रहते । सो वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-राज ! आनंददास कों नाम निवेदन कराइए । तब आनंददास कों नाम

पाछे एक ब्रत कराय श्रीगुसांईजी आपु आनन्ददास को

निवेदन कराए। पाछें वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि आनंददास कों रसोई की टहल में राखे। सो आनंददास वा वैष्णव के घर रसोई करन लागे। सो रसोई भलीभांति सों करते। पाछें विधिपूर्वक श्रीठाकुरजी आपु की सेवा-सिंगार (हू) करते। अनोसर (आदि) सगरी (सेवा) रीति सों करते।

सो एक दिन आनंददास परोसन कों आए। सो वा वैष्णव के घर धग्गूजाट चाकर रहतो। सो सगरे दिन अपरस ही में रहतो। सो वासों सब कोई धग्गू पांडे कहते। सो आनंददास कों सामने देखि कै धग्गूजाट चोंकि कै उठि चल्यो। जो-यह मनुष्य तो कोई नयो आयो दीसत है। सो मैं तो इनके हाथ कौ महाप्रसाद न लेउंगो। सो दोय दिन लों कछू चना चवेना चवाय कै रह्यो। और तीसरे दिन वह धग्गूजाट आय बैठ्यो। सो सब कोऊ कहन लागे, जो-ता दिन कहां उठि गए हते ? और आज कहा जानि के पाछे आए हो ? तब वा धग्गूजाट ने कही, जो-अरे भाई ! तीसरे दिन तो नए चरस कौ पानी हू पीवत है। सो बोहोत ही प्रसन्नता सों वार्ता करी। तब आनंददास ने कही, जो-देखों भाई ! मैं चाम-चरस की ठौर हूं।

भावप्रकाश - याकौ भाव यह है, जो-वैष्णव के हाथ कौ जल महाप्रसाद सब लीजिए। और ता उपरांत अपनो मन माने तो लीजिए। सो उत्तम रीति सों करे तहाँ महाप्रसाद लीजिए। सो एक दिन श्रीठाकुरजी की सेवा करे सो अपनी रीति सों देखे। पाछें नित्य देखिऐ नाहीं। ताके हाथ कौ नित्य जलपान लीजिए। और ठौर लेनो उचित नाहीं।

सो वे आनंददास श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र

भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२०६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोकुलभट्ट, गोविंदभट्ट, दोऊ भाई, साँचोरा ब्राह्मन, कृष्णभट्ट के बेटा, उज्जैनि में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत है -

भावप्रकाश - ये दोऊ भाई सात्विक भक्त हैं। लीला में 'अरविंदी' 'गोविंदी' इनके नाम हैं। सो अरविंदी के अंग ते कमल कीसी मकरंद आवति है। सो तो इहां गोकुल भट भए। और 'गोविंदी' ठाकुर के स्वरूप में रात-दिन मगन रहति हैं। सो गोविंद भट कौ प्रागट्य जाननो। ये दोऊ 'बन्दी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं। सो ये कृष्णभट्ट के घर उज्जैनि में जन्मे।

सो एक समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें उज्जैनि पधारे। तब गोकुलभट गोविंदभट नाम-निवेदन पाये हे। सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय भए। सो गोकुलभट तो अहर्निस श्रीसुबोधिनीजी देखते। और गोविंदभट श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ग्रंथ तथा श्रीसुबोधिनीजी कौ पाठ करते।

सो श्रीगुसांईजी आपु जब परदेस पधारते तब यह दोऊ भाई आपके साथ आवते। सो भगवद वार्ता-सेवा करते। और बड़े बड़े ग्रंथ वाद के सिखते। सो सबन सों वाद करते। पाछें जब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारते तब ये दोऊ भाई श्रीनाथजीद्वार जाते। सो प्रातःकाल तें स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में जाइ कै राजभोग पर्यंत सेवा में रहते। और पाछें उत्थापन तें ले कै सेन पर्यंत सेवा में रहते। तातें श्रीगुसांईजी उन दोउ भाइन के ऊपर बोहोत प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश- या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-सेवा बिना मार्ग में अंगीकार

नाहीं । तातें वैष्णव कों सेवा बिनु रहनो नाहीं । पाछें सुमिरन हू करनो । सो या प्रकार सेवा-स्मरन दोऊ कहे, वैष्णव कों ।

सो वे दोऊ भाई गोकुलभट गोविंदभट श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए

वार्ता ॥२०७॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक चांपाभाई क्षत्री, अधिकारी हते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'चर्चिका' है । ये 'कमोदिनी' तें प्रगटी है । तातें उनके भावरूप है ।

ये गुजरात में एक द्रव्यपात्र क्षत्री के जन्मे । सो चांपाभाई के जन्मत ही वाकौ पिता मर्‍यो । पाछें मामा ने इनकों बड़ो कियो । सो ये बरस बीस के भए तब इनकी माता हू मरी । सो इनकौ ब्याह तो भयो नाहीं । सो ये वैराग्य दसा में रहते ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आप गुजरात कों पधारे । तब चांपाभाई के गाम में डेरा भए । तब चांपाभाई ने श्रीगुसांईजी के दरसन पाये । पाछें बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों नाम सुनाइए । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै चांपाभाई कों नाम सुनायो । पाछें दूसरे दिन उपवास करि कै निवेदन करवायो । तब चांपाभाई ने सब द्रव्य घर श्रीगुसांईजी की भेट कर्‍यो । तब श्रीगुसांईजी ने चांपाभाई की ऐसी दसा देखि कै अपने पास राखे । सो जहां आप पधारते, तहां साथ रहते । पाछें चांपाभाई कों अधिकारपनो सोंप्यो । और कह्यो, जो-ये सब सेवा तुम करो ।

वार्ता प्रसंग - २

बहोरि एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें अचानक श्री रनछोरजी के दरसन कौं और भाईला कोठारी कौ मनोरथ पूरन करिवे कों द्वारिका पधारे। सो तहां तें आप 'सीकरी फतेपुर' पधारे। सो घर तें जब चले तब चांपाभाई संकरभाई भंडारी हते। परि तिनको आप न कहे, जो-हम फलानी ठौर पधारेंगे। सो वा समय फतेपुर बीरबल हतो। सो तिनने सुनी, जो-श्रीगुसांईजी पधारे हैं। तब बीरबल साम्हे आइ कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै श्रीगुसांईजी कों आपने डेरान में पधराय कै ल्यायो। ता पाछें आपके ही डेरा के पास दूसरो डेरा श्रीगुसांईजी कौ ठाढ़ौ कियो। ता पाछें बीरबल ने श्रीगुसांईजी के दोई-चारि मुकाम करवाये। तब चांपाभाई संकरभाई बीरबल सों पूछि कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कैआपु सौं बिनती कीनी, जो-महाराज ! काहू सों कहे बिना अचानक परदेस पधारत हो ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई संकरभाई सों कहे, जो-भाईला कोठारी कोंदेखे बिनु बोहोत दिन भए हैं। सो तातें अब तो एक बेर गुजराति कों पधारूंगो। तब श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै चांपाभाई चुप करि रहे। ता पाछें चांपाभाई संकरभाई सों बीरबल ने पूछ्यो, जो-श्रीगुसांईजी ऐसी उतावलि सो कहां पधारत है ? सो कारन कहा है ? तब चांपाभाई ने बीरबल सों कह्यो-राजाजी ! श्रीगुसांईजी के भंडार में करज बोहोत भयो, है तातें गुजरात

के परदेस कों पधारेंगे । तब बीरबल ने कह्यो, जो-करज कितनोक भयो है, तातें गुजराति के परदेस कों पधारत हैं ? तातें करज भयो होइ सो मोसों कहो । मैं करज कौ द्रव्य देऊंगो। और तुम श्रीगुसांईजी कों पधारत तें राखो । सो श्रीगुसांईजी आप तो अंतर्यामी हैं । सो उन दोऊ जनेंन के मन की बात जानि गए । ता पाछें श्रीगुसांईजी बीरबल कों खबरि किये बिना आधी रात के समय आगें पधारें । सो यह खबरि बीरबल कों बड़े ही प्रातःकाल भई । जो-श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हैं । सो आपु तो चले सो कितनेक दिन में भाईला कोठारी के घर पधारे । ता पाछें भाईला कौ सब मनोरथ सिद्ध किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप थोरे दिन भाईला कोठारी के घर बिराजें। श्रीद्वारिका श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे । पाछें कितनेक दिन में श्रीगोकुल पधारे । और बीरबल कों घर पधारे ताकों पत्र लिखे । सो पत्र बांचि के बीरबल अति विस्मृत भयो। ता पाछें चांपाभाई ने श्रीगोकुल पधराए । सो आप की सेवा करन लागे ।

सो वे चांपाभाई श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ।।२०८।।

* * *

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी किसोरीबाई ब्राह्मनी, गुजरात की, जाकों श्रीयमुनाजी नित्य दरसन देते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - सो वह किसोरीबाई गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्मीं । सो वाकौ पिता श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो । सो वाके दो बेटी हती । तामें किसोरी छोटी

हुती, सो इन दोऊन कौं वाने श्रीगुसांईजी की सेवकिनी कराई हती । सो किसोरीबाई के ऊपर वाके पिता कौ बोहोत ममत्व हुतो । सो वाकों नित्य 'श्रीयमुनाष्टक' कौ पाठ करावे । लाड़ लड़ावे । बोहोत ही प्यार करे । सो किसोरी वर्ष नव की भई तब वाकौ ब्याह एक जाति के लरिका सों कियो । सो वह ब्याह होत ही मर्‍यो । सो किसोरी ने लौकिक कछु जान्यो नाहीं । ता पाछें केतेक दिन में किसोरी कौ पिता हू मर्‍यो । और माता तो वाकी पहिले ही सों मरि चुकी हती । सो किसोरी की बहनि वाकी खबरि राखे । ऐसे करत जब किसोरी बरस बीस की भई तब वाकों सीतला निकसी ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वा किसोरीबाई की देह सीतला में रहि गई । हाथ पांव सो लुली भई । कानन सों सूने नाहीं । पाँवन सों चल्यो जाय नाहीं । मुख तें कछू बोल्यो न जाँय । सो वाने अपने पिता के मुख सों 'श्रीयमुनाष्टक' पढ्यो हतो । सो वाकौ आधो श्लोक याद रह्यो हतो । सो वा किसोरीबाई आठों प्रहर वा श्लोक कौ पाठ करती । सो काहू कों जतावती नाहीं । सो ऐसें आठों प्रहर पाठ कियो करती । सो श्लोक -

विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते ।
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भावय ।।४।।

या आधे श्लोक कौ पाठ करती ।

और किसोरीबाई की एक बहिन हती । सो वह किसोरीबाई कों खवाय के चली जाती । परंतु अपने मन में बोहोत दुःख पावती । परि करे कहा ? और किसोरीबाई श्रीयमुनाष्टक कौ पाठ करे और महारानीजी कौ ध्यान मन में करती । और काहू सौं बोलती नाहीं । सो एक दिन श्रीयमुनाजी मैले वस्त्र करि, पहरि, किसोरीबाई की बहनि हती ताके घर पधारी ।

और कहन लागी जो-तू अपनी बहनि कों रोटी खवावति है, सो ताही तें तू बोहोत दुःख पावत है। तातें किसोरीबाई की रसोई तो मैं करूंगी। तब किसोरीबाई की बहनि ने श्रीयमुनाजी सों कही, जो-भली बात है। मेरे हू मन में ऐसी ही आई है। जो-कोऊ याकी टहल करे तो मैं छुटूं। तातें अब तुम ही टहल करो। सो ता दिन तें श्रीयमुनाजी अपने श्रीहस्तकमल सों रसोई करि कै किसोरीबाई कों खवावती।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-'श्रीयमुनाष्टक' के आधे श्लोक कौ हू पाठ जो कोऊ निरंतर करत है, ताके ऊपर श्रीयमुनाजी या भांति कृपा करति हैं। वाकी रसोई करति हैं। वाकों अपने श्रीहस्त सों खवावति हैं। तो, जो-कोऊ सगरे यमुनाष्टक कौ पाठ निरंतर प्रीतिपूर्वक करे ताके भाग्य कौ कहा कहिए ? तातें वैष्णव कों 'श्रीयमुनाष्टक' कौ पाठ अहर्निस करनो, तातें श्रीयमुनाजी कौ स्वरूप हृदयारूढ होंई। परम सौभाग्य कों पावे।

तब किसोरी बाई कों श्लोक उद्बोध भयो। और या श्लोक को भावार्थ हृदयारूढ़ भयो। और अपने मन में बोहोत ही प्रसन्न होन लागी।

भावप्रकाश - यामें यह जताए, जो-किसोरीबाई कों श्रीयमुनाजी की कृपा तें लीला - ऐश्वर्य स्फुर्यो। तब चित्त में प्रसन्नता भई। लौकिक क्लेश बाधा न कियो।

तब कितनेक दिन में श्रीगुसांईजी आपु वा गाम में पधारे। तब वा गाम के सगरे वैष्णव जुरि कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों आए। तब श्रीगुसांईजी भोजन करि कै विश्राम करि कै जागे। तब ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आप आय के स्वप्न में श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-या गाम में एक दुर्बल पिंगला

वैष्णव है। सो ताकों श्रीयमुनाजी नित्य महाप्रसाद लिवावति हैं। तातें उहां पधारि कै दरसन देउगे। तब वाकौ कार्य सिद्ध होइगो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-श्रीयमुनाजी ने कृपा करी, अब यापै आप कृपा करो। तब वाकौ कार्य सिद्ध होई। काहे तें, जो-गुरुन की कृपा बिना जीव कौ कार्य होंई नाहीं। यामें श्रीयमुनाजी तें हू श्रीगुसांईजी की कृपा कौ उत्कर्ष विशेष कहे।

तब श्रीगुसांईजी आपु जागे। और अपने मन में बिचार कियो, जो एतो कोऊ दैवी जीव दीसत है। तब श्रीगुसांईजी को वा किसोरीबाई के ऊपर दया आई। सो आपु वा किसोरीबाई के घर पधारे। तब आप की दृष्टि वा किसोरीबाई के अंग-अंग ऊपर परी। तब ताही समय किसोरीबाई की देह अलौकिक सेवोपयोगी निर्मल - निर्विकार भई। आंखिन सों देखन लागी। कानन सों सुनन लागी। तब ताही समय श्रीगुसांईजी कों सोलह सिंगार सहित श्रीयमुनाजी कौ दरसन भयो। तब आपु देखे तो श्रीयमुनाजी किसोरीबाई के पास बैठे हैं। तब श्रीयमुनाजी कों श्रीगुसांईजीने दंडवत् करी। तब श्रीयमुनाजीने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-हम तिहारे लिये आये हैं। तातें ऐसी मति करो। तब श्रीगुसांईजी फेरि श्रीयमुनाजी सों पूछे, जो-यह कारन कहा है? तुम अपने हस्तकमल सों श्रम करत हो ?तब श्रीयमुनाजी कहे, जो-यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ वाक्य है, जो-कोऊ श्रीयमुनाष्टक कौ पाठ करत है ताकों हम प्रीति सों निजलीला

के निजजल सों स्नान करावति हैं। तातें वाके सकल दुरितन कौ क्षय होत है। मुकुंद में रति बढ़ावति हैं और मुकुंद की रति या जीव में बढ़ावति हैं। या प्रकार कौ स्वरूप उज्वल करति हैं। यम कों नहीं दिखावत हैं। और वाकों पुष्टिमार्ग में प्रवेस करावति हैं। परंतु तुम्हारे कुल में नाम निवेदन करत हैं और श्रीयमुनाष्टक को पाठ करत हैं। ताकों रासलीला कौ सुख होत है।

भावप्रकाश - यह कहि वल्लभकुल के सरनि कौ उत्कर्ष दिखाए। सो कहा ? जो-वल्लभकुल के सरनि बिना पुष्टि रास में प्रवेश होंई नाहीं। और श्री आचार्यजी के बचन कौ उत्कर्ष कहे, जो-केवल यमुनाष्टक के पाठ मात्र सौं श्री-यमुनाजी अष्टैश्वर्य कौ दान करत हैं।

सो यह किसोरीबाई यमुनाष्टक के अर्द्ध श्लोक कौ पाठ अष्ट प्रहर प्रीति सों गुप्त रीति सों नित्य करत हैं, तातें हम अपने श्रीहस्त कमल सों महाप्रसाद लिवावत हैं। और अब ये शुद्ध भई है, तातें आप इनको सेवा पधराय दीजिए। पाछें किसोरीबाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मो पिंगला पे बड़ी कृपा करी। तातें आप अब, जो-आज्ञा करो सो करों। तब आप ने कृपा करि कै एक बंटी में रमन रेती पधराय दिये। जो-याकी तू सेवा भली भांती सो करियो। और वा बंटीं कों गादी के ऊपर पधराइ कै अपने श्रीहस्त कमल सों सेवा करि कै पाछें किसोरीबाई कों श्रीगुसांईजी ने सब सेवा की रीति भांति सिखाई। ता पाछें किसोरीबाई नीकी भांति सों सेवा करन लागी। और नित्य के नेग में टका सात की सामग्री

करती । सो श्रीठाकुरजी कों आरोगावती । सो महाप्रसाद वैष्णवन कों लिवावती ।

वार्ता प्रसंग - २

सो एक दिन वा किसोरीबाई ने श्रीनवनीतप्रियजी कों गादी तकियान के ऊपर खेलते देखे । तब उह किसोरीबाई अपने मन में बोहोत प्रसन्न भई । और श्रीठाकुरजी की सेवा बोहोत प्रीति सों करन लागी । सो किसोरीबाई सूत बोहोत कांतती । सो एक दिन एक वैष्णव ने किसोरीबाई कों कछू सामग्री दीनी हती । तब किसोरीबाई ने सिद्ध करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो । ता दिन श्रीठाकुरजी आरोगवे कों पधारे नाहीं । तब किसोरीबाई अपने मन में बोहोत खेद करन लागी । तब श्रीठाकुरजी बोले, जो-तेनें मेरे लिये सामग्री क्यों लीनी ? सो हम कैसे आरोगे ?

भावप्रकाश — यामें यह जताए, जो-वैष्णव कों और की सत्ता-सामग्री अपने श्रीठाकुरजी कों आरोगावनी नाहीं । और कछू वैष्णव पे तें लै के श्रीठाकुरजी कों विनियोग न करावनो । सो श्रीठाकुरजी अंगीकार न करे ।

वार्ता प्रसंग - ३

और किसोरीबाई के घर में श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सहित लीला करत हे । सो उह किसोरी बाई सब रस कौ दर्सन करती । सो ऐसे करत किसोरीबाई श्रीनाथजीद्वार श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आई । तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भई । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा किसोरीबाई कों देखि के हँसे । तब

किसोरीबाई हू हँसी । तब ता समै लोग लुगाई दरसन करत हते । सो तिन ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों हँसत देखे । तब यह बात वैष्णवन ने जाइ कै श्रीगुसांईजी सों कही । जो-महाराज! किसोरीबाई और श्रीगोवर्द्धनाथजी परस्पर हँसत हते । ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी इन वैष्णवन सों कहे जो किसोरीबाई श्रीगोवर्द्धनाथजी की और श्रीयमुनाजी की बड़ी ही कृपापात्र हैं । सो किसोरीबाई सों श्रीगोवर्द्धनाथजी कौ स्पर्स है । और फेरि रामदास भीतरीयानें श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-या किसोरीबाई पे तो श्रीयमुनाजी की कृपा है । और श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन की कृपा भई है । तब हम हू या प्रकार कृपा करी हैं । तब रामदास भीतरिया ने कह्यो, जो-महाराज ! यह कौन जीव है ? तब श्रीगुसांईजी रामदास भीतरिया सों अपने श्रीमुख सों आज्ञा किए, जो-यह पहले श्रीनंदरायजी के घर की टहल करत हुती। सो या किसोरीबाई ने श्रीठाकुरजी कों माखन बोहोत खवायो है । सो एक दिन श्रीयमुनाजी में झूंठे बासन धोये हते । सो ता करि कै सरीर ऐसो दुःख भयो ।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीयमुनाजी साक्षात् रसात्मक हैं । सो श्रीयमुनाजल हू रसरूप हैं । तातें वा जल में लौकिक बुद्धि करि जो कोऊ बांसन मांजे, कुल्ला करे, तो वाकों ऐसी गति होंई । तातें वैष्णवन कौ श्रीयमुनाजल तें कोई कार्य करनो नाहीं । रसोई आदि कछू न करनो । केवल श्रीठाकुरजी की झारी भरे, यह जताए ।

और ये किसोरीबाई लीला में कुमारिका के यूथ में है । उहांऊ इनकौ नाम

'किसोरी' है। ये 'कमोदिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके सात्विक भावरूप है।

सो श्रीनाथजी की तथा श्रीयमुनाजी की तथा श्रीगुसांईजी की किसोरीबाई पैं बड़ी कृपा हती।

वार्ता प्रसंग - ४

और एक समय श्रीगुसांईजीने श्रीगोवर्द्धनाथजी कौ उत्थापन कियो। तब किसोरीबाई अपने अंग में सोंधो लगाय के श्रीनाथजी के मंदिर में गई। सो किसोरीबाई कौ ऐसो भाव हतो।

वार्ता प्रसंग - ५

और एक दिन श्रीगुसांईजी ने अपने मन में बिचार कियो जो-या किसोरी बाई ने श्रीनंदराय जी के घर में लीला कौ सुख देख्यो है। और अबहू बाललीला कौ सुख देखत है। परंतु रासलीला कौ सुख देख्यो नाहीं है। तातें श्रीगुसांईजी आप बिलछू वन पधारे। सो तहां एक पद श्रीगुसांईजी ने गायो। सो ता समै किसोरीबाई श्रीगुसांईजी के पास हती, और वैसाख महिना के दिन हते। सो पद -

राग केदारो

प्रीतम प्यारी पिया ये पग धारो प्रीति यही चलि आई।
प्रगट नैनन लागी तारी रस भरे गिरिधारी, प्यारी! मनि-मंदिर मुरारी।
ता पर पूरन रस सों भरे आली तिनकी लीला निस उजियारी।
'श्रीविट्ठल गिरिधर' देखियत हैरी! ये प्रगट नृत्यकारी।

सो या कीर्तन में श्रीगुसांईजी आप कौ तथा किसोरीबाई कौ चित्त गढि गयो। तब ता समय किसोरीबाई कों रासलीला कौ दरसन करवायो। तब श्रीगुसांईजी ता समय किसोरीबाई

कों चर्वित तांबुल दियो। और अनेक जूथ दिखावत भए। और दामोदरदास कों हू जूथन में देखत भई। तथा और हू सब वैष्णवन कों देखत भई। सो ताके मधि किसोरीबाई ने अपने स्वरूप कों हू देख्यो। जो-मेरो हू स्वरूप लीला में है। जो-केदार राग रस भर्‍यो गाइ रही है। सो रस की वार्ता है। सो श्रीगोकुलनाथजी 'रसमंजरी' की टीका लिखी है। तहां दामोदरदासजी कौ अद्‌भुत स्वरूप है। सो तहां किसोरीबाई ने देख्यो। सो परम सौभाग्यमान है। स्वरूप अपार जाकौ पार नाहीं। सो पयो जात है। और हू ताके पीछे सगरे वैष्णव ठाढ़े हैं। तब किसोरीबाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! ये वैष्णव हैं। तैसें मैं हू पृथ्वी पर हों। और सर्व लीला मैं देखी। ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी ने किसोरीबाई सों कह्यो, जो-या मारग में वैष्णव हैं तिनके तीन स्वरूप हैं। १ आधिभौतिक २ आध्यात्मिक ३ आधिदैविक। आधिभौतिक हैं सो तो संसार में हैं। आधिदैविक है सो नित्यलीला में हैं। आध्यात्मिक हैं सो लीला मध्यपाती है। सो ऐसें तीन प्रकार के हमारे वैष्णव हैं। सो मारग की रीति करि कै, जो-सेवा करत हैं। और भावना सों लीला कौ अनुभव हू करत हैं सो बड़ भागी है। और हम तो दैवी जीवन के उद्धारार्थ प्रगट भए हैं। तब किसोरीबाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! आपतो

सर्व सामर्थ्यवान हो । जो-चाहो सो करो । आप तो श्रीस्वामिनीजी कौ स्वरूप हो । और सब भांति करि कै हमारे मनोरथ पूरन कर्ता हो । जो-या लीला कौ सुख दिखायो । पाछें किसोरीबाई ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत् कीनी । तब श्रीगुसांईजी ने श्रीमुख तें आसीर्वाद दियो । और माथे ऊपर श्रीहस्तकमल धरे । और श्रीमुख तें कहे, जो-सर्वदा वैष्णवन कों संग करियो । तब ता समै चाचा हरिवंसजी बैठे हते । तब चाचा हरिवंसजी ने श्रीगुसाईजी सों पूछ्यो, जो-महाराजाधिराज ! यह कहा कारन है ? जो-किसोरीबाई के माथे ऊपर श्रीहस्तकमल धरे । और आज्ञा किये, जो-सदा सर्वदा भगवदीयन कौ संग करियो । गगांजल सों जल मिले तो उह गंगाजल समान है । और आसीरवाद दियो ताकौ हेतु कहा ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो-भगवदीय कौ स्वरूप है सो गंगाजल रूप है । सो ताही तें उनही सें मिले तें हमारो स्वरूप जानेगी । तातें कह्यो, जो-भगवदीयन कौ सत्संग करनो । और उन की वार्ता चर्चा सुनत रहनी । उन ही के हाथ कौ महाप्रसाद लीजिए । यह सुनि कै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए । और श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो- किसोरीबाई को जन्म फेरि भूतल पै होइगो । सो श्रीगोकुलनाथजी की बहूजी होइगी । सो यह वार्ता गोप्य है । सो सुनि कै हृदय में राखोगे ।

भावप्रकाश - या वार्ता में श्रीयमुनाजी, श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप कहें ।

जो-श्रीयमुनाजी और श्रीगुसांईजी दोऊ परम दयाल हैं। दोनों कौ प्रागट्य दैवी जीव के उद्धारार्थ हैं। श्रीयमुनाजी जब कृपा करे तब जीव कों सेवोपयोगी नूतन देह की प्राप्ति होंई। और श्रीगुसांईजी की कृपा तें वा जीव कों लीला कौ अनुभव होंई। निज अंतरंग सृष्टि में अंगीकार हू होंई। तातें जीव कों दोऊन कौ आश्रय कर्तव्य है। यह जताए।

सो उह किसोरीबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २०९ ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक दोई भाई कुनबी पटेल, मलयागिरि चदंन ल्याये, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये दोऊ भाई तामस भक्त हैं। लीला में दोऊ गोप हैं। सो एक कौ नाम 'सुमंगल' और दूसरे कौ 'श्रीमंगल'। सो बड़ो भाई सुमंगल कौ प्रागट्य, और छोटो 'श्रीमंगल'। ये दोऊ 'कमोदिनी' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं। सो ये दोऊ गुजरात में कुनबी के प्रगटे। सो बरस बीस-पचीस के भए। तब इन के माता-पिता मरे। तब ये तीर्थयात्रा कों चले।

वार्ता प्रसंग — १

सो एक समय गुजराति तें संग आयो। तामें ये दोऊ भाई पटेल हू आए। सो संग श्रीगिरिराजजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों गयो। सो येऊ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों संग के साथ गोपालपुर श्रीनाथजीद्वार आए। सो दोऊ भाई ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन किये। सो दोऊ भाई कों श्रीगुसांईजी आपके कोटिकंदर्प लावण्य पूर्णपुरुषोत्तम ऐसे दरसन भए। सो दोऊन ने विचार कियो, जो-भाई ! इनकी सरनि मिले तो आछो।

पाछें गिरिराज तें उतरि श्रीगुसांईजी की बैठक में आए। सो तहां श्रीगुसांईजी आप वैष्णवन के संग हास्य-विनोद करत हते। तब इन दोऊ भाइन आइ दंडवत् किये। पाछें समय पाय बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि हम दोऊन कों सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप प्रसन्नता सों दोऊन कों नाम सुनाए। पाछें एक ब्रत करवाय दूसरे दिन निवेदन करवाए। ता पाछें दोऊन की ओर कृपा सुदृष्टि करि चितये। सो दोऊ भाई बड़े प्रसन्न भए। पाछें ये दोऊ भाई श्रीगिरिराज में रहि गए। सो श्रीगुसांईजी की श्रीगोवर्द्धनाथजी की टहल जो बने सो करे।

वार्ता प्रसंग — २

सो एक दिन श्रीगुसांईजी ने इन दोऊ, भाईन कों कृपा करि आज्ञा किये, जो-तुम दोऊ जाँइ कै मलयागिरि चंदन लावो तो आछो है। तब सुनत ही वे दोऊ भाई मलयागिरि चंदन लेवे कों गए। सो केतेक दिन में मलयागिरि जाँई पहोंचे। पाछें दोऊ भाईन ने खाल में सरीर मढ़ि लिये। एक आंखि खुली रही। और सब मढ़ि लीयो। पाछें एक भाई तो लंबी डार ले कै ठाढौ भयो। तासों दूसरो भाई चढ्यो, सो वाने छेडा लेकै मलयागिरि की डारि सों बांध्यो। फेरि करोती सों काटी। सो डार गिरत ही भुजंग ने फूंक मारी। सो वह फूंक मारत उहांई रह्यो। तब दूसरो भाई डारि खेंचि काट कूटि कै मलयागिरि ले आयो। सो केतेक दिन में आय कै श्रीगुसांईजी

के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो-मांगि। तब वाने कही, जो-महाराज! श्रीनाथजी के श्रीअंग में चंदन समर्पों। तब आपने कही, जो-आछो। तब वाने चंदन सिद्ध करिकै श्रीनाथजी कों समर्प्यों। तब तहां देखे तो दूसरो भाई पंखा करत है। तब उह देखि कै बोहोत प्रसन्न भयो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-गुरु की आज्ञा पर विश्वास राखि कार्य करे तो निश्चै सिद्ध होंई। और सेवा अर्थ देह गिरे तो श्रीनाथजी वाकों कबहू छोरत नाहीं, येहू जताए।

सो वे दोऊ भाई श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २१० ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक गुलाबदास पूर्व कौ क्षत्री, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इनको नाम 'श्रीदेवी' है। सो आगें एक अदना गरीब की वार्ता में कहि आए हैं। ये 'सुगंधरा' तें प्रगटी हैं। तातें उन के भावरूप हैं।

ये पूरब में एक द्रव्यमान, क्षत्री के जन्म्यो। सो बरस बीस कौ भयो, तब याके माता-पिता दोऊ मरे। पाछे ये सुतंत्र रहे। सो एक समय वा गाम में दोई-चारि वैष्णव आपुस में भगवदचर्चा करत हुते। तामें श्रीगुसांईजी के प्रमेयबल पर बात निकसी। तब उन वैष्णव ने कही, जो-भाई! श्रीगुसांईजी आपु परम दयाल हैं। सो जीव कों सर्वथा छोरत नाहीं। कैसोऊ अधर्मी जीव होंई परि जो आप की सरनि जात है ताकौ श्रीगुसांईजी आप सर्वथा उद्धार करत हैं, अपने प्रमेय बल तें वाकों अंगीकार करत हैं। ऐसे आप परम दयाल हैं। सो बात इन गुलाबदास ने सुनी। तब गुलाबदास ने उन वैष्णवन सों कही, जो-वैष्णव! श्रीगुसांईजी ऐसें हैं? तब वैष्णवन ने वाकों दैवी जीव जानि कह्यो, जो-हां! हां! श्रीगुसांईजी ऐसे ही। तब यह गुलाबदास वैष्णवन सौं पूछ्यो, जो-वे श्रीगुसांईजी कहां रहत हैं? तब वैष्णवन

कही, जो आपु अडेल में बिराजत हैं। तब तो वह गुलाबदास अपने गाम तें अड़ेल आयो। पाछें श्रीगुसांईजी सो बिनती कियो, जो-महाराज! मोकों सरनि लीजिए तब श्रीगुसांईजी आपु अंतर्यामी, सो उन के हृदय की जानि गए। सो गुलाबदास कों कहे, जो-गुलाबदास ! हम तेरो उद्धार सर्वथा करेंगे। पाछें आपने गुलाबदास कों नाम-निवेदन कराए। तब गुलाबदास अपने गाँवकों आयो।

वार्ता प्रसंग - १

पाछें उन गुलाबदास ने अपने मन में बिचार कियो, जो-देखों, मेरो उद्धार श्रीगुसांईजी कैसे करे हैं ? सो ऐसें बिचारि कै एक म्लेच्छन कौ गाम हतो। सो तहां यह गुलाबदास जाय रह्यो। सो तहां यह गुलाबदास हुक्का पीवन लाग्यो। और अभक्षाभक्ष खावन लाग्यो। और रात-दिन वेस्या सों लिपटि कै सोवे या प्रकार सों रहिवे। पाछें ऐसें करत बोहोत दिन भए सो नाम हू फिरि गयो। गुलाबदास नाम हतो, सो गुलाबखां सब कोऊ कहन लागे। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी ने इनके पास एक वैष्णव पठायो। सो वैष्णव ने जाय कै श्रीकृष्ण-स्मरन कियो। पाछें कह्यो, जो-मोकों श्रीगुसांईजी ने तुम्हारे पास पठायो है। तब वा वैष्णव के बचन सुनि कै गुलाबदास ने कही, जो-हां ! अज हू मोकों श्रीगुसांईजी सुधि करत हैं ? सो ऐसे तीन बेर कहि कै प्रान छोरि दिये। सो श्रीगुसांईजी के चरनारविंद में प्राप्त भयो। तब उह वैष्णव अपने मन में पश्चात्ताप करन लाग्यो। पाछें वह श्रीगुसांईजी के पास आयो। सो श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन- नाथजी के मंदिर में हते। सो भोग के दरसन खुले हते। सो वह वैष्णव ठाढ़ो

दरसन करत है । तब या वैष्णव ने वा वैष्णव सों श्रीकृष्ण-स्मरन कियो। पाछें सब बात पूछी। सो उन सब कही। सो सब वार्ता एक अदना गरीब की वार्ता में आगें कहि आए हैं।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीगुसांईजी जाकी बांह पकरत हैं ताकों श्रीगोवर्द्धननाथजी कों निश्चै सोंपत हैं। तामें संदेह नाहीं ।

सो उह गुलाबदास श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ?

वार्ता ॥ २११ ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांजी कौ सेवक एक चूहडा हतो, सो श्रीगोकुल में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त है। लीला में ये 'मनोहर' गोप हैं। सो श्रीनंदरायजी कौ अनुचर है । ये 'सुगंधरा' तें प्रगट्यो है, तातें उन के भावरूप है । सो यहां काहू अपराध सों महावन में चूहडा के जन्म्यो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो उह चूहडा श्रीगोकुल के निकट रहतो। सो श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। श्रीगुसांईजी आप उनकों नाम सुनाए हते। ता दिन तें वह चूहडा मन सों भाव पूर्वक सेवा करतो। सो उहां कूड़ा कचरा रहन देतो नाहीं। और नित्य श्रीगुसांईजी की बैठक के आगे बैठ्यो रहतो। और जो-कोई वैष्णव पातरि पतौवा डारि देतो सो तुरत ही उठाय लेतो। सो श्रीगुसांईजी नित्य श्रीजमुनाजी स्नान कों पधारते। सो मारग में सब ठौर झार डारतो। और श्रीठाकुरजी के बाग में झारत हतो। सो

श्रीगुसांईजी के कहे बिना झारतो। और अपने मन में बिचार करतो, जो-या गेल श्रीगुसांईजी पधारेंगे। जो-मति कहूं चरन नीचे कूड़ों आवे। मति कहूं वैष्णव के चरनन नीचे कूड़ों आवे। सो ऐसे स्नेह संयुक्त सेवा करतो। और अहर्निस बैठ्यो रहतो। और श्रीगुसांईजी आवें जाय तब दरसन करतो। और वैष्णव याकों जूंठन की पातरि देई, सो स्नेह सों लेतो। जानतो, जो-इनकी जूंठनि तो परम निरमल है। सो ऐसो बिचार अपने मन में करत रहतो। सो जूंठनि के प्रताप तें वा चूहडा कों ऐसो ज्ञान भयो। सो ज्ञान-दृष्टि हृदय में भई। आत्मज्ञान भयो।

भावप्रकाश - यामें वैष्णवन की जूंठनि महाप्रसाद को स्वरूप कहे, जो-वैष्णव की जूंठनि लिये तें हृदय के नेत्र खुलत हैं। सो वैष्णव कों प्रसाद लिवाई के ले, यहू जूंठनि जाननो।

वार्ता प्रसंग — २

सो एक समय कासी के पंडित भेले होंई कै श्रीगोकुल आए हते। सों श्रीगुसांईजी सो वाद करन आए हते। तब उन पंडितन तें वैष्णवन नें कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी आपु तो सेवा में हैं। सो भोजन करि कै बाहर पधारेंगे। तब तुम कों उत्तर देइंगे। तातें तुम डेरा करो। पाछें आइयो। तब पंडित गाम में जाइ कै उतरे। तब सबन ने रसोई करी। सो श्रीठाकुरजी कों भोग धरि कै महाप्रसाद लियो। तब चूहडा कों महाप्रसाद देन लागे। तब चूहडा ने कही, जो-तुम अनाचारी हो सो तातें मैं तुम्हारी जूंठनि कैसे लेउंगो ? ता पाछें वे अछूती रोटी देन लागे। तब चूहडा ने कही, जो-ये प्रसादी नाहीं। श्रीठाकुरजी

आप आरोगे नाहीं है। तब पंडितन ने कह्यो, जो-ये तो श्रीठाकुरजी के भोग धरी भई है। तब पंडितन तें वा चूहडा ने कही, तुमने फूंक देकै रसोई करी है। सो फूंक की बायु महा निषिद्ध है। सो वेदसास्त्र में वर्जित है। सो मुख की फूंक तें सब बस्तू भई है सो श्रीठाकुरजी के काम नाहीं आवत हैं। सो अनाचारी के हाथ कौ श्रीठाकुरजी सर्वथा नाहीं आरोगत हैं। सो वेदसास्त्र के श्लोक पढ़े। पाछें सब के अर्थ कहे। तब उन पंडित ने वा चूहडा सों कह्यो, जो-तोकों यह ज्ञान कहां तें भयो? तब चूहडा नें उन पंडित ब्राह्मनन सों कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की जूंठनि लेत हूं। सो याही तें मोकों इतनो ज्ञान भयो। सो तुम अपने मन में बिचार देखो, जो-यह बात सांची है के नाहीं। और तुम श्रीगुसांईजी सों वाद करन कों आए हो सो भले आए। परंतु तुम (पहले) मोसों उत्तर करो। पाछें तुम उन सों उत्तर करियो। तब वे पंडित वा चूहडा के वेदसास्त्र के बचन सुनि कै चुप करि रहे। और अपने मन में बिचार कियो, जो-भाई! चूहडा कों इतना ज्ञान है सो हम सों उत्तर नाहीं बने तो श्रीगुसांईजी के पास जाय कै कहा करोगे? और आपुन जायंगे और जो निरुत्तर करेंगे तो अपनो अपमान होयगो। तातें तुम यहां तें बेगि चलो। सो ऐसो मन में बिचारि कै वे पंडित ब्राह्मन उहां सें उठि चले। जो-श्रीमथुराजी आये सो यह बात काहू वैष्णव ने श्रीगुसांईजी आगे कही,

जो-महाराज ! कासी के पंडित आपु सों बाद करन आए हते सो आपु सेवा में हते । सो उनने गाम में डेरा किए हते । सो रसोई करि भोजन करि वा चूहडा कों जूंठनि देन लागे । सो वा चूहडा ने जूंठनि लीनी नाहीं । सो चूहडा ने उन सों वाद कर्यो । सो वेदसास्त्र की रीति सों कही, ताकों उत्तर करि न सके । तब श्रीगुसांईजी ने उन वैष्णवन सों कही, जो-तुम वा चूहडा कों बुलावो । तब वा चूहडा ने आय के सब बात बिधि पूर्वक कही । सो आपु मुसिक्याये ।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव कों रसोई फूंक के करनी नाहीं, काहे तें, जो-फूंक में छींटा आवत हैं । तातें सब जूंठन होंई । सो श्रीठाकुरजी नाहीं आरोगे । और जापै श्रीगुसांईजी की कृपा होंई ताकों सब पदार्थन कौ सहज ही में ज्ञान होंई । वेदसास्त्र सब कंठाग्र होंई, यहू जताए ।

सो वह चूहडा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २१२ ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक धनी-धन्यानी, सो पुरुष कोड़ी पैसान की थेली भूल्यो, सो हाट पे तें रुपैयान की थेली ले के चल्यो , तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये दोऊ राजस भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'इन्द्रा' और 'चक्रा' है । सो पुरुष तो इन्द्रा भयो । और 'चक्रा' स्त्री-जाननी । ये दोऊ 'सुगंधरा' तें प्रगटे हैं । तातें उन के भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे धनी धन्यानी जब श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब सेवक भए हैं । सो तब तें श्रीठाकुरजी पधराई सेवा भली भांति

सो करते । सो वाके परोस में एक लुगाई और रहती । सो वाकों बुलावती । परंतु उह जाय नाहीं । सो यों करत एक दिन वाकों जोरावरी सों ले गई । सो जाय के देखे तो वाके घर में बड़ो वैभव । सो वैभव देखि कै याकौ मन ललचायो । सो वानें याकों मन ललचायो देखि कै कही, जो-तुम अपने श्रीठाकुरजी की सेवा करो हो । कुलदेवता कों पूजत नाहीं, तुम्हारे वैभव कहां ते होंय ? तब याने कही, जा-हमारे घर में तो कुलदेवता नहीं है । तब वाने एक देवी को पूतरा दियो । तब आला में बैठारे । इतने में वाकौ धनी आयो । कही, जो-उत्थापन नाहीं किए ? तब वाने कही, जो-मैं कुलदेवी ले आई हूं । सो ताकों कछू सरंजाम है नाहीं । सरंजाम ले आओ तो न्हाऊं । तब कही, जो-आछौ । यों कहि, ये पैसा-कोड़ी की थेली ले सरंजाम लेवे कों गयो । तब आय कै पसारी की दुकान पै बैठ्यो । तब कही, जो-सरंजाम लाउ । तब वाने सरंजाम दियो । सो सरंजाम ले कै चल्यो । सो कोड़ी पैसान की थेली तो उहां भूलि गयो । और रुपैयान की थेली उठाय कै ले चल्यो । तब इतने में पसारी देखे तो रुपैयान की थैली नाहीं है । तब जानी, जो-पूजा कौ सरंजाम लेवे आयो हतो सो ले गयो । तब वाके पीछे दोस्यो, सो देखे तो वाके पास रुपैयान की थेली हती । सो ले लीनी । और पकरि कै दरबार में ले गयो । जो-कही, जो-ऐसी चोरी करत है । तब याने कही, जो मैं तो कछू जानी नाहीं । तब

उनने कही। जो-न जानी तो थेली क्यों ले चल्यो ? तब दरबार ने कही, जो याकों गधा पै चढ़ाय कै सगरे गाम में फिरावो। तब ऐसे ही कियो। ता पाछें अपने घर आयो। तब आय के पूजा को सामान दियो। कही, जो-अन्याश्रय कौ फल यह है। फेरि कोई दिन गुलाब कौ फूल ल्याई के स्त्री कों दियो। जो-श्रीठाकुरजी कों धराय कै देवी कों देऊ। तब स्त्री कहे, श्रीठाकुरजी जोरावरि हैं। सो यह कहि के श्रीठाकुरजी की नाक में रुई लगाई। तब श्रीठाकुरजी हँसे।

भावप्रकाश - काहे तें, जो-वाकों स्वरूप में नेष्ठा आई, जाने जो-ये साक्षात् हैं, जोरावर हैं। या प्रकार प्रभुन कों बड़े जाने। तातें प्रभु प्रसन्न भए। सो प्रभु ऐसे कारुनिक हैं। सो अपने जन पर या प्रकार हू प्रसन्न होत हैं।

सो हँसत मात्र याकों अन्याश्रय जात रह्यो। सो देवी जहां हती तहां पहोंचाय दीनी। फेरि सदा सर्वदा सेवा करते तैसे करन लागे।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-अवैष्णव की पास जानो नाहीं वाकौ संग करनो नाहीं। वाके रंच संग किये तें बुद्धि भ्रष्ट होत है। भगवदाश्रय छूटत हैं। और अन्याश्रय महाबाधक है सोहू कहे।

सो वे स्त्री-पुरुष धनी-धन्यानी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२१३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी, प्रयाग की, धानी पुनी वारी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'अनन्ती' है। ये

'गुलाबी' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

ये प्रयाग में एक क्षत्री के जन्मी। सो वाकौ पिता निष्कंचन हतो। सो वाने जैसे तैसे अपनी बेटी कौ एक जाति के लरिका के संग विवाह कियो। सो वाकौ धनी रोगी हतो। सो ये वाकी टहल करे। और नित्य चरखा हु कांते। तामें जो कछू मिले सो वासों निर्वाह करे। या प्रकार बरस पचास लों टहल करी। पाछें वाकौ धनी मर्‍यो। ताके केतेक दिन पाछें एक समै श्रीगुसांईजी आपु अडेल तें प्रयाग पधारे। सो ये क्षत्रानी त्रिबेनी न्हाइवे आई हती। तहां इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब इन विचार कियो, जो-होंई तो इनकी सेवक हूजिए तो आछौ। पाछें इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए। मेरे संसार में अब कोऊ रह्यो नाहीं। तातें हों दीन हों। सो कृपा करि मेरो उद्धार होइ सो कीजिए। तब श्रीगुसांईजी कों या क्षत्रानी पर दया आई। सो कृपा करि वाकों स्नान कराय सरनि लिए। पाछे वों क्षत्रानी सों कहे, जो-तोका लिए हम श्रीठाकुरजी पधराइ देत है ताकी तू प्रीति सों सेवा करियों। तोपें श्रीठाकुरजी अनुग्रह करेंगे, जातें तेरो उद्धार होइगो। पाछें श्रीगुसांईजी ने वाकों श्रीठाकुरजी पधराय दिये। और सेवा की रीति-भांति समझाई। तब ये डोकरी श्रीठाकुरजी कों घर पधराय भाव-प्रीतिपूर्वक सेवा करन लागी।

वार्ता प्रसंग — १

सो उह श्रीठाकुरजी की सेवा करती। सो श्रीगुसांजी की कृपा सों श्रीठाकुरजी वाकों अनुभव जतावन लागे। सो उह क्षत्रानी चरखा कांतती। श्रीठाकुरजी पोनी में बिराजते। सो पोनी की गादी, पोनी के तकिया। और पोनी आप देत जाते। सो उह क्षत्रानी चरखा कांतती। और धानी को भोग धरती। सो श्रीठाकुरजी अरोगते। सो ऐसें श्रीठाकुरजी वापैं सदा प्रसन्न रहते। सो जैसे बालक अनेक खेल करत हैं तैसे बोहोत खेल करि वाकों बोहोत सुख देते।

सो एक दिन वा गाम में कोई बालक लालजी पधारे हुते।

सो वा डोकरी के घर पधारे। तब उन ने वा डोकरी सों आज्ञा करी, जो-तेरे श्रीठाकुरजी हम कों देउ। हम खेलेंगे। सो तब डोकरी ने अपने श्रीठाकुरजी पधराय दिये। तब आपु सेवा करन लागे। तब श्रीठाकुरजी 'धानीपुनी' करते। सो तब आपु ने कही, जो-श्रीठाकुरजी धानीपुनी वारी बाई सों राजी हैं। सो श्रीठाकुरजी वाकों पाछें पधराइ दिये। सो उह बाई श्रीठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लागी। सो श्रीठाकुरजी याके ऊपर सदैव प्रसन्न रहते। जो चहिए सो मांगि लेते।

भावप्रकाश - यामें यह जताए, जो-श्रीठाकुरजी स्नेह के बस हैं। जो-कोऊ प्रीति सों सेवा करत हैं वाके आपु आधीन व्है रहत हैं।

सो वह श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२१४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक द्वारकादास गोरवा क्षत्री, जिखिन गाम के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में ये अंतरंग सखान में हैं। उहां उनकौ नाम 'गोपा' है। सो 'गुलाबी' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये ब्रज में 'जिखिन' गाम में गोरवा क्षत्री के जन्मे, सो बरस नौके भए तब तें गायन की रखवारी करें। सो हथियार बांधि के बन में जातें। सो एक दिन ए गोपालपुर आए। तहां इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो महाअलौकिक दरसन भए। तब इन अपने मन में कह्यो, जो-इनकी सरनि जइए तो आछौ। पाछें इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजे। तब श्रीगुसांईजी ने वाकों दैवी जीव जानि नाम सुनाए। पाछें दूसरे दिन ब्रत कराइ श्रीनाथजी के सन्निधान निवेदन कराए। तब श्रीनाथजी ने द्वारकादास कों साक्षात्

मन्मथ-मन्मथ रूप सों दरसन दिए । सो ये दरसन करि मुग्ध व्है गए । पाछें ये श्रीनाथजी के दरसन कों नित्य गोपालपुर आवते ।

वार्ता प्रसंग — १

सो वे द्वारकादास श्रीनाथजी के दरसन कों आवते । सो हथियार बांधे ही चले आवते । सो श्रीनाथजी के दरसन करते। सो स्वरूप के आनंद में मगन होई जाते । सो उनकों कछू देह की सुधि नाहीं रहती । तब दोऊ जनें हाथ पकरि कै पर्वत तें नीचे ले आवते । तब इनकों देह की सुधि होती । तब दंडवत् करते ।

भावप्रकाश - या वार्ता में स्वरूपासक्ति जताए, जो-ऐसी स्वरूपासक्ति होंई तब जीव कौ कारज होंई ।

सो वे द्वारकादास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ।। २१५।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक बलाई स्त्री-पुरुष, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं ।

भावप्रकाश - ये दोऊ तामस भक्त हैं । लीला में 'शूरी' और 'पूरी' इनके नाम हैं । सो शूरी तो इहां पुरुष कौ प्रागट्य और पूरी स्त्री कौ जाननो ।ये गुलाबी तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग — १

सो उह बलाई गुजरात के परगने में रहतो । सो एक समय श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें आवत हते । सो मारग में भूलि परे। सो मेवातीन के गाम के हद में जाय निकसे । सो ताही समय उह बलाई उन भुमियान के गाम में कछू कार्यार्थ गयो हता । तब श्रीगुसांईजी के साथ के वैष्णव ने वा बलाई सों कही,

जो-यह गेल अमूके गाम की है के नाहीं। तब वा बलाई ने वा वैष्णव सों कही, जो-गाम की गेल तो बोहोत ही दूरि रहि गई। तुम तो गेल भूले हो। और तुम यहां कहां ते आय निकसे हो? यहां तो या टीले के नीचे भील भेले होई कै बैठे हैं। और उन कौ गाम है, सो समीप है। सो यातें तुम मेरे संग चलो। सो बेगि बेगि निकसि चलो, नाँतर चोरन की दृष्टि परोगे तो तुम कों लूटि लेईगे। तातें भली भई , जो तुम उन की दृष्टि नहीं परे। और भली भई, जो-तुम कों हों मिल्यों। नाँतर तुम तो चोरन के गाम में जाय परे। सो यह धर्म सहाय भयो है। सो याही तें तुम बेगि बेगि चलो। ता पाछें उह बलाई आगे भयो। ता पाछें वैष्णव और श्रीगुसांईजी वा बलाई के पाछें पाछें बेगि बेगि चले। ता पाछें थोरी सी बेर में उह मारग आयो। तब वा बलाई ने कही, जो-यह रस्ता है। तब बलाई सों उन वैष्णवन ने कह्यो, जो-तू कहां रहत है ? तब बलाई ने उन वैष्णवन कों अपनो गाम बतायो। तब बलाई ने कही, तुम कहां जाउगे? तब वा वैष्णव ने बलाई सों कही, जो-हम तो 'भड़ुचरा' गाम होइ के ब्रज कों जाइंगे। तब वा बलाई ने उन वैष्णवन सों कही, जो-मेरो गाम तो आपके मारग में ही हैं। तब वा वैष्णव ने बलाई सों कही, जो-तू हमारे संग ही चलि। तोकों हम खाइवे कों देइंगे। परि तू हमारे साथ ही चलि।तब वा बलाई ने कही, जो-भलो। तुम तो और हू गेलि भूलते। जो-या मारग में चोर

ठग बोहोत ही हैं। सो मैं या धरती कौ मुखिया हों। सो तुम कों नीके ले जाउंगो। ता पाछें उह बलाई साथ हुतो। सो मजलि जाइ उतरे। सो एक बाग में श्रीगुसांईजी आप रसोई किए। सो भोग समर्प्यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोजन किए। तब सब वैष्णवन कों महाप्रसाद की पातरि धरी। सो सब वैष्णवन महाप्रसाद लियो। ता पाछें जूंठनि बची सो वा बलाई कों दीनी। सो वा बलाई ने खाई। सो जूंठन लेत मात्र वा बलाई की दिव्य दृष्टि भई। सो श्रीगुसांईजी आपकौ साक्षात् नंदकुमार कौ दरसन भयो। पाछें सब गाम में जाइ के सोय रहे। और फेरि कै दूसरे दिन मजलि चले। सो मारग में श्रीगुसांईजी आपके दरसन करत जाय। सो ऐसे करत मारग में वा बलाई कौ गाम आयो। तब वा बलाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! या गाम में मेरो घर है। सो याही तें मेरी एक बिनती है, सो महाराज ! कृपा करि कै मानो तो भलो है। जो-आज कौ दिन या गाम में डेरा करि कै रहो। तो सवारे ठेठ आपु के संग व्रजकों चलूंगो। और मैं काहू के पास कछू माँगत नाहीं हों। और तुम्हारे सेवकन की जूंठनि खाउंगो। और आप के संग ब्रज कों चल्यो चलूंगो। सो मैं इहां कौ भोमिया हूं। सो गेल सब जानत हूं। और या गेल में चार ठग बोहोत ही नामी है। और मेवाती बोहोत हैं। सो याही तें आप ऐसें अकेले मति पधारो। और अब मोपें आपु के

दरसन बिना रह्यो न जाइगो । यातें कछू खरची स्त्रीके लिये सामान करि कै प्रातःकाल आपु के संग चल्या चलूंगो । सो आपु तो ईश्वर हो । सो याही तें मेरी बिनती माननी चाहिए । तब साथ के वैष्णवन ने कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! यह बिनती करत हैं । सो आप मानि कै यहां रहिए तो आछौ । तब तहां एक बाग बोहोत ही सुंदर हतो । सो तहां आपु बिराजे। तब उह बलाई अपन घर में आयो । तब समाचार अपनी स्त्री सों कहे, और कह्यो, जो-साक्षात् श्रीकन्हैयालालजी या गाम में बिराजत हैं । बाग में बिराजे हैं । सो मैं तो इनके साथ ब्रज में जाउंगो । ता पाछें कछू गहनो हतो । सो सब बेचि कै अपनी स्त्री कों खरची करि दीनी । तब वे दोऊ स्त्री-पुरुष वा बाग में आए । सो ताही समै वैष्णव महाप्रसाद ले चुके हते । सो जूंठनि वा बलाई कों दीनी । तब उन दोऊ स्त्री-पुरूष ने लीनी । सो स्त्रीकों जूंठनि लेत मात्र साक्षात् श्रीकन्हैयालालजी कौ दरसन भयो । ता पाछें रात्रि कों कथा-वार्ता कीर्तन भए सो सुनि कै वे दोऊन बोहोत प्रसन्न भए । सो उहांई सोइ रहे । ता पाछें प्रातःकाल उठि कै दंतधावन करि कै पाछें स्नान संध्यावंदन करि कै श्रीगुसांईजी घोड़ा ऊपर असवार होई कै चले । ता पाछें उह बलाई अपनी स्त्रीसों सब कहि कै श्रीगुसांईजी आप के साथ चल्यो । सो जब तांई वा स्त्रीकों श्रीगुसांईजी कौ दरसन भयो तोलों तो गेल में ठाढ़ी होंई कै दरसन कर्‌यो करी । और

जब दरसन न भयो तब उह स्त्री मूर्च्छा खाई कै गिरि परी। तब उह गेल के चलनहारेने देखी। तब वा मनुष्यन ने बलाई सों कही, जो-तेरी स्त्री गेल में परी है। सो उह मरे है। तातें तू वाकी खबरि तो ले। तब वा बलाई ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! आप नेक ठाढ़े रहो। तब श्रीगुसांईजी आपु ठाढ़े रहे। तब वह बलाई दौरि कै आयो। सो तब अपनी स्त्री कौ बोहोत ही समाधान करि कै और नेत्रन कौ जल धोय कै वा बलाई ने अपनी स्त्री सों कही, जो-कहा समाचार है ? तब वाकी स्त्री ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी के दरसन बिना नाहीं रहूंगी। तब वा बलाई ने अपनी स्त्री सों कह्यो, जो-तू बेगि चलि। वे तो गेल में ठाढ़े हैं। उन के संग चलि। जो-मैं घर की ठीक करि कै काहू कों सोंपि कै ता पाछें मजलि पै आय मिलूंगो। सो वे दोऊ स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के संग गए। सो सब वैष्णवन की जूंठनि उबरे सो वे दोऊ जने खाय कै मजल चले जाय। सो कितनेक दिन में श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल आय पहोंचे। तब नाव में बैठि कै श्रीगुसांईजी पार उतरे। ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब इन स्त्री-पुरुषन कों विरह करि कै ज्वर चढ़ि आयो। सो श्रीयमुनाजी ठकुरानी घाट ऊपर परि रहे। तब बोहोत ही आतुर भए। सो मुख में तें नेत्र में ते अग्नि की सी ज्वाला उठे। और सरीर में तें धूंआ उठ्यो। और नेत्रन कों मूदें। और मुख

में तें बास आवत हैं। ताही समै एक वैष्णव उहां स्नान करत हतो।

सो वाने सब देख्यो। तब उह स्नान करि कै श्रीगुसांईजी की बैठक में गयो। सो वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों सब समाचार कहे, जो-महाराजाधिराज ! उन स्त्री-पुरुषन के प्रान जात हैं। वे दोऊ जने घड़ी दोई में प्रान छोड़ेंगे। सो ऐसे सब सुनी। तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं। और इन के जीव संबंध कौ ज्ञान है। सो ताही समै श्रीगुसांईजी उहां परम कृपा करि कै ठकुरानी घाट उपर पधारे। तब सब कोऊ कों दूरि किये। तब श्रीगुसांईजी ने इन दोऊन कों चरन-स्पर्श करवाए। सो वे दोऊ सावधान होइ कै हाथ जोरि कै उठि ठाढ़े भए। तब आपु ने पूछी, जो-कहा समाचार है ? तब उह बलाइ हाथ जोरि के स्त्री सहित श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! आपके दरसन बिना हम जीवेंगे नाहीं। जो अब तो हमारी यह बिवस्था है। जो हम कों आपने कृपा करि कै अलौकिक दरसन दीने हैं। तातें आप भलो जानो सो करो। और हम तुच्छ जीव कहा कहें ? हम कों तो हमारे भले बूरे की खबरि नाहीं परत है। परि हमारे प्रान संबंधि आधार तो और नाहीं है। और आप अंतरजामी अंतःकरन की जानत हो। सो तो हम नाहीं जाने। और देह संबंधी तो महा निषिद्ध है। सो तो प्रसिद्ध ही दीसत है। हम कों तो कछु सुधि नाहीं।

सो कहा उपाय कीजे ? हम तो जीव हैं। ताहू में नीच योनि संबंधी हैं। सो याही तें हमारी बुद्धि है सो ऐसी है। तातें आप भली जानो सो करो। परि अब तो आपु कौ विप्रयोग सहि सहत नाहीं। सो जैसे मीन जल बिना जीवे नाहीं सो अब ऐसी आय कै बनी है। सो याही तें आप कृपा करि कै जैसे श्रीमुख तें आज्ञा करो तैसे ही हम करें। परि आपके चरनकमल कौ आश्रय सदैव बढ़े सो उपाय कीजे। सो ऐसे बचन वा बलाई के सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। और आज्ञा किए, जो-एक बात कौ उपाइ तो मैं बताऊं। सो तुम करो। जो-काहेतें? जो-अलौकिक (वारेन कों) संसार की कठिन हैं। क्यों ? जो-कोऊ कछू अलौकिक व्यवहार में तो समुझत नाहीं है। और आप करि कै वैष्णव की अलौकिक दृष्टि है।

और तुम दोऊ स्त्री पुरुष भरतार हमारे हो। सो या बात में कछू संदेह नाहीं है। जो यहां हू लौकिक में निंदा नाहीं होय और उपाय (हू) कियो चाहिए। काहेतें ? जो-तुम्हारे देह संबंधी नीच हैं। याहीतें 'अंतर्वेद कुरुक्षेत्र' तें परे एक पर्वत है। सो तहां पर्वत में एक कंदरा बोहोत सुंदर है। तहां सुंदर बन है। तहां फूल मेवा बोहोत ही सुंदर होत हैं। सो अति मीठे हैं। और अनेक जाति के फल हैं। तहां सुंदर जल के झरना हैं। सो कंदरा के समीप जल है। सो बोहोत ही आनंद कौ स्थल है। सो तुम दोऊ जने जाइ कै वा स्थल में रहो तुम कों

उहां नित्य दरसन देउंगो । सो बोहोत ही आनंदसुख होंइगे । और तुम कों मेरी पादुकाजी और उपरेना देत हों । सो तुम इन की नीकी भांति सों सेवा करियो । और सुंदरबन में जो बन-फल आछे पके मीठे हैं सों ल्याय कै सम्हारि कै धोय कै श्रीठाकुरजी कौ नाम लै कै श्रीपादुकाजी कों भोग धरियो । ता पाछें तुम वा फल-महाप्रसाद ले के अपनी देह कौ पोषन करि कै निर्वाह कीजो । और जब तुम कों मेरो विरह-ताप होइ तब तुम इन श्रीपादुकाजी के दरसन करियो । तब तुम कों मेरो दरसन होइगो । और मैं तुम कों नित्य दरसन देऊंगो । ता पाछें भगवद्वार्ता करियो । भगवद् नाम लीजियो । सो याही तें तुम सर्वथा जाउ । और तुम कछू व्याघ्र, सिंह, सर्प कौ और काहू बात कौ भय मति करियो ।

भावप्रकाश - सो काहेतें ? जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अग्नि रूप हैं । सो मंत्रद्वारा तुम्हारे हृदय में स्थापित करत हैं । सो वे तुम कों देखि कै पहेले ही भाजि जाइंगे ।

और उहां तुम्हारी वैष्णवता सेवा और भगवदभजन कार्य कीर्तन कोई जानेगो नाहीं । सो गोप्य सेवा भक्त कों बोहोत ही फल रूप होत है । और सब जाने तब कीर्ति प्रतिष्ठा में सब जात रहे । सो जैसे नदी के प्रवाह में कोई वस्तु डारि देहू सो बहि जाइ तैसे जात रहें । तब श्रीगुसांईजी आपुके श्रीमुख के बचन सुनि कै वह बलाइको आज्ञा प्रमान मानत भयो । और कह्यो, जो-हमकों तो आज्ञा प्रमान करनो । तब श्रीगुसांईजी

आप उन स्त्री पुरुषन सों कहे, जो-तुम दोऊ जने श्रीयमुनाजी में स्नान करि लेऊ। तब वे दोऊ जनें श्री यमुनाजी में स्नान करि कै गोविंद घाट ऊपर 'श्रीआचार्यजी की बैठक' के सानिध्य ठाढ़े भए। तब श्रीगुसांईजी ने दोऊ स्त्री-पुरुषन कों अष्टाक्षर मंत्र सुनायो। 'श्रीकृष्णः शरणं मम'। यह मंत्र आप कृपा करि कै उनकों कर्ण द्वारा देह-मन में स्थापन किए। ता पाछें महाप्रसादी माला तुलसी के काष्ट की हती सो दोऊन कों दीनी। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने अपनो चरणोदक दियो। पाछे प्रसादी उपरेना और पादुकाजी दिए। सो वे सेवा कों दिए। पाछें उन दोऊन कों बिदा किए।

भावप्रकाश - या वार्ता में अष्टाक्षर कौ स्वरूप जनाए, जो-अष्टाक्षर के धारन किये तें जीव निर्भय होत है। सो वैष्णव कों अष्टाक्षर कौ आश्रय सदा कर्तव्य है।

तब वे दोऊ, जने श्रीगुसांईजी के चरनकमल पर सीस धरि रहे। तब श्रीगुसांईजी ने अपने श्रीहस्त सों उठाये। तब वा बलाई ने श्रीगुसांईजी सों हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो-महाराज ! हमकों आपके चरनकमल बिना और आश्रय नाहीं है। जो-हमारी भली बुरी कौ निर्वाह सब आप करोगे। सो ऐसे कहि कै श्रीगुसांईजी की कृपा तें साष्टांग दंडवत् करि कै चले। सो श्रीगुसांईजी ने आज्ञा करी, ताही स्थल पे जाइ कै बसे। तब एक छोटो सो मृत्तिका कौ मंदिर बनवायो। ताके ऊपर केला कौ कोमल पात बिछायो हतो। ता पाछें श्रीपादुकाजी मंदिर में सिंघासन ऊपर पधराए। ता पाछें बन

में तें सुंदर सुगंधित पुष्प लाय कै माला करि कै समर्पे। पाछें फल बोहोत ही सुंदर ल्याय कै श्रीपादुकाजी कों भोग समर्प्यो। पाछें वा महाप्रसादी फल खाय कै निर्वाह करें। पाछें बैठे बैठे भगवद् वार्ता करते। और अष्टाक्षर मंत्र कौ अहर्निस अवगाहन करते। और यह चिंतन करते।

और जब श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ विरह होतो तब श्रीपादुकाजी कौ मंदिर खोलि कै दरसन करते। तब देखे तो श्रीगुसांईजी तहां बिराजे हैं। और पोथी श्रीभागवत श्रीसुबोधिनीजी की देखत हैं। ता पाछें श्रीगुसांईजी के दरसन करि सन्मुख बैठते। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कथा कहते। तब वे दोऊ कथा सुनते। पाछें सब मार्ग की रीति की वार्ता करते।

तब ऐसे करत वा स्त्री ने एक दिन अपने पति सों कह्यो, जो-नित्य तथा उत्सव कों अपन श्रीठाकुरजी कों बन-फल ही समर्पत हैं। और सामग्री अपनो मनोर्थ तो कछु कर्‍यो जात नाहीं है।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-वैष्णव कों अपने प्रभुन के नित्य नए मनोरथ करने। हृदय में ठाकुर के सुख के अनेक प्रकार के भाव बिचारने। काहेतें? जो-यह पुष्टिमार्ग में सीतल भाव उचित नाहीं।

सो इह मनिया तो काम आवत नाहीं है। सो गाय श्रीठाकुरजी कों अति प्रिय है। तातें मैं अपने मन में बिचार कियो है, जो-तुम्हारे मन में आवे तो कीजियो। जो-मेरे गरे में

यह सुवर्ण कौ मनिका मासा छह भर कौ है। सो ताकों ले कै एक गाम कोस पचीस पर है। तहां तुम जाय कै या मनिका कों बेचि कै ताकौ द्रव्य आवे सो ताकी गाय बोहोत सुंदर होय और बोहोत सील स्वभाव होंइ ऐसी मोल की ले कै आवो। और एक चरखा ले आवो। सो मैं नित्य बैठी कांतोंगी। और मुख सों भगवद्नाम लेउंगी। ता पाछें सूत होइ सो गाम में बेचि अइयो। ता पाछें वाकी सामग्री इकठोरी ल्याय के धरियो। ता पाछें गाय कौ दूध होंइ सो उत्सव पर कछू मनोरथ करिए। तब वा पुरुष ने कही, जो बोहोत आछौ। अब ऐसें ही करिये। ता पाछें उह सुवर्ण कों मनिका ले कै बेचि कै गाय और चरखा दोई ल्याय कै स्त्रीकों सोंपे। ता पाछें उह स्त्री सब सेवा सों पहोंचि कै चरखा कांतवे बैठती। और मुख सों भगवन्नाम उच्चार करत हती। और गाँइ के कान में अष्टाक्षर मंत्र कहे। सो सिंघ आदि व्याघ्र वा तें डरपि कै भाजते। सो उह गाय निर्भय होई कै चरि कै आवती। सो श्रीठाकुरजी आप वा गाइ कों दूब चरावते। ता पाछें वे बलाई श्रीठाकुरजी कों दूध समर्पते। कछू दहीं समर्पते। कछू घृत समर्पते। ऐसे करत उह गाय कछू कठाली भई। पाछें कितनेक दिन में वा गाँइ कै बछिया भई। तब दूध मुकतो होन लाग्यो। पाछें एक मास कौ सूत भेलो कियो। सो सूत कोऊ बड़े गाम में बेचि आवे। और बेचि कै कछू सामग्री ले आवे। सो खांड, चोखा, घी, दार,

गेहूं, मूंग, उड़द, चनाकी और कछू साग, कंद-मूल ले आवे। वाकी पोटरी करि इतनो ले कै पाछें अपने घर आवते। पाछें श्रीपादुकाजी कों कछू मनोरथ पूर्वक सामग्री करते। और थोरी थोरी सामग्री करि कै श्रीठाकुरजी आपकों भोग समर्पते। सो ऐसे यथासक्ति कछू मनोरथ करत हुते। सो श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जतावन लागे। सो श्रीठाकुरजी आप मांगि-मांगि कै आरोगते। और आप बातें करते।

सो स्त्री-पुरुष बलाई श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है। सो इनकी ऐसी ऐसी कितनीक वार्ता हैं, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ २१६ ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक साहूकार, खंभाइच कौ, जाने परीक्षा लीनी, जो ब्रह्मसंबंध किये तें दूसरो जन्म होत है, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है। लीला में इनकौ नाम 'मयूरनी' है। ये 'चंद्रभान' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं। सो ये खंभाइच में एक साहूकार के प्रगट्यो। सो वह साहूकार सराफि की दुकान करतो। सो सत्य बोलतो। तातें लोगन में वाकी प्रतिष्ठा बहोत। सो बेटा बरस तीसकौ भयो तब वह मर्‍यो। पाछें बेटा दुकान करन लाग्यो।

वार्ता प्रसंग — १

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारिवेको बिचार किये, सो श्रीनवनीतप्रियजी सों बिदा होंइ कै चले। सो श्रीगुसांईजी खंभाइच पधारे। तब श्रीगुसांईजी के दरसन कों सब वैष्णव आए। पाछें श्रीगुसांईजी एक वैष्णव के घर पाँऊ धारे। सो ता समय यह साहूकार अपनी हाट ऊपर बैठ्यो

हतो। सो श्रीगुसांईजी आपु या साहूकार की हाट आगें होंई के पधारे । सो या साहूकार ने एक वैष्णव सों पूछी, जो-ये कौन है ? तब वा वैष्णव ने कही, जो-ये तो हमारे गुरु हैं । श्रीविट्ठलनाथजी इनकौ नाम है । श्रीगोकुल में रहत हैं। तब वा साहूकार ने कही, जो-मेरे हू मन में ऐसी है, जो-इनके सेवक हूजिए । तब वा वैष्णव ने कही, जो-यह तो बोहोत ही उत्तम वार्ता है । जो इनके सेवक होत मात्र ही दूसरो जन्म होत है । और जीवदसा छूटि कै वैष्णव होत है । तब ऐसे सुनि कै वह साहूकार श्रीगुसांईजी की सरनि आयो, और नाम-निवेदन पायो । और वा साहूकार वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों बोहोत भेट करी । तब साहूकार वैष्णव ने श्रीठाकुरजी पधरायवे की बिनती करी । तब आपु कृपा करि कै श्रीठाकुरजी की सेवा पधराये । श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान करवाय कै पाछें वागा-वस्त्र आभूषन सब बदलाए । और सिंगार करि कै श्रीठाकुरजी कों पाट बैठाए । पाछें सब वैष्णवन कों बुलाइ कै दरसन करवाए । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो । पाछें भोग सराय आपु भोजन किए। पाछें सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो । पाछें श्रीगुसांईजी आपु तहां दिन दस रहे । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तहां ते बिदा होई कै श्रीद्वारिकाजी पधारे । तब या वैष्णव साहूकार ने अपने मन में बिचार कियो, जो-भाई ! वा दिन वा वैष्णव ने कह्यो हतो,

जो-श्रीगुसांईजी कौ सेवक होइ कै नाम-निवेदन करें तो दूसरो जन्म होत है। सो यह बात साँची कैसे जानिए ? तातें या बात की तो कछू परीक्षा करि चाहिए। तब एक ब्राह्मन वा साहूकार के इहां वैष्णव भए पहले जायके कह्यो, जो-मेरे पांच हजार रुपिया धरि राखो। जो-मैं यात्रा कों जात हों। सो ऐसे रुपैया धरि कै आपु तो कासी-यात्रा कों गयो। सो यह बात कोऊ जाने नाहीं। सो सबन तें गोप्य ब्राह्मन ने धरे हते। और या साहूकार वैष्णव तें कह्यो, जो-तुम काहू तें कहियो मति। मैं आउंगो तब ले लेउंगो। तब ऐसे कहि कै उह ब्राह्मन कासी-यात्रा कों गयो। सो कितनेक दिन में आयो। तब या ब्राह्मन ने आय के साहूकार वैष्णव के पास रुपैया मांगे। तब वा साहूकार वैष्णव ने परीक्षा देखिवे के लिये ब्राह्मन सों नाहीं करी, जो-भटजी ! तुम प्रामानिक होंई कै रुपैया कैसे मांगत हों ? जो-मैंने तो तुम्हारे रुपैया या जनम में हाथन सों छुए नाहीं है ! और देखे हू नाहीं है ! ! जो-तुम गरे परत हो ? सो ऐसे वा साहूकार वैष्णव ने वा ब्राह्मन सों कही, तब ऐसे बचन वा साहूकार वैष्णव के सुनि कै उह ब्राह्मन राजद्वार में जाय पुकार्‍यो। तब राजा ने अपुनो मनुष्य पठाय कैं उह साहूकार कों बुलवायो। तब वा साहूकार वैष्णव तें राजा ने पूछी, जो-सेठजी ! यह ब्राह्मन कहा कहत है ? तब साहूकार वैष्णवने कही, जो-यह ब्राह्मन तो लरत है, और कहत है, जो-मैं पांच

हजार रुपैया धरि कै कासी-यात्रा कों गयो हतो। और साहूकार वैष्णव ने कही, जो-मैंने या ब्राह्मन के रुपैया हाथन सों या जन्म में छुए नाहीं। और कदाचित् यह ब्राह्मन पूर्व जन्म के मांगत होइ तो मैं देउंगो। मेरे तो द्रव्य की न्यूनता नाहीं है। तब वा ब्राह्मन ने कही, जो-पूरव जन्म कहा होत है ? अब ही छै महिना तो भए नाहीं। जो-मैं रुपैया अनामत धरि कै गयो हतो। तब वा राजा ने ब्राह्मन सों पूछी, जो-कोऊ साक्षी है ? कछू खतपत्र है ? तब वा ब्राह्मन ने राजा सों कही, जो-साक्षी हू नाहीं है और खतपत्र हू नाहीं है। जो मैंने या साहूकार कों भलो मनुष्य जानि कै कोई साक्षी नाहीं कियो। याने रुपैया लीने हैं। और अब यह नाहीं करत है। जो-भले, गाढी प्रतिज्ञा करेंगे। जो-लोहे की पेंसेरी अग्नि में मेलि कै जो-लाल ताती करि कै एक मुहूर्त लों हाथ में राखेंगे। जो-या साहूकार के हाथ जरि जाय तो रुपैया दिवाय दीजो। और कदाचित् या साहूकार के हाथ न जरे तो मैं झूंठो। तब राजा ने वा साहूकार वैष्णव सों कह्यो, के तो ऐसी प्रतिज्ञा करो, नाँतर या ब्राह्मन कों रुपैया देउ। तब साहूकार वैष्णव ने कही, जो-मैं प्रतिज्ञा करूंगो। जो-मैंने या जन्म में तो या ब्राह्मन कौ द्रव्य लियो नाहीं। ता पाछें लोहे की पेंसेरी ल्याय के लुहार की भट्टी में ताती करि कै या साहूकार वैष्णव के हाथ में दीनी। तब या साहूकार वैष्णव ने श्रीगुसांईजी को नाम ले कै श्रीगुसांईजी के

स्वरूप कौ चिंत्वन करि वह पेंसेरी अग्नि में तें काढ़ि कै अपने हाथ में उठाय लीनी। और कह्यो, जो-मैंने या जन्म में या ब्राह्मन के रुपैया लीने होंइ तो मेरे हाथ जरि कै भस्म होंइ जइयो। और कदाचित् यह ब्राह्मन दूसरे जन्म के मांगत होंइ तो मेरे हाथ में अग्नि की पेंसेरी सीरी होंइ जइयो। सो ऐसे वा साहूकार वैष्णव ने एक मुहूर्त लों हाथ में राखी। परंतु या साहूकार वैष्णव के हाथ रंचक हू जरे नाहीं। तब या साहूकार वैष्णव ने ब्राह्मन सों कही, जो-कदाचित् अज हू तुम सांचे होऊ तो यह पेंसेरी हाथ में लेऊ। तब या साहूकार वैष्णव के पास तें उह ब्राह्मन ने पेंसेरी लीनी सो हाथ जरे, तब डारि दीनी। तब वह झूठो भयो। तब यह साहूकार वैष्णव साँचो भयो। पाछें ब्राह्मन तों मूंड पीटि कै अपुने घर कों गयो। और यह साहूकार अपने घर आयो। पाछें या साहूकार वैष्णव ने ब्राह्मन को बुलाइवे कों चार मनुष्य पठाए। बुलायो। पाछें या ब्राह्मन कों हाथ पकरि कै अपनी अटारी पर एकांत में ले गयो। तब वा ब्राह्मन कौ साहूकार वैष्णव ने बोहोत समाधान कर्‍यो। ओर आसन दे कै बैठार्‍यो। पाछें वा ब्राह्मन के आगें पांच थेली धरि कै कह्यो, जो-यह तुम्हारो द्रव्य लेउ। तब वा ब्राह्मन ने आश्चर्य होय कै कह्यो, जो-मोकों कछू समझि न परी, जो-यह कहा कारन है ? सो यह बात मोकों समझाय कै कहिए। तब वा साहूकार वैष्णव ने वा ब्राह्मन सों कही, जो-सुनो

भटजी! मैं यह काम एक परीक्षा लेवे कों कियो है। तब वा ब्राह्मन ने साहूकार वैष्णव सों कही, जो-ऐसी परीक्षा तो न करिये। जो-यह बात तो मोसों विस्तारपूर्वक कहिए। तब वा साहूकार वैष्णव ने कही, जो-श्रीगुसांईजी कौ सेवक होइ और उन द्वारा आत्मनिवेदन करे ताकौ दूसरो जन्म होत है। जो-जीव फिरि के वैष्णव होय, सो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम कौ होय। और इनकौ बल सामर्थ्य तो बड़ो है। सो ऐसे एक वैष्णव ने मोसों कह्यो हतो। सो याही परीक्षा के लिए मैनें इतनो काम कियो है। सो ऐसे कर्‍यो। तब मोकों दृढ़ विश्वास भयो। सो यह निश्चै दूसरो जन्म भयो है। जो-मैं प्रतिज्ञा कीनी, जो-मैंने या जनम में या ब्राह्मन के रुपैया लिए होई तो मेरे हाथ जरि जइयो। सो तो मेरे हाथ जरे नाहीं। सो याही तें यह तो ऐसी बात है। सो याही तें श्रीगुसांईजी कौ बल सामर्थ्य ऐसो है। सो ताही ते यह बात तुम काहू सों मति करियो। जो-यह रुपैया ले कै तुम अपने घर जाऊ। तब यह बात सुनि कै वा ब्राह्मन के मन में आई, जो-अपन हू वैष्णव होई तो भली बात है। जो-यह मारग तो ऐसो ही सर्वोपरि है। पाछें उह ब्राह्मन रुपैया ले कै अपने घर कों गयो। पाछें वा साहूकार वैष्णव कौ श्रीगुसांईजी विषे दृढ़ विश्वास भयो। जो-ए श्रीगुसांईजी आपु तो साक्षात् श्रीपूरन पुरुषोत्तम हैं। सो इन में कछू संदेह नाहीं। पाछें उह साहूकार वैष्णव भगवद सेवा करन लाग्यो। तातें या जीव को

दृढ विश्वास चाहिए ।

भावप्रकाश - सो या वार्ता में ब्रह्मसंबंध कौ माहात्म्य कहे । सो कहा ? जो-ब्रह्मसंबंध होंइ तब जीव कौ स्वरूप फिरत है, सो कैसे ? जैसे एक चांडालनी है, सो वाकों राजा प्रसन्न होंई ब्यावे । तब वाके चांडालपने के सब धर्म-संबंध छूटे। पाछें वह रानी कहावे । सो रानी के धर्म, रानी के संबंध रहत हैं । सोई वाकौ नयो जन्म भयो । काहेतें, जो-पहले के चांडालपने के सब धर्म छूटि गए । तैसे ही यह जीव हू ब्रह्मसंबंध किये पहले चांडालनी जैसो हतो । सो श्रीआचार्यजी के अनुग्रह तें ठाकुर ने वाकौ वरन कियो है । तब वाकों ब्रह्मसंबंध भयो । तब वह रानी की दसा कों पायो । यह भाव जाननो । तातें ब्रह्मसंबंध पर दृढ विश्वास राखनो । तब जीव फल-दसा कों पावे ।

सो उह साहूकार श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय भयो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ।। २१७ ।।

* * *

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक ब्राह्मन, खंभाइच में रहतो, उही ब्राह्मन, जो-वा साहूकार के इहां पांच हजार रुपैया धरि कै ब्रजयात्रा कों गयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'वत्सला' है । सो 'वत्सला' 'मयूरनी' की सखी हैं । ये 'चंद्रभान' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो यह ब्राह्मन वा साहूकार वैष्णव के पास पांच हजार रुपैया धरि कै कासी - ब्रजयात्रा कों गयो । सो वा साहूकार वैष्णव ने या ब्राह्मन कों बुलाई के रुपैया दिये । तब वा ब्राह्मन ने साहूकार वैष्णव सों सब बात पूछी । तब वा साहूकार वैष्णव ने या ब्राह्मन के आगें सब बात विस्तारपूर्वक कही । तब उह ब्राह्मन यह बात सुनि के आश्चर्यवंत व्है रह्यो । ता पाछें अपने

मन में बिचार कियो, जो भाई। साँचे ही दूसरो जन्म होत है। सो काहे तें, जो - अग्नि की जरी पेंसेरी या साहूकार वैष्णव ने हाथ में लीनी। सो एक मुहूर्त लों हाथ में राखी। तब वा साहूकार वैष्णव सों या ब्राह्मन ने कही, जो- मेरे हू मन में ऐसी बात आई है, जो - मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक होउंगो। और नाम निवेदन करूंगो। सो काहेते ? जो- मेरो इतनो जन्म तो वृथा गयो। और बरस पचीस कौ तो भयो हूं। परंतु ऐसो कबहू देख्यो नाहीं है। तब साहूकार वैष्णव ने कही, जो - तू सेवक होय तो आछी बात है। और तुम्हारे मन में ऐसी आई है तो सर्वथा वैष्णव होऊ। जो अब श्रीगुसांईजी द्वारिका कों पधारेंगे। तब वा ब्राह्मन ने सब बात पूछी, जो - श्रीगुसांईजी कहां रहत हैं ? तब वा साहूकार वैष्णव ने सब बात बताय दीनी। ता पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी आप श्रीद्वारिकाजी कों पधारे। तब यह ब्राह्मन सुनि कै श्रीरनछोरजी के दरसन कों गयो। तब श्रीरनछोरजी के मंदिर में श्रीगुसांईजी के दरसन भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी थोरीसी बेर में अपने डेरा पधारे। तब यह ब्राह्मन हू साथ आयो। तब वा साहूकार वैष्णव कौ पत्र और भेंट आगे राखि कै बिनती करी, जो-महाराज ! जैसें वा साहूकार वैष्णव पै कृपा करी तैसें मोपें हू करो। मैं आप की सरनि में आयो हूं। पाछें साहूकार वैष्णव ने प्रतिज्ञा करी हति सो सब बात विस्तारपूर्वक श्रीगुसांईजी के आगे कही।

तब आपु बोहोत प्रसन्न भए। और श्रीमुख तें कहे, जो-जाकौ मन सुध होंई ताकों प्रभु कृपा करैं। अनुभव जतावें। और सहायता करत हैं। जो - श्रीप्रभुजी तो सर्व करन समर्थ हैं। पाछे आपने वा ब्राह्मन सों कही, जो-तू स्नान करि आउ। तब उह ब्राह्मन स्नान करि आयो। तब आपुने कृपा करि कै वा ब्राह्मन कों नाम सुनायो। तब उह ब्राह्मन उहां ही रह्यो। सो वह गाम में तें कोरी भिक्षा मांगि ल्यावतो। सो रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद लेतो। और रात्रि कों श्रीगुसांईजी कथा कहते। सो सब सुनतो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप केतेक दिन में गुजरात के गाम में पधारे। तब उह ब्राह्मन हू साथ आयो। तब वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो - महाराज ! एक - बार कृपा करि खंभाइच पधारिये। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि खंभाइच पधारे। तब वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी कों अपने घर पधराए। पाछें घर के स्त्री पुरुष सब सेवक भए। और नाम निवेदन करवाए। पाछें वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो - महाराज ! मेरे पंच पूजा है। सो मैं कैसें करों ? तब श्री गुसांईजी ने पंच पूजा मंगाय कै देखी। तब वामें एक श्रीठाकुरजी कौ स्वरूप जान्यो। सो तो राख्यो। और देवता हते, सो श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो - तलाव में धरि आऊ। सो कोई जाने नहीं। तब वा ब्राह्मन ने तेसे ही कियो। पाछें वा ब्राह्मन ने सब घर पोत्यो।

पात्र सब नए मँगवाए। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु स्नान करि तिलक मुद्रा कै श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान करवाय कै पाट बैठाये। पाछें रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय अनोसर कराए। पाछें आपु भोजन करि कै पोढ़े। तब वा ब्राह्मन ने सब वैष्णवन कों प्रसाद लिवायो। पाछें श्रीगुसांईजी आप उंहा थोरेसे दिन रहि कै श्रीनाथजीद्वार पधारे। पाछें यह ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो। सो श्रीठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लाग्यो। तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे। सो वा साहूकार वैष्णव के सत्संग तें यह ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो।

भावप्रकाश - तातें तादृशी वैष्णव कौ संग सदा ही कर्तव्य है।

सो उह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥ २१८ ॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव, गुजरात कौ बासी, जाकी कसेंडी सों चाचाजी ने जल पीयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'श्रीधरी' है। ये 'चंद्रभान' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये गुजरात में एक द्रव्यमान क्षत्री के जन्म्यो। सो बालपनें सों यह वैराग्य दसा में रहे। सो याकौ ब्याह भयो नाहीं। ये बरस पंद्रह कौ भयो तब माता - पिता हू मरे। पाछें ये साधु - संत के दरसन कों सगरे फिर्‍यो करे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारत हुते। सो तब

मार्ग में वा क्षत्री के गाम में उतरे। तब श्रीगुसांईजी रसोई करि कै श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो। ता पाछें अपरस के गादी तकियान के ऊपर बिराजे हते। सो वा गाम के वैष्णव दरसन करिवे कों आये। सो उन के संग उह क्षत्री हू दरसन करिवे आयो। सो दरसन करि कै वा क्षत्री ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो - महाराज ! मोकों कृपा करि कै नाम सुनाइए। पाछें श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वा क्षत्री कों नाम सुनायो। ता पाछें दूसरे दिन ब्रत कराय कै ब्रह्म संबंध करवायो। ता पाछें श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णव के घर पधारे। सो उहां बिराजे। तब आपके संग चाचा हरिवंसजी हते। तब वा क्षत्री के घर में जो कछू हतो सो सब श्रीगुसांईजी कों भेट कियो। काहेतें, जो - घर में कोऊ हतो नाहीं। पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णव सों बिदा होंई कै श्रीद्वारका पधारे। सो कितनेक दिन में श्रीरनछोडजी के दरसन किये। ता पाछें श्रीरनछोडजी सों बिदा होंइ कै श्रीगोकुल पधारे। सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें एक दिन चाचा हरिवंसजी और कृष्णभट्ट उज्जैनि कों जात हुए। सो चाचा हरिवंसजी वा क्षत्री वैष्णव के घर आए। सो उह क्षत्री वैष्णव चाचा हरिवंसजी कों पहले ही जानि कै बोहोत मनुहार करि कै अपने घर पर ले गयो, सो ले जाई कै अपनी हाट ऊपर बैठारे। और चाचा हरिवंसजी सों पूछन

लाग्यो, जो - जल लेहूगे ? तब हरिवंसजी ने वा क्षत्री वैष्णव के आग्रह सों जल पीयो। सो एक कसेंडी हती और तो सब भेट कियो हतो। सो वाही कसेंडी सों सब व्यवहार करतो। ताकों भरि ल्यायो। ताही कसेंडी सों हरिवंसजी ने जल पीयो। पाछें हरिवंसजी उहांतें उठन लागे। तब वा क्षत्री वैष्णव ने कही, जो - रसोई करो। तब चाचा हरिवंसजी कहे, जो अब तो हम चलेंगें। तब वा क्षत्री वैष्णव ने चाचाजी सों कह्यो, जो- या मार्ग सों जब पाछें फिरो तब मेरे घर पधारियो। तब वा वैष्णव सों चाचा हरिवंसजी ने कह्यो, जो - या मार्ग आवेंगे तो तेरे घर सर्वथा आउंगो। ऐसें कहि कै चाचाजी तो उंहा सों चले। तब कृष्णभट ने मार्ग में पूछी, जो - तुमने वा वैष्णव कौ जल पीयो सो काहेतें ? वा क्षत्री वैष्णव कों कछू आचार तो दीसत नाहीं। तब चाचाजी ने कृष्णभट सों कह्यो, जो - भटजी ! मोकों तो वाके आचार-बिचार की सुधि रही नाहीं। परि वाकों श्रीगुसांईजी पास नाम सुनत देख्यो हतो। सो समै मोकों सुधि आइ गयो। तातें जल पीयो। तब कृष्णभट चूप व्है रहे।

पाछें चाचाजी ने महाप्रसाद लियो। ता पाछें कितनेक दिन उज्जैनि में रहे। पाछें उहां तें फिरे। तब वा क्षत्री वैष्णव के घर आए। सो चाचाजी कों आए जानि उह क्षत्री वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो। पाछें वा वैष्णव ने गहनो और द्रव्य जो कछू घर

में हतो सो सब चाचा हरिवंसजी कों सोंपि कै बिनती कीनी, जो तुम श्रीगोकुल जात हो, सो यह द्रव्य श्रीगुसांईजी कों सोंपियो। और मेरे तो इहां थोरेही में चल्यो जात है। और धनी की बस्तू धनी के इहां पहोंचे तो आछौ है। सो ऐसो वा क्षत्री वैष्णव कौ अंतःकरन सुद्ध हतो। ता पाछें चाचा हरिवंसजी उहां तें चले सो श्रीगोकुल आए। सो द्रव्य सामग्री जो ल्याये हते सो सब प्रभुन की दृष्टि-पथ करवाय कै भंडारी कों सोंपी। और श्रीगुसांईजी आगें वा क्षत्री की दंडवत् कीनी। और सब समाचार कहे।

तब श्रीगुसांईजी ने चाचा हरिवंसजी सों कही, जो - वैष्णव कौ अंतःकरन सुद्ध देखनो। और आचार-विचार देखिवे कौ कहा प्रयोजन है ? और एक दृढ आश्रय देखनो। और कछू जाने नाहीं। ऐसे श्रीगुसांईजी के बचनामृत सुनि कै चाचा हरिवंसजी बोहोत प्रसन्न भए। सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो।

वार्ता प्रसंग - ३

पाछें उह क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजी की सेवा पधराई कै आचार-विचार सों सेवा करन लाग्यो। सो उत्तम तें उत्तम सामग्री श्रीठाकुरीजी कों समर्पे। और वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावे। पाछे उह क्षत्री वैष्णव और वैष्णवन सों मिलि कै भगवद्वार्ता सुनतो। सो एक दिन 'श्रीगोकुलाष्टक' की टीका सुनी। सो सुनि कै उह क्षत्री वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो। और

अपने मन में निश्चै कियो, जो एक बार श्रीगोकुल निश्चै चलनो। ता पाछें उह क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजी कों संग ले कै श्रीगोकुल कों चल्यो। सो केतेक दिन में श्रीगोकुल आय पहोंच्यो। सो श्रीगोकुल के दरसन करि कै थकित व्है गयो। सो देहानुसंधान भूलि गयो। ता पाछें वा क्षत्री वैष्णव नै श्रीगोकुल कौ स्वरूप सुन्यो हतो तैसे ही दरसन भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने वा क्षत्री वैष्णव कों श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करवाए। सो यथासक्ति भेट कीनी। सो श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलत हैं ऐसे दरसन भए। तब उह अपने मन में कह्यो, जो - धन्य मेरे भाग्य हैं। सो मोकों ऐसे दरसन भए। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर करवाय कै बैठक में पधारे। पाछें दूसरे दिन वा वैष्णव कों संग ले श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे। सो श्रीनाथजीद्वार आइ पहोंचे। सो आप तो स्नान करि मंदिर में पधारे। राजभोग आर्ति किये। तब वा क्षत्री वैष्णव ने दरसन किये। सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। सो वाकों दरसन होत मात्र मूर्छा आई। सो घड़ी दोई में सावधान भयो। पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे। और अपुने मन में कह्यो, जो - श्रीठाकुरजी परमदयाल हैं। सो भक्त के मनोरथ पूरन कर्ता हैं। जो - श्रीप्रभुजी करत हैं सो सर्व आसान है।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जताए, जो - जीव कों तो एक दृढ आश्रय

चाहिए । और भगवदीय वैष्णव की संगति चाहिए । और या संसार में भगवदीय वैष्णव कौ संग बड़ो ही पदार्थ है । सो या जीव कों तो उत्तम संगति करनी । सो जैसी संगति होय तैसो ही फल कौ पदार्थ होय ।

सो ऐसे करत कितनेक दिन लों वा क्षत्री वैष्णव ने श्रीगुसांईजी के श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि ब्रज - परिक्रमा करिवे कों गयो । सो उह क्षत्री वैष्णव ब्रज-परिक्रमा करि कै पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे । तब उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आयो । तब श्रीगुसांईजी आप तो कृपा के सागर सो श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो - तू श्रीठाकुरजी की सेवा निपट सावधानी सों करियो । और जो-तेरी ईच्छा काहू बात पैं होइ सो अब कहि । तब वा क्षत्री वैष्णव ने हाथ जोरि कै बिनती करी, जो - महाराज ! अब तो यह इच्छा है, जो - एक बार देस में चलिए । सो ऐसी दीनता देखि कै श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णव कों बिदा किये । सो कितनेक दिन में वह क्षत्री वैष्णव अपने देस में आय पहोंच्यो। पाछें सेवा बोहोत सावधानी सों करें । तब श्रीठाकुरजी वा क्षत्री वैष्णव पे कृपा-अनुग्रह करि कै वार्ता करते । श्रीमुख सों जो - चहिए सो मांगि लेते ।

भावप्रकाश - या वार्ता में यह जताए, जो - गुरु की कृपा होंई तब भगवान आपु तें कृपा करत हैं ।

सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र

भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता॥२१९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव, गुजरात कौ, सो चाचाजी के संग तें मारग - गेल भूलि कै और क्षत्री वैष्णव के घर गयो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश- - ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'वसुमति' हैं । सो वसुमति 'चंद्रकला' की प्रिय सखी हैं । सो चंद्रकला वसुमति कों श्रीठाकुरजी की रहस्य - वार्ता सब कहत हैं । ये 'रसभद्रा' तें प्रगटी है । तातें उनके भावरूप है ।

सो ये गुजरात में एक क्षत्री के जन्म्यो । सो बरस बाईस कौ भयो । तब एक समै चाचाजी हरिवंसजी गुजराति आए । सो या क्षत्री वैष्णव के गाम में रहे । तहां या क्षत्री वैष्णव सों चाचाजी कौ मिलाप भयो । सो चाचाजी की आचार-क्रिया देखि ये जाने, जो-ये कोऊ बड़े महापुरुष हैं । पाछें चाचाजी सों बिनती कियो, जो-मोकों अपनो सेवक कीजिये । तब चाचाजी वाकों दैवी जानि नाम दिए । पाछें कहे, जो-हमारे तुम्हारे गुरु श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी भए । तब या क्षत्री वैष्णव ने कही, जो - चाचाजी ! वै कहां रहत हैं ? तब चाचाजी कहे, जो-वे गोकुल में रहत हैं । तब क्षत्री वैष्णव चाचाजी के संग श्रीगोकुल आयो । पाछें श्रीगुसांईजी के पास आई नाम-निवेदन कियो । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वासों कहे, जो-तू चाचाजी के संग में रहियो । ता दिन सों वह क्षत्री वैष्णव चाचाजी के संग में रह्यो । सो चाचाजी के संग तें वाकों लीला कौ अनुभव होन लाग्यो । सो रस के भर तें रह्यो न जाय ऐसी दसा भई ।

वार्ता प्रसंग - १

सो उह क्षत्री वैष्णव चाचाजी के संग तें श्रीगुसांईजी की सरनि आयो हतो, सो चाचाजी के संग सदैव रहतो । और कथा वार्ता में बोहोत समझत हतो । सो एक समय चाचाजी और वह क्षत्री वैष्णव गुजरात कों जात हते । सो मारग में गेल भूलि गए ।सो चाचाजी तो और गेल निकसि गए । और उह

क्षत्री वैष्णव और गेल कों गयो । सो एक गाम में उह क्षत्री वैष्णव जाइ निकस्यो । सो वा गाम में और एक क्षत्री वैष्णव रहत हतो । सो वा वैष्णव के घर ये क्षत्री वैष्णव गयो । सो वा वैष्णव ने वा क्षत्री वैष्णव कौ बोहोत ही समाधान कस्यो। और बोहोत ही भांति सों रसोई करवाई । पाछें श्रीठाकुरजी कों भोग धस्यो । पाछें भोग सराय महाप्रसाद लियो । और रात्रि कों भगवद्वार्ता करी । सो तो बोहोत ही अलौकिक वार्ता चली । ता पाछें निद्रा आवन लगी । तब सोय रहे । पाछें दूसरे दिन हू ऐसे ही किये । महाप्रसाद ले कै फेरि भगवद्वार्ता करन लागे । सो ऐसें नित्य करते । सो भगवद्वार्ता के रस में वा क्षत्री वैष्णव कौ मन अटक्यो हतो । सो वे नित्य महाप्रसाद ले कै भगवद्वार्ता करिवे कों बैठते । सो ऐसें वे रात्रि दिन भगवद्वार्ता करते । ऐसे करत उह क्षत्री वैष्णव तो देहाध्यास सब भूलि गयो । और चाचा हरिवंसजी उहां गुजराति जाइ कै उहां की भेट लै के ता पाछें उहां तें फिरि आए हते । तब वा गाम में क्षत्री वैष्णव के घर आए । तब चाचा हरिवंसजी आय के देखे तो उह साथ कौ क्षत्री वैष्णव वा वैष्णव सों मिलि कै बैठ्यो है। और भगवद्वार्ता करत हैं । और श्रीगोवर्द्धननाथजी वा क्षत्री वैष्णव के पाछें श्रमित भए ठाढ़े हैं । उदासीनता सों ठाढ़ें हैं । और यह वैष्णव भगवद्वार्ता लीला करत हैं । सो प्रसंग कुंजभवन कौ चल्यो हतो । तब इतने में चाचाजी आय

पहोंचे। तब चाचाजी ने ठाढ़े रहि के उह प्रसंग सुन्यो। तब चाचा हरिवंसजी अपने मन में कहे, जो-इन बातन कौ उह पात्र नाहीं है। सो या वैष्णवने तो भली नाहीं करी। जो-ऐसी बात यहां चलाई है। तब चाचा हरिवंसजी वा क्षत्री वैष्णव कौ नाम ले कै पुकारे। परि वे तो भगवद्वार्ता के रस में छक्यो हतो। सो कछू उत्तर दियो नाहीं। और कछू चाचा हरिवंसजी कों देखे हू नाहीं। तब चाचा हरिवंसजी ने या क्षत्री वैष्णव कौ हाथ पकरि कै झटक्यो। तब यह क्षत्री वैष्णव चाचाजी के सन्मुख देख्यो। तब चाचा हरिवंसजी ने कही, जो-कछू देह की सुधि है के नाहीं ? तब वह क्षत्री वैष्णव फेरि कै देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी उदासीन ठाढ़े हैं। तब चाचाजी ने ताही समय कह्यो, जो-यह कहा कियो है ? जो अपनो धर्म खोयो है। सो अज हू समझ देखो। तब उह क्षत्री वैष्णव बोल्यो, जो-अब मैं अपने मन में समुझ्यो। पाछें मौन धर्‍यो। तब या वैष्णव ने वा क्षत्री वैष्णव सों कही, जो आगें कहिए। जो यहां तांई तो हम सुने हैं। परि आगे कृपा करिकै कहिए। तब या क्षत्री वैष्णव ने कह्यो, जो-तुम धीरज राखो। धीरज होइ कै कहूंगो। पाछें फेरि रहि कै कह्यो, जो-अब कहिए। तब वा क्षत्री सों वा वैष्णव ने कही, जो-यह प्रसंग पूरो करिये। सो ऐसे तीन बार कही। तब उह क्षत्री वैष्णव अपने मन में बिचारि करि देखे तो अब कछू नाहीं है। तब अपने मन में चक्रत व्है

देखे। तब वा वैष्णव सों क्षत्री वैष्णव ने कही, जो-तुमने कहा सांची मानी ? जो-मैं तो अमली मनुष्य हों। सो याही तें तुम मेरी बात सांची मति मानियो। जो-मैं तो चाचा हरिवंसजी सों भूल्यो विछुस्यो पस्यो हूँ। सो ऐसें कहि कै वा बात को टारि दीनी। ता पाछें दूसरे दिन चाचा हरिवंसजी उहां तें बिदा होइ कै चले। तब चाचा हरिवंसजी ने वा क्षत्री वैष्णव सों कह्यो, जो-तुमने कहा ऐसो काम कियो ? जो-कुंजादिक की लीला कौ प्रसंग तुमने या वैष्णव के आगे चलायो सो यह वैष्णव तो इन बातन कौ पात्र नाहीं है। सो ताही तें श्रीगोवर्द्धननाथजी पीछे श्रमित भए उदासीनता सों ठाढ़े हे। और तोकों कछू सुधि नाहीं। और उह तो कछू (पात्र) नाहीं है। तातें पात्र - अपात्र देखि बिचारि कै भगवद्वार्ता करनी योग्य है। तातें अब भई सो तो भई। भगवदीच्छा तें होय गयो। और मैं तो तोकों जतायो तब तेनें फेरी है। नाँतर श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बोहोत ही खेद पावत हते। तब वा क्षत्री वैष्णव ने कह्यो, जो-मैं तो चूक्यो हतो। सो आजु पाछें बिना पात्र मैं ऐसी बात काहू के आगें नाहीं करूंगो। तब चाचा हरिवंसजी ने वा क्षत्री वैष्णव सों कही, जो-वा क्षत्री वैष्णव कौ मन तो लौकिक प्रपंच में बोहोत है। याही तें लौकिक प्रपंच वारो तथा विपरित अन्याश्रय वारे वैष्णव सों ऐसी वार्ता बिचारि कै करनो। बिना बिचारे नाहीं करनो।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव कों रहस्य वार्ता बिचारि

के करनी । काहेतें ? जो-स्वरूपात्मक हैं । तातें जो-कोऊ वाकों धारन न करें तो वह कहिवेवारे कों साप देति हैं । सो कहिवेवारे के भाव कौ नास होत है । और श्रीनाथजी कों अत्यंत श्रम होत है, यहू कहे ।

सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२२०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक क्षत्रानी, आगरे की, जाकों नाम सुनावे सो आवे नाहीं, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'वधुटी' है । ये 'रसभद्रा' तें प्रगटी है । तातें उनके भावस्वरूप है ।

सो ये आगरे में एक क्षत्री के जन्मी । सो निपट मुग्ध हती । सो मा-बाप ने याकौ ब्याह कियो । पाछें कछूक दिन में याकौ धनी मर्यो । तब केतेक दिन में श्रीगुसांईजी आप आगरे पधारे । तब वैष्णवन की बहू-बेटीन ने कही,जो तू श्रीगुसांईजी की सेवकनी होउ, नाम पावे तो तेरो उद्धार होई

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते । तब उह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी के पास नाम पाइवे कों आई । सो उह आय बैठी । सो वा क्षत्रानी कों श्रीगुसांईजी आप सरनि लिये। तब वासों मंत्र कहे । "श्रीकृष्णः शरणं मम" आप श्रीमुख सों कहे । सो वा क्षत्रानी सों नाम आवे नाहीं । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपुने श्रीमुख सों कह्यो, जो-तोकों मेरो नाम तो आवत है ? तब वा क्षत्रानी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज! आप कौ नाम तो आवत है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा दिए, जो-तू येही नाम लियो करि । सो उह क्षत्रानी अहरनिस नाम

लियो करती । और कछू जानती नाहीं । सो ऐसें करत श्रीगुसांईजी वा क्षत्रानी के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए । तब वा क्षत्रानी कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के आपु दरसन देते ।

भावप्रकाश - या वार्ता में श्रीगुसांईजी अपनो प्रमेय-बल जताए ।

सो उह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी की ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती । तातें इन की वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ।।२२१।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ, दक्षिन कौ बासी, जाके बेटा ने मानसी सेवा करी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं —

भावप्रकाश - ये सेठ कौ बेटा, राजस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'ध्यानमग्ना' है । सो श्रीठाकुरजी के ध्यान में निरंतर मगन रहति है । ये 'रसभद्रा' तें प्रगटी है। तातें उनके भावरूप है । और ध्यानमग्ना की एक सहचरी है । वाकौ नाम 'रसमग्ना' है । सो यहां सेठ भयो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो उह सेठ अन्यमारगीय हतो । सो वाने उद्यम व्यौपार में द्रव्य बोहोत कमायो । ता पाछें बिचार कियो, जो-द्रव्य तो बोहोत कमायो सो अब तो तीर्थयात्रा करे तो आछो है । तब कुटुंब सहित तीर्थयात्रा करिवे कों निकसे । सो सब तीर्थयात्रा करत करत ब्रज में आयो । सो ता समय श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी अपनी बेठक में बिराजे हते । तब एक दिन सेठ श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो । सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये । तब श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै बिनती करी, जो-महाराज! मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिये । तब

श्रीगुसांईजी वा सेठ सों कहे, जो-तू न्हाइ आउ । तब सेठ श्रीयमुनाजी में न्हाय कै श्रीगुसांईजी के आगें आय ठाढ़ो भयो। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै नाम सुनायो । ता पाछें दूसरे दिन ब्रत कराय कै ब्रह्मसंबंध करवायो । तब सेठ ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-सेवा करो । तब श्रीगुसांईजी आपने कृपा करि कै वा सेठ के माथे सेवा पधराय दीनी । तब कितनेक दिन श्रीगोकुल में रहि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चले । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै नाना प्रकार के मनोरथ किए । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होंई कै चले । सो अपने देस में जाई पहोंचे । तब अपने श्रीठाकुरजी की सेवा भलीभांति सों करन लागे । सो वा सेठ कौ मन श्रीगुसांईजी की कृपा तें रात्रि दिन श्रीठाकुरजी की सेवा में रहे । और प्रातःकाल उठि स्नान करि प्रथम तो रसोई बालभोग की सब सेवा तें पहोंचे । पाछें श्रीठाकुरजी कों जगाय मंगला भोग धरि कै मंगला आर्ति करि पाछें शृंगार करि राजभोग धरि, राजभोग आर्ति करि वैष्णव कों महाप्रसाद लिवावते । और जा दिन अचानक कोई वैष्णव आवतो ता दिन अत्यंत प्रसन्न होते । और जो-कोई वैष्णव पास बस्त्र न होई तिन कों बस्त्र दिवावते । श्रीगुसांईजी पें तथा वैष्णवन पर बोहोत ममत्व राखते । ता पाछें भगवद्वार्ता कीर्तन करते ।

सो या प्रकार सों नित्य नेमपूर्वक कीर्तन करते। और उनकी स्त्री-बेटा कोई सेवक न हतो। ता पाछें ऐसें बरस के बरस श्रीगुसांईजी तथा श्रीनाथजी की भेट पठावते। लौकिक व्यवहार तो सब भूलि गये। एक सेवा में मन रहे। तब ऐसे करत द्रव्य थोडोसो रह्यो।

तब वा सेठने मन में बिचारी, जो-अब कहा करिए ? द्रव्य तो निघटवे पे आयो है। और सेवा कौ तो या भांति कौ वैभव है। सो अब वैभव घटावे तो आछो नाहीं। और उद्यम करे तो सेवा छूटि जाइगी। तातें ऐसे में श्रीठाकुरजी के चरनारविंद मिले तो आछो है। तब थोरे से दिन में सरीर असक्त भयो। तब और वैष्णवन कों बुलाय कै वैभव सहित श्रीठाकुरजी एक वैष्णव के घर पधराय दिये। और खरच प्रमान जीविका बताय दीनी। और कही, जो-मेरो बेटा है। सो सेवक होंई समर्पन ले के सेवा करे तो श्रीठाकुरजी सोंपियो। नहीं तो मति सोंपियो। तब कितनेक दिन पाछें सेठ तो श्रीठाकुरजी के चरनारविंद में प्राप्त भयो और श्रीठाकुरजी कौ वैभव तो वैसो ही चल्यो जाय। ता पाछें वा सेठ के सगे संबंधी हते। तिनने वा सेठ के बेटा सों कही, जो तू सेवक मति हूजियो। तेरो बाप सेवक भयो। सो सब द्रव्य खरच करि डार्‍यो। अब तू सेवक मति हूजियो। तब वाने कही, जो-मैं सेवक न होउंगो। और बाप के पून्य तें द्रव्य तो कमाउंगो। ता पाछें उह सेठ कौ बेटा

उद्यम करन लाग्यो। सो उद्यम व्योपार में द्रव्य बोहोत कमायो। तब याने मन में बिचारी, जो-अब मैं तीर्थ यात्रा करूं तो आछो। सो घर तें निकस्यो। सो ब्रज में आयो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन नित्य करे। तब वैष्णवन ने कही, जो-तुम सेवक क्यों न भये ? तब वाने कही, जो-मैं तो सेवक न होउंगो। तब वैष्णवन ने जाय कै श्रीगुसांईजी के आगें कही, जो महाराज! फलानें कौ बेटा सेवक नहीं है। जो-याकौ बाप तो परम भगवदीय हो। तब श्रीगुसांईजी ने वासों कही, जो-क्यों नाहीं होत ? तब वाने कहीं,जो-महाराज ! द्रव्य सब खर्च होइ जात है। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-आगे आउ। और कही, जो-तू पैसा खरच मति करियो। तब उह प्रसन्न भयो। पाछें कृपा करिकै आपने नाम सुनायो। सेवक तो भयो। माला दीनी। पाछें नित्य दरसन कों आवे।

सो एक दिन श्रीगुसांईजी ने कही, तू न्हायो है ? तब वाने कही, जो-महाराज ! अब न्हाउंगो। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-याकों तो ताते जल सों न्हवावो। ओर अपने यहां तें नयो मुकटा पहराय कै ल्यावो। सो ऐसे आपने खवास सों आज्ञा दीनी। पाछें तेसेही मुकटा पहराय कै श्रीगुसांईजी के आगे बैठाए। तब श्रीगुसांईजीने बातें कही, जो अब तुम कछु भेट मति करियो। पाछें समर्पन करवाय कै महाप्रसाद लिवायो। बीड़ा दीनो। और कही, जो-यामें तेरो खरच न भयो ? पाछें

वह अपने डेरा में गयो। सो दूसरे दिन श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। तब श्रीगुसांईजी ने वासों कही, जो तेरो बाप तो द्रव्य खरच कै सेवा करतो और हम तोकों ऐसी सेवा बतावे, तामें तेरो एक पैसा खरच न होय। और तेरो बाप सेवा करतो इतनी ही सेवा होय। ऐसो उपाय बतावें। तब सेठ के बेटा ने कही, जो ऐसो उपाय बतावो तो आछो। तब श्रीगुसांईजी ने वा सेठ के बेटा सों कही, जो-सवारे उठि देह-कृत्य करि दंतधावन करि स्नान करि, मुद्रा करि कै एकांत में बैठि कै या प्रकार श्रीठाकुरजी कों जगावनो। पाछें मंगलाभोग धरनो। मंगला आरती करनो। पाछें सिंगार करनो। सखड़ी, अनसखड़ी, खीर, उत्सव होय तो उत्सव कौ प्रकार सब कह्यो। पाछें या प्रकार राजभोग धरनो। भोग सराय आरती करि कै अनोसर करनो। पाछें उत्थापन समय न्हाई कै उत्थापन करनो! उत्थापन भोग धरनो। पाछें सेनभोग धरि सेन आर्ति करि कै पाछें श्रीठाकुरजी कों पोढावने। सो ऐसें श्रीगुसांईजी ने मानसी सेवा सब पाठ कराय दीनी। पाछें श्रीगुसांईजी ने कही, जो-यामें तो तेरो खरच नाहीं होयगो ? तब वा सेठ के बेटा ने कही, जो महाराज ! ऐसे तो मैं करूंगो। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो धीरे करेगो तो पहर एक लगेगो। बेगि करेगो तो चार-छह घड़ी में होइ जायगो। ता पाछें उह सेठ कौ बेटा मानसी सेवा करन लाग्यो। सो वाकौ मन ऐसो लग्यो, जो वह देह-सूधि

भूलि जातो। उनकों प्रभु मानसी में ही अनुभव करावन लागे। पाछें साक्षात् दरसन देन लागे।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो या प्रकार मानसी सेवा में श्रीठाकुरजी दरसन दिए तो, जो-कोऊ प्रीतिपूर्वक साक्षात् सेवा करे तो कहा न होंई ?

तब श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै कह्यो, जो-महाराज ! आप की कृपा तें श्रीठाकुरजी साक्षात् दरसन देत हैं। तातें अब तो आप ऐसी कृपा करो, जो-हों साक्षात् सेवा करों। पाछें श्रीगुसांईजी वा सेठ के बेटा कों कहे, जो-तू राजभोग तांई सेवा करियो। पाछें उद्यम करियो। अवकास होंइ तो उत्थापन में न्हानो। जो-अवकास न होंइ तो घर में स्त्रीजन करें। अपने उद्यम करिवो करनो। तातें द्रव्य निघटे नाहीं। कमाई होय थोरो बोहोत ऊपर चलेगो। और जितनो खरचेगो तितनी कमाई होइगी। ऐसो आसीरवाद दियो। पाछें उह सेठ के बेटा ने ब्रजयात्रा करि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। और नानाप्रकार के मनोरथ किये। श्रीगुसांईजी कों थोरी घनी भेट करि कै बिदा होई अपनी स्त्री कों सेवक कराय कै अपने देस में आयो। तब अपने श्रीठाकुरजी वा वैष्णव के घर बिराजे हते तहां तें अपने घर पधराय ल्यायो। पाछें श्रीगुसांईजी की कृपा तें लौकिक-अलौकिक कार्य करन लाग्यो। सो भलो वैष्णव भयो।

सो वह सेठ और वाकौ बेटा श्रीगुसांईजी कौ ऐसे परम

कृपापात्र भगवदीय हे । सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।
वार्ता ।।२२२।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक सेठ, गुजरात कौ, जाकी बेटी बरस दस की हती, जाने श्रीबालकृष्णजी तें श्रीमदनमोहनजी किये, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये बेटी सात्विक भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'कृष्णहिता' है। सो कृष्ण की सदा हित करिवेवारी है । ये श्रीचंद्रावलीजी की सखी है । ये 'नंदा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है । और 'कृष्णहिता' की एक सखी है, वाकौ नाम 'गार्गी' है, सो यहां विरक्त भयो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो उन सेठ ने अपनी बेटी कौ बिवाह कियो । सो महिना दोय में बेटी के बर की देह छूटी । सो सेठ कों बोहोत दुःख भयो । ता पाछें महीना एक बीत्यो । तब श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे । सो उह सेठ श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो । तातें या सेठ के घर उतरि कै बिराजे । तब सेठने अपनी बेटी की सब बात श्रीगुसांईजी सों कही । पाछें बेटी ने आय कै दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै वाकों बेगि न्हवाय कै नाम ब्रह्मसंबंध करवायो । पाछें एक श्रीमदनमोहनजी कौ स्वरूप वैष्णव ने श्रीगुसांईजी पास पधरायो हतो । सो यह सेठ की बेटी के माथे पधराय दिये । पाछें बेटी सों कही, जो-अरी ! तू इन की सेवा आछी भांति सों करियो । और घर के बाहिर मति जईयो । तब बेटी भोली सो कछू समुझत नाहीं । सो श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो महाराज ! ठाकुर याही भांति के होत है ? तब

श्रीगुसांईजी कहे, जो-हां ! ठाकुर याही भांति के होत है। इन ही में तू मन लगाइयो। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी कछूक दिन उहां बिराजे। तब बेटी कों सगरी सेवा की रीति सिखाई। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदा होई कै श्रीरनछोरजी के दरसन कों पधारे। और बेटी सेवा करन लागी। सो सेवा करत करत बेटी साठ बरस की भई, डोकरी। सो घर तें बाहर न निकसी। मा बाप सबन की देह छूटि गई। अकेली डोकरी रही। तब एक चाकर राख्यो। टका घर में धरि गुमास्ता सब बिदा किए। सो अपने घर में सेवा दोऊ बेर करे। रात्र कों पोथी बांचे। और जो-कोऊ वैष्णव आवे तिनकौ भलीभांति सों समाधान करे। तब ऐसे करत एक समय गुजरात के बोहोत वैष्णव भेले होय कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों चले। सो ता संग में एक विरक्त वैष्णव के पास श्रीबालकृष्णजी की सेवा। सो उन के श्रीहस्त में लडुवा हतो। सो संग सघरो डोकरी के गाम में आयो। दिन घड़ी छह रह्यो ताही समय मेह बरसन लाग्यो। सीतकाल के दिन हते। सो सगरो संग गाम के बाहिर तलाव के ऊपर उतर्‍यो। तब वा विरक्त ने विचार्‍यो, जो-आज मेरी रसोई कैसे होइगी ? सो कैसे बनेगी ? लोग तो अपने अपने पाल डेरान में करेंगे। मेरे वस्त्र हू भीजे हैं। तातें गाम में कोई वैष्णव होई तो तहां श्रीठाकुरजी कों अरोगाय ल्याऊं। तब श्रीठाकुरजी की झांपी ले कै गाम में गयो। तब

तहां एक वैष्णव सों पूछी, जो-यहां कोई मर्यादी वैष्णव कौ घर है ? तब वा वैष्णव ने कही, जो एक डोकरी कौ घर है। सो साठ बरस की भई परंतु घर तें बाहिर नाहीं निकसी। अपने घर में श्रीठाकुरजी की सेवा करत है। और जो-कोऊ वैष्णव घर आवत है सो ताकौ आछी भांति सों समाधान करत है। पाछें वा वैष्णव ने विरक्त वैष्णव कों डोकरी कौ घर बताय दियो। तब वा डोकरी के घर जाई भगवद् स्मरन कियो। तब वा डोकरी ने कही, जो-वैष्णव कहां तें आए ? बैठो। श्रीठाकुरजी कौ संपुट होई तो पधराय जाउ। मैं रसोई करि चुकी हूं। अब राजभोग धरूंगी। तब वा वैष्णव ने कही, जो गुजरात के वैष्णव श्रीगोकुलजी श्रीगुसांईजी के दरसन कों जात हैं। सो ता संग में मैं हूं जात हूं। सो गाम के बाहिर तलाव के ऊपर संग उतर्‍यो है। सो मेह बरसन लाग्यो। तातें मेरे पास श्रीठाकुरजी हैं। सो ताके लिए तुम्हारे पास आयो हूं। तब डोकरी ने कही, जो-संपुट पधराय देऊ। तुमकों कछु काम होई तो बाहिर होई आवो। घरी दोई पाछें तुम दरसन कों बेगि अईयो। कपड़ा भींजे होई तो सुकाइ देऊ। ये नए पहरि लेहू। पाछें वा वैष्णव ने कपड़ा सुकाइ दिए। और झांपी डोकरी के आगें धरी। तब उह संग में तलाव ऊपर आयो। तब उह डोकरी राजभोग की सामग्री सिद्धि करि चुकी हती। सो उन वैष्णवन की झांपी खोली। सो श्रीबालकृष्णजी कौ स्वरूप

देख्यो। सो नीचे ऊपर देखि कै चक्रत व्है रही ! मन में कही, जो-इन के हाथ पांव टेढ़े होंय रहे हैं। हाथ में लडुवा है। ऐसें श्रीठाकुरजी क्यों भए ? मैं श्रीगुसांईजी सों प्रथम पूछि लीनी हती, जो-श्रीठाकुरजी ऐसे ही होत हैं ? तब श्रीगुसांईजी कहे, हां ऐसे ही होत हैं। जो-मेरे श्रीठाकुरजी से बडे होंइ मुरली बजावे तब जानिए, जो-यह वैष्णव हू ठीक है। श्रीगुसांईजी कौ सेवक है। याही के पास ऐसे ठाकुर क्यों भए ? पाछें मन में बिचार चिंता करन लागी। जो-श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव कों वेसोई स्वरूप पधरायो है। परंतु यह विरक्त है। सो ऐसे सीतकाल में श्रीठाकुरजी कों ले कै निकस्यो है। सो मारग में मारे सीत के श्रीठाकुरजी के हाथ पांव अकड गये हैं। पाछें ठाकुरजी कों कहे, जो-महाराज ! यह वैष्णव बड़ो मूरख है। तातें तुम्हारो जतन न राख्यो। उनाले में श्रीगोकुल जातो तो तुम्हारे हाथ-पाँव की कछू औषधि हू नाहीं करनी परती। पाछें तत्काल उठि कै कोटरी में तें तेल ले कै जायफल घिसि कै डार्‍यो। कस्तूरी घिसि कै डारी। अंगीठी दुहेरी धरी। श्रीठाकुरजी कों आछे रुइ कै बिछोना मोटे पर पधराए। हाथ पाँव श्रीअंग में तेल लगाय मर्दन करन लागी। और अति दीन होई बचन कहन लागी। जो महाराज ! सीतकाल कौ तुमकों बड़ो दुःख भयो। जो हाथ-पाँव टेढ़े होइ गए। या वैष्णव कों तोऊ ज्ञान न भयो। अब मैं कैसे करूं ? श्रीगुसांईजी ऐसे

विरक्त कों ऐसी निधि क्यों पधराई ? परंतु श्रीगुसांईजी आप परम दयाल हैं । तातें पधराई । परि या वैष्णव कों ऐसो न चहिए । जो ऐसी सीत में ले कै तुम कों निकस्यो । यह पुष्टिमार्ग में प्रभुन को श्रम न होंई । ऐसे वैष्णव कों घर बैठे सेवा करनी। सो तुम्हारी सेवा तो न बनी और ऐसी दसा तुम्हारी वा वैष्णव ने करी ! अब मैं कैसें करों ? या प्रकार अनेक बचन कहि दुःख करन लागी । हृदय में अग्निसी उठी । जो-हाय हाय, श्रीप्रभुजी कों ऐसो दुःख देखि कै मेरी देह न छूटी ? या भांति कहि कै तेल मसलन लागी । तब श्रीठाकुरजी ने बिचारी, जो-देखो ! या बाई को कैसो सूधो भाव है ? तातें मैं जहां तांई हाथ-पाँव सूधे न करूंगो । तहां तांई यह छोड़ेगी नाहीं। राजभोग की सामग्री सीतल होइ जाइजी । तहां तांई याहू के ठाकुर भूखे बैठे रहेंगे । और यह तो प्रेम बिवस होइ गई है । या प्रकार श्रीठाकुरजी ने बिचारि कै आप हू प्रेम बिवस होइ कै हाथ-पाँव तत्काल सूधे करि दिये । ठाढ़े होंई मुरली मनोहर भए । जैसे याके ठाकुर हते तैसे ही स्यामसुंदर मुरली मनोहर भए । तब यह डोकरी अत्यंत प्रसन्न भई । मन में कही, जो-अब श्रीठाकुरजी टेढ़े तें सुधे भए । मैं कही, जो-श्रीठाकुरजी ऐसे क्यों भए ? मेरे ठाकुर से मुरली मनोहर होइ गये । हाथ-पाँव टेढ़े भए हते, सो आछे भए । तब तत्काल रुई के दुहरे वागा, टोपा, फरगुल गदल और पास ही अंगीठी धरी । तब तत्काल

बदाम कौ सीरा कस्तुरी डारि कै सिद्धि करि राजभोग धरन लागी। सो अपने श्रीठाकुरजी के आगे एक थार धर्‍यो। तामें दही मिठाई आदि सगरी सामग्री धरी। और या विरक्त वैष्णव के श्रीठाकुरजी सों बिनती करी, जो-महाराज! तुमको गोरस बोहोत प्रिय है सो मैं जानत हों परंतु तुम्हारे हाथ पाँव अकड़ गये हैं, तातें तुम आज आछें भए हों, तातें दोइ चारि दिन ताती सामग्री आरोगो। श्रीअंग में बल होंइगो। तब मैं दहीं मठा बोहोत आरोगाउंगी। चिंता मति करियो। सीतकाल पर्यंत वैष्णव कों अपने घर राखूंगी। तातें अब दहीं मठा सीतल सामग्री मति आरोगियो। सो या प्रकार अत्यंत प्रीति सों राजभोग धरि टेरा लगाय रसोई के पात्र मांजि रसोई पोती। ता पाछें भोग सराय आचमन तातें जल सों कराय बीड़ा आरोगाय पाछें वा विरक्त वैष्णव कों आरती के दरसन करवाये। सो गद्दल रजाई में कछू जान्यो नाहीं, जो-मेरे ठाकुर ठाढ़े स्वरूप भए। पाछें डोकरी ने अनोसर कराइ। वा वैष्णव कों पातरि धरि। गाय की एक पातरि निकासी। वैष्णव कों भली भांति सों महाप्रसाद लिवायो। पाछें वा डोकरीने महाप्रसाद लियो। पाछें डोकरीने उत्थापन सेन पर्यंत सेवा सों पहोंचि पाछें श्रीठाकुरजी कों सेन करवाये। वा विरक्त वैष्णव के श्रीठाकुरजी कों दोई रजाई उढ़ाई। अनोसर करि बाहर आई। तब वैष्णव कों सेन कौ महाप्रसाद लिवायो। पाछें पोथी

ले भगवद्वार्ता करत आधी रात्रि भई। तब वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो और कह्यो, जो-डोकरी तेरो बड़ो भाग्य है। जो-दिन कों सेवा करत है, रात्रि को भगवद्वार्ता करत है। तोकों धन्य है। पाछें डोकरी ने कही, जो-मारग के श्रमित हो सो अब सोओ। पाछें डोकरी ने बिछौना करि दीनो। तब वा विरक्त वैष्णव ने कही, जो डोकरी प्रातःकाल बेगि उठियो। मंगला करि मेरे श्रीठाकुरजी कों पधराय दीजियो। सगरे वैष्णव चलेंगे। तब डोकरी ने कही, जो-वैष्णव ! दस-पांच दिन मेरे घर और रहो। अब ही सीत बोहोत परत है। तुम्हारे श्रीठाकुरजी कों आराम भयो है। तब यह सुनि कै वा वैष्णव ने डोकरी तें कहि, जो-डोकरी ! तू बावरी भई है। कैसे बोलत है ? श्रीठाकुरजी कहा मांदे होत हैं ? तुम मांदे हो सो ऐसे बोलत हो। तातें मैं तो या संग में जाउंगो। तब डोकरी ने कही, जो-तू श्रीगुसांईजी कौ सेवक होइ कै श्रीठाकुरजी कों श्रम करवायो ? श्रीठाकुरजी के हाथ पांव अकड़ि गये हते, सो तेल लगाई कै सूधे किये हैं। तातें अब ही तो सीत बोहोत परत है। डोल पीछे जैयो। सो तहां तांई श्रीठाकुरजी कों चैन होइ जाइगो। और तुमकों डोल पीछे मैं श्रीगोकुल पहोंचाय देउंगी। तब वैष्णव ने कह्यो, डोकरी ! तू बड़ी मूरख है। तेरे हाथ पांव अकड़ि गए होंगे। जो-मेरे श्रीठाकुरजी कों ऐसी बात कहत है ? मैं तो सर्वथा सवेरे जाउंगो। तातें तू मेरे

श्रीठाकुरजी राख्यो चाहत है। मैंनें एक दिन के लिए पधराए। तैनें इतनो झगड़ो मचायो ? तब डोकरी ने कही, जो-तेरी ईच्छा। मैं तो तेरे श्रीठाकुरजी के लिये कहत हों। तेरे मन में नहीं आवे तोमैं कहा करों ? कहूं सीतकाल में श्रीठाकुरजी फेरि अकड़ि जाइंगे, तो मारग में तू कौन जतन सों आछो करेगो ? यह तो घर हतो। सो तेल, जायफल, कस्तूरी के मसले आछे भये। दुहरी अंगीठी आगें धरी। पुष्ट सामग्री गरम आरोगाई। आछे भीतर पोढ़े। इतनो सुख मारग में श्रीठाकुरजी कों कहां ? तब वैष्णव ने कही, जो-डोकरी तोकों ज्ञान नाहीं है। जो-श्रीठाकुरजी सगरे जगत कौ दुःख दूर करत हैं। श्रीठाकुरजी कों दुःख कैसो ? एक दृढता चहिए। न सामग्री चहिए न आभूषन चहिए। न वस्त्र चहिए। जो-समय पर भगवद् ईच्छा सों बनि आवे ताही में श्रीठाकुरजी कों संतोष है। तब डोकरी ने कही, जो-तेरी ऐसी बुद्धि है, ताही सों श्रीठाकुरजी अकड़ि गए ! ता बातकों मैं कहा करूं ? मेरे घर कृपा करि के पधारे। सो मोसों बन्यो सो मैनें कियो। अब तेरे ठाकुर हैं सो तेरे मन में आवे सो तू करियो, अब सोय रहो। प्रातःकाल सवारे पधराइयो। तब सोयो। परि नींद न आई। जो-डोकरी मेरे सुंदर ठाकुर देखि कै लियो चाहत है। सो कब सवारो होइ और कब मैं अपने श्रीठाकुरजी कों ले जाउं। और डोकरी कों हू मारे चिंता के नींद न आई। ऐसे श्रीगुसांईजी के

सेव्य श्रीठाकुरजी मारग में सीत बोहोत है, फेरि अकड़ि जाइंगे तो सूधे कोन करेगो ? यह तो विरक्त है। याके पास कछू सामग्री बस्तु नाहीं है। सो तो माने नाहीं। अब मैं कैसे करों ! श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी कों अकड़े देखेंगे तो याके ऊपर खीजेंगे। कहा जाने कैसी होइ ? याकों तो ज्ञान नाहीं है।

सो या प्रकार दोऊन कों चिंता करत करत घड़ी दोई रात्रि रही तब वा विरक्त वैष्णव ने उठि कै डोकरी सों कही, जो-बेगि उठि, न्हाय कै मंगला करि। मैं हू तलाव पर जाय के न्हाइ आऊं। सवारो होत ही यह सगरो संग चलेगो तामें मैं जाऊंगो। तब डोकरी उठि कै देहकृत्य करि कै न्हाई। और उह वैष्णव तलाव पर जाइ कै देहकृत्य करि कै न्हाइ के अपरस में आयो। या डोकरी ने श्रीठाकुरजी कों जगाय मंगला भोग धस्यो। पाछें मंगल-भोग सराय कै वैष्णव के श्रीठाकुरजी झांपी में पधराय दिए। रजाई नीचे और बिछाई, दोई रजाई ऊपर अधिक उढ़ाई। बिनती करी, जो -महाराज ! मारग में आछे रहियो। मैं कहा करों ? वैष्णव के राखिवे कौ बोहोत जतन कियो। परंतु वैष्णव रह्यो नाहीं। तुम हू भले वैष्णव के पाले परे हो ! जो-तुम्हारी ऐसी दसा भई। परंतु अब कैसी होईगी! सामग्री देउंगी, तो यह वैष्णव है। कर देगो नाहीं। ऐसे कहि कै नेत्रन में जल भरि लीनो। पाछें वैष्णव कों बुलाई कै कही, जो-वैष्णव मैंनें दोई रजाई तामें बिछाई हैं और दोई उढ़ाई हैं।

सो जतन सों श्रीठाकुरजी कों राखियो । और लोंग, जायफल, कस्तूरी, बदाम, धरि राखी हैं । सोंठ मेथी की सामग्री करियो। सो सीतकाल पर्यंत नित्य आरोगाइओ । देखियो, जो-फेरि पीरे न होंइ जाय । हाथ पांव टेढ़े होइ जाइंगे तो श्रीगुसांईजी कों कहा जुवाब देइगो ? तातें सावधान होइ रहियो । मैं तो तुम्हारो कियो सहि लीनो, परंतु श्रीगुसांईजी न सहेंगे । तब वैष्णव ने कही, जो-झांपी आगे ल्याउ । मैं चरन परस करि अपने श्रीठाकुरजी कों देख लेऊं । तब डोकरी ने श्रीठाकुरजी की झांपी आगें धरि । तब वैष्णव ने झांपी खोलि कै देखि । सो देखे तो स्याम स्वरूप हैं । श्रीठाकुरजी दोई चरनारविंद सों ठाढ़े हैं । मुरली मनोहर हैं । तब वैष्णव ने कही, जो-अरी डोकरी ! मेरे तो गौर स्वरूप श्रीबालकृष्णजी हते ! हाथ में लडुआ लिये । सो तू बेगि ल्याउ । मेरे श्रीठाकुरजी पलटि लिये हैं । तेरो मन झघड़ो करिवे कौ है । जो-ये अपने ठाकुर लै और मेरे ठाकुर ल्याऊ । तब या डोकरी ने कही, जो-अरे वैष्णव ! तू बावरो भयो है । और भांति के ठाकुर देखे न सुने । तैनें बड़ो झघड़ो मचायो । एक तो श्रीठाकुरजी कों पीरो कर्‍यो । सो हाथ पांव अकड़ि गये हते सो मैंने तेल मसल कै स्याम स्वरूप किये । हाथ पांव सूधे किये । श्रीठाकुरजी कों श्रम करवायो । श्रीगुसांईजी कौ सेवक जानि कछू बोली नाहीं । याही प्रकार सेवा करत है ? सीतकाल में श्रीठाकुरजी कों ले

के निकस्यो। तब वैष्णव ने कही, जो-मेरो संग मेरे श्रीठाकुरजी कों पहचानत है। तू संग में चलि, उनसों पूछि देखि। तब डोकरी कों ले कै वैष्णव संग में आयो। तब सगरे वैष्णवन ने कही, जो-याके तो गौर स्वरूप श्रीबालकृष्णजी हते। यह तो स्याम स्वरूप हैं ? तब डोकरी ने मन में कही, जो-संग तो सगरो या वैष्णव की ओर है। और अब मैं कैसें करों ? तब यह डोकरी झांपी ले कै घर आई। तब वैष्णव ने कही, मेरे श्रीठाकुरजी ल्याव, नांतर मैं माथो फोरत हों। जो-ऐसे जानतो, तो तेरे घर काहे कों पधरावतो ? तातें बेगि ल्याऊ, नांतर मैं तेरे ऊपर हत्या देउंगो। तब डोकरी डरपि कै श्रीठाकुरजी की झांपी ले भीतर जाय श्रीठाकुरजी सों कही, जो-महाराज ! बड़ो झगड़ो लगायो। अब मैं कैसी करों ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो-यह झगड़ो तो श्रीगुसांईजी मिटावेंगे। तातें तू या संग में अपने श्रीठाकुरजी कों ले कै चलि। तब डोकरीने कही, जो-महाराज! तुम भले पधारे। ऐसें सीतकाल में मेरे श्रीठाकुरजी अकड़ि जाय तो मैं कहा करों ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो-यह विरक्त है, मारग में कछु वस्त्र सामग्री नाहीं बनि आवे। तातें मैं कैसें करों ? तू रजाई इकठी करि, सामग्री लै कै तत्काल चलि। नांतर वैष्णव माथो फोरत है। और दूसरो उपाय नाहीं। तब डोकरी ने बाहिर आइ कै वैष्णव सों कही, जो-अब मैं गाड़ी भाड़े करि तैयारी करों। तेरो मेरो झघड़ो

श्रीगुसांईजी मिटावेंगे । आपुन श्रीगोकुल श्रीठाकुरजी कों पधराय के ले चलेंगे । तब वैष्णव संग में जाय गाड़ी भाड़े करि ल्याओ । तब डोकरीने वैष्णवन कों तथा चाकरन कों संग लें अपने श्रीठाकुरजी तथा वैष्णव के श्रीठाकुरजी पधराये । रजाई दस तथा फरगुल, रूई के बागा तथा लोंग, जायफल, कस्तूरी, बादाम सोंठि लडुवा सामग्री लिए । घर एक प्रामानिक वैष्णव कों सोंपि के तारा लगाय के वा संग में वैष्णव के संग आई । वा वैष्णव कों अपने संग गाड़ी में बैठाई संग चली । सो मारग में नित्य लरत जाँई । वैष्णव कहे, जो मेरे श्रीबालकृष्णजी तेनें पलटि लीने हैं । डोकरी कहे, जो-तू याही प्रकार सेवा करत है । सो श्री ठाकुरजी के हाथ पांव अकड़ि गये हैं । सो सीत सों श्रीठाकुरजी पीरे पड़ गये हैं । अब सांचो है तो देखि श्रीगुसांईजी कहा कहेंगे ? सो या भांति नित्य झघड़ो करत करत श्रीगोकुल आए । सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग आर्ति के दरसन किए । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर कराय के अपनी बैठक में गादी तकियान पर बिराजे । तब वा विरक्त वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! या डोकरी ने मेरे श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी आपु पधराय दिए हते सो पलटि लिये । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो - डोकरी कैसे है ? यह वैष्णव कहा कहत है ? तब डोकरी ने कही, जो-महाराज ! ऐसे के हाथ

श्रीठाकुरजी मति पधरायो करो । सीतकाल में श्रीठाकुरजी कों ले निकस्यो है । सो वस्त्र सामग्री भेली नाही है । तातें जाड़े में श्रीठाकुरजी कों पीरे कियो । और हाथ पांव अकड़ि गए हते । सो मैंने तेल में जायफल कस्तुरी मिलाय कै मिसले, दुहरी अंगीठी आगें धरी तब श्रीठाकुरजी सूधे भये । ता पर यह वैष्णव झगड़ो करत है । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो श्रीठाकुरजी कहां हैं ? तब डोकरी कहे, जो-मेरे पास झांपी में । याके और मेरे हू श्रीठाकुरजी सोए हैं । सो आप या वैष्णव कों समझाय कै झघड़ो मिटाय देऊ । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-श्रीठाकुरजी की झांपी हम कों देऊ । तब डोकरी ने झांपी श्रीगुसांईजी के आगे धरी । तब श्रीगुसांईजी ने वा वैष्णव और डोकरी सों कही, जो-तुम यहां ही बैठियो । तब आप झांपी ले कै कोठा भीतर पधारे । पाछें झांपी खोली । तब श्रीगुसांईजी ने श्रीठाकुरजी सों पूछी, जो-बावा ! यह कहा है ? तब वैष्णव के श्रीठाकुरजी ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-डोकरी कों दूसरी भांति आई । जो-श्रीठाकुरजी और भांति के न होंइगे । तब तेल मसलन लगी । जब मैं सूधो भयो, दोऊ चरनकमल सूधे करे । तब वैष्णव ने देख कै झगड़ो कर्‍यो । तातें तुम या वैष्णव कों समुझावो, जो मोपें या डोकरी को हेत प्रसन्नता अत्यंत है। वात्सल्य स्नेह बोहोत है । जो-मो बिना और कछू जानत नाहीं है । तब श्रीगुसांईजी ने या वैष्णव सों कही, जो वैष्णव ! यह

स्यामस्वरूप मुरली मनोहर तेरे हैं। याके भावतें ऐसें होइ गये हैं। यह डोकरी सांची है। तेरो मन लालजी में होइ तो हम दूसरे श्रीबालकृष्णजी पधराय देई। इन स्वरूप कों हम राखे। तब या वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! हम कितनेक दिन सों सेवा करत हैं परंतु श्रीठाकुरजी रंचक हू अनुभव नाहीं जनायो। और या डोकरी ने एक दिन में श्रीठाकुरजी बस किये ? तब श्रीगुसांईजी कहें, जो-यह पुष्टिमार्ग में प्रमान नाहीं। ऐसे ही जनम बितीत होइ जाई। जहां तांई स्नेह न होंई तहां तांई श्रीठाकुरजी अनुभव नाहीं जनावे। जो स्नेह होइ तो श्रीठाकुरजी एक क्षन में प्रसन्न होई।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-प्रभु तो भावप्रीति के आधीन हैं। कोऊ कितनी हू आचार क्रिया करो, रीति अनुसार सेवा-सुमिरन हू करो, परिप्रीति न होंई तो श्रीठाकुरजी अनुभव न जनावे। और पुष्टिमार्ग में काल-नियामक नाहीं है। जो इतने दिन, इतने काल पर्यंत सेवा करे तब श्रीठाकुरजी अनुभव जतावे, ऐसो नाहीं है। या पुष्टिमार्ग में तो भगवद् अनुग्रह ही एक नियामक है। तातें भगवदनुग्रह होंई तो एक छिन में प्रभु अनुभव जतावे, यह कहे।

तब उह वैष्णव या डोकरी के पांवन पर्‌यो। और कही, जो-मैंने तुम्हारो स्वरूप जान्यो नाहीं। तुम पर क्रोध कियो। अनेक बचन कहे। तातें मो पर कृपा करो। सो मो पर श्रीठाकुरजी सानुभाव होंई। मैं सगरो जनम योंई गमायो। तातें भगवदीय के संग मैं मौन उपज्यो। तब डोकरी ने कही, जो वैष्णव ! ऐसे मति कहो। मो पर तुमने बड़ी कृपा करि। या प्रकार तुम हम झगड़ो न करते तो मैं श्रीगुसांईजी के दरसन

तथा श्रीगोकुल के दरसन तथा श्रीजमनापान कैसे करती ? तातें वैष्णव कों श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी करत हैं सो आछौ ही करत हैं, जामें जीव कौ कल्यान होई ।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो वैष्णवन कौ झघड़ो हू प्रभुन कों रुचत है । और झघड़ो होंई सो हू कृपा करनार्थ जाननो । सो वा झघड़ा के मिष तें या डोकरी कों ब्रज, श्रीयमुनाजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भए । नांतर ठाकुर उहांई या भेद कों खोलि कै डोकरी सों कहते, तो डोकरी श्रीगोकुल कैसे आवती ? तातें यह जाननो, जो-वैष्णव कौ झघड़ो हू कृपा करनार्थ है ।

तातें वैष्णव तुम्हारो मन होय तो श्रीठाकुरजी कों न्यारे पधरावो । जहां इच्छा होई तहां सेवा करो । और तुम्हारो मन प्रसन्न होई तो मेरे पास रहि सेवा करो । दोऊ जनेन के श्रीठाकुरजी संग बिराजेंगे । मेरो मन तुम ऊपर प्रसन्न है । काहेतें ? जो-तुमने श्रीठाकुरजी के ऊपर झगड़ो कर्‍यो । श्रीठाकुरजी में प्रीति हती तब झगड़ो कर्‍यो। तातें तुम्हारो मन तो श्रीठाकुरजी में बोहोत है । ऐसे वैष्णव कौ संग तो एक क्षन हू दुर्लभ है । तब वैष्णव ने कही, जो-मैं तुम्हारे पास रहूंगो। तुम्हारे संग तें मोपर श्रीठाकुरजी कृपा करेंगे । तुम धन्य हो । में तुम सों इतनी द्वेषबुद्धि करी और तुमकों अवगुन नाहीं आयो। भगवदीय के लक्षन सुने हते । सो देखे । पाछें श्रीगुसांईजी दोऊन कौ झगड़ो मिटाय कै झांपी डोकरी कों दीनी । और कही, जो-तुम दोऊ इकठोरे रहियो । तब वा विरक्त वैष्णव ने कही, जो महाराज ! जहां लगि मैं जीउंगो तहां तांई इनके घर में रहूंगो । ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन कों

पधारे। सो भोजन करि आचमन करि बीड़ा आरोगी कै दोऊन कों जूंठनि की पातरि धरी। सो दोऊ जनेन महाप्रसाद ले कै आयके दंडवत् कर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों उगार दिये। पाछें कछूक दिन श्रीगोकुल में रहि कै ब्रजयात्रा करी। पाछें श्रीगोकुल में आइ कै रहे। पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कै विरक्त वैष्णव वा डोकरी के घर आयो। सो जीवन पर्यंत श्रीठाकुरजी की सेवा वा डोकरी के घर रहि कै करी।

भावप्रकाश - सो भगवदीय तादृसी वैष्णव, की संगति ऐसी है। सो उह विरक्त लरत हतो परि संग तें याकी बुद्धि फिरी।

सो उह डोकरी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२२३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक सेठ, दासी तथा सेठ कौ बेटा, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इनके नाम 'प्रभालल्ली' 'महाविद्या' और 'आशा' है। सो 'प्रभालल्ली' यहां सेठ भयो और 'महाविद्या' दासी कौ प्रागट्य जाननो और 'आशा' सेठ कौ बेटा। ये तीन्यों 'नंदा' तें प्रगटी हैं। तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते। तब वा सेठ के घर उतरे। सो उह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हतो। सो सेठ, सेठ की बहू तथा सेठ की दासी इन तीन्योंन कों श्रीगुसांईजी नाम ब्रह्मसंबंध करवाये हते। सो वा सेठ के माथे सेवा पधराये हते। सो वे तीन्यों जनें मिलि कै अपने ओसरा,

ओसरा, सों सेवा करन लागे। तब कितनेक दिन सेवा करत करत भए। ता पाछें भगवद्-इच्छा तें सेठ और सेठानी की देह छूटी। तब उह सेठ भगवद् चरणारविंद में प्राप्त भयो। सो उह सेठ अपने बेटा सों कहि गयो हतो, जो-बेटा ! तू या दासी सों माजी कहि कै बोलियो। जो-याके ऊपर श्रीठाकुरजी की बड़ी कृपा हैं। और सेवा के कार्य में सावधान रहियो। और यासों पूछि कै कामकाज करियो।

सो ऐसें करत कितनेक दिन में संग एक श्रीनाथजी के दरसन कों चल्यो। तब वा सेठ के बेटा ने दासी सों पूछ्यो, जो-तुम कहो तो यह संग जात है सो मैं हू ब्रजयात्रा करि आऊं? तब दासी ने कह्यो, जो-बेटा ! तेरे भाग्य में ब्रजयात्रा नाहीं है। पाछें वह प्रसाद ले कै आय कै दुकान ऊपर बैठ्यो। सो मुनीम आदि सब वैष्णव हते। परि उह सेठ काहू सों बोले नाहीं। तब महेता ने सेठ सों पूछी, जो-आज तुम्हारे मन में कहा उद्वेग है ? सो काहू तें बोलत नाहीं ? सो यातें जो होय सो हमसों कहिए। तब सेठ ने कह्यो, जो-यह संग श्रीनाथजी के दरसन कों जात है। सो मैं माजी सों पूछ्यो, जो-मैं जाऊं? तब माजी ने नाहीं कीनी। ता बात कौ मोकों विचार है। जो-मैं गयो होतो तो श्रीनाथजी की सेवा-दरसन करतो। तब मुनीम ने कही, जो तुमकों जानो होय तो सुखेन जाऊ। तुम कहो सो तैयारी करि देइ। यामें माजी कों कहा पूछनो ? पाछें मुनीम

ने सब तैयारी करि दीनी। तब उह सेठ कितनेक मनुष्यन कों संग ले चल्यो। सो श्रीनाथजी द्वार के आधे रस्ते जाइ पहोंच्यो। तब एक राजा के मनुष्य सों लड़ाई भई, सो वह राजा जोरावर हतो। सो वाने सब कों केद किये। पाछें कितनेक दिन वा सेठ कों राखि कै और सबन कों सीख दीनी। तब उह संग चल्यो। सो कितनेक दिन में संग जाइ पहोंच्यो, श्रीनाथजीद्वार। तब सबन ने श्रीनाथजी के दरसन किये। पाछें ब्रजयात्रा करि और जो मनोरथ करनो हतो सो करि कै पाछें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी सों विदा होइ कै चले। सो कितनेक दिन में वा सेठ के पास आय पहोंचे। तब राजा ने वा सेठ कों रजा दीनी। तब सेठ ने संगवारे वैष्णवन सों कही, जो तुम तो ब्रजयात्रा करि आए। और मैं रहि गयो। तातें मैं जाउं। तब सब वैष्णवन ने कह्यो, जो-अब तुम कहां जाउगे ? तातें अब तो कोई संग में जइयो। और ये जमुना जल ले कै कंठी प्रसाद ले कै पाछें फिरो। तब वह सेठ पाछें फिर्‌यो। सो अपने घर आए। तब माजी सों कही, जो - मैं ब्रजयात्रा करि आयो, जो-यह जमनाजल कंठी प्रसाद लेऊ। तब माजी ने कही, तू झूंठो है। ब्रजयात्रा को गयो नहीं है। यह कंठी प्रसाद तो संग में तें लियो है। तोकों तो वा राजाने केद कियो हतो। अब तू झूंठ क्यों बोलत है ? तब उह सेठ कौ बेटा दीन होंइ कै माजी के पाँवन पर्‌यो। और कह्यो, जो माताजी ! मैंने तुम्हारो कह्यो न मान्यो तातें

मोकों दरसन भयो नाहीं । सो तुमने कही, जो मेरे भाग्य में दरसन नाहीं है ? सो कैसें खबरि परी ? मोसों विस्तार करि के कहो । तुम भगवदीय हो, तातें सांची बात कहो । अब तो तुम कहोगी सो मैं करूंगो । तब माजी ने कह्यो, जो-सारस्वत कल्प में कृष्ण अवतार भयो, तब रासक्रीडा भई । तब श्रीठाकुरजी ने रास कीनो । तब मेरो हथनी कौ अवतार हतो। सौ मैंने झीनी आंखिन सों सब ब्रजभक्त सहित और पसु-पंच्छी देखे हते । तब तिन में तोकों नहीं देख्यो हतो । सो रासक्रीडा में जो जीव होंइगे । तिन कों ब्रजयात्रा तथा श्रीनाथजी के दरसन होइंगे ।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-ब्रज सगरो अलौकिक है । और मूल मैं संबंध होंई तो ब्रज के दरसन होंई ।

अब मैं कहूं सो सुनि । पहले तो तू झूंठ मति बोलियो । झूंठ बोलेगो तो श्रीगुसांईजी तो पर अप्रसन्न होईगे । और अब तू वैष्णवन की सेवा करियो । तब वैष्णव सब तो पर प्रसन्न होइ आसीरवाद देंगे तब तोकों ब्रजयात्रा तथा श्रीनाथजी के दरसन होंइगे । तू कोई कौ दोष मति देखे । और वैसे तू लाख रुपैया खर्चेगो तोहू तोकों दरसन नाहीं होंईगे । तातें तू वैष्णव की सेवा करि ।

भावप्रकाश - यामें वैष्णव की सेवा कौ उत्कर्ष कहे, जो वैष्णव की सेवा तें ब्रजलीला में प्रवेश होंई, ब्रज के सौभाग्य कों पावे । ऐसो सेवा कौ महात्म्य है ।

तब वा सेठ ने एक नई हवेली बनवाय के नित्य हवेली में

वैष्णवन कों उतारन लाग्यो। पाछें सब वैष्णवन की भलीभांति सों सेवा करतो। वैष्णवन कों जो चाहिए सो देतो। भगवद् वार्ता सुनतो। और नित्य बिनती करतो, जो-तुम कृपा करोगे तब ब्रजयात्रा तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन होइगो। जो मेरे भाग्य में दरसन नाहीं है। तब ऐसे करत कोईक दिन में कृपा करि कै वैष्णवन ने कही, जो-तू जा, तोकों श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी के दरसन होइंगे। अब तुम तैयारी करि सुखेन जाउ। तब उह सेठ कितनेक मनुष्य कों संग ले कै चल्यो। सो कितनेक दिन में श्रीनाथजीद्वार आय पहोंच्यो। सो श्रीनाथजी के दरसन खुले तब सेठ ने दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजी कों अनोसर कराय कै पर्वत तें नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी - तकियान के ऊपर बिराजे। तब सेठ ने आय कै दंडवत करि बिनती करी, जो-महाराज। कृपा करि कै मेरी भेट राखिये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किए, जो तुम महाप्रसाद यहां ही लीजियो। पाछें दूसरे दिन वा सेठ ने बिनती करी, जो-महाराज! कृपा करि कै मोकों ब्रह्मसंबंध करवाइये। तब आपु आज्ञा किए, जो-तू काल्हि ब्रत करियो। परसों ब्रह्मसंबंध करवावेंगे। सो तब उह सेठ दूसरे दिन ब्रत करि, पाछें अपरस वस्त्र पहरि कै श्रीगुसांईजी के पास आयो। सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के सानिध्य तुलसी हाथ में दे कै ब्रह्मसंबंध करवाये। पाछें

श्रीनाथजी के चरणारविंद में तुलसी समर्पी। पाछें श्रीनाथजी को अनोसर कराय कै श्रीगुसांईजी आप श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे। सो अपनी बैठक में गादी-तकियान के ऊपर बिराजे। तब सेठ ने आय कै भेट करी। पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोजन कों पधारे।

सो श्रीगुसांईजी भोजन करि कै मुख सुद्धार्थ आचमन करि कै बीड़ा आरोगि के अपने हस्त सों वा वैष्णव कों जूठनि की पातरि धरी। तब वा सेठ ने महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे। तब उह सेठ हू श्रीनाथजी की भेट करि बिदा होंइ कै श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आयो। आप श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपन के दरसन करे। तब यथा-सक्ति भेट कीनी। पाछें कितनेक दिन उहां रहि कै श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि ब्रजयात्रा कों गयो। सो कितनेक दिन में संपूरन ब्रजयात्रा करि श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किए। तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-ब्रजयात्रा करि आए ? तब कही, जो-राजा की कृपा सों भई। पाछें कितनेक दिन उहां रहि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज आप की आज्ञा होंई तो मैं अपने देस कों जाऊं। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए , काल्हि तुमकों बिदा करेंगे। तब दूसरे दिन बिदा होई श्रीगुसांईजी कों भेट धरि बिनती करी, जो-महाराज ! मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजत हैं।

तातें अब आज्ञा होंई तो मैं सेवा करों। तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो-अब तुम सुखेन सेवा करियो। पाछें कंठी जमुनाजल प्रसाद ले घर आयो। सो वैष्णवन की मंडली में दियो। और सबन कों महाप्रसाद लिवाए। पाछें वैष्णवन की आज्ञा मांगि के तथा सातों स्वरूपन की तथा श्रीगुसांईजी की भेंट काढ़ि के उह सेठ सेवा में न्हायो। सो दोउ जनें मिलि के सदा जीवन पर्यंत सेवा किए। तब श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जनावन लागे। जो-चहिए सो मांगि लेते। सो उह सेठ बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो। सो वा दासी के संगतें श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी के दरसन भए। ब्रजयात्रा भई। तब कल्यान भयो। सर्व मनोरथ पूरन भये।

भावप्रकाश — तातें वैष्णव कों भगवदीयन कौ संग करनो।

सो उह सेठ श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिएवार्ता ॥२२४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक स्त्री-पुरुष ब्राह्मन, पूरव में रहते, जाकी स्त्री कों श्रीगोवर्द्धननाथजी याही देह सों ले पधारे, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये स्त्री-पुरुष दोऊ तामस भक्त हैं। लीला में स्त्री कौ नाम 'नवांकुरी' है। सो इनकौ रूप बोहोत ही सुंदर हैं। प्रतिछिन इनकी देह में भाव के नवीन अंकुर उत्पन्न होत हैं। तातें ये श्रीठाकुरजी के मन कों हरति हैं। और नवांकुरी की एक सखी और है। उनकौ नाम 'चंचला' है। सो यहां पुरुष भयो। ये दोऊ 'नंदा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें

श्रीजगन्नाथजी के दरसन कों पधारे हते । तब इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए । तब इन ब्राह्मनने श्रीगुसांईजी कों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों नाम सुनाइए । और कृपा करि कै मोकों अपनी सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी उन स्त्री-पुरुषन कों आज्ञा किए, जो-आगे आवो । तब श्रीगुसांईजी आप उन स्त्री-पुरुषन कों नाम सुनाए । ता पाछें उन ब्राह्मन ने यथा-सक्ति भेट करी । तब दूसरे दिन उन स्त्री-पुरुषन कों उपवास कराए। पाछें ब्रह्मसंबंध कराये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन किए । सो मुख सुद्धार्थ आचमन करि कै बीड़ा आरोगे । और सब ब्रजवासी सेवक टहलुवान कों महाप्रसाद लिवायो । पाछें वे स्त्री-पुरुष दोऊ जनें महाप्रसाद लिए । पाछें वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय दीजिए । सो मैं सेवा करूंगो। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वा ब्राह्मन के माथे सेवा पधराइ दिए । और सब सेवा की रीतिभांति सिखाई । तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये । सो श्रीगोकुल पधारे । सो वे ब्राह्मन स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी की कृपा तें भले भगवदीय भए ।

सो वा ब्राह्मन की स्त्री कौ श्रीगुसांईजी विषे बड़ो दृढ विश्वास हतो । सो ताके लिए श्रीगोवर्द्धननाथजी उन की सेवा

मानते। और उन की समर्पी बस्तू श्रीप्रभुजी अंगीकार करते। और भगवद् सेवा कौ कार्य जो करते सो ताप-स्नेह सों करते। और अपने हाथ सों सब सेवा करते, जो-चारि पहर करते। और रात्रि में दोनो स्त्री-पुरुष भगवद्वार्ता करते। सो ऐसे करत बोहोत दिन भए।

सो एक समय पूर्व देस के सब वैष्णव मिलि कै ब्रजयात्रा करिवे कों चले। सो ता समय दोऊ स्त्री-पुरुष हू श्रीनाथजी के दरसन करिवे कों चले। सो कछूक दिन में श्रीनाथजीद्वार आइ पहोंचे। सो श्रीगोवर्द्धन पर्वत के ऊपर चढ़े। सो ता समय संध्यार्ति कौ समय हतो। सो ता समय भीर बोहोत हती। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर के किवाड़ खुले। सो ताही समय दोऊ स्त्री-पुरुष मणि कोठा के भीतर धसे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के श्रीमुख की झांकी भई। परि आछे दरसन नाहीं भए। तब वह स्त्री अपने मन में बहोत ही पश्चाताप करन लागी। और अपने मन में कहन लागी, जौ-मैं इतनी दूरि सों परम दुर्लभ ऐसे दरसन के अर्थ आई। और भीतर हू गई। परि तो हू आछे दरसन न भए। सो या भीर में कहूं खूंदि जाऊं तो कैसी करूं। तातें तुम मोकों श्रीगुसांईजी की का'नि ते दरसन देऊ। सो स्त्री की या प्रकार की आर्ति जानि श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु मंदिर में तें उठि कै भीर में धसि कै वा ब्राह्मन की स्त्री कौ हाथ पकरि कै निज-मंदिर में ले

पधारे। सो पीठक की ओर तहां और हू ब्रजभक्त बैठे हते । सो ता ठौर श्रीगोवर्द्धननाथजी याकों बेठारे । और आप 'आदि देव' के से हैं तैसें वाकों दरसन दिए । जो-ऐसी कृपा करी । तब श्रीगुसांईजी आपुतो मंदिर में ठाढ़े हते सो यह बात जानी देखी। और तो कोऊ या बात में समझे नाहीं । सो दरसन कों आए हते सो किए । ता पाछें टेरा आयो । तब सब लोग बाहिर आए। तब उह ब्राहन अपनी स्त्री कों ढूंढन लाग्यो । परि कहूं पाई नाहीं । तब ऐसे करत सेन आरती के दरसन व्है चुके । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु तो पोढ़े । ता पाछें श्रीगुसांईजी सब भीतरिया और वैष्णव पर्वत तें नीचे उतरे । और श्रीगुसांईजी आपु तो अपनी बैठक में गादी-तकियान के ऊपर बिराजे । तब ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मेरी स्त्री तो सुंदर रूपवती हती । और नवजोबन है । सो ताही तें आप के गाम में काहू ने राखी होंई तो आपु या बात की ठीक करोगे । और पूछो तो भली बात है । जो-मेरी स्त्री ऐसी व्यभिचारिनी नाहीं है । मैनें बोहोत ढूंढ़ी परि पाई नाहीं । और न जाने उह कहां है ? तब श्रीगुसांईजी ने सेवकन के देखत कह्यो, जो-जहां होंइगी उहां ठिकाने सिर ही होइगी। तातें अब तुम कछू चिंता मति करो । और कहूं गाम में ही होइगी । पाछें उह ब्राह्मन गयो । सो तरहटी के सब गाम में खोज करि कै सब कुंज में सब ठौर देखि कै आयो । परि उह

पाई नाहीं । तब उह ब्राह्मन रोमत रोमत श्रीगुसांईजी के पास आयो । तब श्रीगुसांईजी आप सों सब समाचार कहे, जो-महाराजाधिराज ! मैं तो सब ठौर देखि आयो हूं । परि उह कहूं नहीं पाई । तब श्रीगुसांईजी आप एकांत में वा ब्राह्मन सों कहे, जो-तेरी स्त्री तो ठिकाने सिर है । सो तू रोवे मति । और कछू चिंता मति करें । हम तोकों मिलावेंगे । सो ऐसे श्रीगुसांईजी ने वा ब्राह्मन को बोहोत समाधान कर्‍यो । और कह्यो, जो-तू सवेरे कौ भूखो है, कछू खायो नाहीं है । सो रात्रि प्रहर डेढ़ हो गई है । सो यातें तुम महाप्रसाद लो । ता पाछें तेरी स्त्री कों मिलावेंगे । सो ऐसे बोहोत ही समाधान कर्‍यो । परि उह तो रोमत तें रहे नाहीं । और कही, जो-महाराज ! मैं तो अपनी स्त्री कों बिनु देखे जलपान न लेउंगो और हों तो महाप्रसाद नहीं लेउंगो । जो-मेरी स्त्री तो परम कृपापात्र भगवदीय है । सो दिन में भगवद् सेवा करती और रात्रि में भगवद्वार्ता करती। सो ऐसे काल निर्वाह करती । सो याहीतें मैं कौन अपराध कियो है सो मैं इकेलो रह्यो ? सो हों अब कैसे जीउंगो? सो मोकों ऐसो संग मिलनो दुर्लभ है । जो-मैं तो स्त्री कों नाहीं रोमत हूं । गुन वैष्णवताकों रोमत हूं । और अब मेरी कौन गति होइगी ? तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मन सों कह्यो, जो-तू काहे कों रोमत है । जो-तेरी स्त्री तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की पास है । वाकों तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने अंगीकार

कियो है। जो वाकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन नाहीं भए हते। सो भीर बोहोत हती, तब वाकों ताप-क्लेस भयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वाकों हाथ पकरि के ले गए। सो पीठक की ओर और हू ब्रजभक्त बैठे हते! सो तिन में ले जाइ के वाकों बैठारे। सो श्रीआचार्यजी की का'नि तें श्रीनाथजी आपु वाकों आधिदैविक रूप सों दरसन दीने हैं। और वाकौ हाथ पकरि कै ले पधारे हैं। अब तो उह निजधाम में प्राप्त भई है। और ब्रजभक्तन सों मिली है। सो ए सब निजधाम में मंदिर में ठाढ़े हैं। परि बोलत नाहीं। सो अब या बात में कौन बोले? और कोई तो या बात में जाने हू नाहीं है ? तब वा ब्राह्मन ने बिनती करी, जो-महाराज ! यह तो आपने कही, जो-उह तो निजधाम में लीला में प्राप्त भई है। सो लीला तो या देह सों परे है, सो या देह सों तो भगवद्लीला के दरसन नाहीं होत हैं। सो ऐसें आप के बचन योग्य है ? जो-या देह सों तो भगवद्लीला में कैसे पहोंचे ? तब श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मन सों कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वाकों प्रमेय बल तें ले पधारे हैं।

भावप्रकाश — यह कहि यह जताए, जो-प्रभु कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्य युक्त हैं। तातें, जो - चाहे सो करे। यामें संसय करनो नाहीं।

तब श्रीगुसांईजी सों वाने बिनती करी, जो-महाराज ! आपु मेरो ऐसे समाधान करत हो परि मैं तो एक बार वाकों देखोंगो तब मानूंगो। तब श्रीगुसांईजी आपु वाकों कहे, जो-तू

महाप्रसाद ले, पीछे तेरी स्त्री कों मिलावेंगे। तब वा ब्राह्मन ने कही, जो-महाराज ! मैं तो महाप्रसाद नाहीं लेउंगो। जो-मैं तो अपनी स्त्री कों देखे बिना जल-पान हू न करूंगो। तब श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मन कौ हाथ पकरि कै परासोली की ओर ले पधारे। तब तहां चंद्रसरोवरि में चोतरा के ऊपरि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भए। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! या ब्राह्मन की स्त्री कों दिखाई देऊ तो ये खानपान करे। जो यह बोहोत रोमत है ? तब श्रीनाथजी आपु वा ब्राह्मन कौ हाथ पकरि कै ले पधारे। तब तहां एकांत स्थल में जहां सकल जूथ समूह बैठे हैं तहां वाकी स्त्री श्रीस्वामिनीजी के निकट सखीन पास ठाढ़ी हती। सो दिखाई। और कहे, जो-यह तेरी स्त्री है। और वा स्त्री सों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-यह तेरो पति आयो है। सो याकों उत्तर दे। ऐसें कहि कै दिखाई। तब वा ब्राह्मन ने अपनी स्त्री सों कही, जो-अब तू मेरे संग चलि। मेरो मन फिरत है। और मैनें जलपान हू नाहीं कियो है। सो अब तू यहां तें बेगि चलि। तब स्त्री ने कही, जो-अब तो मैं तुम्हारे साथ न चलूंगी। मेरे तो यहां पूर्व संबंधी मिले हैं। सो अब मेरे लौकिक सों प्रयोजन नाहीं है। तातें अब तुम अपने ठिकाने जाऊ। तब इतनो कहि कै पाछें उहां देखे तो कछू नाहीं है। और उहां उह स्त्री हू नाहीं है। और ब्रजभक्तहू नाहीं है। तब

श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मन सों कहे, जो-अरे ब्राह्मन ! अब तू यहां तें चलि । अब यहां तेरो काम नाहीं है । ता पाछें उह अपने डेराकों गयो । तब श्रीगुसांईजी आपुने वा ब्राह्मन कौ बोहोत समाधान कियो । पाछें वाकों महाप्रसाद लिवायो । तब वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी के आग्रह तें कछू थोरो महाप्रसाद लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो पोढ़े । तब वा ब्राह्मन कों बोहोत ही विरह ताप-क्लेश भयो और अत्यंत आतुरता भई । और नेत्रन में तें आंसून की धारा चली । सो और वैष्णव पास सोए हते तिन कों ताप लाग्यो । सो वे वैष्णव तो दूरि जाइ कै सोये । ता पाछें वाकों अत्यंत ताप भयो । सो वाके प्रान दसों द्वार तें निकसि गए । तब उह ब्राह्मन अपने संबंध में जाय कै मिल्यो ।

भावप्रकाश — सो कहा ? जो-निज स्वरूप सों लीला में प्राप्त भयो ।

तब इन ब्राह्मन कों सब वैष्णवन ने देख्यो । सो मर्‌यो पर्‌यो है । तब वैष्णवन ने सब समाचार श्रीगुसांईजी के आगें कहे । जो-महाराज ! या ब्राह्मन के नेत्र और मुख में तें अग्नि की सी ज्वाला उठी । सो उह सिरमे तें चढ्यो । सो हमकों ताप लाग्यो । सो हम तो उहां तें और ठौर जाइ के सोए । सो तातें अब तो याके प्रान निकसि गए हैं । और देह परि है । तब श्रीगुसांईजी ये समाचार सुनि कै बोहोत ही रोमांच भए । तब उन वैष्णवन सों आप श्रीमुख तें कहे, जो-ए दोऊ स्त्री पुरुष लीला में प्राप्त भए । और श्रीगोवर्द्धननाथजी के सानिध्य पहोंचे

हैं। अब इनकों कछू बाधा रही नाहीं है। और अब ऐसे वैष्णव होने परम दुर्लभ हैं। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख सों कहे, जो-तुमकों याकौ सूतक लगेगो नाहीं। जो-लौकिक रीति करो पाछें स्नान मात्र सों सुद्ध होउगे। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तीन दिन लों उदास रहे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी ने समाधान कियो। सो जब इन स्त्री-पुरुष की बात चलती तब श्रीगुसांईजी कौ हृदय भरि आवतो।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-या मारग में ताप-क्लेश विरह ही मुख्य साधन है। ताप-क्लेशपूर्वक कोऊ विरह करि भगवद्सेवा-दर्शन करे, तो प्रभु वाकों या भांति साक्षात् अंगीकार करत हैं। तातें वैष्णव कों ताप क्लेश विरह की भावना अहर्निस करनो। यह जताए।

सो वे स्त्री-पुरुष श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ॥२२५॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी एक सरावगी की बेटी, आगरे में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'निर्मला' है। सो इनकौ मन बोहोत ही 'निर्मल' है। छलकपट कछू जानति नाहीं। तातें श्रीचंद्रावलीजी या पैं बोहोत प्रीति करत हैं। और 'निर्मला' की एक सखी है। वाकौ नाम 'आतुरी' है। सो यहाँ पुरुष भयो सो ये दोऊ 'शीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

सो ये आगरे में एक सरावगी के जन्मी। सो ये वर्ष नव की भई। तब मा-बाप ने याकौ ब्याह जाति के लरिका सों कियो। सो दोऊ दैवी जीव हते। सो परम स्नेह सों रहते। पाछें बरस बीस कौ पुरुष भयो तब इनके मा-बाप मरे। तब ये दोऊ सुतंत्र घर में रहन लागे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते। सो

रूपचंदनंदा के घर बिराजे हते, अटारी पर । तब पृथ्वीपति के यहां सों काहू चोर कों सूरी कौ हुकम भयो हतो । तब तहां दस-पांच लुगाई जल भरिवे कों जात हती । सो तामें एक सरावगी की बेटी हती । सो ताने उह सूरी पै धस्यो देख्यो । तब देखि कै वाकों मूर्च्छा आई । सो श्रीगुसांईजी ने वाकों देखी। तब श्रीगुसांईजी ने एक ब्रजवासी कों आज्ञा दीनी, जो-या लरिकिनी कों उठाइ ल्यावो । तब वा लरिकिनी कों उठाय ल्याये । तब आपुने वा पैं जल छिरक्यो । तब याकों चेत भयो । तब आपु आज्ञा किए, जो-याकों जितनो रंग चढावो तितनो चढें । तब वा लरिकिनी ने कही, जो-कृपानाथ! आप के बिना ऐसो और कौन है, जो रंग चढावे ? तातें अब तो आप ही रंग चढावो तो भलो है । तब श्रीगुसांईजी वाकौ वचन सुनि बोहोत प्रसन्न भए । पाछें आपु कृपा करि वाकों नाम-निवेदन करवाये । तब वा लरिकिनी ने कही, जो-कृपानाथ ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तू सेवा करेगी ? तब वाने कही, जो-राज ! जैसे आज्ञा होइगी तैसे करूंगी । तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाके माथें श्रीठाकुरजी पधराई दिए । और सेवा की रीति भांति सब बताइ दिए । तब उह श्रीठाकुरजी कों पधराइ कै अपने घर कों गई । सो अपने घर कोठा में जाइ बैठी । बाहर बुलावे तो आवे नाहीं । और बोले नाहीं । तब वाकौ धनी उहां

आयो। तब वाने कही, जो-कहा है ? तब याने कही, जो मेरे पास मति आउ। मैं तो श्रीगुसांईजी की सेवकिनी भई हों। तेरी इच्छा होइ तो तुम हू श्रीगुसांईजी के सेवक होइ आऊ। तब वाहू के मन में आई। तब वाने हू जाई कै श्रीगुसांईजी के आगे बिनती करी। तब श्रीगुसांईजी वाहू कों नाम सुनाए। तब घर आई के कही, जो-मोकों हू कृपा करि कै श्रीगुसांईजीने नाम सुनायो। सेवक कियो है। तातें अब तुम कहो सो मैं करूं। तब वा स्त्रीने कही, जो यह घर खासा करो। तब वाने कही वैसे ही घर खासा कियो। तब श्रीठाकुरजी उहां पधराए। सो मंदिर की सेवा और रसोई की सेवा सब स्त्री करे। और उपर की टहल वाकौ धनी करे। सो ऐसे ही सदा करे। तब वा स्त्री ने पहले श्रीगुसांईजी सों बिनती करी ही, जो-आप के दरसन बिनु, मोसों रह्यो नाहीं जाइगो। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-यमुना जल भरिवे कों आवे तब मेरे दरसन करि जइयो। तब ऐसें करत कितेक दिन में वाकौ धनी भगवच्चरणारविंद में प्राप्त भयो। तब उह न्हाय कै बेठी चिंतातुर होंइ कै बिचारे जो अब कैसी करों ? तब श्रीठाकुरजी ने आज्ञा करी,जो अब उठि मेरी सेवा करि। सूतक निवृत्त होंइ तब अपरस काढ़ि डारियो। तब वाने आज्ञा प्रमान कियो। तब श्रीगुसांईजी वाकों इकली जानि दोइ ब्रजवासी समाधान के लिये भेजे। सो एक ब्रजवासी जप करतो। तब दूसरे सों कही, जो-तू जप क्यों

नाहीं करे ? तब वाने कही, जो-मैं तो गौमुखी घर भूलि आयो हूं। तब वाने कही, जो-मैं श्रीगोकुल जाऊं हूं सो लेत आउंगी। तब कही, जो-आछौ । तब श्रीगुसांईजी के दरसन करि, श्रीयमुनाजल भरि गौमुखी ले कै घर आई। तब ब्रजवासी कों आश्चर्य भयो। जो देखो मेरी गौमुखी अब ही श्रीगोकुल तें ले आई। तब वाने सब समाचार कहे। तब सबन कौ संदेह दूरि भयो। सो उह ऐसे सदैव सेवा करती।

भावप्रकाश — या वार्ता में यह जताए, जो-सेवा ऐसो पदार्थ है। सेवा तें अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त होत है। सो श्रीआचार्यजी ' सेवाफलविवरण ' ग्रंथ में लिखे हैं। ' सेवायाः फल त्रयम्। अलौकिकसामर्थ्यं, सायुज्यं सेवौपयिक देहो वा वैकुंठादिषु। 'तातें या सरावगी की बेटी में सेवा करि कै अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त भई है। तातें वैष्णव कों भगवत्सेवा बिना रहनो नाहीं, यह कहे।

सो उह सरावगी की बेटी श्रीगुसांईजी की ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२२६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव गुजरात कौ, जाने सब वैष्णव कों कपड़ा उढ़ाए, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये तामस भक्त हैं, लीला में इनकौ नाम 'गोपाली' है। ये 'चंद्रिका' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है। सो ये गुजरात में एक ब्राह्मन के जन्म्यो।

वार्ता प्रसंग - १

सो उह अकेलो हतो। सो एक समय ब्रज में आयो। तब श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिये। तब

श्रीगुसांईजी ने कही, जो-आगे आउ तब वह आगे आयो । पाछें आपने कृपा करि कै नाम सुनायो । तब दूसरे दिन ब्रत कराय कै ब्रह्मसंबंध करवाए । ता पाछें भोजन करि कै जूठनि की पातरि धरी । तब इन महाप्रसाद लियो । तब श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि कै उन वैष्णवन के माथे श्रीठाकुरजी की सेवा पधराय दीनी । और आज्ञा दिए, जो-इनकी सेवा करो । और श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै सेवा की रीति भांति सिखाई । तब श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों यह वैष्णव चल्यो । सो दरसन करि ब्रजयात्रा करि श्रीगोकुल आयो । फेरि श्रीगुसांईजी के दरसन किए । तब श्रीगुसांईजी सों बिदा होंइ कै गुजराति कों गयो । तब एक छोटे गाम में आयो । तहां एक दुकान करी । सो बड़े ही सवारे नित्य उठि परचारगी की सब तैयारी करे । पाछें न्हाइ कै सखड़ी अनसखड़ी, सब सिद्ध करि कै ता पाछें श्रीठाकुरजी कों जगावे । ता पाछें मंगलार्ति करि शृंगार करि पाछें राजभोग समर्पे । ता पाछें समय होई तब भोग सराइ वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवावे । और जो कोई वैष्णव आवतो तिन कों न्योतो देतो । और जो कोई अचानक आवतो ता दिन अत्यंत प्रसन्न होतो । और सखड़ी दोई जनें लेइ इतनी करतो। और एक पातरि आपु लेतो । एक पातरि गऊ कों देतो । और

अनसखड़ी सब राखतो। जो कोई अवेरो सवेरो वैष्णव आवतो सो तिन कों उह अनसखड़ी महाप्रसाद लिवावतो। ता पाछें महाप्रसाद ले कै दुकान पर जातो। सो उत्थापन के समय तांई उद्यम करतो। ता पाछें आय के उत्थापन तें सेन करि फेरि जलपानी सवेरे की तैयारी सोंज करि कै रात्र कों भगवद्वार्ता मंडली में जातो। सो कीर्तन सुनि कै घर आय कै सोइ रहतो। या प्रकार सेवा करतो।

भावप्रकाश — या वार्ता में वैष्णव की रीति बताए, जो-वैष्णव कों या भांति यथालाभ संतोषपूर्वक परम प्रीति सों भगवद्सेवा करनी और वैष्णवन पै ममत्व रखनो।

वार्ता प्रसंग - २

सो एक दिन पांच सात वैष्णव आए। सो बड़ी प्रसन्नता सों उन कों उतारि कै आपु आय के स्नान करि कै मंदिर तें गयो। पाछें सेन पर्यंत सब सेवा सों पहोंचि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। आछे बिछोना करि कै सबन कों सुवाय कै अपने घर में जितने कपड़ा हते सो सब बिछाय दिये। सीतकाल के दिन हते सो कछू उढ़ाइ दिए। बाकी के उन के सिरहाने धरि दिए। सो या प्रकार किए। और अपने तो धोवती आधी पहरी और आधी ओढ़ी। पाछें उन वैष्णवन ने यासों पूछी, जो-तुम्हारी पथारी कहां है ? तब इनने कही, जो घर में धरी है। परि घर में तो कछू नाहीं। पाछें वैष्णवन की सेवा करन लाग्यो। सो वैष्णवन के पांव दाबते-दाबते मध्यरात्रि भई। तब सब वैष्णवन ने कही, अब तुम सोइ रहो। तब घर

में जाइ के सोय रहे। पाछें इनने बिचारि कियो, जो जाली में तें पवन आवत है। सो इन वैष्णवन कों सीत लागतो होइगो। सो घर में एक कपड़ा को टूक हू न हतो। सो धोवती पहरे हुतो सो जालीन में खोंसी दीनी। और आप नांगे एक कौने में बैठि रह्यो। सो रात्रि घड़ी दोई पिछली रही तब उठि के आधी धोवती पहरी और आधी ओढ़ी। तब इतने में सब वैष्णव जागे। तब देखे तो आधी धोवती पहरे हैं और आधी ओढ़े हैं। तब वैष्णवन ने यासों पूछी, जो-तुम कहां सोए ? पथारी कहां है ? और दूसरो वस्त्र कछू दीसत नाहीं ? तब कही, जो-फलाने वैष्णव के घरतें मांगि ल्यायो हतो सो दे आयो। ऐसें झूंठे ही कही।

भावप्रकाश — सो झूंठ यातें बोल्यो, जो-वैष्णव कों क्लेस न होंई।

परि उन ने मानी नाहीं। कही, जो-वैष्णव कौ कैसो भाव है ? जो सगरे कपड़ा बिछौना आपुन कों दिए और ऐसें सीत में आपु एक धोवती में रहे। धन्य है। इन वैष्णव की दसा देखो ? सो ऐसे बोहोत ही सराहना उन वैष्णवन ने करी। पाछें उन वैष्णवन ने चलिवे की तैयारी करी। तब इन वैष्णव ने कही, जो-आजु तो और हू रहो तो आछो। तब उन वैष्णवन ने कही, जो-अब तो हम चलेंगे। तब वैष्णव बिदा होंई के ब्रज में आए। सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब वैष्णव सब श्रीगुसांईजी के आगे वा वैष्णव की सराहना करन लागे, जो-महाराज ! फलाने गाम में फलानो वैष्णव है। सो भलीभांति

सेवा करत है। आए गए वैष्णव कौ भली भांति समाधान करे हैं। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। सो उह वैष्णव भली-भांति श्रीठाकुरजी वैष्णवन की सेवा करतो । सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे । तातें उह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२२७॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक वैष्णव, गुजरात कौ, जाने गुप्त भेट करी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है। लीला मैं इनकौ नाम 'धरा' है। ये 'चंद्रिका' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है।

ये गुजरात में एक द्रव्यमान बनिया के जन्म्यो । सो वर्ष बीस कौ भयो तब इनके माता-पिता सों यह न्यारों भयो । काहेतें ? जो-इनके माता पिता सों इनकौ मन मिले नाहीं । पाछें कछूक दिन में माता पिता मरे । तब ये घर में आय रह्यो । ता पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिका कों पधारे । तब इनके गाम में डेरा किये । सो इनकों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । तब दरसन होत मात्र इनके मन में आई, जो-इनकी सरनि जइए तो आछौ । पाछें ये श्रीगुसांईजी सों दोऊ हाथ जोरि बिनती कियो, जो-महाराज ! कृपा करि कै सरनि लीजिये । मैं बोहोत दिनन तें भटकत हों । तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जानि नाम निवेदन कराए । तब या वैष्णव ने बिनती करी, जो-महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब आपु आज्ञा किये, जो-तुम भगवद्सेवा करो । तब या वैष्णव ने कही, जो-महाराज ! कृपा करि कै सेवा पधराइ दीजिये । तब श्रीगुसांईजी आप वाके माथे श्रीनवनीतप्रियजी की वस्त्रसेवा पधराइ दिए । और सेवा की सब रीति बताए । सो ता प्रकार वह परमप्रीति सों सेवा करन लाग्यो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय गुजरात के सब वैष्णव मिलि कै श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आए । तिन में यह वैष्णव हू आयो। ता समय राजभोग कौ समय हतो । सो सगरे संगकेन ने

राजभोग आर्ति के दरसन किए । पाछें श्रीगुसांईजी सेवा सों पहोंचि कै अपनी बैठक में बिराजे । तब सगरे वैष्णव संभारि संभारि गिनि गिनि कै भेट करन लागे । और यह वैष्णव तो चरन परस करन लाग्यो । सो चरनपरस करि कै बगल में तें थेली निकासि कै गादी के नीचे सरकाय दीनी । तब दंडवत करि कै ठाढ़ो होई रह्यो । सो आपु तो अंतर्यामी सो याकौ भाव देखि कै बोहोत प्रसन्न भए । और कहे, जो-या वैष्णव कौ कैसो भाव है ? जो-कोऊ कों खबरि न परे, सब जाने जो याने रीते ही हाथन दंडवत् करी । पाछें सब वैष्णव दंडवत् करि कै गये तब आपु यासों आज्ञा किए, जो-आज महाप्रसाद यहांई लीजो। ता पाछें आपु भोजन करि चुके तब वाकों महाप्रसाद की पातरि धरी । तब याने महाप्रसाद लियो । पाछें आपु तो अपनी बैठक में गादी तकियान पर बिराजे । ता पाछें केतेक दिन उह साथ श्रीगोकुल में रहि कै श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै सब मनोरथ किए । ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कै सब वैष्णव अपने देस कों चले । तब उह वैष्णव हू बिदा होंइ कै अपने घर आयो।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव कों भगवद्धर्म कौ आचरन गुप्त रीति सों करनो । काहेतें ? जो-भगवद्धर्म बाहिर प्रगट होइ तो हृदय में तें निकसि जाय। तातें प्रतिष्ठा आदि बाधक कहे ।

सो उह वैष्णव श्रीगुसांईजी कौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हो । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२२८॥

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी लाड़बाई, धारबाई, मानिकपुर में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये दोऊ राजस भक्त हैं। लीला में 'मिन्दुरा' और 'जानकी' दोऊन के नाम हैं। सो 'मिन्दुरा' तो लाड़बाई कौ प्रागट्य हैं। और 'जानकी' धारबाई भई। ये दोऊ 'शीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

ये दोऊ मानिकपुर में एक क्षत्री के जन्मी। सो बालपने सों इन दोऊन कौ चित्त भगवत्कथा वार्ता में लगे। सो इनके मा-बाप अपने इहां ब्राह्मननकों बुलाइ श्रीभागवत की कथा करवावते। सो ये दोऊ बोहोत प्रीति सों मन लगाइ सुनती। ऐसे करत ये विवाहजोग भई। तब इनके मा-बाप ने 'सिरोही' के 'रामाना' सों इन दोऊन कौ बिवाह कियो। पाछें ये बड़ी भई तब जगन्नाथजी के दरसन कों पुरुषोत्तमपुरी में आई। सो ता समय श्रीगुसांईजी आप श्रीजगन्नाथजी के दरसन कों पधारे हुते। सो तहां आपके दरसन भए। तब ये दोऊ आपकी सरनि भई। नाम-निवेदन पायो। पाछें सेवा के लिये भगवत्स्वरूप श्रीगोपाललालजी कौ पधराई सेवा की सब रीति जानि अपने गाम आई। सो दोऊ बोहोत प्रीति सों सेवा करन लागी। सो सिरोही कौ रामानो महाशैवी हतो। सो ब्राह्मनन ने उनसों कह्यो, जो-तुम्हारे रहत ए सेवा करत हैं, सो सौभाग्यवती कों कही नाहीं है। सौभाग्यवती कों तो भर्तार की सेवा कही है। तब राना ने लाड़बाई धारबाई कों मारिवे कौ विचार कियो। सो ये बात लाड़बाई, धारबाई ने सुनी। तब तीनसौ तरवार ले कै एकमते होइ रही। जब आवत देख्यो तब ही कह्यो, जो-" आघा संभाल कै अइओ, मैं हें रजपूतानी छां" पाछें झख मारि कै ठठक रह्यो। उहां न गयो। सो लाड़बाई, धारबाई ने अपनी टेक छोड़ी नाहीं। पाछें अपनो द्रव्य लै कै कासी में आइ रही। सो श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती। सो श्रीठाकुरजी उनकों सानुभावता जनावते।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय श्रीगुसांईजी आपु कासी पधारे हते। सो इन लाड़बाई, धारबाई के मन में मनोरथ भयो। सो एक रथ मखमली साज कौ बनवायो। सो वाके लिये बोहोत सुंदर बेलन की जोड़ी आछी मंगाय कै पाछें श्रीगुसांईजी की भेट कियो। सो आपु न लिये। पाछें श्रीगुसांईजी आपु सों बिनती कीनी,

जो-महाराजाधिराज ! आपु या रथ पर बिराजिये । तब श्रीगुसांईजी आप तो रथ पर बिराजे नाहीं । तब इन लाड़बाई, धारबाई ने बोहोत बिनती कीनी, तब आपु वा रथ कों चरनारविंद कौ स्पर्स करायो ।

भावप्रकाश — सो यातें, जो-यह राज्य द्रव्य है । ता पर राना की सत्ता है, सो राना तो बहिर्मुख हैं । तातें कदाचित् वाकों खबरि परे तो मांगे, झगरो करे, तातें रथ लियो नाहीं । और राज्य द्रव्य प्रभु अंगीकार करत नाहीं, यहू कहे ।

ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारे । तब कितनेक दिन उहां रहि कै श्रीजगन्नाथरायजी सों बिदा होंइ कै उहांतें चले । सो कितनेक दिन में श्रीगोकुल आए ।

वार्ता प्रसंग - २

और एक समय लाड़बाई, धारबाई दोऊ जनी कासी तें नवलक्ष रुपया ले कै भेट के आई । सो श्रीगोकुल आई । सो श्रीगुसांईजी आप के लिए भेट लाई हती । तब श्रीगुसांईजी आपु सों वा बाई ने बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! यह भेट अंगीकार करिए । तब आपु ने नाहीं करी । तब वैष्णवन ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! उह द्रव्य अंगीकार क्यों नाहीं किये ? तब आपु श्रीमुख सों कहे, जो-उह द्रव्य आसुरी है । पाछें उह द्रव्य श्रीगोकुलनाथजी की भेट कर्‍यो । तब श्रीगोकुलनाथजी आप हू नाहीं राखे । तब अधिकारी ने श्रीगोकुलनाथजी की आज्ञा बिना उह द्रव्य राखि लीनो । सो छांतन ऊपर बिछवाइ कै चुनो लगवाइ दियो । तब वह छांत

आछी भांति सों पटवाय दीनी । ता पाछें एक समय श्रीगोकुल में एक म्लेच्छ आयो । तब श्रीगोकुल के लोग सब भाजि गए। तब बे छांति आप सों आपु टूट परी । तब उन छांतन में सों द्रव्य निकस्यो । तब उह द्रव्य सब म्लेच्छ ले गए ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो राजसत्ता कौ द्रव्य आसुरी है, तातें वैष्णव कों लेनो नाहीं । नांतर अनीष्ट होंई, यह जताए ।

सो वे लाड़बाई, धारबाई श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही । इन की वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२२९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक राजा, गुजराति को, जाकों चारि पुत्र भए, ताकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये तामस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'पीपासादेवी' है । ये 'शीला' तें प्रगटी है । तातें उनके भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वा राजा के गाम में एक ब्राह्मन वैष्णव रहत हुतो । सो उह श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो । सो वाने अपने गाम के राजा सों कह्यो, जो-राजा ! तिहारी कहा ईच्छा है ? तब राजा ने कही, जो-मेरे पुत्र की वांछना है । तब या ब्राह्मन वैष्णव ने कही, जो-राजा ! तिहारे चारि बेटा होइंगे । पाछें आसीर्वाद दे कै यह ब्राह्मन वैष्णव तो अपने घर आयो । ता पाछें चारि रानीन के गर्भ रह्यो । सो चारयोन कों पुत्र भए । सो राजा के चार पुत्र भए । सो सब बात ऊपर तीन तुंबावारे वैष्णव की वार्ता में कहि आए हैं ।

पाछें राजा श्रीगुसांईजी कों अपने गाम में पधराय सेवक भयो। पाछें राजा के माथे श्रीगुसांईजी आपु वस्त्र-सेवा पधराए। सेवा की रीति सिखाए। तब राजा ने सगरे कुटुंब कों सेवक करवाये। पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीगोकुल पधारे। ता पाछें केतेक दिन में उह राजा हू अपने कुटुंब सहित वा ब्राह्मन वैष्णव कों संग ले श्रीगोकुल आयो। सो सातों स्वरूपन के दरसन किये। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि ब्रजयात्रा करी। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो बोहोत भेट करी। फेरि श्रीगोकुल आयो। सो उहां कछुक दिन रह्यो। सो नित्य श्रीगुसांईजी के पंखा की टहल करतो और श्रीनवनीतप्रियजी के इहां मनोरथ करावे। या प्रकार राजा कौ भाव बढ्यो। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। पाछें कछूक दिन श्रीगोकुल रहि कै ता पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि अपने देस-घर आयो। सो भाव-प्रीतिपूर्वक श्रीठाकुरजी की सेवा करन लाग्यो। और कछू संदेह होइ तो वा ब्राह्मन वैष्णव कों पूछतो।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वैष्णव चाहे सोई करे। उनमें सर्व सामर्थ्य हैं। तातें उनके बचन कों सत्य करि जानने। और वैष्णव कौ निरंतर संग करनो, यहू कहे।

सो वह राजा श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२३०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक एक मदनगोपाल कायस्थ, महावन में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश- ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इनकौ नाम 'मनोरमा' है । ये 'शीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं । सो ये महावन में एक कायस्थ के जन्मे।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समय मदनगोपाल कायस्थ ने श्रीगुसांईजी के पास नाम पायो हतो । तब मदनगोपालदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै सेवा पधराय दीजे । तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि कै मदनगोपालदास कायस्थ के माथे सेवा पधराय दिए । सो मदनगोपालदास श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लागे । जो-मारग की रीति श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सेवा करते । सो नित्य प्रातःकाल उठि कै देह कृत्य करि, कै दंतधावन करि, मदनगोपालदास अपने घर जाई, फेरि न्हाइ कै श्रीठाकुरजी कों सेवा-शृंगार करि, राजभोग समर्पि आर्ति अनोसर करि, महाप्रसाद लेई । ता पाछें मदनगोपालदास श्रीगोकुल आवते । सो श्रीगुसांईजी आपु नित्य श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहते । सो मदनगोपालदास सुनते । सो ताकौ भाव अहर्निस मदनगोपालदास अपने मन में बिचार करते । सो श्रीगुसांईजी, श्रीनाथजी इन पर बोहोत प्रसन्न रहते । और गोप्य वार्ता होती सो सब करते । तब ऐसे करत श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जतावन लागे । और मदनगोपालदास गोविंदस्वामी के पाछें

पाछें फिरते। सो पद सुनते। सो सब लिखि लेते। ऐसो उनकों पद सुनिवेकौ व्यसन हतो।

पाछें एक दिन मदनगोपालदास की स्त्री ने अपने पति सों कही, जो-आज लरिका कों ज्वर आयो है। तब मदनगोपालदासजी ने कही, भगवदीच्छा। पाछें वा स्त्री ने अपने पति सों गोप्य ज्वर कौ डोरा बंधायो। तब मदनगोपालदास न्हाइ कै अपने श्रीठाकुरजी के मंदिर में गए। तब मदनगोपालदास आय कै देखे तो श्रीठाकुरजी पीठि दे कै बैठे हैं। और भोग कौ थार लात मारि कै डारि दियो है। तब मदनगोपालदास अपने मन में बोहोत खेद करन लागे। जो-न जाने आज मो तें कहा अपराध पर्‍यो है ? सो श्रीठाकुरजी आपु पीठि दे कै बैठे हैं। पाछें मदनगोपालदास ने बिलबिलाय कै भूमि में नाक घीसि कै बोहोत मनुहार करि कै श्री ठाकुरजी सों कह्यो, जो महाराज ! अपराध जानिये तो भलो है। जो-हों तो कछू जानत नाहीं हों। सो मदनगोपालदास ने बोहोत ही ताप-क्लेस कर्‍यो। तब श्रीठाकुरजी ने सर्व समाचार कहे। तब तो मदनगोपालदास चोंकि उठे। सो सावधान होंइ कै श्रीगोकुल आए। तब श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करि कै चरन छूवन लागे। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-सुनि ! तेरी स्त्री ने ज्वर कौ डोरा बंधायो है। तब मदनगोपालदास ने बिनती करी, जो-महाराजाधिराज ! अब कहा करिये ? जो-स्त्री मेरे

कहे में नाहीं । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो स्त्री तेरे कहे में नाहीं है तो स्त्री कौ त्याग करि । तब मदनगोपालदास ने कही, जो-आज्ञा । तब वे दंडवत् करि के घर आए । घर में आए के स्त्री सों पूछी, जो-तुमने यह कहा काम कियो है ? पाछें वा स्त्री कों न्यारी राखी । पाछें और विवाह मदनगोपालदास ने कियो। ता पाछें फेरि श्रीठाकुरजी की सेवा मदनगोपालदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान करन लागे । पाछें स्त्रीसों कछू बोले नाहीं । और स्पर्स हू न किए । तोऊ श्रीठाकुरजी तो बरस एक लों बोले नाहीं । पाछें मदनगोपालदास ने बोहोत मनुहार करी । तब बोलन लागे ।

भावप्रकाश — तातें वैष्णव कों अन्याश्रय ते सर्वथा डरपत रहनो ।

सो वे मदनगोपालदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२३१॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी की सेवकिनी रूपमंजरी, ग्वालियर की बेटी, जाकौ नंददासजी सों स्नेह हुतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये रूपमंजरी सात्विक भक्त है । लीला में हू इनकौ नाम 'रूपमंजरी' है । सो याकौ रूप बोहोत ही सुंदर है । ये 'चंद्ररेखा' की अंतरंग सखी है । तातें चंद्ररेखा उनकों श्रीठाकुरजी की रहस्य वार्ता कहति है । ये 'रूपा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है ।

ये ग्वालियर में एक क्षत्री के प्रगटी । सो रूपमंजरी कौ रूप बोहोत ही सुंदर हतो । धरती पर छाया परे । ऐसो वाकौ रूप । सो उह क्षत्री श्रीगुसांईजी कौ सेवक हुतो । सो वाने रूपमंजरी हू कों श्रीगुसांईजी की सेवक कराई है । पाछें रूपमंजरी बड़ी भई तब एक क्षत्री सों वाकौ बिवाह कियो । सो उह क्षत्री पृथ्वीपति कौ चाकर

हुतो । पृथ्वीपति के पास रहतो, महलन में । सो उह जो कहे, सो पृथ्वीपति करे, ऐसो पृथ्वीपति कौ वापै प्रेम हतो । सो रूपमंजरी हू महलन में रहिवे लागी । सो रूपमंजरी कौ स्वरूप देखि पृथ्वीपति आसक्त भयो । तब पृथ्वीपति ने रूपमंजरी कों लोंडी करि कै अपने पास राखे, सो न्यारो महल दियो । सो रूपमंजरी धर्मसील हुती। सो रूपमंजरी ने कही, जो-तुम मेरो परस करोगे तो हों जहर खाइ कै मरूंगी । सो पृथ्वीपति समझत हुतो, सो वाने कही, जो-मैं तोकों बचन देत हों, जो-हों तेरो परस सर्वथा न करूंगो । परि तू मोकों तेरो मुख एक बेर दिखाइ दियो करि । और मेरे पास रहि । तब रूपमंजरी तैसे ही करन लागी । सो पृथ्वीपति वाकौ रूप देखि प्रसन्न रहतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो रूपमंजरी पृथ्वीपति की लोंडी हुती । परि पात्साह कौ स्पर्स करती नाहीं । सो वासों कहे, जो-तुम मेरो स्पर्स करोगे तो हों प्रान त्यागूंगी । सो पात्साह वाकों मुख देखि कै प्रसन्न रहतो । स्पर्स न करतो ।

सो रूपमंजरी के पास एक गुटका हतो । सो वा गुटका कों मुख में राखि वह नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवती । ऐसी वा गुटका मैं सामर्थ्य हती । सो श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के दरसन करि कै नंददासजी कै पास आवती । सो नंददासजी सों वाकौ बोहोत स्नेह हतो ।

भावप्रकाश — काहे तें ? जो-लीला कौ संबंध दृढ हैं ।

सो नंददासजी सों श्रीभागवत सुनती और रस के ग्रंथ सुनती । और नंददासजी ने रूपमंजरी के तांई भाषा में बोहोत ग्रंथ किये हैं । सो रूपमंजरी नंददासजी सों गान हू सिखी । सो बोहोत सुंदर गावती । और बीन हू आछी बजावती । सो या प्रकार नंददासजी के संग सों रूपमंजरी की प्रीति

श्रीगोवर्द्धननाथजी में बोहोत बढ़ी । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वाकों नित्य महल में दरसन देन लागे । पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कबहूक वाके महल में न पधार सके तो वाकों बोहोत विरह होतो । सो विकल होइ जाती । तब ताही छिनु श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वाके महलन में पधारि वाकों दरसन देते । तब वह प्रसन्न होती । ऐसो प्रेम वाकौ श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वासों रात्रि कों चोपड़ खेलते । सो चार प्रहर तांई चोपड़ खेलते । या प्रकार कृपा करते ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो भगवदीय वैष्णव कौ संग निरंतर करनो । तातें श्रीठाकुरजी में प्रीति बढ़े ।

सो रूपमंजरी श्रीगुसांईजी की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।२३२।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक जाड़ा कृष्णदास क्षत्री, गुजरात के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये राजस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'कृष्णप्रवीना' है । ये 'रूपा' तें प्रगटी है । तातें उनके भावरूप है । ये गुजरात में एक क्षत्री के जन्मे। सो उनको देह स्थूल हतो । सो ये बोहोत वृद्ध भए । तब ब्रज में आए ।

वार्ता प्रसंग - १

सो इनकों सब कोऊ 'जाड़ा' चाचा कहते । ये चतुर बोहोत हुते । सो संत-महंतन की परीक्षा लेते । सो एक दिन जाड़ा कृष्णदास श्रीगोकुल आये । सो इन ने मन में बिचार कियो,जो श्रीगुसांईजी की परीक्षा लेनी । सो श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर

में आए। सो ता समै श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलि रहे हुते। श्रीगुसांईजी आपु झूलाय रहे हुते। सो जाड़ा कृष्णदास कों ऐसे दरसन भए, जो-कबहू तो श्रीगुसांईजी झूलावे हैं और श्रीनवनीतप्रियजी झूले हैं और कबहू श्रीगुसांईजी झूले हैं और श्रीनवनीतप्रियजी झूलावे हैं। तब जाड़ा कृष्णदास चक्रत से व्है रहे। और मन में संदेह भयो, जो- ये दोऊन में श्रीठाकुरजी कौन हैं ? ऐसे बोहोत ही संदेह भयो। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरि कै बाहिर आए। तब जाड़ा कृष्णदास कों श्रीगुसांईजी के रोम रोम में श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन भए। तब श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! मैं आपकी परीक्षा लेइवे कों आयो हुतो। परि आप मेरी परीक्षा लिये। अब मेरो संदेह मिट्यो। जासों कृपा करि मोकों सेवक कीजिये। मैं तो अधम जीव हों। तब श्रीगुसांईजी जाड़ा कृष्णदास की दीनता देखि प्रसन्न भए। पाछें कृपा करि जाड़ा कृष्णदास कों सेवक किए, नाम सुनाए। पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए। तब तत्काल ही जाड़ा कृष्णदास कों लीला कौ अनुभव होंन लाग्यो। सो ता समै वसंत के दिन हुते। सो जाड़ा कृष्णदास ने वसंत कौ पद करि कै गायो। सो पद —

— राग वसंत —

खेलत फाग यमुनातट नंदकुमार। द्रुम मौरे बिपिन अठार भार॥
हलधर-गिरिधर ग्वाल संग। मिलि भरत परस्पर करत रंग॥
बाजे मृदंग उपंग चंग। राजे सुंदर विचित्र अंग॥

ताल मुरज उपंग ढौल । बहु बंदन उड़त गुलाल रौल ॥
वासलुब्ध आए मधुप टोल । तेऊ अरुन भए अलीवर निचोल॥
बहुरि मधुप गए अपने ठांय । भरे तान परि भमरी नहीं पत्याय ॥
तुम राते भए पति कौन भाव ? कोऊ कपट रूप मति बैठो आय ॥
खटपद कहे तुम भूली बाल । जहां धरा गिरि अंबर भयो गुलाल॥
तहां ॠतु वसंत बिहरत गुपाल । 'जाड़ा कृष्ण' कौ प्रभु मोहनलाल ॥

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी आपु बोहोत प्रसन्न भए। पाछें श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किए, जा-अब तुम कों लीला स्फुर्द भई । तातें ब्रज में फिरो । और मानसी में मगन रहो । तब जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धन आए । सो तहां श्रीनाथजी के दरसन किए । सो बोहोत प्रसन्न भए । सो श्रीनाथजी के स्वरूप कों हृदय में धारन किए । पाछें ब्रज में फिर्‍यो करते ।

वार्ता प्रसंग - २

सो जाड़ा कृष्णदास एक समै वृंदावन आए । सो रूपसनातन इन सों मिले । तब रूपसनातन सों जाड़ा कृष्णदास पूछे, जो-श्रीठाकुरजी कहा करे हैं ? तब रूपसनातन ने कही, जो-श्रीठाकुरजी भोजन करे हैं। तब जाड़ा कृष्णदास ने कही, जो श्रीठाकुरजी तो एककालावच्छिन्न अनेक लीला करत हैं । तातें तुम ऐसे क्यों कहे, जो-भोजन करत हैं ? तब रूपसनातन ने कही, जो ऐसे दरसन तो श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के उहां होत हैं । और श्रीगुसांईजी जाकों करावे वाकों होंई । यह बात सुनि कै जाड़ा कृष्णदास प्रसन्न भए ।

वार्ता प्रसंग - ३

सो जाड़ा कृष्णदास ने भगवदगुनानुवाद बहोत गायो है। सो इन ने 'इंद्रकोप' कौ चरित्र और 'रासपंचाध्याई' कीनी हैं। और 'रुक्मनीमंगल' गायो है । सो वाकों सब कोउ 'माधवरुक्मनी' केलि हू कहत हैं । और भोजन के पद आदि नए बनाए हैं । सो जाड़ा कृष्णदास कौ जा-जासों वार्ता प्रसंग भयो ता-ताकी जड़ता मिट गई । ऐसे जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजी के परम कृपापात्र भगवदीय हे ।

वार्ता प्रसंग - ४

सो एक दिन जाड़ा कृष्णदास द्वारिकाजी गए । सो मार्ग में एक गाम आयो । सो उहां देवी कौ देवालय हतो । सो देवी के देवालय में रात कों सोए । पाछें बहोत बेगि सवेर में एक मनुष्य बकरा ले कै देवी पर चढ़ाइवे कों आयो । सो तिन के संग और हू मनुष्य हते । तब जाड़ा कृष्णदास ने कही, जो-सब कोऊ देवी कों बकरा क्यों चढावत है, सिंह क्यों नाहीं चढावत? तब वह मनुष्य बोल्यो, जो सिंह कैसे पकर्‍यो जाइ? तब जाड़ा कृष्णदास ने कही, मैं तोकों सिंह पकरि देत हूं । तू बकरा कों छोड़ि दे । तब वाने बकरा छोड़ि दियो । फेरि जाड़ा कृष्णदास जंगल में जाइ कै सिंह पकरि ल्याये । वा सिंह को देखि कै मनुष्य सब भाजि गए । तब जाड़ा कृष्णदास ने सिंह कों छोरि दियो । तब सब मनुष्य फेरि उहां आए । और उनके पाँवन परे । तब जाड़ा कृष्णदास कहे, जो-आज पाछें जीव

हिंसा मति करियो । सो जाड़ा कृष्णदास में अलौकिक सामर्थ्य हुती ।

वार्ता प्रसंग - ५

बहोरि एक समै जाड़ा कृष्णदास कौ चाचा हरिवंसजी सों मिलाप भयो । तब चाचा हरिवंसजी सों जाड़ा कृष्णदास पूछे, जो-मार्ग में प्रमान कहा है ? तब चाचा हरिवंसजी कहे, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने चार प्रमान मुख्य माने हैं, सो 'निबंध' में आप आज्ञा किये हैं —

वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्यास - सूत्राणि चैव हि ।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम् ॥
उत्तरं पूर्वसंदेह वारकं परिकीर्तितम् ।
अविरुद्धं तु यत्त्वस्य प्रमाण तच्च नान्यथा ॥
एतद्विरुद्धं यत्सर्वं न तन्मानं कथंचन ।

सो यामें कहे हैं, जो-वेद, गीता में श्रीकृष्णवाक्य, व्याससूत्र और श्रीमद्भागवत में समाधि भाषा ये चार मुख्य प्रमान हैं । सो वेद में जो संदेह रहे सो श्रीकृष्णवाक्य सों निवृत करनो । और तामें हू जो संदेह रहे ताकों ब्रह्मसूत्र सों दूरि करनो। और तोहू संदेह रहे तो ताकौ श्रीमद्भागवत समाधि भाषा सों निवारन करनो । और इनतें बिरुद्ध जो होंई ताकों नाहीं मानने । या प्रकार श्रीआचार्यजी आप 'निबंध' में लिखे हैं । तब यह सुनि कै जाड़ा कृष्णदास बोहोत प्रसन्न भए ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवन कों श्रीगुसांईजी कौ दृढ आश्रय राखनो । तातें लीलान कौ अनुभव होंई । और जीवहिंसा तें सर्वथा डरपत रहनो । और वैष्णवन कौ संग करनो । और श्रीआचार्यजी के मार्ग में जो प्रमाण-ग्रंथ हैं वाके विरुद्ध जो कोऊ कछू कहे सो नाहीं माननो । तब पुष्टि भक्ति दृढ होंई । एक आश्रय होंई ।

सो वे जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र

भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२३३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक राघौदास, चतुर्भुजदास के बेटा, गौरवा क्षत्री, जमुनावता में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम ' अधीरा ' है। ये 'रूपा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

ये चतुर्भुजदास के उहां जमुनावता में प्रगटे। सो चतुर्भुजदास राघौदास कों श्रीगुसांईजी के पास नाम सुनायवे कों लाये। तब श्रीगुसांईजी राघौदास कों नाम सुनाए। सो राघौदास श्रीगुसांईजी की कृपा तें आछे वैष्णव भये। सील-स्वभाव संयुक्त।

सो एक समै फागुन महिना के दिन हते। तिन दिनन में राघौदास गांठ्यौली की और आए। सो तहां कदमखंडी में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भए। सो ब्रजभक्तन सहित होरी खेलत हते। सो राघौदास ने साष्टांग दंडवत् करि कै एक धमार गाई। सो धमार —

★ राग गोरी ★

अरी चलि जांय जहां हरि खेलत गोपिन संगा।
आनक बहु बाजे ताल मुरज मुखचंगा॥
गावत सुनि भावत मंद मधुर स्वरबानी।
जानों हरख परस्पर मानों मदन गति ठानी॥(अरी चलि जाँय)
जहाँ क्रीडत नंदनंदन झांझ प्रणव डफ भारी।
बीन मृदंग उपंग चंग बहु देत परस्पर गारी॥१॥

कर पिचक बिचक मुख कटिपट भेष बनायो ।
जानो गुदर देन गुन बन बसंत ब्रज आयो ॥
हाटकमनिगन खचित विविध कर जेरी साजें ।
रुंझ मुरज सहनाई ढोल - ढोलक छबि छाजें ॥
आवज अति आतुर बजे गावत ब्रजजन फाग ।
तानतरंगन बाहुन बांध्यो छाय रह्यो अनुराग ॥२॥
ध्वनि सुनत पियारी कुंकुम मंजन कीनो ।
बहुरंग बसन तन यावक चरनन दीनो ॥
कबरी करजु सँवारि निरख उपमाकों हारी ।
मानो हाटक लता रही खग पन्नग नारी ।
श्रवनतार उरहार छबि उर मुक्ता सजल सुढार ।
जनु युग गिरि बिच देखिये छबि धसी सुरसरी धार ॥३॥
रचि तिलक भालपर मृगमद रेख सँवारी ।
जानों युगल जीभ धरि पन्नग पीवत सुधारी ॥
खंजन मीन आधीन देखि दृग सारंग लाजे ।
वदनचंद भुव चांप स्वांति सुत नासा राजैं ॥
उपमाकों अवलोकि कै छबि या समान नहीं और ।
मानों कीर उडुगन गहें चुगत नहीं सुनि बौर ॥४॥
अति अरुन अधर छबि अरु दसनन द्युतिपाई ।
जनु बिज्वल बीज की विद्रुम वार बनाई ।
कंठ कपोत लजात करन अंगद जगमगयो ।
मानों जलद मृणाल सरद ससि बालक लजयो ॥
पोंहोंचन अति पोंहोंची सघन सुंदर स्याम सुपास ।
मानों कंज के कंठ लागि कै भृंग रहे मधुआस ॥५॥
बनि चली सकल त्रिय पग नूपुर स्वर भारी ।
जानों बिबिध केलि कलहंस करत किलकारी ॥
साख जवाद सुगंध कुंकुमा केसर घोरी ।
भाजन भरि ले चली सकल त्रिय गावत होरी ॥
नख सिख तें अवलोकि छबि नागर रीझे गान ।
मानों संगीतशाला पढ़ी घटबढ़ परत न तान ॥६॥
छबि सिंधु ललन तन देखत लोचन भूले ।

चितवत चित चोरत अंग अंग अनुकूले ॥
बरन बरन सिर पाग श्रवन कुंडल मनिमय अति ।
मन हू स्याम नग सिख तरनि युग रमत तरल गति ।
उर बनमाल विसाल अति बिबिध सुमन बहुवेष ।
मानों जलद मैं प्रगट देखियत शतमख-सारंगरेख ॥७॥
रचि तिलक मलय कौ पिय कर खोर बनाई ।
मानों युगल अहिनरासि घन पर दई दिखाई ॥
घन तन देखि लजात कंज दृग क्यों सम पावें ॥
- मुख छबि स्याम भुजान देखि अहि वपुहि लजावें ॥
नख सिख तें अवलोकि कै छबि कटिपट पीत सुदेस ।
मानो जलद धुरवा सखीरि दामिनी रही प्रवेस ॥८॥
छबिसिंधु मोहन तन लघुमति बरनी न जाई ।
चितवत चित चोरत मन्मथ रह्यो लजाई ॥
त्रियन परस्पर हरखि बिबिध कर डाग न राजें ।
गोप उठे किलकार दुहुंदिस तें बाजत बाजें ॥
एकन कर कुंकुम लियो एकन घोर गुलाल ।
चली सकल ब्रजसुंदरी पकरन मदन गुपाल ॥९॥
सेनन स्यामाजु हलधर दिए हैं बताए ।
गहि नील बसन तन दोऊ बंद दिए छटकाय ॥
सब मिलि पकरे स्याम मुरलिका लई छिनाई ॥
तबहि तरुनी मुसिकाय साख भर भाजन लाई ॥
छांटत छिरकत हसत परस्पर प्रेम छके नंद नंद ।
मानो अवनिपर मेघ कों घेर रहे बहु चंद ॥१०॥
निरखत बिथकित भए जहां तहां अमर विमान ।
बरखत सुर कुसुमन और बजाये निसान ॥
रह्यो परस्पर रंग सकल त्रिय भवनन आई ।
तबहिं तिनें ब्रजराज विविध पट दई मिठाई ॥
बहुरि तरनि-तनया सलिल मंजन कर बलवीर ।
पहरि बसन आये घरे संग सकल आभीर ॥११॥
दुतिया मोहन तन राजत सुंदर पीत सुवास ।
बैठे कनक सिंघासन बलबल ' राघौदास ' ॥१२॥

सो यह धमार राघौदास ने गाई। ता पाछें उहांई राघौदास ने देह छोडी। तब तहां जो गांठौली के वैष्णव हते तिन सुनी, सो सबन मिलि कै राघौदास कौ अग्नि-संस्कार कीनो। ता पाछें वे वैष्णव श्रीनाथजीद्वार आए। सो ता समै श्रीगिरधरजी आप अपनी बैठक में गादी तकियान के ऊपर बिराजे हुते। और हू सब वैष्णव टहलूवा बैठे हुते। सो वा समय एक वैष्णव ने श्रीगिरिधरजी सों डरपते डरपते बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! राघौदास ने या प्रकार सों यह धमार गाइ कै अपनी देह छोड़ी। तब श्रीगिरिधरजी आप यह सुनि कै हँसे। तब सब वैष्णव बैठे हते तिन सबन कों आश्चर्य भयो। तब श्रीगिरिधरजी आपु तहां सब वैष्णवन की साम्हे देखि कै मुसिकाने। तब उन वैष्णवन में तें एक वैष्णव ने बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! इन राघौदास की ऐसें देह क्यों छूटी ? तब श्रीगिरिधरजी आपु उन वैष्णव कों आज्ञा किये, जो राघौदास बड़े भगवदीय भए। सो उनकों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने होरी खेल के दरसन दिये, गोपिन सहित।

भावप्रकाश — और ता समैं राघौदास न यह धमार गाइ कै अपनी देह छोड़ी। सो ताको कारन यह है, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के लीला सुख कौ अनुभव राघौदास या देह सों ताकौ प्रकार सह्यो न गयो। तातें या देह छोड़ि कै राघौदास हू जाइ कै लीला में प्राप्त भये।

और श्रीगिरिधरजी हँसे ताकौ कारन यह, जो-जिनके बापदादान ने या देह सों लीला सुख कौ हृदय में अनुभव करि दुसरेन कों हू ताके पद गाइ कै अनुभव करायो, ताकौ बेटा यह राघौदास ! तासों इतनो सुख हू हृदय में धारन कियो न गयो ?

सो राघौदास ने पद में अपनी छाप नहीं धरी हती । तातें राघौदास की बेटी ने डेढ़ तुक बनाइ के धमार कों पूरी करी । सो वे राघौदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ॥२३४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक कटहरिया क्षत्री, गुजरात में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं —

भावप्रकाश - ये तामस भक्त है । लीला में इनकौ नाम 'स्यामगोप' है । ये 'जशवन्त' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है । सो ये गुजरात में एक क्षत्री के प्रगट्यो । सो बालपने सों बाट मारे । जो कोऊ संग जाई वाकों लूटे । ऐसो कर्म करे । सो उनके पास तीनसैं मनुष्य रहते । सो सब घोड़ा पैं असवार होई चारों ओर फिरें । जो कोऊ वा गेल जाई वाकों लूटे । सो कटहरिया उन सबन को सिरदार हतो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात तें ब्रज कों पधारत हुते। सो मारग में तीनसैं असवार ले कै कटहरिया लूटतो । सो उन श्रीगुसांईजी की असवारी कों देखि कै पास आय घेरा दियो । सो श्रीगुसांईजी के संग पंद्रह बीस भारकस हते । सब कों रोकि लीने । तब श्रीगुसांईजी के मनुष्य एक एक भारकस पै ठाढ़े होंइ गए । सो उन लोगन कों ऐसे दीसे मानो सिंघ ठाढ़े हैं । और वह कटहरिया श्रीगुसांईजी के रथ के पास आयो । सो देखे तो साक्षात् पूरनपुरुषोत्तम बिराजे हैं । तब तो कटहरिया हथियार डारि दंडवत् करि ठाढ़ो व्है रह्यो । और बिनती करी, जो-महाराज ! मैं अपराधी हौं, आप कृपा करि कै मोकों पावन

कीजिये। आप के बिनु मेरो कोई उद्धार करे ऐसो या संसार में दीसत नाहीं। सो कटहरिया की दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप वाकी ओर देखे। पाछें वाकों दैवी जानि नाम सुनाए। तब कटहरिया ने अपने संग के मनुष्यन कों बिदा किये। और आप श्रीगुसांईजी के साथ चल्यो। सो श्रीगोकुल आयो। तब श्रीगुसांईजी सों फेरि बिनती कीनी, जो-महाराज ! कृपा करि ब्रह्मसंबंध कराइए। तब श्रीगुसांईजी ने एक ब्रत करायो। पाछें दूसरे दिन कटहरिया कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान ब्रह्मसंबंध कराए। तब इन कों भगवद्लीला स्फूर्ति भई। सो वाने बोहोत पद गाए हैं। सो कटहरिया श्रीगुसांईजी कौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो।

और एक समें कटहरिया श्रीगोकुल तें श्रीनाथजीद्वार आए। सो ता दिन जन्माष्टमी हती। सो वाने एक बधाई श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख गाई। सो बधाई -

- राग सारंग -

आज महामंगल महरानें।
पंच सब्द धुनि भीर बधाई घर घर बेरखवाने ॥
ग्वाल भरे काँवरि गोरस की बधू सिंगारत बाने।
गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माट ढराने ॥
नाम करन जब कियो गर्ग मुनि नंद देत बहु दानें।
पावन जस गावत 'कटहरिया' जाहि परमेश्वर मानें ॥

ऐसे और हू बोहोत पद गाए। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें कटहरिया

कों श्रीनाथजी सानुभावता जतावन लागे । सो कटहरिया श्रीगुसांईजी कों छोरि कै कहूं गये नाहीं । जन्म भरि श्रीगुसांईजी के चरनारविंद में रहे ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीगुसांईजी कौ दृढ आश्रय किये तें श्रीठाकुरजी आप या भांति कृपा करि अपनी लीला कौ अनुभव करावत हैं।

सो वह कटहरिया श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते । सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२३५॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक ब्रह्मदास गोरवा क्षत्री, गोपालपुर में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये सात्विक भक्त हैं । लीला में इन कौ नाम 'मनमोहिनी' है । इन में सदा संयोगरस झलकत हैं । तातें ये मन में प्रसन्न रहति हैं । ये श्रीयमुनाजी के यूथ की है । ये 'जशवंत' गोप की बेटी है । उन तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है ।

ये रावल के आगें गोपालपुर गाम है । तहां एक गौरवा क्षत्री के जन्मे । सो ये बालपने सों साधु-संत की सेवा करते । घर तें रोटी ल्याइ खवावते । उन के पास बैठते, सोते । उन ते भगवद्चर्चा सुनते । या प्रकार रहते । ऐसे करत ये बरस बीस के भए । तब उन के माता-पिता मरे । पाछें उनकों एक गौडिया कौ संग भयो । सो दोऊन में बोहोत मित्राचारी भई । सो वा गौडिया के संग रहे । सो वह गौडिया गोवर्द्धन-मानसी गंगा पर आई रह्यो । तब येहू उन के संग गोवर्द्धन आए । ता पाछें ये नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों श्रीनाथजीद्वार आवते । सो पौष कृष्ण ८ कों ब्रह्मदास श्रीनाथजी के दरसन करि गोवर्द्धन आए । तब रात्रि कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने ब्रह्मदास कों स्वप्न में अलौकिक रीति सों दरसन दिए । ता पाछें आज्ञा किये, जो-तू काल्हि श्रीगुसांईजी कौ सेवक हूजियो । सो ब्रह्मदास दूसरे दिन श्रीनाथजीद्वार आए । सो ता दिन श्रीगुसांईजी कौ जन्मदिन हतो । सो श्रीगुसांईजी आपु मंदिर में

श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ शृंगार करत हते। ता समै ब्रह्मदास उहां आए। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ शृंगार करि गोपीवल्लभ भोग धरि बाहिर पधारे। तब ब्रह्मदास कों श्रीगुसांईजी आपु देखे। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंई कहे, जो-ब्रह्मदास ! तोकों श्रीनाथजी ने आज्ञा कीनी है सो हम जानत हैं, तातें बेगि अपरस में न्हाइ के आउ। हम तोकों सेवक करेंगे। यह सुनत ही ब्रह्मदास चक्रत से व्है रहे। कहे, ये निश्चै ईश्वर हैं। मेरे मन की जानें। पाछें बेगि बेगि अपरस में न्हाय कै मंदिर में आये। तब राजभोग सरे हते। तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम-निवेदन कराए। ताही समै ब्रह्मदास कों श्रीगुसांईजी की जन्मलीला कौ अनुभव भयो। तब यह पद गायो-

- राग धनाश्री -

आजु बधाई लाल वल्लभ गृह आयो।
बाजत ढोल दमामा भेरी धन्य अक्काजु बालक जायो ॥
धन्य धन्य मेरो भागवत निरखेगो सुकमुनि व्यास महासुख पायो।
धन्य गोवर्द्धन धन्य जमुनातट अब सब गोकुल सुबस बसायो ॥
देति असीस सकल ब्रज सुंदरि चिरजियो ढोटा भक्तन मन भायो।
फूले ब्रजनन निरखि महानिधि 'ब्रह्मदास' तहां नाच्यो गायो ॥

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी आपु बोहोत प्रसन्न भए। पाछें आज्ञा किए, जो-तोकों यह मार्ग स्फुर्त भयो। ता दिन तें ब्रह्मदास सदा मानसी में मगन रहते, ब्रज में फिर्‌यो करते। सब लीला कौ मानसी में ही अनुभव करते। ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आपु ब्रह्मदास पर किये।

वार्ता प्रसंग -१

सो ये ब्रह्मदास गोपालपुर में रहत हुते। सो ब्रज में फिर्‌यो करते। मानसी सेवा सदा करते। सो उन कों श्रीगुसांईजी की कृपा तें मानसी सिद्ध हुती। और गोवर्द्धन मानसी गंगा पर एक गौडिया कृष्णचैतन्य कौ शिष्य रहत हुतो। सो वे ब्रह्मदास कौ मित्र हतो। सो येहू मानसी सेवा करे और सदा दूध पी के रहे। पाछें केतेक दिन पाछें उह छाछ पीवे लग्यो। सो वाने दूध छोरि दियो। तब एक दिन वा गौडिया ने मानसी में ठाकुर

कौ दूध भोग धर्‍यो । पाछें उह प्रसादी दूध मानसी में ही पीयो। ता पाछें नित्य की छाछ लेवे कौ समै भयो । सो वाने नहीं लीनी। तब वाके शिष्य ने आग्रह करि छाछ प्याई। तब वा गौडिया कों ज्वर चढ़ि आयो । सो ताही समै ब्रह्मदास उहां आए । सो ब्रह्मदास ने वा गौडिया कों देखि कै कही, जो-तुमने दूध के ऊपर छाछ पी है । तातें तुमकों ज्वर आयो है । तब वा गौडिया कौ शिष्य बोल्यो, जो-इन ने तो दूध नहीं पीयो है । तब वह गौडिया अपने शिष्य तें कहे, जो-तू कहा जाने ! जा घर कौ हमने दूध पीयो है ये वाही घर के सदा रहिवेवारे हैं । और जब हमने दूध पीयो तब ये देखत हुते ।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-जाकों मानसी सिद्ध होंई वाकों दूसरेन की सब बात खबरि परे । तातें मानसी सेवा सर्वोपरि है । सो वैष्णव कों सदा मानसी सेवा करनी ।

सो वे ब्रह्मदासजी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । सो मानसी सेवा के प्रताप तें सब के मन की जानते । और ये मानसी में जो अनुभव करते सो पदन में गाते । सो वे ऐसे भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ।।२३६।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक राजा, जाकी रानी ने झारी कौ फल मांग्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये दोऊ राजस भक्त है । लीला में 'हरिदेवी' हरिप्रिया' इनके नाम हैं । सो 'हरिदेवी' तो राजा भयो और 'हरिप्रिया' रानी जाननी । सो इन दोऊन की दो सखी हैं । एक कौ नाम 'बोधिनी' एक कौ नाम 'प्रबोधिनी' । सो 'बोधिनी'

यहां साहूकार भयो, और 'प्रबोधिनी' साहूकार की स्त्री भई । ये 'जशवंत' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वा राजा-रानी वैष्णव हते । उनके एक बेटी हती । सोऊ वैष्णव हती । सो वा राजा ने कही, जो-कोउ वैष्णव राजा मिले तो वासों या बेटी कौ विवाह करें । पाछें एक वैष्णव राजा मिलि गयो । सो वासों कह्यो, जो-ब्याहिवे कों आवो । तब वह अपने घर तें चल्यो । तब या राजा की बेटी ने साम्हें वैष्णव भेजे । उनकी वैष्णवता देखिवे के लिए । सो उन वैष्णवन कों देखि कै राजा बोहोत प्रसन्न भयो । लग्न की कछू सूधि रही नाहीं । सो लग्न चूकि गयो । तब फेरि दूसरो मुहूर्त निकास्यो । तामें ब्याह कियो । पाछें राजा ब्याह कै अपने घर कों आयो । सो राजा और रानी दोऊ न्यारे न्यारे अपने अपने श्रीठाकुरजी की सेवा करें । तब राजा ने कही, जो-मिलि कै सेवा करे । तब रानी ने कही, जो-आछौ । पाछें मिलि के सेवा करन लागे । सो राजा के और हू रानी हती । सो या वैष्णव रानी के पास आइ कै कही, जो-हमतो ऐश करे हैं और तू तो आठ पहर या धंधा ही में लगी रहति हैं । सो उन रानीन के संग करि या वैष्णव रानी के मन में हू आई, जो-मैं हू ऐश करों। तब राजा सों कही, जो-मैं हू कछू ऐश करों । तब राजा ने कही, जो आछौ एक काम करि । यह अपने पास साहूकार वैष्णव रहत है । ताके घर एक जल की गागरि डारि आउ ।

और वाकौ मोल ले आउ। तब रानी साहूकार के घर आई। पाछें सेठानी सों कहे, जो-ल्याओ तुम्हारे श्रीठाकुरजी के जल की गागरि भरि ल्याऊं। तब सेठानी ने गागरि दीनी। सो जल भरि ल्याई। तब वा सेठानी ने वामें सो एक झारी मंगला की भरी। पाछें रानी ने कही, जो-याकौ मोल मोकों देऊ। तब सेठानी ने कही, जो-दरसन करि। तब वाने दरसन करे। तब सेठानी ने रानी सों कही, जो-हमारे घर में हैं सो सब तू ले। परि मोल तो न दियो जाय। तब रानी ने कही, मैं राजा सों पूछि आऊं। तब जाय के राजा सों पूछी। तब राजा ने कही, जो-अब तू ही अपने मन में समझि ले, जो झारी भरिवे कौ, सेवा करिवे कौ कहा फल है ? अब तेरी इच्छा में आवे सो करि। इच्छा में आवे तो सेवा करि, झारि भरि, इच्छा में आवे तो ऐश करि। तब रानी ने कही, जो-मैं तो झारि ही भरिवो करूंगी। सो वे राजा-रानी सदैव सेवा करते। सो प्रभुजी अनुभव जतावते।

भावप्रकाश — सो या वार्ता में सेवा कौ स्वरूप जताए, जो-सेवा की बरोबरि तीन लोक में कोई पदार्थ-फल नाहीं। तातें वैष्णव कों सेवा न छोरनी।

सो वे राजा-रानी श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२३७॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक पृथ्वीसिंघजी, बीकानेर के राजा कल्याणसिंहजी के बेटा, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं —

भावप्रकाश - ये राजस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'प्रभावती' है। ये

'श्रुतिरूपा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं ।

ये पृथ्वीसिंहजी बीकानेर के राजा कल्याणसिंहजी के उहां जन्मे । सो बालपने सों इन कौ चित्त साधु-संगति में रहे । देस-देसके साधु उहां आवते । तिनसों ये मिलें। सो ये राजा भए । तब प्रथम ही ये गोकुल-मथुरा की यात्रा कों चले । सो मथुराजी में आए । तब चोबेन सों पूछे, जो-ऐसे कोई महापुरुष बतावो जासों मिलिये । तब चोबेन ने कही, जो राजा ! यों तो बड़े बड़े महापुरुष या ब्रजमंडल में हैं, परि गोकुल में श्रीगुसांईजी विट्ठलनाथजी बड़े प्रसिद्ध हैं । बड़े-बड़े राजा, संत, महात्मा, गुनी, स्वामी सब इन की वंदना करत हैं । तातें उन तें मिलो तो आछौ है । तब राजा तत्काल श्रीगोकुल आए । सो ता समै श्रीगुसांईजी आपु ठकुरानी घाट पर संध्यावंदन करि रहे हे । सो राजा कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए । सो तेजःपुंज अति उज्वल अलौकिक दरसन भए । सो राजा दरसन करि कै विस्मित होइ रह्यो । पाछें अपने मन में कहे, जो ऐसें तेजस्वी पुरुष के दरसन तो आज तांई या पृथ्वी मंडल पें भए नाहीं । इतने में श्रीगुसांईजी आपु संध्यावंदन करि चूके । तब आपु राजा की ओर देखे । तब राजा श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि बिनती किये, जो-महाराजाधिराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए । आज मेरो जन्म सुफल भयो । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि राजा कों नाम सुनाइ सेवक किये । पाछें एक व्रत कराय निवेदन करवाए। पाछें राजा को आप कहे, जो राजा ! अब तुम घर जाय भगवत्सेवा करो । पाछें श्रीगुसांईजी आप राजा कों श्रीबालकृष्णजी कौ स्वरूप पधराय सेवा की सब रीति बताए । और आशीर्वाद दिए, जो-तुम कों काल कबहू बाधा न करेगो । श्रीठाकुरजी के सदा सन्मुख रहोगे । पाछें राजा प्रसन्न होंई अपने देस आए । सो भगवत्सेवा प्रीतिपूर्वक करन लागे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे पृथ्वीसिंहजी कविता बोहोत करते । सो उनने कवित्त, सवैया, दोहा, चोपाई, ऐसे अनेक प्रकार की कविता रची हैं । और 'रुक्मनिबेल' और 'स्यामलता' इत्यादि ग्रंथ हू बनाए हैं । सो राजा कौ मन श्रीठाकुरजी के सिवाय और ठौर जातो नाहीं । इन कौ चित्त ठाकुर में ऐसो गढ़ि गयो जो संसार के विषय सब छूटे । सो अपनी रानि कों हू पहचानि न सके ।

ऐसो सेवा में राजा मगन रहे, और परदेस जाइ तब मानसी करे।

सो एक समै राजा परदेस गए। तब बीकानेर के ऊपर शत्रु चढि आए। तब दोनों ओर ते शत्रु ने घेर लिए। तब श्रीठाकुरजी ने तीन दिन तांई शत्रुन तें लड़ाई करी। सो ठाकुर के मंदिर के किवाड़ तीन दिन तांई भीतर ते बंद रहे। काहू तें खुले नाहीं। पाछें चौथे दिन जब शत्रु भाजि गए तब मंदिर के किवाड़ खुले। सो यह बात राजा नें परदेस में मानसी करत में जानी। सो उन ने दीवान कों लिखि पठाई। सो दीवान पत्र बांचि के चकित व्है रह्यो। सो राजा पृथ्वीसिंघजी ऐसे श्रीगुसांईजी के कृपापात्र भगवदीय भए।

वार्ता प्रसंग - २

बोहारि राजा पृथ्वीसिंघजी कों पृथ्वीपति दिल्ली बुलाए। सो राजा पृथ्वीपति के पास दिल्ही आए। तब माला-तिलक छापा सब करि कै आए। तब बादशाह पृथ्वीसिंघजी कों देखि कै मन में बहोत प्रसन्न भयो। कहे, जो-देखो ! इन कों अपने गुरु पै कैसो विश्वास है। पाछें बादशाह राजा कों काबुल की ओर लड़ाई में जाइवे की कही। तब राजा ने बिचार कियो, जो-मेरी मृत्यु तो अमुक दिन मथुरा में विश्रांत घाट पे होइवे वारी है। सो अब कैसें करे ? फेरि श्रीगुसांईजी कै चरनारविंद कौ ध्यान करि राजा काबूल गयो। सो उहां थोरे ही दिन में लड़ाई जीति कै सांढनी पें बैठि के उहां ते चले। सो दोई दिन

में मथुरा आई के वाहि दिना देह छोड़ी। सो यह बात बादशाह ने सुनी। तब बादशाह ने बोहोत खेद कियो, जो-ऐसे राजा मोकों मिलने कठिन हैं।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-जिनकों गुरु कौ आश्रय दृढ होंई, तिनकौ सर्व कार्य सिद्ध होंई। तातें वैष्णव कों गुरु कौ दृढ आश्रय राखनो।

सो वे पृथ्वीसिंघजी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इन की वार्ता कहां तांइ कहिए

वार्ता ॥ २३८॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक तुलसीदासजी सारस्वत ब्राह्मन, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम "तुलसा" है। सो चंद्रावलीजी की अंतरंग सखी है। ये श्रीचंद्रावलीजी की सेवा में सदा तत्पर रहत है। दुती कार्य में प्रवीन हैं। तातें श्रीचंद्रावलीजी की इन पर बोहोत प्रीति है। ये "श्रुतिरूपा" तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है।

ये तुलसीदास दिल्ही तें उरे में कोस बीस पर एक सारस्वत ब्राह्मन के जन्मे। सो एक समै वह ब्राह्मन अपने स्त्री - बेटा सहित ब्रज के दरसन कों मथुरा जी आयो। सो ता समय श्रीगुसांईजी आप मथुराजी में बिराजत हुते। सो या ब्राह्मन कों भागजोगि तें श्रीगुसांईजी के दरसन भए। तब ये जान्यों, जो-ये कोई महापुरुष हैं। तातें उनकी सरनि जइये तो आछो। पाछें वा ब्राह्मन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी आप वाकों दैवी जीव जानि सरनि लेये। नाम सुनाइ सेवक किये। पाछें वा ब्राह्मन ने अपनी स्त्री-बेटा कों हू सेवक करवाए। ता पाछें वा ब्राह्मन ने बिनती करी, जो-महाराज। हों गरीब ब्राह्मन हों, तातें कछू सेवा टहल दीजे तो आछौ है। तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वाकों जलघरा की सेवा दिए। ता पाछें केतेक दिन में वह ब्राह्मन और वाकी स्त्री दोऊ मरे। तब तुलसीदास बालक हुते। वर्ष पांच के। सो श्रीगुसांईजी वाकौ लालन पालन किए।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे तुलसीदास के पिता श्रीगुसांईजी के जलघरिया हते। और तुलसीदास छोटे हुते। तब श्रीगिरधरजी आदि बालकन के संग खेलते। और श्रीगुसांईजी सब लालजीन कों बुलावते तब एहू दोरि कै श्रीगुसांईजी के पास जाते। तब श्रीगुसांईजी विनकों बालक जानि कै लालजी कहते। काहेतें, जो उनके माता पिता पहिले ही सों उनकों बालक छोरि कै मरे हते। तातें श्री गुसांईजी वाकों बड़े किए हते। तातें लालजी कहते। और तुलसीदास हू अपने मन में यही जानते, जो-हों इन कौ बालक हूं। पाछें सब लालजी बड़े भए तब श्रीगुसांईजी ने सब कों श्रीठाकुरजी सेवा कों पधराइ दिए। तब तुलसीदास के मन में आई, जो-श्रीगुसांईजी ने मोकों कछू सेवा पधराई दिए नाहीं। सो उन कौ ताप जानि कै श्रीठाकुरजी आप श्रीगुसांईजी सों आज्ञा किये, जो-इनहू कों कछू सेवा पधराइ दीजिए। काहेतें, जो-इन के द्वारा बोहोत जीवन कौ उद्धार होइगो। तब श्रीगुसांईजी ने उनकों श्रीगोपीनाथजी ठाकुर पधराइ दिए। और आप आज्ञा किये, जो तुम सिंध देस में जाउ। उहां जीवन कों नाम सुनाइओ। और पुष्टिमार्ग कौ उपदेस करियो। तब लालजी नाम धराय कै और श्रीठाकुरजी कों पधराय कै तुलसीदास सिंध देस कों चले। सो एक दिन मारग में श्रीठाकुरजी की रसोई करी। सो घी न हतो। सो रोटी चुपरी नाहीं। सो वैसे ही भावना सों घी धरि श्रीठाकुरजी कों रोटी

भोग धरे। पाछें बिनती करी, जो-महाराज! ये रोटी आरोगियो। और जो नाहीं आरोगोगे तो हों श्रीगुसांईजी सों कहि दउंगो। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंई आरोगे। और कही, जो-मैं रोटी आरोग्यो हूं, तातें तू श्रीगुसांईजी सों कछू कहियो मति। काहेतें, जो हों श्रीगुसांईजी सों डरपत हूं। तब तुलसीदास जाने, जो श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी सों डरे हैं। ऐसे भोले हते। पाछें सिंध में आइ सेवा करन लागे। सो श्रीठाकुरजी हू उन कों लालजी कहते। और उन के मन में हू लालजी पने की बुद्धि सदैव रहती। और उन ने बोहोत पद किये हैं। तामें उनने अपनी छाप "लालदास" राखी है। सो कितनेक लोग उन कों "लालमति" हू कहत हैं। सो इन कौ चित्त सदा ब्रजभूमि, श्रीयमुनाजी, श्रीगोकुल, श्रीगुसांईजी में रहतो। सो इनने जीवन भरि भगवत्सेवा करी। सो जगत में ये आठमें लालजी के नाम सों प्रसिद्ध भए। सो अज हू इन कौ बंस है। सो सिंध में नाम देत है।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीगुसांईजी जाकौ हाथ पकरे, अपनो करे ताके भाग्य कौ कहा कहिए ? ताकौ कल्यान ही होंई। वाकी जगत में पूजा होंई तामें कहा कहिए? सो श्रीगुसांईजी ऐसे परम दयाल हैं, तातें उनकौ आश्रय दृढ़ राखे ते जीव कौ सदा कल्यान ही है।

सो वे तुलसीदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ २३९ ॥

अब श्रीगुसांईजी के सेवक वृंदावनदास, चतुरबिहारी के भतीजा, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त है। लीला में इन कौ नाम "गोकुला" है । ये "श्रुतिरूपा" तें प्रगटी है। तातें उन के भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै वृंदावनदास, चतुरबिहारी के भतीजा आगरे तें श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आए हते । सो श्रीगुसांईजी के दरसन किए । सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए । तब श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! कृपा करि कै मोकों सेवक कीजिए। मैं आप की सरनि आयो हूं । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो-श्रीयमुनाजी में स्नान करि आउ । तब वृंदावनदास श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै आए । पाछें बिनती करी, जो-महाराज! मैं स्नान करि आयो । तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वाकों नाम सुनाय निवेदन कराये । तब वृंदावनदास ने यथासक्ति भेट करी । ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करे । पाछें कछूक दिन श्रीगोकुल में रहे । सो नित्य श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी सात स्वरूपन के दरसन करे । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे तब वृंदावनदास हू श्रीनाथजीद्वार गए । सो वृंदावनदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किए । सो चित्त बोहोत प्रसन्न भयो । पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे तब वृंदावनदास ने बिनती करी, जो महाराज ! आप की कृपा सों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन बोहोत ही भली भांति सों भए । पाछें श्रीगुसांईजी ने वृंदावनदास कों अपनी जूंठनिकी पातरि

धरी। सो वृंदावनदास ने महाप्रसाद लियो। पाछें श्रीगुसांईजी के संग फेरि श्रीगोकुल आए। सो कछूक दिन श्रीगोकुल में रहे। सो इन कों श्रीगोकुल कौ स्वरूप हृदयारूढ भयो। पाछें श्रीगुसांईजी की आज्ञा मांगि आगरे आए। सो उहां चतुरबिहारी सों श्रीगोकुल के सब समाचार कहे। और श्रीगुसांईजी ने कृपा कीनी सो सब कहे। तब चतुरबिहारी जाने, जो-अब इन की श्रीगुसांईजी में दृढ़ प्रीति भई।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें केतेक दिन में श्रीगुसांईजी ने आसुरव्यामोह लीला करी। सो सुनि कै वृंदावनदास विकल व्है गए। तब श्रीगोकुल आए। सो ता समै श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल बिराजत हुते। सो श्रीगोकुलनाथजी ने वृंदावनदास कों कृपा करि श्रीगुसांईजी के स्वरूप कौ दरसन कराए। तब वृंदावनदास जाने, जो-श्रीगुसांईजी और श्रीगोकुलनाथजी दोऊ एक ही स्वरूप हैं। ता दिनतें वृंदावनदास श्रीगोकुलनाथजी के पास रहते। पद गावते।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-वल्लभकुल में श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, आपु या प्रकार बिराजत हैं। तातें उनके भाव सों वल्लभकुल के दरसन-चरनपरस, आदि सब करनो।

सो वृंदावनदास श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२४०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक नंददासजी, सनाढ्य ब्राह्मन, रामपुर में रहते, जिनके पद अष्टछाप में गाइयत हैं, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश — ये नंददासजी लीला में श्रीठाकुरजी के ' भोज ' सखा अंतरंग, तिनकौ प्राकट्य हैं। सो दिवस की लीला में तो ये ' भोज ' सखा हैं, और रात्रि की लीला में श्रीचंद्रावलीजी की सखी ' चंद्ररेखा' इनकौ नाम है। सो 'चंद्ररेखा' 'चंपकलता' तें प्रगटी है। तातें उनके सात्विक भावरूप है। सो ये पूरव में 'रामपुर' गाम में जन्मे।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे तुलसीदासजी के भाई सनोढ़िया ब्राह्मन हते। सो तुलसीदासजी तो बड़े भाई, और छोटे भाई नंददासजी हते। सो वे नंददासजी पढ़े बहुत हते।

तुलसीदासजी तो रामानंदीन के सेवक हते। सो नंददास हू कों रामानंदीन कौ सेवक करवायो। उन नंददासकों लौकिक विषय में प्रीति बोहोत हती। जो कहूँ भवैया नांचे तो तहां जाय कैं ठाढ़े रहें, सुनवे लगैं। सो तुलसीदासजी नंददास कों बहोत समुझावें जो-जहां तहां तू मति बेठ्यौ करे। सो वे नंददास मानते नाहीं।

सो कछुक दिन में एक संग पूरव कौ चल्यो तहांतें, श्रीरनछोड़जी के दरसन कों श्रीद्वारकाजी कों चल्यो। तब नंददास ने मन में विचारी, जो-बने तो मैं ऐसे संग में श्रीरनछोड़जी के दरसन करि आऊं। तब नंददास ने तुलसीदासजी सों कह्यो, जो-तुम कहो तो मैं या संग में श्रीरनछोड़जी के दरसन करि आऊं। तब तुलसीदासजी ने नंददास कों बोहोत समझाये, जो-कहूँ मति जाय, मारग में दुःख

बोहोत हैं । अनेक दुःसंग हैं । जो-जायगो तो तू भ्रष्ट होय जायगो । तातें तू रनछोरजी तांई न पहुंच सकेगो, बीच ही में रहेगो । तातें श्रीरघुनाथजी कौ स्मरन कर और अपने घर में बैठ्यो रहे । तब नंददास ने तुलसीदासजी सों कह्यो, जो-मेरे तो श्रीरघुनाथजी हैं, परि मैं एकबार श्रीरनछोरजी के दरसन कों अवश्य करि कै जाऊंगो । तुम कोटि उपाय करो परि मैं न रहूंगो । तब तुलसीदासजी ने जान्यो, जो-यह न रहेगो, तब संग में जो-मुखिया सिरदार हतो, ताके पास नंददास कों लै कै तुलसीदासजी गये । और मुखिया सों नंददास की भलामन तुलसीदासजी ने दीनी, जो-यह नंददास तुम्हारे संग आवत है। तातें तुम मारग में याकी खबरि राखियो । ऐसो करियो, जो-इहां फेरि नंददास आवे, काहु गाम मैं रहि न जाय । तब वा मुखिया ने कह्यो, जो-आछो, या बात की चिंता मति करो । ता पाछें वह संग चल्यो, सो वाके संग नंददास हू चले । सो कछुक दिन में वह संग मथुराजी में आय पहुंच्यो । तब संग मधुपुरी में रह्यो, और नंददास तो मधुपुरी की सोभा देखत-देखत विश्रांत ऊपर आये । सो तहां अनेक स्त्री-पुरुष स्नान करत देखे, और सुंदर स्वरूप के देखे । सो नंददास तो मन में देखि कै बहुत ही मोहित भये । मन में विचार कियो, जो-ऐसी जगह में कछुक दिन रहिये तो आछो है । सो या भांति नंददास अपने मन में लुभाये । ता पाछें नंददास ने अपने मन में यह विचार कियो, जो एक बार

श्रीरनछोरजी के दरसन करि आऊं। ता पाछें आय कै विश्रांत घाट ऊपर रहेंगे। पाछें नंददास ने सुनी, जो-संग तो मथुराजी में दस दिन और रहेगो। तब इनने विचार कियो, जो-संग तो अब मथुराजी में बहुत दिन लों रहेगो। तो मैं इन तें अकेलो होय कै श्रीरनछोरजी के दरसन कों जाऊंगो। ऐसो विचार अपने मन में नंददास करि कै रात्रि कों तो रहे। ता पाछें नंददास प्रातःकाल उठि कै चले, सो काहू तें कछु कही नाहीं। पाछें वा संग में जो मुखिया हतो, ताने अपने संग में नंददास कों जब न देख्यो, तब सगरी मथुराजी में ढूंढ्यो। जब नंददास कहूं नजर न पड़े, तब ढूंढि कै बैठि रहे। और नदंदास ने तो काहू सों पूछी हू नाहीं। वे तो अकेले चले ही गये। सो श्रीद्वारिकाजी कौ मारग भूलि गये, और चले चले सिंहनंद जाइ निकसे। सो गाम के भीतर चले जात हते। तहां एक क्षत्री श्रीगुसांईजी कौ सेवक रहत हुतो। सो ताकी बहू अत्यन्त सुंदर हती। सो वह स्त्री अपने घर में नहाय कै ऊपर ठाड़ी ठाड़ी केस सुखावत हुती। सो चले जात में वह स्त्री नंददास की दृष्टि परी। सो नंददास तो वाकों देखि कै मोहित भये। और मन में कह्यो, जो-या पृथ्वी ऊपर ऐसे हू मनुष्य हैं ? और वह स्त्री तो उतरि कै अपने घर के कामकाज में लगी। और नंददास तो तहीं ठाड़े ठाड़े मन में विचार करन लागे, जो-अब तो एक बार याकौ मुख देखों तब जलपान करूंगो। पाछें ता दिन तो नंददास

गये सो कोउ स्थल में जाय के सोय रहे, रात्रि कों। ता पाछें दूसरे दिन नंददास प्रातःकाल उठिकै वा स्त्री के द्वार पर आयकें बैठे। सो नंददास कों तो बैठे बैठे तीन प्रहर व्यतीत होय गये। तब वा क्षत्री के एक लोंड़ी हती, ताने बहू सों कह्यो, जो-एक ब्राह्मन प्रातःकाल कौ अपने घर के द्वार पर बैठ्यो है। सो वाने पानी हू नाहीं पियो। तब बहू ने लोंड़ी सों कह्यो, जो-वा ब्राह्मन सों पूछो तो सही, जो-तुम द्वार ऊपर काहे कों बैठे हो? तब लोंड़ी ने आइकें नंददास सों कह्यो, जो-तुम इहां हमारे द्वार पै क्यों बैठे हो ? तब नंददास नें वा लोंड़ी सों कह्यो, जो-मैं तो तेरी बहू कौ एक बार मुख देखूंगो, ता पाछें जलपान करूंगो, तब जाऊंगो। तब वह लोंड़ी यह सुनिकै अपनी बहू पास गई। और वह सब बात बहू सों कही, जो-वह ब्राह्मन तो तिहारो मुख देखिकै जायगो। तब बहूनें लोंड़ी सों कह्यो, जो-मैं तो वाकों अपनो मुख दिखाउंगी नाहीं। वह तो आपही तें उठि जायगो। सो ऐसे ही नंददास कों हू साज (हठ ?) पड़ि गई। तब वा लोंड़ी ने बहू तें फेरि कही, जो तुम मेरी एक बात सुनो। जो-"एक समै श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दरसन कों अपनो सगरो घर गयो हो। तब संग में मैं हुती और तुमही हे। सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीजीद्वार पधारत हते। और मैं, तुम, तुम्हारो ससुर, सब संग हते। ज्येष्ठ कौ महीना हतो। सो मारग में एक म्लेच्छानी प्यासी होय कैं विकल भई परी हती।

वह मेवा फरोसनी हती। सो ताही मारग में होय कैं श्रीगुसांईजी पधारे। श्रीगुसांईजी निकट आये, तब खवास नें वासों कह्यो, तू मारग छोड़ि कैं न्यारी उठि बैठि। सो वाकों तो उठिवे की सक्ति नाहीं। याकौ तो कंठ पानी बिना सूखि गयो, सो नेत्रन में प्रान आय रहे हते। सो वापै बोल्यो हू न जाय। तब श्रीगुसांईजी पूछें, जो-यह कहा है? तब खवास ने श्रीगुसांईजी सौं कह्यो, जो-महाराज! एक म्लेच्छानी है, सो मारग में परी है। जो-बहोतेरो वासों कहत है परि वह उठत नाहीं? तब श्रीगुसांईजी ने वा म्लेच्छानी की ओर देख्यो। तब म्लेच्छानी ने श्रीगुसांईजी की ओर हाथ सों बतायो, जो-मैं तो प्यासी हों। तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों कह्यो, जो-याकों बेग ही जल प्यावो। तब खवास नें श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज! इहां तो काहू के पास पानी नाहीं है, और तलाव कूआ हू निकट नाहीं है, सो पानी कहांते पाइये? तब श्रीगुसांईजी ने खवास सों कह्यो, जो -हमारी झारी में जल होयगो। तब खवास ने कही, महाराज! झारी छुइ जायगी। तब श्रीगुसांईजी ने खवास तें कह्यो, झारी तो और आवेगी, परंतु फेरि या म्लेच्छानी के प्रान कहाँते आवेंगे? तातें बेगि जल प्यावा, जीवमात्र पर दया राखनी। सो वह श्रीनवनीतप्रियजी कौ महाप्रसादी जल हतो। जो वा म्लेच्छानी कों प्यायो, सो वह जल पी गई। तब वा म्लेच्छानी के अंग अंग में सीतलता होय गई। तब वा

म्लेच्छानी नें उठि कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! मैंने कन्हैयाजी सुने हते, सो आज मैंने नैनन सों देखे। तातें तुम 'गुसांईया' सांचे हो, सो मोकों जिवाई। ता पाछें वह गोकुल रही। सो वह सुंदर मेवा लाय कैं श्रीगुसांईजी कै द्वार लैकैं आवे। सो वह म्लेच्छानी श्रीगुसांईजी के मनुष्यतें कहे, जो-ए मेवा तुम राखो। तब वे मनुष्य कहे, जो-तू मोल कहै तो लेंय। तो वह हमारे काम आवे। तब वह थोरे पैसा कहे। सो या भांति सों वाने अपनो जनम व्यतीत कियो। सो वा म्लेच्छानी के ऊपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न रहते। ता पाछें वह म्लेच्छानी ने देह छोड़ी। सो वाने महावन में जाय कै ब्राह्मन के घर जनम पायो। सो फेर वे श्रीगुसांईजी की सेवकनी भई, और वह कृतार्थ भई।

सो या भाँति सों लोंड़ी ने अपनी बहूसों कह्यो, जो-जीव मात्र ऊपर दया राखनी। तातें ब्राह्मन प्रातःकाल कौ भूख्यो प्यासो बैठ्यो है, सो वह बात आछी नाहीं है। तब वह बात बहू के हृदे में आई। पाछें वा लोंडी के संग बहू द्वार ऊपर गई। तब नंददास वाकौ मुख देखि कै उठि गये। सो या भांति सों वे नंददास नित्य आवे। सो वाकौ मुख देखि कै चले जाँय। तब पाछें वाके घर के धनी क्षत्री ने सुनी, जो-यह ब्राह्मन हमारे घर याकों देखवे कों आवत है। तब वा क्षत्री ने आय कै नंददास सों कह्यो, जो-तुम हमारे घर के द्वार पर नित्य आवत

हों, सो हमारी जगत में हांसी बोहोत होत हैं। तब नंददास ने वा क्षत्री सों कह्यो, जो-मैं तुम तें माँगत नाहीं, कछु तुमारो बिगारत नाहीं। ता पाछें और तुम कहत हो मोसों, तो मैं तुम्हारे माथे मरूंगो। तब यह नंददास के वचन सुनि कै यह क्षत्री डरप्यो, जो-अब यातें मैं बोलूंगो तो-यह ब्राह्मन हत्या देयगो, सो कछू कहे नाहीं। और नंददास तो वेसेई नित्य आवें सो वाकौ मुख देखि कै चले जांय। ता पाछें कितेक दिन में यह बात सगरे गाम में भई। जो फलाने क्षत्री की बहू कों एक ब्राह्मन देखिवे कों नित्य आवत है। सो यह बात सुनि कै वा क्षत्री कों लाज आई। जब क्षत्री ने अपने पुत्र सों कह्यो, जो-अब हम कों यह गाम छोड़नो आयो। ता पाछें घर में की सब वस्तु बेचि कै सब की हुंडी कराई। ता पाछें एक गाड़ी भाड़े करी, दस पांच मनुष्य मारग के लिए चाकर राखे। प्रातःकाल तें नंददास वा बहू कौ म्होडो देखि के गये हते। ता पाछें वह क्षत्री, क्षत्री कौ बेटा, क्षत्री की बहू और चोथी लोंडी, सो वे चारों जनै वा गाड़ी में बैठि कै श्रीगोकुल कौं चले। ता पाछें दूसरे दिन नंददास वाके घर आये। सो देखे तो वाके घर कौ ताला लाग्यो है। तब नंददास ने वाके परोसीन सों पूछी, जो-आज या घर के ताला लाग्यो है, सो या क्षत्री के घर के लोग कहाँ गये ? तब और लोगन ने कही, जो-जा भले आदमी! तेरे दुःख तें तो वा क्षत्री ने अपनो गाम हू छोड़ि दीनो

है। सो वह तो काल प्रातः ही कों श्रीगोकुल कों गयो है। यह वचन सुनत ही नंददास तो अपने डेरा में आये। जो अपनी वस्तुभाव लै कैं ताही समैं श्रीगोकुल कों चले। सो चलत चलत सांझ के समय जहां वा क्षत्री की गाड़ी उतर रही, तहां नंददास हू जाय पहोंचे। सो जायकै वा क्षत्री की गाड़ी के निकट ही बैठि गये। तब वा क्षत्री ने नंददास कों देखिकै कह्यो, जो-जा दुखतें हमने अपनो घर छोड्यो, देस छोड्यो, सो दुख तो हमारे संग ही लग्यो आयो। ता पाछें वा क्षत्री के मनुष्य वासों लरन लागे, जो-तू हमारे संग काहे कों आवत है ? तब नंददास उठि कै दूरि जाय बैठे, और कह्यो, जो-हम तुम सों मांगत तो नाहीं कछू, और यह गामहू तुमारो नाहीं, ता पाछें रात्रि कों तो तहां सोय रहे। पाछें प्रातःकाल होत ही वह क्षत्री तो गाड़ी में बैठि कै तहां तै चल्यो। तब वासों नेक दूरि कै नंददास हू चले। सो याही भांति कछूक दिन में श्रीगोकुल के घाट ऊपर आये। तब उन क्षत्री ने विचार कियो, जो-हम तो या ब्राह्मन के दुःख के मारे गाम छोड़िकै आये। तोहू वह तो हमारे संग ही आयो है। तातें ऐसो जतन होई, जो-यह हमारे संग श्रीयमुनाजी उतरिकै श्रीगोकुल न चले तो आछो है। नाहीं (तो) हमारी हाँसी श्रीगोकुल में हू होयगी। और श्रीगुसांईजी यह बात सुनेंगे, तो-यह बात आछी नाहीं है। तब उन मलाहन सों कहे (और) घटवार ने सों वा क्षत्री ने कह्यो, जो-हम तुम कों कछुक

द्रव्य देंयगे, परि या ब्राह्मन कों पार मति उतारो। पाछें वह क्षत्री नाव में बैठ्यो, तब नंददास हू नाव पर बैठन लागे, तब उन मलाहनने हाथ पकरि कै उतार दियो, नाव पें तें। तब नंददास तो श्रीयमुनाजी के तीर ठाड़े ठाड़े बिचार करन लागे। और वह क्षत्री तो नाव में बैठि कै श्रीजमुनाजी के पार भयो। ता पाछें वह क्षत्री श्रीगोकुल में आय कै, लोंडी कों एक ठौर बैठाय कै वाके पास सब वस्तुभाव धरि कै आप तीनों जनें श्रीगुसांईजी के दरसन कों आये। सो श्रीनवनीतप्रियजी के राजभोग के दरसन किये। ता पाछें अनोसर कराय कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब इन तीनों जनेंन ने भेंट धरी, और दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-वैष्णव ! कब के आये हो ? तब इन कही, जो-महाराज! अब ही आये हैं। श्रीनवनीतप्रियजी कै राजभोग की आरती कै दरसन आपकी दयातें करे हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-आज तुम प्रसाद इहांई लीजो, अब बैठो। ऐसे आज्ञा दे कै श्रीगुसांईजी आप तो भोजन कों पधारे। ता पाछें आचमन करि कै अपनी जूठनि की पातरि वा क्षत्री कों धरी। 'सो चारि पातर श्रीगुसांईजी ने उनके आगें धरी। तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! हम तो तीनही जनें हैं। और आपने चार पातरि कौन की धरी हैं। इहां तो और वैष्णव कोई दीसत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो,

जो-वह तुमारे संग ब्राह्मन आयो है, जाकों तुम पार छोड़ि आये हो, सो वे कौन के घर जायगो ? तब ए बचन श्रीगुसांईजी के सुनि कै तीनौं जनें लज्ञित भये । और कहे, जो-जा बात तें देखो हम डरपत हते, जो-हमारी हाँसी श्रीगोकुल में न होय तो आछो है, सो यहां तो सब पहले ही प्रसिद्ध होय रही है । ऐसे कहि कै वे तीनौं जनै अत्यंत सोच करन लागे । सो श्रीगुसांईजी वा क्षत्री सों कहे, जो तुम सोच काहेकों करत हो । वह तो दैवी जीव है, जो-तुमारे संग पाइ कै इहां आयो है । सो अब तुम कों दुःख न देइगो । ऐसे वासों कहि कै एक ब्रजवासी कों बुलाय कै आज्ञा दीनी जो-तू पार जाय कै तहां श्रीजमुनाजी के तीर एक नंददास ब्राह्मन बैठ्यो है ताकों बुलाय लाव । तब वह ब्रजवासी तत्काल आइ कै नाव में बैठि कै पार कों चल्यो। और नंददास कों तो उन मलाहन ने नाव पैं तें उतारि दिये । सो श्रीजमुनाजी के तीर बैठे बैठे श्रीजमुनाजी के आगें विज्ञप्ति के पद गावन लागे । सो पद –

- राग रामकली -

१- *नेह कारन श्रीयमुने प्रथम आई ।*
भक्त के चित्त की वृत्ति सब जानि कै ताही तें अति आतुर जु धाई ॥
जाहि जैसी मन हुती कामना ताहि तेसी साध जो पूजाई ।
'नंददासनि नाथ' ताही पै रीझ रहे जोई श्रीयमुनाजी कौ जस जु गाई ॥१॥

२- *भक्त पर करि कृपा श्रीजमनाजू ऐसी ।*
छांडि निज धाम विश्राम भूतल कियो प्रगट लीला दिखाई जू तैसी ॥
परम परमारथ करत हैं सबन कों देति रूप अद्‌भुत आप जैसी ।
'नंददास' यों जानि दृढ करि चरन गहे एक रसना कहा कहों विसेखी ॥२॥

३- श्रीजमुने श्रीजमुने श्रीजमुने जु गावे॥
सेस सहस्त्र मुख जाही गावत निसदिन पार न पावे ॥
सकल सुख देनहारि तातें करहु उच्चार कहत हों बारंबार जिनि भुलावो ।
'नंददास' की आस श्रीजमुने पूरन करी, तातें कहों घरी घरी चित्त लावो ॥३॥

सो या भांति नंददास तो श्रीजमुनाजी के तीर बैठे बैठे श्रीजमुनाजी की स्तुति करत हैं। इतने में वह ब्रजवासी जाकों श्रीगुसांईजी ने नंददास कों लेवे पठायो हतो, सो नाव लै कै पार जाय पंहुच्यो। सो तंहा जायै क पूछ्यो, जो-नंददास ब्राह्मन कहां है? तब इन कही जो-नंददास ब्राह्मन तो मैं ही हूं। तब वा ब्रजवासी ने नंददास सों कह्यो, जो-तुमकों श्रीगुसांईजी ने बुलाये हैं, और यह नाव पठाई है, तामें तुम बेठि कै बेगि चलो। तब तो नंददास प्रसन्न होइ कै श्रीजमुनाजी कों दंडवत् करि कै श्रीगोकुल कों दंडवत् करि पाछें नाव में बैठ कै पार आये। और आय कै श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै साष्टांग दंडवत् करी। सो दरसन करत ही नंददास की बुद्धि निरमल होय गई। तब तो श्रीगुसांईजी सों हाथ जोरि बिनती करी, जो-महाराज! मैं जब तें जनम पायो, तब तें विषय करत ही जनम गयो। और आप तो परम कृपालु हो, मेरे ऊपर कृपा करि कै मोको अपनी सरनि लीजे। सो ऐसे दैन्यता के वचन नंददास कै सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो-नंददास ! जाओ, स्नान करि कै अपरस ही में इहां आइयो। तब नंददास वैसे ही स्नान करि कै अपरसही में श्रीगुसांईजी के पास आये। पाछें श्रीगुसांईजी ने नंददास

कों नामनिवेदन (भावात्मक रूप सों) करवायो । तब श्रीगुसांईजी को स्वरूप नंददास के हृदयारूढ भयो, ता समें नंददास ने यह कीर्तन गायो । सो पद —

— राग बिलावल —

जयति रुक्मनिनाथ पद्मावति - प्रानपति बिप्रकुल - छत्र आनंदकारी ।
दीप वल्लभवंस जगत निस्तम करन कोटि उडुराज सम ताप-हारी ॥
जयति भक्त जन-पति पतितपावन करन कामीजन कामना पूरन-चारी ।
मुक्ति-कांक्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी ॥
जयति सकल तीर्थ फलित नाम स्मरन मात्र बास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी ।
'नंददासनिनाथ' पिता गिरिधर आदि प्रगट अवतार गिरिराजधारी ॥

सो नंददास ने यह कीर्तन गायो । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए । ता पाछें श्रीगुसांईजी नंददास कों आज्ञा दीनी, जो-तेरी महाप्रसाद की पातरि धरि है, सो जाइ कै महाप्रसाद लेवो । सो नंददास आइ कै महाप्रसादी रसोई-घर में जाय कै श्रीगुसांईजी की जूठनि कौ प्रसाद लेन लागे । सो लेत ही स्वरूपानंद कौ अनुभव होन लाग्यो । सो नंददास तो देह कौ अनुसंधान भूलि गये, और जहां के तहां बैठे रहि गये । सो हाथ धोयवे की सुधि न रही । पाछें जब उत्थापन कौ समय भयो, तब भीतरिया ने आइ कै श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराजाधिराज ! नंददासजी तो महाप्रसाद ले कै उहांई बैठि रहे हैं, उठे नाहीं हैं । तब श्रीगुसांईजी ने उन भीतरिया सों कह्यो, जो-उहां तुम नंददास तें कोऊ बोलो मति । ता पाछें चारि प्रहर रात्रि गई तोऊ नंददास कों देह की सुधि न रही । ता पाछें दूसरे दिन प्रातःकाल नंददास के पास श्रीगुसांईजी

पधारे। तब श्रीगुसांईजी ने नंददास के कान में कह्यो, जो-उठो नंददास ! दरसन कौ समय भयो हे, तब नंददास उठि कै श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत् करी। ता समें नंददास ने यह कीर्तन गायो। सो पद —

— राग बिभास —

प्रात समै श्रीवल्लभसुत कौ पून्य पवित्र बिमल जस गाऊं ।
सुंदर सुभग बदन गिरिधर कौ निरखि निरखि दोऊ नयन सिराऊं ॥
मोहन बचन मधुर श्रीमुख के श्रवनन सुनि सुनि ह्रदै बसाऊं ।
तनमनप्रान निवेद यही विधि अपन कों सुफल कराऊं ॥
रहों सदा चरनन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट जो पाऊं ।
'नंददास' प्रभु यह माँगत हों श्रीवल्लभ कुल कौ दास कहाऊं ॥१॥
प्रात समय श्रीवल्लभ सुत कौ उठत ही रसना लीजे नाम ।
आनंदकारी प्रभु मंगलकारी अशुभ हरन जन पूरन काम ॥
यही लोक-परलोक के बंधु को कहि सके तिहारे गुनग्राम ।
'नंददास' प्रभु रसिक सिरोमनि राज करो पिय गोकुल सुखधाम ॥२॥

सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो मंदिर में पधारे और नंददास आप देह कृत्य करिवे गये। ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कौ समय भयो। सो नंददास श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भये। तब नंददास ने यह पद गायो। सो पद —

- राग बिलावल -

बालगोपाल ललन कों मोद भरि जसुमति हुलरावति ।
मुख चूमत देखत सुंदर तन आनंद भरि भरि गावति ॥
कबहूक पलना मेलि झूलावति कबहू स्तनपान करावति ।
'नंददास' प्रभु गिरिधर कों रानी निरखि निरखि सुख पावति ॥१॥

यह कीर्तन नंददास ने तहां गायो। सो सुनिकै श्रीगुसांईजी

बोहोत प्रसन्न भये। तब नंददास ने श्रीगुसांईजी सों हाथ जोरि साष्टांग दंडवत् करि कै कह्यो, जो-महाराज ! मोसे पतित को उद्धार करोगे ? सो वे नंददास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - २

और एक समय श्रीगुसांईजी रात्रि कों अपनी बैठक में बिराजे हुते। तब आप आज्ञा करें, जो-काल्हि श्रीनाथजीद्वार अवश्य जानो। तब नंददास ने बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! जैसे आपु कृपा करि कै श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करवाये, तैसे श्रीनाथजी के दरसन करवावो। ता पाछें प्रातः भये श्रीनवनीतप्रियजी के मंगला के दरसन करि कै, शृंगार राजभोग करि कै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे, और नंददास कों हू संग लिये। सो उत्थापन के समय श्रीगिरिराज आइ पहोंचे। सो श्रीगुसांईजी तो न्हाय कै मंदिर में पधारे। समो भयो तब दरसन कौ टेरा खुल्यो। सो नंददास श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भये। ता समैं नंददास ने यह कीर्तन गायो। सो पद –

- राग नट -

सोहत सुरंग दुरंग पाग कुरंग ललना केसै लोयन लोने।
कपोल विलोलन में झलके कल कुंडल कानन कोने॥
रंगरंगीले के अंग सबे नवरंग रंगे ऐसे भए न होने।
'नंददास' सखी मेरी कहा चली कामके आये टटावक टोने!

यह कीर्तन नंददास ने गायो, सो श्रीगुसांईजी मंदिर में सुने, पाछें टेरा खेंचि लियो। ता पाछें परमानंद में नंददास ने बैठे बैठे और हू कीर्तन किये पाछें संध्यार्ति के दरसन खुले तब नंददास ने दरसन करि कै यह कीर्तन गायो। सो पद –

— राग गोरी —

बन तें सखान संग गायन के पाछें पाछें आवत मोहनलाल कन्हाई।
गोरज छुरित अलकन की छबि मोहे यह छबि बरनत बरनी न जाई॥
पीत बसन कटि सोहे किंकिनी धुनि मोहे तामें फिरत मधुर धुनिमुरली सब्द सुहाई।
'नंददास' प्रभु अंचल सों जसुमति वदन पोंछि कर मुख चूंबति न अघाई॥१॥

बनतें आवत गावत गोरी।
हाथ लकुट गायन के पाछें ढोटा जसुमति कोरी॥
मुरली अधर धरे नंदनंदन मानों लगी ठगोरी।
याहीतें कुल कान हरी हें ओढ़े पीतपिछोरी॥
अटन चढ़ि देखत रूप निरख भई बोरी।
'नंददास' जिनि हरिमुख निरख्यो तिन कौ भाग बड़ोरी॥२॥

देखि सखी हरि कौ बदन सरोज।
प्रफुलित बदनसुधा सरवर में लुब्धे मधुप मनोज॥
गौरज छुरित पराग रह्यो फबि सुंदर अधर सुकोस।
'नंददास' नासा मुक्ता मानो रहि है एकत्रन ओस॥३॥

घर नंद महरिके मिस ही मिस आवे गोकुल की नारि।
सुंदर बदन बिनु देखे कल न परत है भूल्यो धाम-काम आछौ बदन निहारि॥
दीपक ले चली बारि बाट में बड़ो करि डारि
फिरि आप छबि सों बयारि कों देत गारि।
'नंददास' नंदलाल सों लागे है नैन पलक की ओट मानों बीते जुग चारि॥४॥

सो या भांति सों नंददास ने बोहोत कीर्तन किये। ता पाछें नंददास छै मास पर्यन्त सूरदासजी के संग परासोली में रहे। सो श्रीगुसांईजी नंद्दास ऊपर सदा प्रसन्न रहते। वे नंददास

ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये ।

वार्ता प्रसंग - ३

और एक समय श्रीमथुराजी कौ एक संग पूरव कों चल्यो, गयाश्राद्ध करिवे कों । ता संग दस-पांच वैष्णव हू हते । तब तुलसीदास ने सुन्यो जो-संग आयो है । तब वा संग में तुलसीदास ने आइ कै पूछी, जो-एक नंददास ब्राह्मन इहां तें गयो है, सो मथुराजी में सुन्यो है । सो तुमने कहुं देख्यो होय तो कहो । तब एक वैष्णव ने कही, जो-तुलसीदासजी ! एक नंददास तो श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो हे । सो वह नंददास पहले तो अत्यंत विषयी हतो, सो अब तो बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो है । तब तुलसीदासजी अपने मन में बिचारे, जो-ऐसो तो वही नंददास है, सो श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो है । जो अब तो उनकों मेरी शिक्षा न लगेगी । तब तुलसीदासजी ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-मैं तुमकों एक पत्र देऊं, ताकौ जुवाब तुम मोकों मंगाय देउगे ? तब उन वैष्णवन ने तुलसीदासजी सों कही, जो-काल्हि मेरो मनुष्य श्रीगोकुल कों चलेगो । जो तुमकों पत्र देनो होय तो लिख कै बेगि तैयार करियो । तब तुलसीदासजी ने ताही समें पत्र लिखि कै तैयार कियो । तामें लिख्यो, जो-तू पतिव्रत धर्म छोड़ि व्यभिचार धर्म लियो, सो आछौ नाहीं कियो । अब तू आवे तो फेरि तोकों पतिव्रत धर्म बताऊं । सो यह पत्र तुलसीदासजी ने वा वैष्णव के हाथ दियो । सो वह पत्र अपने पत्रन में धरि कै वा वैष्णव

ने कासिद के हाथ दियो । सो वह पत्र ले कै श्रीगोकुल आयो। तब कासिद ने दंडवत् करि कै वे पत्र श्रीगुसांईजी कै आगे धरे । तब उन पत्रन में नंददास कै नाम को जो पत्र हतो सो निकस्यो । तब श्रीगुसांईजी ने वह पत्र बांचि कै नंददास कौं बुलाय कै दियो । तब नंददास नें वह पत्र लेकै बांच्यो । पाछें वा पत्र कौ प्रतिउत्तर लिख्यो, जो-मैरो तो प्रथम रामचंद्रजी सों विवाह भयो हतो । सो बीच में श्रीकृष्ण दौरि आइ कै लूटि ले गये । सो रामचंद्रजी में जो बल होतो तो मोकों श्रीकृष्ण कैसे ले जाते ? और श्रीरामचंद्रजी तो एक पत्नीव्रत हैं । सो दूसरी पत्नी कों कैसे संभार सकेंगे ? एक पत्नी हू बराबरि संभारि न सकें, सो रावण हरि कै ले गयो । और श्रीकृष्ण तो अनंत अबलान कै स्वामी हैं, और इन की पत्नी भये, पाछें कोई प्रकार कौ भय रहे नाहीं है । एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कों सुख देत हैं । जासों मैंने श्रीकृष्ण पति कीने हैं । सो जानोगे । सो मैं तो अब तन, मन, धन यह लोक, परलोक श्रीकृष्ण कों दीनो है । (और) अब तो मैं परवस होइ कै पर्‌यो हूँ । ऐसो नंददास ने तुलसीदासजी कों पत्र लिख्यो । तामें एक पद यह लिख्यो । सो पद –

- राग आसावरी -

कृष्ण नाम जब तें श्रवन सुन्योरी आली भूलीरी भवन हों तो बावरी भई री ।
भरि भरि आवे नैन चित्त न परत चैन मुख हू न आवे बैन तनकी दसा कछूऔर ही भई री।।
जेतेक नेम धरम ब्रत कीनेरी मैं बहु बिधि अंग अंग भई हों तो श्रवन भई री ।
'नंददास' जाके श्रवन सुने यह गति माधुरी मूरति के धों कैसी दई री ।

यह कीर्तन नंददास ने पत्र में लिखि कै वह पत्र कासिद कों दियो । सो वह कासिद कितेक दिनन में आयो । सो वे पत्र सब वैष्णव कों दिये । तब उन वैष्णव ने वह नंददास कौ पत्र बांचि के तुलसीदास कों बुलाय कै दीनो । पाछें तुलसीदासजी ने नंददास कौ पत्र बांचि कै अपने मन में जान्यो, जो-अब नंददास इहां कबहू न आवेगो । ऐसो जानि कै तुलसीदासजी अपने घर आए । सो वे नदंदासजी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भए, जिन कौ श्रीगुसांईजी के स्वरूप में ऐसो दृढ भाव हतो ।

वार्ता प्रसंग - ४

और एक समै तुलसीदासजी ने विचार कियो, जो-नंददास श्रीगोकुल में है, सों मैं जाइ कै लिवाय लाऊं । यह विचारि कै तुलसीदास कासी तें चले, सो कितेक दिन में श्रीमथुराजी में आइ पहोंचे । तब श्रीमथुराजी में पूछे, जो-इहां नंददास ब्राह्मन कासी तें आयो है, सो तुम जानत होउ तो बताओ, जो-वह कहां होयगो ? तब काहू ने कह्यो, जो-एक नंददास तो आइ कै श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो है, सो तो गोकुल होयगो, कै गिरिराज होयगो । तब तुलसीदासजी प्रथम तो श्रीगोकुल आये। सो श्रीगोकुल की सोभा देखि कै तुलसीदास कौ मन बोहोत ही प्रसन्न भयो । पाछें तुलसीदासजी मन में बिचारे जो-ऐसो स्थल छोड़ि कै नंददास कैसे चलेगो ? तब तुलसीदासजी ने तहां पूछ्यो, जो-एक-नंददास ब्राह्मन है, सो

कहां होयगो ? तब काहू ने कही, जो-एक नंददास तो श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो है । सो तो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार गये हैं, सो उहांही होयगो । तब तुलसीदासजी फेर मथुरा में आय कै श्रीजमुनाजी के दरसन करे, पाछें तहां ते श्रीगिरिराजजी गये । सो उहां परासोली में तुलसीदासजी नंददासजी कों मिले । तब तुलसीदासजी ने नंददास सों कही, जो-तुम हमारे संग चलो । सो गाम रुचे तो अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो कासी में रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, बन रुचे तो दंडकारण्य में रहो । ऐसे बड़े-बड़े धाम श्रीरामचन्द्रजी ने पवित्र करे हैं । तब नंददास ने उत्तर देयवे कों यह पद गायो। सो पद —

- राग सारंग -

जो गिरि रुचे तो बसो श्रीगोवर्द्धन, गाम रुचे तो बसो नंदगाम।
नगर रुचे तो बसो श्रीमधुपुरी सोभा सागर अति अभिराम ॥१॥
सरिता रुचे तो बसो श्रीयमुनातट, सकल मनोरथ पूरन काम ।
'नंददास' कानन रुचे तो बसो भूमि वृंदावन धाम ॥२॥

पाछें नंददास सूरदासजी सों मिलि कै श्रीनाथजी के दर्सन करवे कों गये । तब तुलसीदासजी हू उनके पाछें पाछें गये । जब श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करे तब तुलसीदासजी ने माथो नँवायो नाहीं । तब नंददास जानि गये, जो-ये श्रीरामचन्द्रजी बिना और दूसरे कों नहीं नमे हैं । तब नंददास ने मन में बिचार कीनो, जो-यहाँ और श्रीगोकुल में इन कों श्रीरामचंद्रजी के दरसन कराऊं । तब ये श्रीकृष्ण कौ प्रभाव

जानेंगे । पाछें नंददास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिनती करी। सो दोहा —

कहा कहों छबि आज की, भले बने हो नाथ ।
तुलसी-मस्तक तब नमे, धनुषबान लेहु हाथ ॥

यब बात सुनि कै श्रीनाथजी कों श्रीगुसांईजी की का'नि तें बिचार भयो, जो-श्रीगुसांईजी के सेवक कहे सो हम कों मान्यो चहिये । पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी ने श्रीरामचंद्रजी कौ रूप धरि कै तुलसीदासजी कों दरसन दिए । तब तुलसीदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों साष्टांग दंडवत् करी । जब पाछें तुलसीदासजी दरसन करि कै बाहर आये, तब नंददास श्रीगोकुल चले । तब तुलसीदासजी हू संग संग आये । तब आय कै नंददास ने श्रीगुसांईजी के दरसन करि । साष्टांग दंडवत् करी । और तुलसीदासजी ने दंडवत् करी नाहीं । पाछें नंददास कों तुलसीदास नें कही, जो-जैसे दरसन तुम ने वहां कराये वैसे ही यहाँ करावो । तब नंददास नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, ये मेरे भाई तुलसीदास हैं, सो श्रीरामचंद्रजी बिना और कों नहीं नमें हैं । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-तुलसीदासजी ! बैठो । ता समैं श्रीगुसांईजी के पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथजी वहां ठाड़े हुते और उन दिनन में श्रीरघुनाथजी कौ विवाह भयो हुतो । तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-श्रीरामचंद्रजी ! तुम्हारे सेवक आये हैं, इन कों दरसन देहु । तब श्रीरघुनाथलालजी ने तथा श्रीजानकी बहूजी नें श्रीरामचंद्रजी कौ तथा श्रीजानकीजी कौ

स्वरूप धरि कै दरसन दिये ! तब तुलसीदासजी ने साष्टांग दंडवत् करी। पाछें तुलसीदासजी दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भये। और यह पद गायो। सो पद –

- राग सारंग -

बरनौं अवध श्रीगोकुल गाम।
उत बिराजत जानकीवर इतहि स्यामा-स्याम॥
उहां सरजू बहत अद्‌भुत इहां श्रीजमुना नीर।
हरत कलिमलि दोउ मूरत सकल जन की पीर॥
मनि जटित सिर क्रीट राजत संग लक्ष्मन बाल।
मोर मुकुट रु बैन कर इहां निकट हलधर ग्वाल॥
उहाँ केवट सखा तारे बिहँसि कै रघुनाथ।
इहाँ नृप जदुनाथ तारयौ कूप गहि निज हाथ॥
उहां सिबरी स्वर्ग दीनो सील-सागर राम।
इहां कुब्जा ल्याय चंदन किये पूरन काम॥
भक्त हित श्री राम कृष्ण सु धर्‌यो नर अवतार।
दास 'तुलसी' दोउ आसा कोउ उबारो पार॥

ता पाछें तुलसीदासजी ने श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कै कह्यो, जो-महाराज ! नंददास तो पहले बड़ो विषयी हतो, सो अब तो याकों बड़ी अनन्य भक्तिभई है, ताकौ कारन कहा है? तब श्रीगुसांईजी नें तुलसीदासजी कों कह्यो, जो-नंददास उत्तम पात्र हुते, यातें पुष्टिमार्ग में आय कै प्रवृत्त भये। और अब व्यसन अवस्था याकों सिद्ध भई है। सो अब वे दृढ़ भये हैं। तब श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के वचन सुनि कै तुलसीदासजी प्रसन्न होय श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै पाछें आप बिदा होय कासी आये। सो वे नंददासजी श्रीगुसांईजी के ऐसे

कृपापात्र भगवदीय हते। जिन के कहेतें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों तथा श्रीरघुनाथलालजी कों श्रीरामचन्द्रजी कौ स्वरूप धरि कै दरसन देने पड़े।

वार्ता प्रसंग - ५

सो एक दिन नंददास के मन में ऐसी आई. जो-जैसे तुलसीदासजी ने 'रामायण' भाषा किये है। तैसे ह श्रीमद्भागवत भाषा करें। पाछें नंददास ने 'श्रीमद्भाग दशम' भाषा संपूरन कियो। तब मथुरा के सब पंडित मि कै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! श्रीभागवत की कथा कहि कै निरवाह करत हते। सो तुम् सेवक नंददासजी ने भाषा में श्रीभागवत कही है। सो हमारी कथा कोई न सुनेगो, तातें अब हमारी जीविका तो सो अब आप के हाथ उपाय है। तब श्रीगुसांईजी नें नंद कों बुलाय कै कह्यो, जो-नंददास ! तुमने जो श्रीमद्भाग भाषा में कीनो है, सो इन ब्राह्मन की जीविका में हानि होत तासों तुम ब्रजलीला तो पंचाध्याई तांई की राखो, श्रीजमुनाजी में पधराय देउ। सो नंददास ने श्रीगुसांईजी आज्ञा प्रमान मानि कै ब्रजलीला तांई (भागवत) राखी, सब श्रीजमुनाजी में पधराय दीनो। सो वे नंददास श्रीगुसांईजी के ऐसे आज्ञाकारी और बड़े कृपापात्र हते।

वार्ता प्रसंग - ६

और एक समैं अकबर बादसाह और बीरबल श्रीमथुर

आये। सो बीरबल श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। सो श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी पधारे हते और श्रीगिरिधरजी घर हते। सो बीरबल श्रीगिरिधरजी के दरसन करि कै अकबर पात्साह के पास आये। तब पात्साह ने पूछी, जो-बीरबल ! तू कहाँ गयो हतो ? तब बीरबल ने कह्यो, जो-दीक्षितजी के दरसन कों श्रीगोकुल गयो हतो। सो श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजी के दरसन कों श्रीगोवर्द्धन पधारे हैं, और उन के पुत्र श्रीगिरिधरजी घर हैं, सो उन के दरसन कर कै आयो हूँ। तब पात्साह ने बीरबल सों कह्यौ, जो-दिन दो में हम हू श्रीगोवर्द्धन चलेंगे वहाँ सों तुम जाइ कै दीक्षितजी के दरसन करि आइयो। ता पाछें दिन दोय में अकबर पात्साह के डेरा गोवर्द्धन मानसी गंगा पर भये। तब बीरबल श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों गोपालपुर आयो। सो दरसन करि कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै ता पाछें अपने डेरा आयो। पाछें नंददास ने सुनी, जो-अकबर पात्साह के डेरा गोवर्द्धन में मानसी गंगा पै भये हैं।

सो अकबर पात्साह के एक लोंडी हती। सो वह श्रीगुसांईजी की सेवक हुती। ताके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी बड़ी कृपा करते, वाकों दरसन देते। वा लोंडी सों नंददास सों बड़ी प्रीति हती सो नंददास वा लोंडी सों मिलिवे कों मानसी गंगा पै आये। सो तहां वा लोंडी कों ढूंढन लागे। सो वह लोंडी

एक एकांत ठौर में बिलछू पै वृक्षन की लतान की तरें रसोई करत हती । सो रसोई करि कै भोग धस्यो हो । तहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु पधारे हुते । सो नंददास ता समैं श्रीगोवर्द्धननाथजी कों देखे । सो दरसन करि कै नंददास बोहोत ही प्रसन्न भये । और कह्यो, जो-याके बड़े भाग्य है । ता पाछें नंददास एक वृक्ष की ओट मैं ठाड़े रहि कै यह कीर्तन गायो । सो पद –

— राग टोडी —

चित्र सराहत चितवत दुरि मुरि गोप बहोत सयानी ।
एकटक में झूकि बदन निहारति पलक न मारति
अलक समारति जानि गई नंदरानी ॥
परि गये परदा ललित तिवारी कंचन थार जब आनी ।
'नन्ददास प्रभु' भोजन घर में उर पर कर धस्यो
सेन दई तब उह उततें मुसिकानी ॥

यह कीर्तन तहाँ नन्ददास ने गायो । तब जाने, जो-इहाँ नन्ददास आये हैं । तब वा लोंडी ने चारों ओर देख्यो । तब देखे तो एक वृक्ष की ओट में नंददास ठाड़े हैं । तब वा लोंडी ने नन्ददास कों कह्यो, जो-तुम ऐसे छिप के क्यों ठाड़े हो ? मेरे पास क्यों नाहीं आवत हो ? तब नंददास ने कही, जो-राजभोग कौ समो हतो श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगवे पधारे हते । तातें हों इहां ठाड़ो होय रह्यो । ता पाछें भोग सराय कै अनोसर कराय कै कह्यो, जो-मैं तुम तें कही नाहीं सकत हो, परि श्रीनाथजी कौ महाप्रसाद है, तामे हू दूध की सामग्री है । तातै तुम्हारो मन प्रसन्न होय सो लेउ । काहे तें, जो-तुम ब्राह्मन

हो । तब नन्ददास ने कह्यो, जो-अब तो मैं रंचक रंचक सब सामग्री लेउंगो । तब उन दोउ जनैन ने प्रसन्नता सों महाप्रसाद लियो । ता पाछें आचमन करि कै बैठे । तब वा लोंड़ी ने नंददास सों कह्यो, जो-अब इहां तें कहूँ न जानो होय तो आछो है । यहाँ जो-मानसीगंगा है । यह श्रीगिरिराज प्रभुन की कृपातें स्थल प्राप्त भयो है । तातें अब में काहू देस में न जाउँ तो आछौ है, और अब सदा तुम्हारो संग होय तो आछो । तब नन्ददास ने लोंडी सों कह्यो, जो-प्रभु ऐसे ही करेंगे । ता पाछें लोंडी ने कह्यो, जो-अब इन आँखनिसों लौकिक कौ देखनो उचित नाहीं है । पाछें नन्ददास रात्रि कों अपने स्थान मानसी गंगा पै जाय रहे । और प्रातःकाल श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें अकबर पात्साह के आगे तानसेन रात्रि कों गायवे कों आये । सो तहां नन्ददास कौ कियो पद तानसेन ने गायो । सो पद -

- राग केदारो -

देखो री देखो नागर नट निर्तत कालिंदी तट गोपिन के मध्य राजे मुकुट की लटक।
काछिनी किंकिनी कटि पीतांबर की चटक कुंडल किरन मानो रवि रथ की अटक ॥
तत थेई ताता थेई सब्द उघटत उरप तिरप गति लेत मान पग की पटक ।
रास में श्रीराधे राधे मुरली में एही रट 'नंददास' गावे तहां निपट निकट ॥

यह नन्ददास कौ कियो पद सुनि कै अकबर पात्साह ने तानसेन सों पूछी, जो जिनने यह पद बनायो है, वह कहाँ है? तब बीरबल ने अकबर पात्साह सों कह्यो, जो-साहब ! वे तो यहां ही हैं, श्रीनाथजीद्वार में रहत हैं । बड़े कवि और भगवदीय

हैं। तब देसाधिपति ने बीरबल सों कह्यो, जो-याही समैं उनकों इहाँ बुलावो। तब बीरबल ने पात्साह सों कह्यो, जो-साहब, वे या भांति सों तो यहाँ न आवेंगे। मैं काल्हि उहां जाय कै लिवाइ लाऊंगो। ता पाछें दूसरे दिन बीरबल गोपालपुर आयो। तब श्रीगुसांईजी के दरसन किये। ता पाछें नंददास सों बीरबल ने कह्यो, जो-नंददासजी ! तुमकों अकबर पात्साह ने बुलाये हैं। तब नंददास ने बीरबल सों कह्यो, जो-मोकों अकबर पात्साह सों कहा प्रयोजन है ? मोकों कछु द्रव्य की चाहना नाहीं। जो-मैं जाऊं। और मेरे कछु द्रव्य नाहीं। जो-अकबर पात्साह लेइगो। तातें हमारो कहा काम हैं। तब बीरबल ने कह्यो, जो-तुम न चलोगे तो अकबर पात्साह ही तुम्हारे पास आवेगो। तब नंददास ने कही, जो-तुम इहाँ वाकों मति लावो। इहाँ भीड़ कौ काम नाहीं है। तातें मैं सेन आरती पाछें श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कै विदा होय कै मानसीगंगा आउंगो। पाछें नंददास सेन आरती के दरसन करि, श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करि कै बिदा होय कै मानसी गंगा आये। सो तहां अकबर पात्साह और बीरबल दोउ जनें बैठे हते। सो नंददास कों देखि कै पात्साह ने सन्मान करि कै बैठाये। ता पाछें अकबर पात्साह ने नंददास सों कह्यो, जो-तुमने रास कौ पद बनायो है, तामें तुमने कह्यो है, जो- 'नंददास गावे तहाँ निपट निकट' सो इतनो झूठ क्यों बोलत हो ? जो-तुम कहो,

जो-कौन भाँति सों निकट आये ? तब नंददास नें पात्साह सों कह्यो, जो-मेरे कहे कौ तुमकों विश्वास न होयगो। सो तुम्हारे घर में फलानी (रूपमंजरी) लोंडी है तासों तुम पूछि लेउ, वो जानत हैं। तब अकबर पात्साह ने बीरबल कों तो नंददास के पास बैठाये, और आप अपने डेरा में जाय कै वा लोंडी सों पूछी, जो-यह रास कौ पद नंददास नें गायो है, सो ताकौ अभिप्राय कहा है ? तब यह वचन पात्साह के सुनि कै वह लोंडी पछाड़ खाय कै गिरि परी, सो देह छूटि गई। सो वह लीला में जाय कै प्राप्त भई। तब देसाधिपति नंददास के पास दौरे आये। सो इहाँ आय कै देखे तो नंददास की हू देह छूटि गई है। सो एउ लीला में जाय कै प्राप्त भये। तब अकबर पात्साह को बड़ो आश्चर्य भयो। तब वाने बीरबल सों पूछी, जो इन दोउन की देह क्यों छूटि गई ? तब बीरबल ने पात्साह सों कह्यो, जो-साहिब इन (नें) अपनो धर्म राख्यो। काहेतें, यह बात बतायवे में न आवे, कहिवे में न आवे। तासों या बात कौ तो यही उपाय है। ता पाछें अकबर पात्साह अपने डेरान में आयो। ता पाछें यह बात वैष्णवन ने सुनी। सो आय कै यह समाचार सब श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-महाराज ! नंददासजी ने मानसीगंगा पै या रीति सों देह छोड़ी। तब श्रीगुसांईजी ने बोहोत ही सराहना करी। जो वैष्णव कों ऐसे ही अपनो धर्म (गुप्त) राख्यो चहिये। जो-और कै आगे कहनो

नाहीं। सो वह नंददासजी और वह लोंडी ऐसे भगवदीय हते। सो दोउ जनेन नें अपनो धर्म गोप्य राख्यो।

सो नंददासजी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते, जिन के ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। और अपने स्वरूपानन्द कौ वैभव दिखायो। तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए। वार्ता ॥२४१॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक सगुनदास विरक्त, पूर्व के ब्राह्मन हते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये लीला में श्रीचंद्रावलीजी की प्रिय सखी हैं। 'चंपा' इनकौ नाम है। ये 'चंपकलता' तें प्रगटी हैं, तातें उनके राजस भावरूप हैं।

ये सगुनदास पूर्व मै बंगाले में एक ब्राह्मन के जन्मे। सो वे बड़े भए बरस तीस के तब वृंदावन में आए। तहां रूपसनातन के सेवक भए। पाछें उहांई रहे। देस कों गये नाहीं।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे सगुनदास प्रथम रूप सनातन के सेवक भये हते। सो एक समय रूप सनातन के साथ सगुनदास श्रीगोकुल आए। सो सगुनदास ने श्रीगुसांईजी के दरसन किए। सो इन कों अलौकिक स्वरूप के दरसन भये। तब सगुनदास ने अपने मन में बिचार कियो, जो-भाई ! स्वामी, पंडित, ब्राह्मन तो बोहोत ही देखे होइंगे परि ऐसें तेजस्वी पुरुष तो कबहू देखे नाहीं। तब श्रीगुसांईजी आप कीर्तन करत हते। तब सगुनदास तहां जाय बैठे। तब सगुनदास ने कीर्तन सुने। सो सुनि कै बोहोत प्रसन्न भये। तब सगुनदास ने अपने मन में बिचार कियो, जो

ये कीर्तन हू श्रीभागवत के अनुसंधान सों मार्ग की रीति सों गावत हैं । सो ऐसे कीर्तन और कहूं नहीं सुने । सो ऐसें सगुनदासने अपने मन में बिचार कियो । पाछें सगुनदास के मन में ऐसी आई, जो इहां ते और ठौर कहूं नहीं जाइये । और कीर्तन सुनिवोई करिये । ता पाछें सब वैष्णव अपने अपने डेरा कों आए । तब सगुनदास हू अपने डेरा कों आए । तब अपने साथ के लोगन सों कह्यो, जो-भाई ! हों तो सवारे श्रीगुसांईजी कौ सेवक होउंगो । जो-इन कौ मार्ग सत्य है । सो सर्वोपरि दीसत है । ता पाछें दूसरे दिन सगुनदास स्नान करि कै श्रीगुसांईजी के दरसन करिवे कों आए । सो ता समय और हू पांच-सात वैष्णव बैठे हते । सो सगुनदास कौ आगें उन ही सों मिलाप भयो हतो । सो उन ही के साथ चले गये । पाछें सगुनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! हम कों कृपा करि कै नाम दीजिये । जो-हों अब राज की सरनि आयो हूं । तब सगुनदास कों श्रीगुसांईजी ने नाम दियो । पाछें मार्ग की सब रीति सीखे । तब सगुनदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराज! मोकों कृपा करि कै निवेदन करवाइये । तब श्रीगुसांईजी आज्ञा दिए, जो-सगुनदासजी ! काल्हि तुमकों निवेदन करवावेंगे । आज तुम उपवास करो । तब सगुनदास ने एक व्रत कियो । ता पाछें सगुनदास प्रातःकाल उठि कै देहकृत्य करि कै

दंतधावन करि स्नान करि बिनती करी, जो-महाराजाधिराज! मोकों निवेदन करवाइए । तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान निवेदन करवायो । तब सगुनदास ने यथासक्तिभेट धरी । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन कों पधारे । तब सगुनदास कों श्रीमुख तें आज्ञा करी, जो-सगुनदास ! तुम आज महाप्रसाद यहांई लीजियो । तब श्रीगुसांईजी भोजन करि मुख सुद्धार्थ आचमन करि बीरा आरोगि कै अपनी जूठनि की पातरि सगुनदास कों धरी । तब सगुनदास ने महाप्रसाद लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढें। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहते । सो सगुनदास नित्य कथा सुनिवे कों आवते । सो श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के वचन सुनि कै अपने हृदय में ल्यावत भए । सो तब सब सिद्धांत सगुनदास के हृदय में स्फुर्द भयो । सो कीर्तन करन लागे । जो-श्रीगुसांईजी के, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के तथा श्रीनाथजी के कीर्तन बोहोत किये ।

पाछें जब श्रीगुसांईजी कौ जन्मदिवस आयो तब यंह कीर्तन बधाई कौ करि कै गायो । सो पद –

- राग बिलावल -

श्रीवल्लभगृह मंगल चार ।
पूरन पुरुषोत्तम प्रगटे हैं श्रीविट्ठल अवतार ॥
आवहु जीवनि करहू बधाई ब्रजलीला विस्तार ।
पंच सब्द मिलि बाजें बाजत प्रगटे नंददुवार ॥
आंगन मोतिन चौक पूराए भयो जस जैजैकार ।
'सगुनदास' प्रभु गोकुल-जीवनि सदासर्वदा करत बिहार ॥

सो ऐसें पद सगुनदास ने बोहोत ही गाए। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी सगुनदास के ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। सो वे सगुनदास विरक्त हते। सो वे ब्रज में फिर्‌यो करते। जो-एकांत स्थल में बैठि कीर्तन करते। और कोई समय श्रीठाकुरजी आप उन कों दरसन देते। सो ऐसी कृपा सगुनदास के ऊपर करते। सो ऐसे करत श्रीमहाप्रभुजी कौ उत्सव आयो। सो ता दिन श्रीगुसांईजी आगें यह बधाई गाई।

— राग बिलावल —

प्रगट भए तैलंग कुल दीप।
श्रीलछमन भट अति आनंदित सुतमुख निरखत आय समीप॥
माय इल्लम्मा कूखि प्रगट भयो, ज्यों उपज्यो मुक्ताफल सीप।
'सगुनदास' गुन कहत न आवे गुन गावत नवखंड सप्तद्वीप॥१॥
आए देव विमान चढ़ि चढ़ि।
महामहोच्छव दरसन कारन एक एक तें आगें बढ़ि बढ़ि॥
बिनु गिरिधर इन सम कोऊ नाहीं कहो कोऊ बातन गढ़ि गढ़ि।
'सगुनदास' प्रभु सदा बिराजो देत असीस मुनि मंत्रन पढ़ि पढ़ि॥२॥
श्रीलक्ष्मनगृह आई नवनिधि।
प्रगटे जानि पूरन पुरुषोत्तम द्वार बुहारत फिरत अष्ट सिद्धि॥
बजत निसान भेरी सहनाई देखियत तहां सकल रिद्धि।
'सगुनदास' गुन कहत न आवे गुन गावत सिव विधि॥३॥
द्वारें आय गुनीजन ठाढ़े।
प्रगटे पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ सब दिन आनंद मंगल बाढ़े॥
श्रीलछमन भट दान देन कों पट भूखन मनि मानिक काढ़े।
'सगुनदास' आस सब पूजी मान हू बरखत ईंद्र अषाढ़े॥४॥
नांतर लीला होती जूनी।
जो पै श्रीवल्लभ प्रगट न होते तो वसुधा रहेती सूनी॥
दिन दिन नव छबि यों राजत हैं ज्यों कंचन में चुनी।
'सगुनदास' या घर कौ सेवक जस गावत जाकौ वेद मुनी॥५॥

सो ऐसे पद सगुनदास ने बोहोत गाए। सो इन के कीर्तन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। सो वे सगुनदास श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगोवर्द्धननाथजी कों एक करि जानते।

भावप्रकाश — या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-श्रीआचार्यजी; श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी में वैष्णवन कों भेद बुद्धि न राखनी।

सो वे सगुनदास विरक्त श्रीगुसांईजी के ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२४२॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक धोंधी, जाने पद गायो और श्रीनवनीतप्रियजी ने ताल दीनी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये तामस भक्त हैं। लीला में इनकौ नाम 'धरा' है। ये 'चंपकलता' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है।

ये आगरा दिल्ली के बीच एक गांव है, तहां एक बड़ी जातिवारे के जन्म्यो। सो बरस दस कौ भयो। तब इनकों एक गवैया कौ संग भयो। सो धोंधी कौ कंठ सुंदर हतो। तातें वा गवैया ने वाकों अपने पास राख्यो। सो धोंधी कछूक दिन में गायवे बजायवे लग्यो। सो यह बहोत सुंदर गावे। और मृदंग हू आछी बजावे। ऐसे करत ये बरस तीस कौ भयो। तब इन के मा-बाप मरे। पाछें ये आगरा आय रह्यो। सो उहां गाय के अपनो निर्वाह करे।

सो एक दिन उह महावन में इनकी जाति के बोहोत रहत हुते, तहां कछू कायार्थ आयो। पाछें उहां कछूक दिन रहि कै श्रीगोकुल आयो।

वार्ता प्रसंग - १

सो या धोंधी की बड़ी जाति हती। सो यह श्रीगोकुल आयो। तहां ठकुरानी घाट पे इन कों श्रीगुसांईजी के दरसन भए। सो महा अलौकिक दरसन भए। तब याने अपने मन में

बिचार्‍यो, जो-हों तो श्रीगुसांईजी कौ सेवक होउंगो। तब श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मोकों कृपा करि कै सरनि लीजिए। तब श्रीगुसांईजी धोंधी कों सरनि लिये। नाम सुनाये। सो नाम सुनत ही धोंधी कों सगरी लीला स्फुर्त भई। तब धोंधी नें श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कै यह पद गायो, सो पद —

— राग सारंग —

दुपहरी झनक भई तामें आये पिय मेरे मैं उठि कीनो आदर, दुपहरी झनक० ।
आंको भरि ले गई तनकी तपत सब ठौर ठौर बूंदन चमक ॥
रोम - रोम सुख संतोष भयो गयो अनंग तन तें न रह्यो तनक ।
मोहि मिल्यो अब चतुर 'धोंधी कौ प्रभु' मिट गई बिरह की खनक ॥

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए। जानें, जो-इन कों लीला कौ अभ्यास भयो। पाछें श्रीगुसांईजी आप धोंधी कों आज्ञा दिए, जो-तुम नित्य श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान कीर्तन गायो करो। तब तें धोंधी श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान नित्य कीर्तन गावते।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें एक समय श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार हते। तब धोंधी ने श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान एक पद गायो। सो सुनि कै श्रीनवनीतप्रियजी बोहोत प्रसन्न होंई ताल दिये। सो ता समै श्रीगिरधरजी उहां ठाढ़े हते। सो श्रीगिरिधरजी के श्रीहस्त में सोने के कड़े हते। सो ताही छिनु उतारि श्रीनवनीतप्रियजी की न्योछावरि करि धोंधी कों पहराए।

पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार तें पधारे। तब यह बात सुने। तब आप श्रीगिरिधरजी ऊपर बोहोत प्रसन्न भए। और कहे, और हू देते।

भावप्रकाश — काहेतें, जो-श्रीनवनीतप्रियजी प्रसन्न भए तब और कहा चहिए? सर्वस्व न्योछावरि करि दे तऊ थोरो है। या प्रकार श्रीगुसांईजी कौ श्रीनवनीतप्रियजी पै स्नेह हतो।

सो उह धोंधी श्रीगुसांईजी कौ सेवक ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो। सो उनने बोहोत पद किये हैं, लीला के। श्रीगुसांईजी की कृपातें उनकों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावते। सो वा धोंधी की वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ॥२४३॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक छीतस्वामी मथुरिया चौबे, अष्टछाप में जिन के पद गाइयत है, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश — ये छीतस्वामी लीला में श्रीठाकुरजी के 'सुबल' सखा, तिनकौ प्रागट्य है। सो दिवस की लीला में तो ये 'सुबल' सखा है, और रात्रि की लीला में 'पद्मा' हैं। सो पद्मा की श्रीचंद्रावलीजी ऊपर बोहोत आसक्तिहै, सो इहां हू छीतस्वामी कौ श्रीगुसांईजी पै बोहोत ही भरभाव है। ये 'चंद्रभागा' तें प्रगटी है, तातें उनके तामस भावरूप है।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे छीतस्वामी मथुरिया चौबे हते। तिनसों सब कोउ 'छीतू' कहते। सो सब मथुरा में पाँच चौबे सिरनाम हते। सो पाँचनहू में छीतू बड़े सिरनाम हे। सो वे स्त्रिन कों देखते, उनकी मसखरी करते। सो एक दिन पाँचो चौबेन नें मिलि कै बिचार कियो, जो-भाई! गोकुल के गुसांई टोंना बोहोत करत हैं। जो कोउ उनके पास जात है, सो उनके बस होय जात हैं। सो

चलो, जो-उनकों देखिये, जो वे कैसे टोंना करत हैं ? सो ये पांचो आपुस में मित्र हते, परि वे गुंडा हते । तब उन पांचों ननें मिलि कै एक खोटो रुपैया लियो, और एक थोथो नारियल लियो, तामें राख भरी । और यह बिचार कियो, जो-भाई ! गोकुल जाय कै श्रीगुसांईजी सों आपुन कुटिल विद्या करिये । तब उन चारोंन सों छीतू ने कही, जो-सगरेन के पहिले मैं जाय के अपनी कुटिल विद्या करि आऊँ, ता पाछें तुम जइयो । तब उन चौबेन ने कही, जो-आछी बात है । तब छीतू ने कुटिल विद्या कौ ठाठ ठठ्यो । सो वा थोथे नारियल कों गांठि में बांधि कै और वह खोटो रुपैया लेके पांचो जने मथुरा तें चले, सो नाव में बैठि कै श्रीगोकुल में आये । तब छीतस्वामी कहे, जो-तुम तो सब बाहिर रहो, बैठो । और मैं भीतर जात हों, सो जाय के उन के टोना टमना देखों, पाछें तुम भीतर आइयो। सो छीतू तो थोथो नारियल लेके अरु खोटो रुपैया लेकै भीतर गये और साथ के चोबे बाहिर रहे । सो उत्थापन के समै पहिले श्रीगुसांईजी पोंढ़ि कै उठे हते, सो गादी ऊपर बिराजे हते, हाथ में पुस्तक हतो, सो देखत हते । सो ता समै छीतस्वामी आये । सो श्रीगुसांईजी कों देखे तो श्रीगिरधारीजी होय कै बैठे हैं । तब तो ये मन में पश्चाताप करन लागे । (क्यों,जो) मैं तो इनसों मसखरी करन आयो हो । सो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं । मोकों धिक्कार है, जो मैं ईश्वर सों कुटिल बिद्या

करन आयो। या भांति सों सोच करत रहे। ता पाछें छीतस्वामी वह नारियल लाये हते सो दुबकाय के श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करी। सो इतने छीतस्वामी सों श्रीगुसांईजी बोले-छीतस्वामी! तुम नीके हो ? आवो, तुम तो बोहोत दिनन में दीखे हो। तब छीतस्वामी ने हाथ जोड़ि कै बिनती कीनी, जो-महाराज! हम आप के हैं। ऐसे कहि कै साष्टांग दंडवत् करी। और श्रीगुसांईजी सों फेरि बिनती कीनी, जो-महाराज! मोकों आपकी सरनि लीजे, अब तो आप मेरो अंगीकार करोगे। तब श्रीगुसांईजी नें छीतस्वामी सों कह्यो, जो-तुम तो चौबे हो, हमारे पूजनीक हो! तुमकों तो सब आपहीतें सिद्ध है। तुम हमकों दंडवत् काहेकों करत हो ? और ऐसे कहा कहत हो? तब छीतस्वामी फेरि हाथ जोरि के बिनती करी, जो-महाराज! मेरो अपराध क्षमा करो। और मोकों सरनि लीजे। हम नाहीं जानत जो-कौन अपराध तें स्वामी भये हैं। हमारे भाग्य खुले हैं, जो आप के दरसन पाये। अब ऐसी कृपा करो, जो-स्वामित्व छूटे! जो आप के कहायवे की इच्छा है। और मन की कुटिलता तो बहोत हुती, परि आप के दरसन करत ही सब कुटिलता दूरि भाजि गई। तातें अब हों आप के हाथ बिकानो हों, तातें अब तो आप जो चाहो सोई करो। आप तो दाता हो, प्रभु हो, दीनानाथ हो, दयासिंधु हो। या जीव की ओर प्रभुन कों कहा देखनो ? तातें महाराज! अब मोकों आप कौ ही करि

जानिये, आपुनो सेवक करिये। तब छीतस्वामी कौ शुद्ध भाव जानि कै श्रीगुसांईजी तो परम दयालु है, सो आप कृपा करि कै कहे, जो-छीतस्वामी ! आगे आवो। तब ये दंडवत् करि कै आगे आय बैठे। ताही समै श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी कों नाम सुनायो। ता समै छीतस्वामी ने यह पद गायो –

- राग नट -

'भई अब गिरधर सों पहिचान।
कपटरूप धरि छलिवे आयो, पुरुषोत्तम नहिं जान॥
छोटो बड़ो कछू नहिं जान्यो, छाय रह्यो अज्ञान।
'छीतस्वामी' देखत अपनायो, श्रीविट्ठल कृपानिधान॥

तब तो और वे चारों जने, जो बाहिर ठाड़े हते, वे आपुस में विचार करन लागे, जो-भाई ! छीतू कों तो टोना लग्यो, जो अब आपुन रहेंगे तो आपुनहू कों टोना लगेगो, तातें अब इहां ते भाजो। सो वे चारों जनें उहां तें भाजे सो मथुराजी में आये। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी सों कह्यो, जो-तुम हमारी भेट लाये हो सो लावो। तब छीतस्वामी अपने मन में बिचारे, जो नारियल रुपैया तो खोटे हैं, सो भेट कैसे धरों ? पाछें विचारे, जो-भंडार में पर्‍यो रहेगो कहा मालुम होयगो, जो कहां ते आयो है ? और फेरि आपु कहे श्रीमुख तें, जो-छीतस्वामी ! भेट कौ नारियल लाये हो, सो तुम काहे कों दुबकाये हो ? तब तो छीतस्वामी कौ मुख सुकाय गयो, और यह बिचार्‍यो, जो-यह तो प्रभु है। मैं नारियल लायो, सो जानि गये तो नारियल की क्रिया क्यों न जाने होइंगे ? तब

श्रीगुसांईजी सों छीतस्वामी नें बिनती करी, जो-महाराज! आप तो सब मेरो कृत्य जानत हो! सो वह बात तो मेरी अब छानी राखो। तब श्रीगुसांईजी नें कही, जो-छीतस्वामी! तुमारो जस तो जगत में विख्यात है। तुम कछू अपने मन में संदेह मति करो, तुम तो अब हमारे हो। तातें डरपत क्यों हो? वह नारियल ले आवो। तब छीतस्वामी तो सोच करत रहे। और श्रीगुसांईजी ने हरिदास खवास सों आज्ञा करी, जो-हरिदास! इन की गांठि में सों वह नारियल है सो खोलि लाऊ। सो श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै हरिदास ने वह नारियल और खोटो रुपैया छीतस्वामी की गांठि में ते लेकै श्रीगुसांईजी के आगें धर्‍यो। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने हरिदास खवास सों कह्यो, जो-आधो नारियल तो इन छीतस्वामी कों देउ। तब हरिदास खवास ने वा नारियल की गरी की दोय फाड़ करी, सो एक फाड़ तो छीतस्वामी कों दीनी, और एक फाड़ में से रंचक२ सबन को बाँट दीनी। इतने में श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी कों आज्ञा दीनी, जो-छीतस्वामी! तुमारे साथ के जो चारों जने हैं तिनकों यामें थोरी थोरी बांटि दीजो। तब छीतस्वामी नें दंडवत् करि कै वह गठरी में बांधि राखी। सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी की देखि कै छीतस्वामी मन में विचारे-जो-मैं संसार समुद्र में बह्यो जात हतो, सो मोकों बाँह पकरि कै काढ़े। और मेरे मन में खोटे नारियल कौ और खोटे रुपैया कौ पश्चाताप हतो सोउ

ताप मेरो दूर कर्‍यो । जो-मो पर तो श्रीगुसांईजी ने बड़ी कृपा करी । पाछें छीतस्वामी ने प्रसन्न होय के एक नयो पद ता समै बनायो । सो पद -

- राग गोरी -

'हौं चरणातपत्र की छैया ।
कृपासिंधु श्रीवल्लभनंदन बह्यो जात राख्यो गहि बहियां ॥
नव नख शरद चंद्रमा मंडल त्रिविध ताप मेटत छिन महियां ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल सुजस बखान सकत श्रुति नहियां॥

यह कीर्तन वाही समै श्रीगुसांईजी के आगे छीतस्वामी ने गायो । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये । तब छीतस्वामी ने दंडवत् करि कै कही, जो-महाराज ! आप तो प्रभु हो । आप को श्रुति जो वेद है सोउ पार पावत नाहीं, तो और की कहा सामर्थ्य है, जो आप कौ जस गान करे ? ता पाछें संध्यार्ति कौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी छीतस्वामी सों कहे, जो-जाओ, दरसन करो । तब छीतस्वामी मंदिर में जाय के तिवारी में ते श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये । तब देखे तो मंदिर में श्रीगुसांईजी ठाड़े हैं । तब छीतस्वामी मन में कहे, जो-श्रीगुसांईजी कों तो मैं बैठक में छोड़ि आयो हतो और ये मंदिर में कहां ते ठाड़े है ? बहुरि मन में कहे, जो-भीतर और राह होयगी, ता राह पाँव धारे होइगे । ता पाछें संध्या आरति के दरसन करि कै छीतस्वामी बाहर आये, तहां देखे तो श्रीगुसांईजी गादी ऊपर बिराजे हैं । तब तो छीतस्वामी को बड़ो आश्चर्य भयो, परि ठीक न परि । ता पाछें सेन आरति

भई । तब छीतस्वामी को महाप्रसाद लिवाये । पाछें श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो-सवारे ही तुम श्रीगिरिराज जाय कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आवो । तब छीतस्वामी रात में सोय रहे । प्रातःकाल होत ही सातों स्वरूपन के मंगला के दरसन करि कै श्रीगुसांईजी के दरसन किये, पाछें श्रीयमुना उतरि कै सूधे ही श्रीगिरिराज कों चले, सो राजभोग के समय जाय पहोंचे, श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग आरति के दरसन किये । तब देखे तो उहां श्रीगुसांईजी ठाड़े हैं, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास ही देखे । तब छीतस्वामी मन में विचारे, जो-श्रीगुसांईजी कब पधारे हैं ? ता पाछें छीतस्वामी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै नीचे उतरे । तब उहां लोगन तें पूछे, जो-श्रीगुसांईजी इहां कब पधारे हैं ? तब उन सेवकन ने कही, जो-श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल में हैं, इहां तो नाहीं पधारे हैं । तब छीतस्वामी मन में विचारे,जो-मैं तो श्रीगुसांईजी कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास ही देखे हैं, और काल्हि हू श्रीनवनीतप्रियजी के पास ही ठाड़े देखे हैं । और बैठक हू में बिराजे देखे । सो सब ठौर येही दरसन देत हैं, तातें ये ईश्वर हैं । यह विचारि कै छीतस्वामी श्रीगोकुल की सुरति बांधि चले, सो उत्थापन भोग के समय श्रीगोकुल आय पहुंचे। सो श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में गादी ऊपर बिराजे हे । तब छीतस्वामी ने आय के दंडवत् कीनी । तब श्रीगुसांईजी ने पूछी,

जो-छीतस्वामी ! तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आये? तब छीतस्वामी ने कही, जो-महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये, और उनके पास ठाढ़े आपहू के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी मुसिकाये। तब छीतस्वामी अपने मन में विचारि यह निश्चय कियो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ और श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप एक है। यह जानि कै ताही समै छीतस्वामी ने यह पद करि कै गायो। सो पद -

- राग सारंग -

जे वसुदेव किये पूरन तप सो फल फलित श्रीवल्लभ देह।
जे गोपाल हुते गोकुल में सोई अब अइ बसे निज गेह॥
जे वे गोपबधू ही ब्रज में सो अब वेद ऋचा भई तेह।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविठ्ठल तेई एई एई तेई कछु न संदेह॥

यह कीर्तन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये। पाछें श्रीगुसांईजी ने सेन आर्ति उपरांत वाहू दिन छीतस्वामी कों अपने यहां महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें तीसरे दिन छीतस्वामी देहकृत्य करि श्रीयमुनाजी में स्नान करि कै अपरस ही में आय श्रीगुसांईजी के आगे हाथ जोरि कै ठाड़े भये। और श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करि कै समर्पन करावो। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के आगे समर्पन करवायो। ता पाछें छीतस्वामी ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज्ञा होय तो मैं अपने घर जाऊं। तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो-राजभोग आर्ति के दरसन करि कै पाछें तुमकों बिदा करेंगे। ता पाछें राजभोग आरति

भई। पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में अपरस ही में बिराजे, तब छीतस्वामी ने आयकै दंडवत् करी। पाछें बिनती करी, जो-महाराज ! आज्ञा होय तो मैं अपने घर जाऊं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-महाप्रसाद लेकै अपने घर जइयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी बालकन सहित आपु भोजन कों पधारे। सो छीतस्वामी कों अपने श्रीहस्त सों पातर धरी। ता पाछें आपु भोजन कों पधारे। पाछें सब भोजन करि कै आचमन ले कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे। तब छीतस्वामी हू आचमन करि कै श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी कों महाप्रसादी बीड़ा दिये। और कह्यो, जो-छीतस्वामी अपने घर जाओ। तब श्रीगुसांईजी कों छीतस्वामी दंडवत् कर कै चले, सो मथुरा आये। तब वे चारों कुटिल हते, सो छीतस्वामी सों मिले। तब उन (ने) छीतस्वामी सों पूछी, जो-तुमने उहां कहा कियो ? और हम तो सब ही जान्यो, जो-तुमको टोंना लग्यो। तब छीतस्वामी नें कह्यो, जो अब तो मैं श्रीगुसांईजी कौ सेवक भयो, तातें अब तो मैं तुमारे काम तें गयो। यह बात छीतस्वामी की उन चारों जनेन ने सुनी। ता पाछें वे चुप होय रहे। तातें श्रीगुसांईजी कौ ऐसो प्रताप है। सो वे श्रीगुसांईजी की कृपा तें बड़े कविश्वर भये, सो बहुत कीर्तन किये। सो वे छीतस्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - २

और एक समै छीतस्वामी बीरबल के घर गये । छीतस्वामी बीरबल के प्रोहित हते । सो अपनी बरसोंड लेवे कों गये हते। सो बीरबल ने अपने घर में रहवे कौ स्थल दियो, सो छीतस्वामी तहां रहे । सो पिछली घड़ी एक रात्रि रही, तब छीतस्वामी उठि कै प्रभुन कौ नाम लेके एक पद गायो । सो पद -

- राग देवगंधार -

जै जै जै श्रीवल्लभराजकुमार ।
परमानंद कपट खंडन करि सकल वेद उद्धार ॥
परम पुनीत तपोनिधि पावन तन सोभा जुत सार ।
निगम सुकमुख कथित कृष्णलीलामृत सकल जीव निस्तार ॥
निजफल सुदृढ सुकृत सब कौ फल नवधा भक्तिप्रकार ।
दुरत दुरित अचेत प्रेत गति हतित पतित उद्धार ॥
नहीं मति नाथ कहां लों बरनों अगनित गुन विस्तार ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रगट कृष्ण अवतार ॥

यह छीतस्वामी ने गायो, सो बीरबल ने सुन्यो । सो बीरबल कों आछी न लगी । (और) मन में कह्यो, जो देखो इन (ने) कहा बरनन कियो है ? परि बीरबल ने छीतस्वामी सों कछू कह्यो नाहीं । जो यह बात मन में धरि राखी । ता पाछें छीतस्वामी उठि देहकृत्य करि श्रीयमुनाजी में स्नान करि, श्रीठाकुरजी कों भोग समरप्यो । ता पाछें भोग सराय के आप प्रसाद लिये । पाछें बैठे बैठे छीतस्वामी कीर्तन गावत हते - 'जे वसुदेव किये पूरन तप०' तामें छेली कड़ी में कह्यो, जो - 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल येई तेई तेई येई कछू न

संदेह'। यह पद छीतस्वामी ने गायो सो सुनि कै बीरबल कों बोहोत बुरी लगी। तब तो बीरबल ने छीतस्वामी सों कह्यो, जो-छीतस्वामी ! तुम (ने) अब तो यह पद गायो 'येई तेई तेई येई कुछ न संदेह' और सवारे गाये जो 'प्रगट कृष्ण अवतार' सो यह तुमने गायो, सो देसाधिपति म्लेच्छ है, जो-यह सुन पावेगो तो तुम कहा जुवाब दोगे ? तब बीरबल सों छीतस्वामी ने कही, जो-मोसों देसाधिपति पूछेगो तब मैं जुवाब देउंगो। परि अब तो मेरे भाये तुई म्लेच्छ है। (क्यों) जो-तेरे मन में यह दुर्बुद्धि उपजी। तातें मैं तो आज तें तेरो मुंह न देखूंगो। ऐसे बीरबल कौ तिरस्कार करि कै उहां तें छीतस्वामी श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के पास आये। सो यह बात देसाधिपति सों जाय के हलकारे ने कही, जो-साहिब ! बीरबल कौ प्रोहित मथुरा सों आयो हतो, सो कोई बात के ऊपर बीरबल सों रूठ कै गयो है। ऐसे सब समाचार विस्तार सों देसाधिपति के आगे हलकारे ने कहे। ता पाछें जब बीरबल दरबार में आयो तब देसाधिपति ने कह्यो, जो-बीरबल ! तेरो प्रोहित तेरे सों क्यों रूठ गयो है ? तब बीरबल ने देसाधिपति सों कही, जो-साहिब! ब्राह्मन ऐसे ही होते हैं। जो सहज की बात ऊपर रूठ जाते हैं। तब देसाधिपति ने बीरबल सों कह्यो, जो-बात तो कहो कहा हती ? तब बीरबल कही, जो-साहिब ! उनने दो पद दीक्षितजी के गाये हे। सों मैंने इतनों कह्यो, जो-जब

देसाधिपति सुन पावेंगे तब कहा जवाब दोगे ? या पै वे रूठ गये। तब देसाधिपति ने बीरबल सों कही, जो-बीरबल ! तेरे प्रोहित ने झूठ कहा कह्यो ? तोकों वा बात की सुधि आवे है, जो-मैं नावड़े में बैठि कै जातो हतो, सो नावड़ा गोकुल के नीचे जाइ निकस्यो, ता समय दीक्षितजी उहाँ घाट के ऊपर बैठे हते। तब दीक्षितजी ने मोकों आसीरवाद दियो। तब मेरे पास मनि हती जासों पांच तोला सोना नित्य होतो हतो, उह मनि मैंने दीक्षितजी कों दीनी। सो दीक्षितजी ने वह मनि हाथ में ले कै मोसों पूछ्यो, जो-तुमने मनि हमकों दीनी ? ऐसे तीन बार पूछ्यो, तब मैंने तीन बार कह्यो, जो-मनि दीनी। तब दीक्षितजी ने वह मनि ले कै जमना में डारि दीनी। तब मैं फिर बैठ्यो (और कह्यो), जो-मेरी मनि मोकों पीछे देउ। तब दीक्षितजी ने यमुना में हाथ डारि कै दीनों सो हाथ की अंजलि भर कै मनि लाय कै मोकों दीनी। और कह्यो, जो-इन में तुम्हारी मनि होय सो काढ़ लो। जब मैंने नाहीं लीनी, तब फिर मोकों तीन बेर पूछ्यो, जो-अब तो फेर न लोगे ? तब मैंने तीन बार नाहीं कीनी। तब तो दीक्षितजी ने अंजलि भरी मनि फिर यमुना में डारि दीनी, जो-बीरबल ! यह बात तो तू भूल गयो। सो यह बात ईश्वर की कृपा बिना नाहीं होई। तातें तुमको ऐसो संदेह न करनो चाहिये। जो तुमने अपने प्रोहित सों ऐसो कह्यो, सो दीक्षितजी तो साक्षात् ईश्वर हैं। यामें कछु संदेह नाहीं। या

भांति सों देसाधिपति ने बीरबल सों कह्यो, सो सुनि के बीरबल चुप होय रह्यो, सो कहा उत्तर देय ?

भावप्रकाश - तातें श्रीगुसांईजी कौ ऐसो प्रताप है। जो देसाधिपति म्लेच्छ है, सोऊ जानत है, जो-श्रीगुसांईजी तो साक्षात् ईश्वर हैं। और बीरबल तो बहिर्मुख है। तातें श्रीगुसांईजी के स्वरूप को ज्ञान नाहीं है। सो श्रीगुसांईजी हू कबहूँ, कबहूँ कहते, जो-बीरबल तो बहिर्मुख है।

सो वे छीतस्वामी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - ३

और जब बीरबल कौ तिरस्कार करि के छीतस्वामी श्रीगोकुल आये, ता दिन श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी श्रीनाथजीद्वार हते। सो जब छीतस्वामी आये सो बात श्रीगुसांईजी ने सुनी, जो-छीतस्वामी या प्रकार अपनी वृत्ति छोड़ि कै श्रीगोकुल आये हैं, बैठे हैं। और यह हू बात श्रीगुसांईजी ने पहले ही सुनी (हती) जो-छीतस्वामी बीरबल के पास बरसोंड़ लेवे कों गये हते, सो अब या तरह सों बीरबल कों तिरस्कार करि कै छोंड़ि आये है। सो तहां श्रीनाथजीद्वार में श्रीगोवर्द्धननाथजी के तथा श्रीगुसांईजी के दरसन कों दूर के वैष्णव जो आये हे, तिन सों श्रीगुसांईजी आपु कह्यो, जो-तुमारे पास मैं छीतस्वामी कों पठावत हों, सो तुम इनकी भली भांति सों सेवा कीजो। ता पाछें वे वैष्णव तो श्रीगुसांईजी सों बिदा होय कै अपने देस कों चले। ता पाछें बीरबल सों रिसाय कै छीतस्वामी श्रीगोकुल आये हते, सो उहां

श्रीगुसांईजी के दरसन श्रीगोकुल में न पाये, तब दोय चार दिन तांई रहि कै फेरि छीतस्वामी तरहटी में आये, श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो अपने मन में बोहोत आनंद पाये। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करवाय कै पर्वत ते नीचे उतरे, सो अपनी बैठक में बिराजे। तब श्रीगुसांईजी की आगे आय कै छीतस्वामी ने सब समाचार विस्तारपूर्वक बीरबल के कहे। तब श्रीगुसांईजी छीतस्वामी के वचन सुनि कै बहोत प्रसन्न भये। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने लाहोर के जो वैष्णव आये हते, तिन कों एक पत्र लिख्यो, अपने श्रीहस्त सों, जो ये छीतस्वामी (कों) हमने तुम्हारे पास पठाये हैं सो इनकी टहल तुम आछी भांति सों कीजो। सो वह पत्र श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी कों दियो, और कह्यो, जो-छीतस्वामी ! तुम लाहोर जाउ। तब छीतस्वामी ने कही, जो-महाराज ! मैं लाहोर जाय के कहा करूंगो ? तब श्रीगुसांईजी ने छीतस्वामी सों कह्यो, जो-मैंने उन सब वैष्णवन सों कही है, सो वैष्णव तुम्हारी बिदा आछी तरह सों करेंगे। तब श्रीगुसांईजी के बचन सुनि कै छीतस्वामी ने यह पद गायो। सो पद -

— राग नट —

हम तो श्रीविट्ठलनाथ उपासी।
सदा सेवों श्रीवल्लभ-नंदन कहा करों जाय कासी॥
छांडि नाथ जो और रुचि उपजत सो कहियत असुरासी।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल बानी निगम प्रकासी॥

जो-यह पद छीतस्वामी ने गायो। सो सुनि कै श्रीगुसांईजी (ने) छीतस्वामी के हृदय की जानी, जो-ए ते कहूँ जानहार नाहीं हैं। तब छीतस्वामी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो महाराज! मैं वैष्णव भयो, सो कछु वैष्णव के पास तें भीख मांगन कों नाहीं भयो। और बीरबल पें तो मेरी बरसोंड़ हती सो मैं वाकों मुंह तोड़ि के लेतो। परि महाराज ! वाने तो म्लेच्छ बुद्धि को जुवाब दियो, तातें मैं यहाँ उठि आयो। जो महाराज! मेरे तो राज के चरण कमल छांड़ि कै कछू काम नाहीं, और कहूं न जाऊंगो। और अब कहा ऐसे कर्म करूंगो ? जो-वैष्णव होय कै कहा भीख मागुंगो ? सो छीतस्वामी के वचन सुनि के श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये, और कह्यो, जो-वैष्णव को यही धर्म है, जो-ऐसे ही चाहिये। ता पाछें श्रीगुसांईजी ने वह पत्र लाहोर के वैष्णवन कों लिख पठायो, जो-छीतस्वामी तो इहां ते आय सकत नाहीं है, तासों यह ब्राह्मन गरीब है, जो-तुमतें याकी टहल बनि आवे तो इहां ही मनुष्य के हाथ हुंडी कराय पठाय दीजो। सो वह पत्र श्रीगुसांईजी को एक मनुष्य लाहोर ले जाय कै उन वैष्णवन कों दियो। तब उन वैष्णवन ने वह पत्र बांचि के रुपैया १००) की हुंडी कराय के पठाई। और उन वैष्णवन नें श्रीगुसांईजी कों यह पत्र बिनती कौ लिख्यो, जो-महाराज ! इतनी हुंडी तो हम वर्ष पर्यंत पठावेंगे, आपकी हुंडी के साथ इनकी हुंडी पठावेंगे सदा। सो पत्र श्रीगुसांईजी

के पास आयो तब बांचि के श्रीगुसांईजी नें वा पत्र के समाचार सब छीतस्वामी सों कहे। तब छीतस्वामी अपने मन में बहोत प्रसन्न भये, और श्रीगुसांईजी हू उन वैष्णवन पर बहोत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश - तातें छीतस्वामी उन बीरबल को त्याग करि कै श्रीगुसांईजी कौ जस बढ़ायो। तो आपने हू बीरबल की वरसोंड़ जितनो छीतस्वामी कों कराय दीनो। तातें वैष्णवन कों दृढ़ विश्वास राखनो श्रीगोवर्द्धननाथजी की ऊपर। जो विश्वास राखे तो प्रभु वाकी क्यों न खबर राखें ? तातें वैष्णव कों तो एसी अनन्यता राखी चाहिए। और छीतस्वामी जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा मानि कै लाहोर जाते, तो एक ही बार द्रव्य लावते। परि आगे कहा करते ? सो उन छीतस्वामी ने जो विश्वास राख्यो, जो जनम भरि कौ द्रव्य और ठोर जाचनो न पड्यो। तातें या जीव कों ऐसो एक प्रभुन कौ आश्रय राखनो। एक आश्रय श्रीवल्लभाधीश कौ करनो, जातें सब फल की प्राप्ति होय।

पाछें वे लाहोर के वैष्णव छीतस्वामी कों प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजी की हुंडी के साथ न्यारी हुंडी पठावते, सो वे वैष्णव हू श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥२४४॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक रसखान सैयद पठान, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं।

भावप्रकाश - ये राजस भक्त है। लीला में ' रससिद्धा ' इनकौ नाम है। ये 'चंद्रभागा ' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं। ये दिल्ली में एक पठान के जन्मे।

वार्ता प्रसंग - १

सो वह रसखान दिल्ली में रहत हतो। सो वह एक साहूकार के बेटा के ऊपर बोहोत आसक्त भयो। सो वाकों अहर्निस देखे। और वह छोरा कछू खातो तो वाकी जूंठनि लेई। और

पानी पीवतो तोहू वाकौ झूठो पीवे। सो ऐसो आसक्त भयो। सो रसखान की जाति के जो हते सो रसखान के ऊपर बोहोत ईर्षा करते और कहते, जो-तू हिंदू कौ जूठौ क्यों खात है ? अब तू काफर भयो है। तब रसखान ने कही, जो-हों जैसो हूं ऐसो हों, परि अब तुम मोसों कछु बोलोगे तो मैं ठौर मारूंगो तंब इनसों सब डरपत रहते। सो ऐसो आसक्त हतो। तब ऐसें करत बहोत दिन बीते।

वार्ता प्रसंग - २

तब बहोरि एक दिन दो वैष्णव आपस में बतरात हुते। सो कहत हुते, जो-भाई देखो ! आसक्ति होंई तो ऐसी होंई। जैसी या रसखान की वा बनिया के छोरा पर है। सो वाके पाछें डोलत है। लोक लाज, जाति डर सब कछू छूट्यो। ऐसी प्रभुन में होंई तो कहा चहिए ? ता समै रसखान नेक दूरि उन्मत्त सो ठाढ़ो हुतो। सो इनकी ऐसी अवस्था देखि कै दूसरे वैष्णव ने दूरि तें इन कों देखिकै माथो धुनायो। और नाक चढाई। तब रसखान ने जान्यो, जो-याने मेरे ऊपर माथो धुनायो है। तब रसखान ने वासों पूछ्यो, जो-तेने मेरे पर माथो क्यों धुनायो है ? तब वा वैष्णव ने डरपि कै कही, जो-मैंने तोकों देखि माथो नहीं धुनायो है। हम तो आपुस में बतरात हुते। तब रसखान ने कही, जो-तू सांच कहि, मैं तोकों छोरि देउंगो। नहीं तो ठौर मारूंगो। तब ऐसे कहि कै खडग उठाय लियो। तब वह वैष्णव डरप्यो। और वासों कह्यो, जो-तेरो मन वा

छोरा में आसक्त है तैसो मन प्रभु में लगावे तो तेरो काम होंइ जाय। तब रसखान ने कही, जो-प्रभु तू कौन सों कहत है ? मैं तो कछू जानत नाहीं। तब वा वैष्णव ने कही, जो-प्रभु वासों कहियत है जिन कौ यह सारो जगत विभूति है तब रसखान ने कही जो यह सगरों उन की विभूति हैं तो मैं उनकों कैसे जानों ? तब वा वैष्णव की पाग में श्रीनाथजी कौ चित्र हतो। तामें मुकुट काछनी कौ सिंगार हतो। सो काढ़ि कै रसखान कों दिखायो। तब चित्र देखत ही रसखान कौ मन फिरि गयो। और आंखिनि में जल कौ प्रवाह चल्यो। सो वा छोरा में स्नेह हतो सो तो मिटि गयो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जनाए, जो-आसक्ति भगवद्धर्म है, तातें लौकिक में होंई तोऊ अंत में जीव कों प्रभुन की ओर ले जात है, तातें आसक्ति साँची चाहिए। सो या रसखान की आसक्ति वा छोरा में सांची हती तो वाकौ मन प्रभुने फेर्‌यो। सो वा छोरा में तें स्नेह मिटि कै प्रभुन में भयो।

तब वा वैष्णव सों कही, जो-यह महबूब कहां रहत है ? तब वा वैष्णव ने कही, यह महबूब तो ब्रज में रहत है। तब रसखान ने कही, जो-यह मूरति हम को देउ। मति कहुं भूलि जाउं। तब वैष्णव ने बिचार्‌यो, जो-यह जीव तो दैवी दीसत है। जो-यह दैवी जीव न होतो तो याकौ मन ऐसो फिरतो नाहीं। सो यह बिचारि कै वह चित्र रसखान कों दियो। तब रसखान चित्र लेत ही ब्रज कों उठि चल्यो। सो मार्ग में जहां देवालय आवे तहां दरसन करतो फिरे। सो दरसन करि कै वा चित्र के दर्सन करे। परि वा चित्र समान स्वरूप कहूं दीसे नाहीं।

तब ऐसे करत ब्रज में आयो। सो श्रीवृंदावन तथा मथुराजी तथा और हू सब ठिकाने दरसन किये। परि ऐसो स्वरूप कहूं दीसे नाहीं। तब फिरत फिरत एक दिन गोवर्द्धन पर्वत पैं यह चढ्यो। सो ता समै श्रीनाथजी की माला बोली हती। तब सब वैष्णव पर्वत ऊपर चढन लागे। तब यह रसखान हू दौरि कै मंदिर में जान लाग्यो। तब सिंघपोरि पैं पोरिया ब्रजवासी हतो। सो वाने रसखानि कों धक्का मारि कै बाहिर काढि दीनो। तब रसखान गोविंदकुंड पें जाय बैठ्यो। और मन में बिचारी, जो-जितने हिंदु के देवालय में गयो हतो सो कहूं मोकों काहूने धक्का मार्‍यो नाहीं। और यहां मोको धक्का दिए। सो ऐसे जानिये, जो-जहां ऐसें महबूब रहत हैं। तहां ऐसी करड़ी चौकी रहत होगी। सो ऐसें बिचारि कै रसखान गोविंदकुंड ऊपर जाय बैठ्यो। और श्रीनाथजी के मंदिर सों टक-टकी लगाई दीनी। और मुख सों ऐसें कह्यो करे, जो-या घर में महबूब रहत हैं। तिनके दरसन किए बिना कहुं न जाउंगो। सो ऐसें निश्चय करि कै बैठ्यो रह्यो। भूख प्यास की कछू सूधि नाहीं रही। सो ऐसें बैठे बैठे दिन दोइ होइ गए। फेरि तीसरे दिन राजभोग आर्ति होय चुकी। अनोसर होय चुके। तब श्रीनाथजी मन में बिचारे, जो-रसखान कों तो कछु देहानुसंधान है नाहीं। तीनि दिन याकों भूखे होइ गए है। सो याके भूखे प्रान निकसि जाइंगे। सो यह दसा देखि कै श्रीनाथजी कों मन में दया आई।

तब वाही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी ने अपनो सिंगार हतो सो बडो करके जैसो सिंगार वा चित्र में हतो तैसेई वस्त्र आभूषन अपने श्रीहस्त सों धारन किये। गाय ग्वाल सखा सब साथ ले कै आप पधारे। सो श्रीगिरिराज की सिखिर पर चढिकै वेणुनाद किये। तब यह वेणुनाद सुनत ही रसखान कों यह निश्चै भयो, जो-मूरति में महबूब देखे हैं सो महबूब ये हैं। सो ऐसो निरधार करिकै श्रीनाथजी कों पकरन कों दोरयो। तब श्रीनाथजी तो ताही समय अंतर्धान होई गए। सो श्रीगोकुल पधारे। सो ता समै श्रीगुसांईजी आप भोजन करि कै पोढे हते। सो श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी के केस पर श्रीहस्त फेरि कै जगाए। तब श्रीगुसांईजी जागि कै श्रीनाथजी के दरसन किये सो श्रीमुख पर हाथ फेरिकै कह्यो, जो-' भक्ततापनिवारकाय नमः' तब श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजी ने कही, जो-एक दैवी जीव है, परि वाकौ जन्म बड़ी जाति में है। और या प्रकार सों वह आयो है। सो प्रकार सब कहे, और तीन दिन कौ भूखो बैठो है। सो आज मैंने उनको दरसन दीनो है। परि वह मोकों पकरन कों आयो। तब मैं उहां सों आयो हूं। सो अब तुम श्रीगोवर्द्धन पर्वत के ऊपर पधारो और वाकों नाम देउ। तब मैं वाकों अंगीकार करूंगो। तब श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी सों कही, जो-तुम उहां सो भाजि काहे कों आए हो ? तब श्रीनाथजी ने कही, जो-मोकों स्पर्स करिवे कों दोरयो। तब मैं

उहां सों भाजि आयो हूं। सो मेरे तो यह प्रतिज्ञा है, जो-जा जीव कों तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे तिनसों हों बोलूंगो (१)। तथा तिनही के अंगसों अपनो अंग स्पर्स करूंगो (२)। और तिनही के हाथ कौ आरोगुंगो (३)। सो ये तीन बस्तू तिहारे संबंध बिना काहूकों सिद्ध न होइगी।

तब यह बचन सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत हरखे। और तहां तें बेगि उठि कै श्रीयमुनाजी के तट आये। सो आप नाव में बैठि कै श्रीयमुनाजी के पार उतरि कै घोड़ा ऊपर असवार होंई कै तहां तें बेगि ही श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो सूधे गोविंदकुंड जाइ उतरे। तब रसखान ने श्रीगुसांईजी के दरसन किये। और मन में बिचारी, जो-ये घोड़ा पे तें उतरे हैं सो तो महबूब के मित्र दीसत हैं। तब श्रीगुसांईजी के पास बिनती करी, जो-साहिब ! या घर में महबूब रहत हैं। तासों मेरो मन बोहोत आसक्त भयो है। सो मैं जानत हूं, जो-यह तुम्हारो मित्र है। सो अब तुम मोकों मिलाय देऊ तो बोहोत आछौ है। तब श्रीगुसांईजी वासों बोहोत प्रसन्न होंय कै पूछे, जो-तेने हमारी मित्रता कैसे जानी ? तब रसखान ने कही, जो-तुम आए हो ताही समय तें तुम्हारी आंखि याही घर की ओर लागी है। तब श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होंइ कै रसखान सों कहे, जो-तू न्हाय आउ। तब वह रसखान न्हाय कै श्रीगुसांईजी के आगें आय कै ठाड़ो भयो। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों नाम

सुनायो। पाछें खवास सों कही, जो-इनकों मंदिर में ले आइयो। तब श्रीगुसांईजी ने मंदिर में जाय के संखनाद करवाय के श्रीनाथजी कों उत्थापन भोग धर्‍यो। तब समय भए भोग सरायो। सो ता समय खवास याकों मंदिर में ले आयो। तब रसखान ने श्रीनाथजी के दरसन किये, सो बहोत प्रसन्न भयो। पाछें वह रसखान बाहिर जाइवे लाग्यो। तब श्रीजी ने वाकी बाँह पकरि के कह्यो, जो-अरे सारे ! अब ! कहां जात है ? सो ता दिन तें श्रीजी गोचारन कों पधारते तब रसखान कों संग ले पधारते। सो जहां जा लीला के दरसन करते तहां ता लीला के कवित्त दोहा चौपाई सवैया करते। सो इन कों गोपीभाव सिद्ध भयो।

सो वे रसखान श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते, इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२४५॥

* * *

अब श्रीगुसांईजी के सेवक यादवेंद्रदास क्षत्री, सो वे आगरे में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये सात्विक भक्त है। लीला में इन कौ नाम 'यादवी' है। ये 'चंद्रभागा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है।

वार्ता प्रसंग - १

सो ये यादवेंद्रदास आगरे में रहते। सो इनकों संतदासजी कौ संग भयो। तब वे अडेल में श्रीगुसांईजी के पास जाइकै बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे ऊपर कृपा करि कै मोकों

नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी यादवेंद्रदास कों कहे, जो-स्नान करि आउ। तब यादवेंद्रदास स्नान करिवे कों गये। सो स्नान करि आये। तब यादवेंद्रदास ने बिनती करी, जो-महाराज ! आप कृपा करि कै मोकों नाम सुनाइये। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै वाकों नाम सुनायो। पाछें निवेदन करवायो। तब फेरि वाने यथासक्तिभेट करी। पाछें कछूक दिन यादवेंद्रदास उहांई रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो मनोरथ तो सेवा करिवे कौ है। सो आप कृपा करि कै सेवा बताइये। सो मैं करूं। तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न होइ कै उनकों सेवा में राखे। सो वे श्रीगुसांईजी की सेवा करते। सो श्रीगुसांईजी यादवेंद्रदास की ऊपर बोहोत प्रसन्न रहते। और मार्ग की गोप्यवार्ता होई सो सब यादवेंद्रदास कों कहते। सो ऊन यादवेंद्रदास तें श्रीगुसांईजी आप श्रीसुबोधिनीजी की बातें और कारिका की बात कछू गोप्य न राखते। सो सब यादवेंद्रदास कों विस्तार करि कै कहते। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों पधारे। सो यादवेंद्रदास साथ आए। सो नित्य या प्रकार संग आवते।

वार्ता प्रसंग - २

सो मारग में एक दिना श्रीगुसांईजी आप पोढें। सो ताही समै यादवेंद्रदास देखे तो श्रीस्वामिनीजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप भुजा परस्पर श्रीकंठ में मेलि कै पोढे

हैं। और सब सिंगार सहित हास्य विनोद कौ दरसन भयो।

भावप्रकाश - यह कहि यह जताए, जो-श्रीगुसांईजी आपु में स्वामिनी भाव और पुरुषोत्तम भाव दोनों भाव हैं। सो आपने कृपा करि कै यादवेंद्रदास कों दरसन करवाए।

तब यादवेंद्रदास तो चक्रत होइ रहे। और मन में कह्यो, जो-यह कहा है ? ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे। तब यादवेंद्रदास सों श्रीगुसांईजी ने पूछ्यो, जो-आज तू ऐसे चक्रत सो क्यों होई रह्यो है। तब यादवेंद्रदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! आज तो यह देख्यो और ऐसो दरसन भयो है। तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्याये। सो उन यादवेंद्रदास के ऊपर ऐसी कृपा करते। सो उन यादवेंद्रदास क्षत्री की ऐसी ऐसी कितनीक वार्ता हैं। सो उन यादवेंद्रदास कों जैसो श्रीगुसांईजी कौ तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन होंई सों तेसोई पद करि कै गावते। सो श्रीगुसांईजी कौ जन्मदिन आयो। सों ताहि समै पद करि कै गायो।

- राग देवंगधार -

श्री गोकुल घर घर अति आनंद।
पौष कृष्ण नौमी दिन प्रगटे पूरन परमानंद ॥१॥
श्रीवल्लभकुल उदै भयो है मानौ पूरन चंद।
भक्तनकाज धरी नर देही सुंदर आनंद कंद ॥२॥
जहां तहां नाचत नरनारी गावत गीत सुछंद।
'यादों' श्रीविठ्ठलनाथ भैया हो दूरि किये दुःख द्वंद ॥३॥

सो ऐसे पद यादवेंद्रदास ने बोहोत ही गाए। सो जैसी लीला देखते तैसो ही गावते। सो यह कीर्तन श्रीगुसांईजी के

सन्निधान होंइ कै यादवेंद्रदास ने गायो । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए । ता पाछें एक दिन यादवेंद्रदास ने जन्माष्टमी की बधाई कौ पद गायो । सो पद -

- राग धनाश्री -

जसोदा जायो है सुत नीको ।
आनंद भयो सकल गोकुल में गोप वधू लाई टीको ॥
अक्षत दूब रोचना वंदन नंदे तिलक दहीं को ।
अंचल वारि वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारो जीकौ ॥
अपने अपने भवन तें निकसी पहरि चीर कसूंभी कौ ।
'यादवेंद्र ' ब्रजकुल प्रतिपालक कंस काल भय भीको ॥

सो यह बधाई तिलक के समै यादवेंद्र ने गाई । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए । ता पाछें यादवेंद्रदास ने ऐसे बोहोत पद किए । सो लीला हृदयारूढ भई । सो जैसी लीला कौ अनुभव होई तेसोई पद गावते । और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सानुभाव हते । सो वे यादवेंद्रदास क्षत्री श्रीगुसांईजी के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं । सो कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥२४६॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक गोविंदस्वामी सनोढ़िया ब्राह्मन, महावन में रहते, अष्टछाप में जिनके पद गाइयत हैं, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये गोविंदस्वामी लीला में श्रीठाकुरजी के 'श्रीदामा सखा' तिनकौ प्राकट्य हैं । सो दिवस की लीला में तो ये श्रीदामा सखा हैं, और रात्रि की लीला में ये 'भामा' सखी है, श्रीचंद्रावलीजी की । तातें यहां हू ये श्रीगुसांईजी के स्वरूप में आसक्त हैं । ये विसाखाजी ते प्रगटी हैं । ताते उनके सात्विक भावरूप है ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे प्रथम आंतरी गाम में रहते। तहां वे स्वामी कहावते, सो वे सेवक करते। परि गोविंदस्वामी परम भगवदीय हते। सो वे गोविंदस्वामी आंतरी ते ब्रज में आये। तब महावन में रहे, जो यह ब्रजधाम है। यहां श्रीभगवान के चरणारविंद की प्राप्ति कैसे न होइगी ? सो गोविंदस्वामी कवीश्वर हते, सो आप पद करते। जो-कोई इनके पद सीखि के श्रीगुसांईजी के आगे गावतो, ताकों श्रीगुसांईजी प्रसाद दिवावते, और बोहोत प्रसन्न होते। सो वे गावनहारे गोविंदस्वामी के आगे जाय कै कहते, जो-तुमारे किये पद हम श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी के आगे गावत हैं, सो वे बहुत प्रसन्न होत हैं, और हमकों प्रसाद दिवावत हैं। तातें तुम अपने किये पद हमकों और सिखावो। सो यह सुनि कै गोविंदस्वामी अपने मन में कहते, जो-जो कछु है, सो श्रीगोकुल है, और श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी हैं। परि मिलनो बनत नाहीं। सो ऐसे करत कितनेक दिन भये तब एक समै कोऊ एक श्रीगुसांईजी कौ सेवक कछु कार्यार्थ श्रीवृंदावन में जाय निकस्यो। सो भगवद्इच्छा सों गोविंदस्वामी कौ मिलाप भयो। सो गोविंदस्वामी और वह वैष्णव एकांत ठौर में बैठे हते, तहां कोई वार्ता के प्रसंग में गोविंदस्वामी ने कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी की साक्षात् लीला कैसे जानि परे ? तब वा वैष्णव नें कह्यो, जो-पाछें कहूंगो। तब गोविंदस्वामी ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-मोकों बहुत दिनन तें या बात की

आतुरता है, और तुम कहत हो, जो-पाछें कहूंगो। जो-याहूतें फेर एकांत कहां मिलेगी ? तातें मेरे ऊपर कृपा करि कै अब ही कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंदस्वामी की बहुत आतुरता देखि कै इनतें कह्यो, जो-आज के समे तो श्रीठाकुरजी कों श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी नें बस करि राखे हैं। तातें श्रीठाकुरजी के चरणारविंद की प्राप्ति तो इनही तें पाइये, और कौ आश्रय करनो वृथा है। सो यह बात सुनि कै गोविंदस्वामी कों अत्यंत आतुरता भई, और अति उत्साह भयो। तब तो गोविंदस्वामी ने उन वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम मेरे साथ चलो। तब रात्रि तो उहांई सोय रहे। पाछें प्रातःकाल भयो। तब तहांतें दोऊ जने चले सो श्रीगोकुल आये। ता समें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी कों राजभोग धरि कै श्रीयमुनाजी पैं संध्यावंदन करत है। सो ताही समय ये आय पहुंचे। तब वा वैष्णव ने कही, जो-श्रीगुसांईजी यही हैं। तब देखि कै गोविंदस्वामी के मन में आई, जो-ये कोई बड़े कर्मिष्ट हैं। कर्मकांड करत हैं, इनकों श्रीठाकुरजी क्यों कर मिलत होंयगे ? ऐसे चित्त में सोच विचार करन लागे। इतने में श्रीगुसांईजी संध्यावंदन तर्पण करि चूके। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-गोविंददास ! कब आये ? तब इन (ने) कही, जो-प्रभु ! अब ही आयो हों। ता पाछें श्रीगुसांईजी उहांतें मंदिर में पधारे, सो साथ गोविंदस्वामी हू चले। पर गोविंदस्वामी अपने मन में विचार करत हुते,

जो-इन (ने) मोकों कबहू देख्यो नाहीं, जो-इन (ने) मोकों कैसे पहिचान्यो ? तातें कछुक कारन दीसत है । ता पाछें श्रीगुसांईजी तो जाइकै मंदिर में भोग सराये । ता पाछें दरसन के किंवाड खुले । तब गोविंदस्वामी ने राजभोग आरती के दरसन किये । सो साक्षात् बाललीला रसमय रसात्मक स्वरूप कौ दरसन कराये । ता समै श्रीगुसांईजी ने गोविंददास कों यह दान किये । ता पाछें श्रीगुसांईजी बाहिर आये । तब गोविंदस्वामी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती क़ीनी, जो-महाराज ! आप तो कपट रूप दिखावत हो । और आप के यहां तो साक्षात् प्रभु बिराजत हैं । (और) बाहिर तो वेदोक्त कर्म करत हो । तब श्रीगुसांईजी ने गोविंदस्वामी सों कह्यो, जो-भक्तिमार्ग है, सो तो फूलरूपी है, और कर्ममार्ग कांटारूपी है ।

भावप्रकाश - सो फूल तो रक्षा बिना फूले न रहे । तातें वेदोक्त कर्ममार्ग है सो भक्तिरूपी फूलन कों काँटेन की बाड़ है । तातें कर्ममार्ग की बाड़ बिना भक्तिरूपी फूल को जतन न होय, तब जतन बिना फूल हु न रहें । तातें यह वस्तु है सो गोप्य है । तातें प्रगट प्रमान त्योंही है ।

तब ये बचन सुनि कै गोविंदस्वामी बहोत प्रसन्न भये । तब गोविंदस्वामी ने श्रीगुसांईजी सों फेरि बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिये । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-तू स्नान करि आऊ । तब गोविंदस्वामी तत्काल स्नान करि कै अपरस ही में आये । तब श्रीगुसांईजी ने इन ऊपर कृपा करि कै नाम सुनायो, ता पाछें समर्पन करवायो । पाछें अनोसर कराये । श्रीगुसांईजी तो भोजन कों पधारे । तब गोविंदस्वामी कों हू

महाप्रसाद की पातर श्रीगुसांईजी ने अपने श्रीहस्त सों धरी। पाछें प्रसाद ले कै गोविंदस्वामी ने आचमन कर कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। ता पाछें गोविंदस्वामी श्रीगोकुल ही में आय रहे। सो वे गोविंदस्वामी पे श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। इन ऊपर बहुत कृपा करते। सो गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - २

सो पहिले गोविंदस्वामी आंतरी में सेवक करते सो, उहां गोविंदस्वामी कहावते। आंतरी में इनके सेवक बहोत हते। एक समै आंतरी के लोग श्रीगोकुल में आये। सो गोविंदस्वामी जसोदा घाट के ऊपर बैठे हते। सो उन सुनी ही, जो-गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहे हैं। सो सुनि कै नाम पायवे के लिए आये हें। तब उन लोगन ने पूछी, जो-गोविंदस्वामी कहां रहत हैं ? तब वे लोग पूछत पूछत गोविंदस्वामी के घर आये, तब गोविंदस्वामी की बहिन कान्हबाई ने कही, जो-गोविंददास तो स्नान करन कों गये हैं। तब वे लोग जसोदाघाट पे आये, सो गोविंददास सों पूछी, जो-गोविंदस्वामी कहां हैं ? तब गोविंददास ने कही, जो-वे तो मरे बहोत दिन भये। तब वे लोग फेर घर आये। इतने में गोविंददास हू घर आये। तब लोगनने उनकों पहिचाने, जो इन तो हम सों ऐसे कही, जो वे तो मरे। सो एतो आप ही हैं। तब उन लोगन सों कही, जो-स्वामी ! तुम हमसों यह क्यों कहे, जो-वे तो मरे।

तब उन गोविंदस्वामी ने कही, जो-मरे नाहीं तो अब मरेंगे।

भावप्रकाश - जो या भांति सों गोविंददासजी ने कही, ताको कारन कहा ? (क्यों) जो-भगवदीय कों मिथ्या न बोलनो। ताको हेतु यह, जो-उन लोगन ने तो इनसों पूंछ्यो सो-गोविंदस्वामी कहि के पूछ्यो। तासों इन (ने) कही, जो-वे स्वामी तो मरे (क्यों) जो अब तो हम 'दास' हैं।

पाछें गोविंददासने कही, जो-तुम अब श्रीगुसांईजी के पास नाम पावो। तब उनने कही, जो -हमकों श्रीगुसांईजी की पास ले चलो। तब उन लोगन कों गोविंददास अपने साथ ले जाय कै श्रीगुसांईजी की पास नाम दिवायो। तब वे लोग दिन चार श्रीगोकुल रहि कै पाछें आंतरी कों गये। सो वे गोविंददासजी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ३

और गोविंददास श्रीयमुनाजी में कबहूं न्हाते नाहीं, पांव हू श्रीयमुनाजी में बुड़ावते नाहीं, कूप के जलसों स्नान करते, श्रीयमुनाजी की रेती में लोटते, अंजुली भरि जल लेते सो पी जाते, और आचमन हू न करते। जो-उनको श्रीयमुनाजी पर ऐसो भाव हतो। श्रीयमुनाजी कों साक्षात् स्वामिनी को स्वरूप जानते। और यह कहते, जो यह अप्रयोजक सरीर यामें मैं कैसे करि डारों ? ऐसे श्रीयमुनाजी को स्वरूप अगाध भाव संयुक्त है, ताको विचार करते। सो वे गोविंददास ऐसे भावसंपन्न हते। सो एक दिन श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी ए दोऊ भाई श्रीयमुनाजी में स्नान करत हते। ता समे श्रीयमुनाजी के तीर गोविंददास ठाढ़े हते। तब

श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी दोऊ भाई आपुस में विचार करन लागे, जो-आज तो गोविंददास कों यमुना में स्नान कराइये । सो इन दोऊ भाई गोविंददास कों पकरिके श्रीयमुनाजी में ले जान लागे। तब गोविंददास ने कह्यो, जो-महाराज ! मोकों श्रीयमुनाजी में मति डारो, मोकों श्रीयमुनाजी में डारोगे तो मेरो दोष नाहीं है, आप जानो । ये श्रीयमुनाजी हैं, साक्षात् श्रीस्वामिनीजी हैं । ये लीलात्मक स्वरूप हैं। तातें यह मेरो अप्रयोजक सरीर मैं यामें कैसें डारों? सो गोविंददासजी ने जब ऐसें कह्यो, तब इनने उन कों छोड़ि दिये। तब इन दोउ भाईन कों श्रीयमुनाजी के लीलात्मक स्वरूप को ता समय दरसन भयो । तब गोविंददास ने कह्यो, जो-महाराज ! इहां तो उत्तम ते उत्तम सामग्री होय सो समर्पिये। सो निज स्वरूप जानि कै कह्यो । सो वे गोविंददास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - ४

और एक समय रात्रि को श्रीभागवत दसमस्कंध के अष्टादश अध्याय वेणुगीत के अंत के श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसांईजी करत हते । सो श्लोक -

गा गोपकैरनुवनं नयतोरुदारवेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ।
अस्पन्दनं गतिमतां पुलकस्तरूणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ॥

सो या श्लोक को व्याख्यान गोविंददास के आगे श्रीगुसांईजी करत हते । सो करत २ अर्द्धरात्रि गई । ता पाछें

श्रीगुसांईजी तो आप पोंढ़िवे कों उठे। तब गोविंददास कों आज्ञा दीनी, जो-अब तुम ही जाय कै सोय रहो। तब गोविंददास श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै उठि चले। सो अपनी बैठक में श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी और श्रीगोविंदरायजी बैठे हते, सो आपुस में खेलत हसत हते। और हू वैष्णव पास बैठे हते, सो तहां गोविंददास हू आये। तब गोविंददास तें श्रीगोकुलनाथजी ने पूछी, जो-गोविंददास! या बिरियां कहां ते आये हो ? तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! श्रीगुसांईजी के पास हो, तहां ते आयो हूं। तब गोविंददास तें श्रीगोकुलनाथजी ने कही, उहां कहा प्रसंग होत हतो ? तब गोविंददास ने कह्यो, जो-महाराज ! वेणुगीत के अंत के श्लोक को व्याख्यान भयो। तब श्रीगोकुलनाथजी ने गोविंददास तें कह्यो, जो-कहा व्याख्यान भयो हो ? तब गोविंददास ने कह्यो, जो-महाराज ! अपनी बात आपु कहे, ताको कहा कहिये, ताकी पटतर कहा दीजिये ? तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप गोविंददास ने नीके जान्यो है। ता पाछें गोविंददास तो अपने घर कों आये। सो वे गोविंददास ऐसे भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ५

और एक दिवस श्रीनाथजी और गोविंददास दोऊ अप्सरा कुंड के ऊपर साथ ही खेलत हते। सो तहां तें गोविंददास तो श्रीगिरिराज परवत पर आये। तब उहां देखे तो राजभोग

आरती होय चुकी है । तब गोविंददास ने कही, जो-इहां राजभोग कौन ने आरोग्यो है ? श्रीनाथजी तो अबही आवत हैं, ऐसें कह्यो । तब श्रीगुसांईजी ने फेरि सामग्री कराई, और फेर राजभोग धर्‍यो । फेर आरती भई पाछें अनोसर भयो ।

भावप्रकाश - यहां यह संदेह होय, जो-श्रीनाथजी तहां हते नाहीं तो सेवा कोन की भई ? तहां कहत हैं, जो-श्रीआचार्यजी के पुष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी मर्यादा-पुष्टि रीति सों बिराजत हैं । (तोहू) सगरे (सब स्थल में) पुष्टि पुरुषोत्तम के भाव सों सगरी वस्तु वस्त्र आभूषन कों अंगीकार करत हैं । और दर्शन देवे में मर्यादा रीति सों विराजत हैं, बोलत नाहीं । सो भगवत्स्वरूप में दोय प्रकार कौ स्वरूप है । एक भक्तोद्धारक, और एक मर्यादा-पुष्टि रीति सों सब कों दर्शन दे सो सर्वोद्धारक । सो भक्तोद्धारक स्वरूप के विषे सबकों दर्शन नाहीं । जो जहां तांई वैष्णव को प्रेम न होय तहां तांई मर्यादा पुष्टि रीति सों अंगीकार (और) दर्शन है । भक्तोद्धारक स्वरूप, सर्वोद्धारक मर्यादा पुष्टिरूप सों सिंहासन पे बिराजिके सबकों दर्शन देत हैं । सो स्वरूप में ते बाहर प्रकट होय । सो जहां तरुन, वृद्ध, गाय आदि । जैसी कार्य करनो होय ता प्रकार कौ रूप करि उह भक्त सों बोलें, अनुभव करावें । तथा मर्यादा-पुष्टि स्वरूप है, उनहीं के मुख सों बोलें, अनुभव जतावें ।

सो यहां भक्तोद्धारक स्वरूप को अनुभव गोविंदस्वामी कों है । और श्रीगुसांईजी ने, जो राजभोग धर्‍यो सो श्रीआचार्यजी की मर्यादा अनुसार श्रीनाथजी ने सर्वोद्धारक रूप सों आरोग्यो । तोहू गोविंदस्वामी जैसे भक्त के विशेष अनुभव सों श्रीगुसांईजी ने फेरि राजभोग धर्‍यो, ऐसे जाननो । तातें प्रत्यक्ष अथवा वैष्णव द्वारा विशेष आज्ञा होवे तो भगवत्कृपा भई जाननी । सो यातें श्रीगुसांईजी हू भगवद् इच्छा समझ कै फेरि राजभोग धर्‍यो ।

और गोविंदस्वामी, कुंभनदासजी और गोपीनाथदास ग्वाल ये तीनों जने श्रीनाथजी के एकांत के सखा हैं । श्रीगुसांईजी इनकों सब बात दिखाई ही । सो एकांत के समै श्रीनाथजी और गोविंददास पूंछरी की ओर खेलत हैं । सो

गोविंददास सदैव श्रीनाथजी के साथ रहते।

सो एक दिन राजभोग को समो हतो। तातें श्रीनाथजी राजभोग आरोगवे कों पधारे। सो पूंछरी की ओर तें आवत हते, गोविंददास साथ हे। सो गोपालदास भीतरिया अप्सरा कुंडतें स्नान करिकै आवत हते गिरिराज ऊपर, सो उनने देखे। तब गोपालदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! गोविंददास और श्रीगोवर्द्धननाथजी पूंछरी की ओर तें आये सो तो मैंने देखे। तब श्रीगुसांईजी सुनि कै चुप करि रहे। ता पाछें राजभोग समर्प्यो। सो वे गोविंददास श्रीनाथजी के एकांत के ऐसे सखा हे। सो वे श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ६

और एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार में अपनी बैठक में बिराजे हते। ता समय श्रीनाथजी के उत्थापन को समय भयो। सो गोविंददास तो ऊपर दर्शन कों गये। सो जाय कै देखे तो श्रीनाथजी के पाग के पेच खूट रहे हैं। सो वा समै श्रीनाथजी ने पाग साधिकर बांधी है। सो वे गोविंददास पाग आछी बांधत हुते। तब गोविंददास ने श्रीनाथजी सों पूछी, जो-महाराज ! पाग के पेच क्यों खुलि रहे हैं ? तब श्रीनाथजी ने गोविंददास सों कह्यो, जो-तू पाग के पेच संवारि दे। तब गोविंददास भीतर जाय कै पाग के पेच सँवारे। श्रीगोवर्द्धननाथजी की पाग ढीली, सो संवार दी। इतने में

श्रीगुसांईजी ऊपर पधारे । तब भीतरिया ने श्रीगुसांईजी तें कही, जो-महाराज ! गोविंददास श्रीनाथजी कों छुये हैं । (जो) मंदिर के भीतर जाय कै श्रीनाथजी के पाग के पेच संवारे हैं । तब श्रीगुसांईजी सुनि कै चुप होय रहे, कछु बोले नाहीं । तब तो भीतरीया ने फेरि कही, जो-महाराज ! अपरस छुइ गई । तब श्रीगुसांईजी ने कही गोविंददास के छुये तें श्रीनाथजी छुये न जांय, तातें संध्याभोग धरो । या भांति सों श्रीगुसांईजी ने आज्ञा दीनी ।

भावप्रकाश - ताको हेतु कहा ? जो अनोसर में श्रीनाथजी गोविंददासजी सों खेलत हैं, लिपटत हैं, ऊपर चढ़त हैं । यातें उन के छुये तें अपरस छुई जाय नाहीं। और वैसे हू ब्राह्मन हैं, तातें वेद मर्यादा हू में हानि आवत नाहीं ।

सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - ७

और एक समय गोविंददास जगमोहन में ठाड़े ठाड़े कीर्तन करत हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने गोविंददास की पीठ में कांकरी की मारी । सो एक बेर दीनी, दोय बेर दीनी । तब गोविंददास ने एक बेर अंगुरनितें फेर कै दीनी । तब तो श्रीनाथजी चोंकि उठे । तब श्रीगुसांईजी फिरिकैं देखे, तो गोविंददास जगमोहन में ठाड़े हैं, और दूसरो कोऊ नाहीं है । तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-गोविंददास ! यह तुमने कहा कियो ? तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! " अपनो सो पूत, परायो ढढींगर " मोकों इननें जब तें तीन कांकरी मारी

हैं। आप मेरी पीठ तो देखो। पाछें गोविंददास ने अपनी पीठ दिखाई। और कह्यो, जो - " खेलत में को काको गुसैयां " तब श्रीगुसांईजी सुनि कै चुप होय रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों शृंगार करन लागे। तब गोविंददास कीर्तन करन लागे। या भांति गोविंददास सदैव श्रीगोवर्द्धननाथजी के साथ खेलते, सो वे गोविंददास श्रीनाथजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - ८

और एक समै वसंत के दिन हते। सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों सेनभोग सराय कै बीड़ी आरोगावत हते। और गोविंददास ठाड़े ठाड़े मणिकोठा में कीर्तन करत धमार गावत हते। सो एक नई धमार करि कै गावन लागे। सो धमार –

- राग कल्यान -

श्रीगोवर्द्धनराय लाला, तिहारे चंचल नैन विसाला।
तिहारे उर सोहे बनमाला, तातें मोही सकल ब्रजबाला ॥ध्रु०॥
खेलत खेलत तहां गए जहां पनिहारिनिकी बाट।
गागर ढोरी सीस तें कोऊ भरन न पावे घाट ॥१॥
नंदराय के लाड़िले बलि ऐसो खेल निवारि।
मन में आनंद भरि रह्यो मुख जोवति सकल ब्रजनारि ॥२॥
अरगजा कुंकुम घोरि कै प्यारी लीनो कर लपटाय।
अचका अचका आइ कै भाजी गिरिधर गाल लगाय ॥३॥

सो याकी तीन तुक करि कै चुप होय रहे। गोविंददास तें आगे कही न गई। तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-गोविंददास! धमार क्यों नाहीं गावत हो ? तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! धमार तो भाजि गई अरु मन उरझाय गयो।

'अचका अचका आय कैं भाजि गिरिधर गाल लगाय ' । सो वह तो भाजि गये, तातें ख्याल उतनो ही रह्यो । जो-महाराज! भाजि गये तो आगे खेल कहां तें होय ? तब श्रीगुसांईजी सुनि के बहुत प्रसन्न भये । ता पाछें सेन आरती करि कै श्रीनाथजी कों पोढ़ाय कै श्रीगुसांईजी आपु तो नीचे उतरे । ता पाछें धमारि की एक तुक रही हती सो, श्रीगुसांईजी ने पूरी करी । सो तुक-

" इहि विधि होरी खेलिहीं ब्रजवासिन संङ्ग लाइ, लाला ।
श्रीगोवर्द्धनधर रूप पर 'जन गोविंद' बलि बलि जाइ, लाला ॥"

सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - ९

बहुरि सीतकाल में श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हते। तब एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी और गोविंददास पूंछरी की ओर श्यामढाक है, तहां ढाक की नीचे श्रीनाथजी और ग्वाल बाल सब मिल कै खेलत हे । सो कबहूँ वा ढाक पर चढ़ि कै मुरली बजावते, सब ग्वाल बालन कों बुलावते । तहां श्याम ढाक तें थोरी सी दूर एक चोंतरा है, तहां गोविंददास बैठे बैठे कीर्तन करत हते । सो श्रीठाकुरजी श्यामढाक के ऊपर बैठे हते । गाय सब आसपास गदेला घास चरत हती, बन में । ता समै श्रीगुसांईजी स्नान करि कै उत्थापन करिवे कों ऊपर पधारे। तब श्रीनाथजी ने गोविंददास तें कही, जो-मैं तो अब अपने मंदिर में जात हों । तहां उत्थापन को समय भयो है । श्रीगुसांईजी मोकों मंदिर में न देखेंगे तो मोसों कहा कहेंगे,

जो-तुम कहां गये हे ? तातें मैं तो जात हों। ऐसे गोविंददास सों कहि कै श्रीनाथजी वा ढाकपे तें उतावले ही कूदे। सो कवाय को दांवन तहां ढाक में अरुझो। सो दांवन को टूक तहां ही फटि कै रहि गयो। सो श्रीनाथजी ने न जानी। सो गोविंददास ने दूर सों देख्यो, जो-श्रीनाथजी की कवाय को दांवन फटि कै अरुझि रह्यो है। पाछें श्रीनाथजी तो जाय कै अपने मंदिर में सिंहासन पर विराजे, और श्रीगुसांईजी ने जाय कै श्रीनाथजी के मंदिर के किंवाड़ खोले, उत्थापन किये। सो जब झारी भरन लागे ता समै श्रीगुसांईजी देखे तो श्रीनाथजी को दांवन फटि रह्यो है, तब श्रीगुसांईजी झारी भरि कै उत्थापन भोग धरि कै बाहिर आये। तब रूपा पोरिया कों बुलाय कै श्रीगुसांईजी ने पूछी, जो-रूपा ! इहां कोउ आयो तो नाहीं ? तब रूपा पोरिया ने कही, जो-महाराज ! इहां तो कोउ आयो नाहीं। तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे। पाछें श्रीनाथजी के उत्थापन भोग सराय कै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे उतरे, सो अपनी बैठक में आये। और भीतरियान कों आज्ञा दीनी, जो-तुम आरती करियो। और सब सेवा तें पहुंचियो, तुम मेरो पेंडो मति देखियो। इतनो कहि कै आप तो नीचे आय अपनी बैठक में बिराजे। तब सब बैष्णव दरसन कों आये। सो आप काहू सों बोले नाहीं। इतने में ही गोविंददास आये। तब गोविंददास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-महाराज ! आपु

अनमने क्यों बैठे हो ? तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-कछु नाहीं। तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! कछु तो मन में भ्रम है । तातें यह बात तो कही चाहिये । तब श्रीगुसांईजी ने गोविंददास सों कही, जो-श्रीनाथजी को कवाय को दांवन फट्यो है । जो न जानिये कौन अपराध पड्यो है ? तब गोविंददास ने हँसि कै कह्यो, जो-महाराज ! या बात के लिये तो राज भले अनमने होत हो । (क्यों,जो) तुम कहा लरिका को सुभाव जानत नाहीं हो ? तुम्हारो लरिका ढाक के ऊपर बैठ्यो हतो । सो तुम जब न्हाय के गिरिराज ऊपर पधारे तब लरिका वा ढाक ऊपर तें कूद्यो, सो वा ढाक में वा दांवन को टूक फटि कै अरुझि रह्यो है । जो-महाराज ! आपु पधारो तो मैं दिखाऊं । तब तो श्रीगुसांईजी गोविंददास की बांह पकरि कै पूछरी की ओर चले । परि काहू सेवक कों संग न लीने । सो जब ढाक के नीचे आये तब श्रीगुसांईजी देखे तो वा कवाय की लीर लटकत है । तब श्रीगुसांईजी ने अपने श्रीहस्त सों उतारि लीनी । ता पाछें आप उहां तें 'अप्सरा कुंड' उपर आये। सो स्नान करि कै अपरस ही गिरिराज ऊपर पधारे । तब वह लीर श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की कवाय के ऊपर धरि कै देखे तो वह कवाय साजी होय गई । तब श्रीगुसांईजी गोविंददास के ऊपर बहुत ही प्रसन्न भये । पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की साम्हें देखि कै मुसिकाये । तब श्रीनाथजी हू मुसिकाए ।

ता पाछें श्रीगुसांईजी सेन आरती करि कै सेवा तें पहोंचि कै आपु नीचे पधारे, सो अपुनी बैठक में बिराजे। तब और वैष्णव हू श्रीगुसांईजी की पास आय के बैठे। तब गोविंददास हू श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी ने उन वैष्णवन सों कही, जो-अब कछु तुम्हारे मन में रह्यो है ? तब सब वैष्णवन चुप करि रहे। तब श्रीगुसांईजी ने कही, जो-अब कछु उपाय करिये, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रम न करनो पड़े। तब श्रीगुसांईजी आप ही मन में बिचारि कै भीतरियान सों कही, और सब सेवकन कों आज्ञा दीनी, जो-आज पाछें संखनाद तीन बेर करि कै, ता पाछें क्षण एक रहि कै श्रीनाथजी के मंदिर के किंवाड खोलने। यह सुनत ही गोविंददास बहुत ही प्रसन्न भये। सो गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - १०

और श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविंददास कों घोड़ा करते। और आप गोविंददास की पीठ ऊपर असवार होय बन में पधारते। सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविंददास के ऊपर चढे चले जात हे, ता समैं गोविंददास कों लंघी की शंका आई, सो मारग में ठाड़े ठाड़े लघी करे जात हे। सो ता समै एक वैष्णव ने कह्यो, जो-गोविंददास ! यह कहा है ? तब गोविंददास कछु बोले हू नाहीं, वाकों उत्तर हू न दियो। सो प्याऊ के ढाक की ओर चले ही गये। सो आरती उपरांत श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में बिराजे हते, तब उहां वा वैष्णव

ने कही, जो-महाराज ! गोविंददास तो आज ठाढ़े २ निहोरे निहोरे जात हते । और लघी करत जात हते । इतने में श्रीगुसांईजी की पास गोविंददास हू आये । तब श्रीगुसांईजी ने गोविंददास तें पूछी, जो-यह वैष्णव कहा कहत है ? जो तुम मारग में निहोरे निहोरे ठाढ़े ठाढ़े लंघी करत जात हते ? तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! घोड़ा हू कहुं बैठि कै लंघी करत है ? और याकों तो सूझे नाहीं (जो) श्रीनाथजी तो मोकों घोड़ा करि कै मेरी पीठ पर असवार होत हैं । और ता समै जो मोकों लंघी आई तब मैं बैठि कै कैसे लंघी करूं ? तातें मैं ठाड़े ही लंघी करी । सो तो वाने देखी, परि श्रीनाथजी मेरी पीठ ऊपर असवार हते सो याकों सूझे नाहीं ! तब वा वैष्णव ने श्रीगुसांईजी कों दण्डवत् करि कै कही, जो-धन्य ! ए गोविंददास ! जिन पै महाराज की ऐसी कृपा है । सो वे गोविंददास श्रीगोवर्द्धननाथजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ११

और एक समै श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजीद्वार पधारे हते। सो श्रीनाथजी की सेन आरति करि कै श्रीनाथजी कों पोढ़ाय आपु नीचे अपनी बैठक में पधारे । पाछें गादी ऊपर बिराजे और वैष्णव सब आगे बैठे । तब श्रीगुसांईजी सों सब वैष्णवनने बिनती करी, जो-महाराज ! गोविंददास तो श्रीनाथजी के राजभोग आरती के पहेले महाप्रसाद लेत हैं ? तब इतने में ही

गोविंददास तहां आए । तब श्रीगुसांईजी ने पूछी जो-गोविंददास ! ये वैष्णव कहत हैं, जो-तुम राजभोग की आरती के पहेले महाप्रसाद लेत हो ? तब गोविंददास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मैं परवस लेत हों, काहे तें, जो-आप तो राजभोग आरती करि कें अनोसर करत हो, और तुम्हारो लरिका आय कै ठाड़ो होय हैं, और कहत हैं, जो-गोविंददास ! खेलिवे कों चलि । तातें हों पहेले ही प्रसाद लेत हों । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो राजभोग पहेले तो महाप्रसाद लीजे नाहीं । तातें राजभोग की आरती उपरांत प्रसाद लेवे कों आयो करि । तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! जो आज्ञा । तब दूसरे दिन गोविंददास राजभोग आरती श्रीनाथजी की होय चुकी तब दरसन करि कै ही तुरत आये । सो गोविंददास तो महाप्रसाद लेवे कों बैठे । और इहां श्रीगोवर्द्धननाथजी अनोसर भये पाछें जगमोहन में आय कै ठाड़े भये, और गोविंददास की राह देखत भये, इतने ही (में) महाप्रसाद ले कै गोविंददास आये । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने गोविंददास कों पूछ्यो, जो-गोविंददास ! तू इतनी बार लों कहां गयो ? मैं तीन बेर जगमोहन में गयो, और तीन ही बेर पाछो आयो । और आय कै तेरी राह देखत हों । तब गोविंददास ने कह्यो, जो-महाराज ! मैं तो तुम्हारो राजभोग सरतो तब तुरत ही महाप्रसाद लेत हतो । सो काल्हि रात्रि कों श्रीगुसांईजी ने

यह आज्ञा दीनी है, जो राजभोग की आरती पाछें महाप्रसाद लियो कर। सो अबही आरती पाछें आयो हों। सो सुनि के श्रीनाथजी चुप करि रहे। ता पाछें गोविंददास की पीठ पर असवार होय के श्रीनाथजी तो बन कों पधारे। ता पाछें उत्थापन कौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीगिरिराज ऊपर जाय कै संखनाद कराये। ता पाछें मंदिर में पधारे, तब गडुवा भरन लागे। तब श्रीनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-तुमने गोविंददास कों राजभोग आरती भये पाछें प्रसाद लेवे की आज्ञा दीनी है, सो मोकों आज बन में खेलवे कों अवार भई। सो तीन बेर जगमोहन में आय कै फिरि गयो। ता पाछें कितनीक बेर लों जगमोहन में ठाड़ो रह्यो। जब गोविंददास प्रसाद ले कै आयो तब याकी पीठ पर असवार होय कै खेलन कों गयो। तातें याकों आज्ञा दीजो, जो-जा भाँति नित्य प्रसाद लेत है तैसे ही लियो करे। ता पाछें उत्थापन भोग धरे। सो भोग धरि कै अपरस ही मे श्रीगुसांईजी नीचे पधारे, पाछें तुरत ही गोविंददास कों नीचे बुलाये। तब गोविंददास ने आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करी। तब श्रीगुसांईजी गोविंददास कों देखिकै मुसिकाने। पाछें गोविंददास सों कह्यो, जो-गोविंददास! तुम नित्य प्रसाद लेत हो तैसे ही ताही भाँति सों प्रसाद लियो करो, तुम कों कछु दोष नाहीं है। तुम कों प्रसाद लेत अवार भई तासों श्रीनाथजी कों

गेल देखनी परी। तब गोविंददास ने श्रीगुसांईजी को दंडवत् करि कै कही, जो-आज्ञा। ता पाछें श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगिरिराज पें पधारि कै श्रीनाथजी कौ भोग सरायो। ता पाछें आरती करि कै अनोसर कराये। सो वे गोविंददास श्रीनाथजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय अंतरंगी सखा हुते।

वार्ता प्रसंग - १२

और एक समै गोविंददास जसोदा घाट उपर बैठे हते। तहां प्रातःकाल को समो हतो। सो गोविंददास ने भैरव राग अलाप्यो। सो गोविंददास को गरो बहोत आछो हतो। और आप गावत ही बहोत आछे हते। सो भैरव राग ऐसो जम्यो, जो-कछु कहिवे में नाहीं आवे। सो एक म्लेच्छ चल्यो जात हुतो सो वाने गोविंददास कौ अलाप सुनि कै माथो धुन्यो। और कह्यो, जो-वाह वाह ! कैसो भैरव अलाप्यो है ? जो ऐसे वा म्लेच्छ ने कह्यो। सो वा म्लेच्छ की बात गोविंददास ने सुनी। तब सुनि कै गोविंददास कह्यो, जो-अरे राग तो छी गयो। (और) कह्यो, जो-म्लेच्छ ने सराह्यो है, सो राग श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे कैसे गाऊं ? राग तो छी गयो। सो ता दिन तें गोविंददास ने भैरव राग में कोई पद कियो नाहीं। जो-वे गोविंददास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - १३

और एक समै गोविंददास जसोदा घाट उपर बैठे हते। सो कोउ जल भरिवे कों आवतो तासों बतरावते। और अपने

हृदय विषे भगवद्भाव, तातें जो-चतुर होय तासों टोक करते। सो एक दिन गोविंददास बैठे हते तहाँ एक बैरागी आय कै बैठ्यो, और गावन लाग्यो। सो कहूँ तो सुर, कहूँ ताल, कहूँ अक्षर, कहूँ राग। तब गोविंददास ने सुनि कै वा वैरागी सों कह्यो, जो-अरे बैरागी ! तू मति गावै। गायवे कों खराब मति करे, न तो तेरो सुर सुद्ध, न तेरो राग सुद्ध, न तेरो गायवे को ठिकानो। ऐसे काहे कों गावत है ? तो पें गायवो न आवे तो मति गावें। तब उन बैरागी ने कह्यो, जो-हों तो अपने राम कों रिझावत हूँ। मोकों गायवो नाहीं आवे तो कहा भयो ? मेरे राग सों मेरो राम तो रिझत हैं ? तब गोविंददास ने कही, जो-तेरो राम कछू मूरख नाहीं, जो-तेरे गायबे पै रिझेगो, तातें तू मति गावे। तब वह वैरागी चुप करि रह्यो। जो उन गोविंददास के उपर ऐसी कृपा हती, जो-सब सों निशंक बोलते। वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - १४

और वे गोविंददास पाग आछी बांधते। सो एक दिन महावन ते श्रीगोकुल आवत हते। सो मारग में काहू ब्रजवासी ने माथे पैं ते पाग उतार लीनी। तब तासों गोविंददास ने कही, जो-सारे ! सोलह टूक हैं, समारि लीजो, हों सकारे तेरे घर आय कै ले जाउंगो। पाछें वह ब्रजवासी पाँयन परि कै गोविंददास कों पाग दे गयो। सो वे गोविंददास ऐसे भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - १५

और गोविंददास महावन में महावन के टीलेन पर एक समै कीर्तन करत हते। सो तहां श्रीगोकुलनाथजी कीर्तन सुनिवे कों आवते। तब आपने अपने खवास सों कही, जो-सावधान रहियो। जब श्रीगुसांईजी भोजन करिवे कों पधारे (तब) समै होय तब तू मोकों बुलाय लीजो। सो भीतर राजभोग आवते ता समय आप तहां पधारते, और इहां सावधान मनुष्य जो बेठार्यो हतो, सो जब समो होय तब बुलावन कों आवतो, ऐसे नित्य करते। सो उहां एक दिन जो मनुष्य रहतो सो कछु काम कों गयो हतो, सो जब श्रीगुसांईजी भोजन कों पधारन लागे। तब सब बेटान कों बुलाये, तब तहां श्रीवल्लभ नाहीं हते। तब आप श्रीगुसांईजी कहे, जो-महावन की ओर जाउ, तहां गोविंददास कीर्तन करत हैं, तहां तें श्रीवल्लभ कों बुलाय कै ले आवो। ता पाछें मनुष्य दोरे, सो तहां ते श्रीगोकुलनाथजी कों ले आये। तब श्रीगुसांईजी भोजन को पधारे। सो गोविंददास गावत आछो हते। तातें श्रीगोकुलनाथजी सुनिवे कों जाते। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - १६

और एक दिन श्रीगुसांईजी मथुराजी में केशोरायजी के दर्शन कों पधारे, सो साथ में गोविंददास हू हते। सो उहां केशोरायजी कौ शृंगार बहुत ही भारी भयो हतो, सो जरी कौ वागा, चीरा ताके ऊपर जरी की ओढ़नी उढ़ाये। सो

श्रीगुसांईजी तो केशोरायजी के (निज) मंदिर में ठाड़े भये। और गोविंददास द्वार सों लागे दरसन करत हते। (सो) वागा जरी कौ ताके ऊपर ओढ़नी जरी की ओढ़े देखि कै गोविंददास ने केशोरायजी सों कह्यो, जो-महाराज ! नीके तो हो ? तब श्रीगुसांईजी गोविंददास की ओर देखि कै मुसिकाये। ता पाछें श्रीगुसांईजी तो केशोरायजी के दरसन करि कै बाहिर आये, तब श्रीगुसांईजी गोविंददास सों कहे, जो-गोविंददास ! ऐसे न कहिये। तब गोविंददास ने कही, जो-महाराज ! उष्णकाल के तो दिन और तैसी गरमी पडै, और जरीन को वागा, ऊपर जरीन की ओढ़नी उढाई है, जब कहा कहूँ ? तब श्रीगुसांईजी मुसिक्याय कै चुप होय रहै। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - १७

और एक समै गोविंददास की बेटी आंतरी तें आई। जो वह थोरीसी रही, परि गोविंददास ने कबहू वासों सम्भाषन हू न कर्यो, जो-कानबाई गोविंददास की बहिन हती तानै कही, जो-गोविंददास ! तू कबहू बेटी सों बोलत ही नाहीं, कबहू कछु कहत ही नाहीं। योंहू न पूछे, जो-तू कब आई है, सो यह कहा? तब गोविंददास ने कानबाई सों कही, जो-कन्हीयां ! मन तो एक है। सो श्रीठाकुरजी में लगाउं के बेटी में लगाउं? तब कान्हबाई सुनि कै चुप होय रही। पाछें कितनेक दिन रहि कै जब गोविंददास की बेटी आंतरी कों चली, तब कान्हबाई

वाकों बहू बेटिन के पास ले गई। तब बहू बेटीन ने गोविंददास की बेटी जानि कै कछु चोली साडी लहेंगा श्रीपारवती बहूजी ने दियो। और घरन तें औरन नेंहू थोरो थोरो दीनों। ता पाछें बहू बेटीन सों बिदा होय कै गोविंददास की बेटी चली। ता पाछें गोविंददास जब घर आये तब कान्हबाई ने कही, जो-गोविंददास ! बेटी तो चली गई। तब गोविंददास ने कही, जो-काहू ने कछु दीनो ? तब कान्हबाई ने कही, जो-बहू बेटीन ने साड़ी चोली दीनी हैं। तब तो यह बात सुनि कै गोविंददास बेटी के पाछें दौरें, सो कोस एक ऊपर जाय पहोंचे। तब बेटी सों गोविंददास ने कही, जो-तोकों बहू बेटीन ने जो कछू दीनो है, सो फेरि दे आऊ, याके लिये तें आपुनो बुरो होयगो। तब बेटी, जो-लाई हती सो सब फेरि दे आई। ता पाछें कान्हबाई सों आय कै गोविंददास ने कह्यो, जो-कन्हीयां ! तैंने घरसों क्यों न दीनो ? ऐसे न करिये। तब कान्हबाई सुनि कै चुप होय रही। सो वे गोविंददास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। वार्ता ॥२४७॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक चतुरबिहारी क्षत्री कवि, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये लीला में श्रीचंद्रावलीजी की सहचरी है। इनकौ नाम ' चतुरा' है। ये विसाखाजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके राजस भावरूप हैं।

ये आगरा में एक क्षत्री के जन्मे। सो वा क्षत्री कौ घर संतदासजी की बाखरि में हतो। सो चतुरबिहारी वर्ष आठ के भये तब सों ये कवित्त करते। सो बोहोत आछे करते। सो संतदासजी वाकों दैवी जीव जानि अपने इहां बुलावते। वाकों

महाप्रसाद देते । पाछें चतुरबिहारी संतदासजी के इहां नित्य भगवन्मंडली में जाइवे लगे, रात्रि कों । सो भगवद्वार्ता सुने । तब इनको भाव श्रीगुसांईजी में बढ्यो । ता पाछें एक दिन चतुरबिहारी के मन में आई, जो-हों श्रीगोकुल जांई श्रीगुसांईजी कौ सेवक होऊं तो आछो ।

वार्ता प्रसंग - १

सो एक समै चतुबिहारी श्रीगोकुल आए । सो श्रीगुसांईजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भये । सो साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य श्रीयशोदोत्संगलालित ऐसें दरसन भए । तब चतुरबिहारी ने अपने मन में बिचार कियो, जो-श्रीगुसांईजी की सरनि जैये तो आछो है । सो ए तो साक्षात् ईश्वर हैं । तब चतुबिहारी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! मोकों सरनि लीजिए । तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किए, जो-श्रीयमुनाजी में स्नान करि आओ । तब चतुरबिहारी श्रीयमुनाजी में स्नान करि दोऊ हाथ जोरि कै आय कै ठाढ़े भए । तब श्रीगुसांईजी चतुरबिहारी कों नाम सुनाए । सो नाम सुनत ही श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप स्फुर्द भयो । सो चतुरबिहारी के ऊपर ऐसो अनुग्रह किये । सो चतुरबिहारी तत्काल यह पद गाये, नयों करि कै, -

- राग सारंग -

श्रीविट्ठल चरन सरन, सुभ करन, हरन दुख, सौभग वैभव विमल उद्यौत ।
सुधा समुद्र तरंग अंग छबि, राजत नैन रसाल रसमसे, चितवन ही सुख होत ॥
'नाम' प्रताप त्रैताप अघमोचन, मनरोचन, गिरिराजधरन तातें कहियत ओतप्रोत ।
'चतुर' कहे ये भज, नाँचे क्यों साधत जप तप तीरथ साधन तें सब आपु बिगोत ॥

ता पाछें चतुरबिहारी ने प्रार्थना कौ एक और पद गायो,

सो पद -

- राग ईमन -

बलि बलि हों तनक तनक करि डारों तिन पर जे रहे निसदिन चरनन नेरे ।
जीवन्मुक्तसदा तेही जन जो श्रीवल्लभानंदन के हैं चेरे ॥१॥
इनकी महिमा मोपें बरनी न जाई जिन तन हँसि हँसि हेरे ।
'चतुर' कहे श्रीविट्ठलनाथ प्रभु सों हमे हू गिनिये तिन में भले बूरे तोऊ तेरे ॥२॥

यह सुनि कै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भये । पाछें श्रीगुसांईजी आप चतुरबिहारी सों कहे, जो-अब तुम कों काल्हि ही ब्रह्मसंबंध श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान करावेंगे। तातें न्हाय कै बेगि अइयो । पाछें दूसरे दिन चतुरबिहारी श्रीयमुनाजी में स्नान करि बेगि ही श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में आय बैठे। तब शृंगार के समै श्रीगुसांईजी आप चतुरबिहारी कों श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान ब्रह्मसंबंध करवाए । तब सगरी लीला स्फूर्द भई। सो दान के दिन हते। सो चतुरबिहारी ने तत्काल यह पद गायो -

- राग बिलावल -

हम दधि बेचन जात याही मारग भये हो इजारदार तुम राह वाट के ।
हमसों क्यों करत फेल भये हो अनोखे छेल हुकम करो तो जाय ग्वाल गोप ठाट के ।
भये यदुवंस कुल-फल, फल गावत ही भयो तुझे साप नहीं रहे राज पाट के ।
'चतुरबिहारी' गिरिधारी छल छिद्र भरे गोकुल की गलियन में दलाल बड़े हाट के ॥

सो यह पद सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए। पाछें जानें जो अब इनकों सगरी लीला स्फुर्द भई । ता पाछें चतुरबिहारी रात्रिदिन श्रीगुसांईजी के आगे लीला के पद गावते। सो जब श्रीगुसांईजी राजभोग आरती, सेन आरती, उपरांत अपनी बैठक में बिराजते तब ही ये नये पद सुनावते।

सो समय चूकते नाहीं ।

ता पाछें श्रीगुसांईजी जब आप पोढते तब चतुरबिहारी वैष्णवन सों मिलि कै हांसी करते । और चौका के समय जाय कै पहोंचते । ता पाछें रात्रि कों उहांई जाय कै सोय रहते । ऐसे करत कितेक दिन भए तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कौ बिचार श्रीगुसांईजी आप किये ।

सो श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब चतुरबिहारी श्रीगुसांईजी के संग गये । पाछें श्रीगुसांईजी तो आप स्नान करि मंदिर में पधारे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ राजभोग कौ समय हतो। सो आपने राजभोग समर्प्यो । समय भये तब भोग सराय आरती करि कै अनोसर करि कै अपनी सेवा तें पहोंचि श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे । सो अपनी बैठक में पधारे । सो चतुरबिहारी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै बोहोत प्रसन्न भये । पाछें बैठक में आय श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये । तब श्रीगुसांईजी चतुरबिहारी सों पूछें, जो-तेनें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये ? तब चतुरबिहारी ने बिनती करी, जो महाराज ! दरसन किये तो सही । परि या सुख को कहा कहिए ? कहां तांई वरनन करिए ? पाछें श्रीगुसांईजी भोजन को पधारे । ता पाछें चतुरबिहारी कों महाप्रसाद की पातरि धरी । तब चतुरबिहारी ने महाप्रसाद लियो । तब श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे । तब चतुरबिहारी महाप्रसाद ले कै ठाढ़े ठाढ़े पंखा करन

लागे । और कीर्तन गावन लागे । सो ऐसे करत कितनेक दिन बीते । सो जहां तांई चतुरबिहारी की देह चली तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन तथा श्रीगोकुल छोडि के कहूं न गए । ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे । तब चतुरबिहारी हू श्रीगुसांईजी के संग श्रीगोकुल आए । सो श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन किये । पाछें उहांई बैठे । सो ऐसे नित्यप्रति दरसन करि कै बैठे रहते । और जब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज ऊपर पधारते तब चतुरबिहारी श्रीगुसांईजी के संग दरसन कों जाते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी हू अनुभव जतावते । तब चतुरबिहारी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पद सुनावते ।

भावप्रकाश - तातें वैष्णव कौ ऐसो दृढ़ आश्रय होइ तो श्रीठाकुरजी सर्व मनोरथ पूरन करे । या संसार में श्रीठाकुरजी की सेवा और भगवदीयन कौ संग ही सार है। तातें दृढ़ आश्रयपूर्वक भगवद् भजन सर्वथा करनो । यह सिद्धांत जताए ।

सो वे चतुरबिहारी श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ॥२४८॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक चतुर्भुजदास मिश्र सारस्वत ब्राह्मन, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये चंद्रावलीजी की अंतरंग सखीन में हैं । लीला में इनकौ नाम 'चारुमति' है । ये 'विसाखाजी' ते प्रगटी हैं, तातें इनके तामस भावरूप है ।

ये पूर्व में सारस्वत ब्राह्मन के जन्मे । सो बरस पांच के भए । तब तें विद्या पढ़न लागे । सो बरस तीसलों विद्या पढ़े । सो गीता, भागवत, व्याकरण, सब पढ़े। बड़े पंडित भए । पाछें ये आगरा आय रहे । सो बीरबल सों इनकौ मिलाप भयो । सो बीरबल ने इनकों पंडित जानि अपने इहां राखे । सो केतेक दिन बीरबल की

पास रहे । ता पाछें इनकौ पात्साह सों मिलाप भयो । तब तें ये पात्साह के उहां रहिवे लगे ।

वार्ता प्रसंग - १

सो वे चतुर्भुजदास बड़े पंडित हते । विद्या बोहोत पढ़े हुते। इनकों पात्साह सों बोहोत मिलाप रहतो । सो पात्साह जो कछू पूछतो वाकौ ताही समै उत्तर देते । सो पात्साह इनपै बोहोत प्रसन्न रहतो । सो एक समै पात्साह ने बीरबल आगे चतुर्भुजदास की बोहोत सराहना करी । तब बीरबल ने कह्यो, जो-ये तो मेरो चाकर हुतो । सो ये बात पात्साह ने चतुर्भुजदास सों कही । तब चतुर्भुजदास ने पात्साह सों कह्यो, जो-साहब ! आपके मिलिवे के तांई किन किन की चाकरी न करी चाहिए। सो ये बात सुनि कै पात्साह बोहोत प्रसन्न भयो । सो पात्साह ने चतुर्भुजदास कों एक हजार रुपैया महिना कर दिए । सो वे चतुर्भुजदास पंडितन कों वाद में जीत लेते । ऐसे पंडित हते ।

वार्ता प्रसंग - २

सो एक समै चतुर्भुजदास मथुरा में आये । सो विश्रांत घाट पर न्हाये । सो तहां एक वैष्णव पंडित न्हात हतो । सो ताके आगे चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो - ' विद्या भागवतावधि ' यह सुनि कै वह वैष्णव पंडित बोल्यो, जो - 'चातुरी विट्ठलेशावधि' तब चतुर्भुजदास वा वैष्णव पंडित सों कहे, जो-तुम मोकों श्रीविट्ठलनाथजी सों मिलाप कराय देऊ । तब वह वैष्णव पंडित चतुर्भुजदास कों श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी के पास ले गयो । तब चतुर्भुजदास ने श्रीगुसांईजी के दरसन किए । सो

साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए। तब चतुर्भुजदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराजाधिराज ! कृपा करि कै मोकों सेवक कीजिए। तब श्रीगुसांईजी ने कृपा करि कै चतुर्भुजदास कों कह्यो, जो-बैठो। पाछें श्रीगुसांईजी ने उनकों नाम सुनाए। ता पाछें दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियजी के सन्मुख निवेदन कराये। सो सब लीला स्फुर्द भई। कवीश्वर भए। सो इन श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी के कवित्त बोहोत किये हैं। पाछें श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदास कों संग ले श्रीनाथजी द्वार आए। सो चतुर्भुजदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो चतुर्भुजदासजी को मन श्रीगोवर्द्धननाथजी में लगि गयो। तब ये गोपालपुर में रहे। पाछें पात्साह के पास गए नाहीं। सो पात्साह को खबरि पड़ी, जो-चतुर्भुजदास गोपालपुर में है। तब पात्साह ने पत्र लिखि कै मनुष्य पठायो। सो वह मनुष्य गोपालपुर में आयो। सो चतुर्भुजदास कों पात्साह कौ पत्र दियो। सो पत्र बांचि के चतुर्भुजदास ने पात्साह कों एक पत्र लिख्यो। तामें लिख्यो, जो -

जाको मन नंदनंदन सों लाग्यो नीको।
सुखसंपत्ति की कहां लगि बरनों सब जग लागत फीको।

★ ★ ★

ये पत्र लिखि कै वा मनुष्य कों दियो। सो वह मनुष्य आगरा आई पात्साह कों वह पत्र दिये। सो पात्साह बांचि कै

कहे, जो-जिनकों जगत फीको लग्यो ताकों अपन कैसे मीठे लगेंगे ?

भावप्रकाश - या वार्ता कौ भाव यह है, जो-भगवान में मन लाग्यो कब जानिये जब सगरो जगत तुच्छ दीसे। सब में तें ममता छूटि जाइ। एक भगवान के चरनारविंद में ही प्रीति होई।

सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२४९॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक चतुर्भुजदास, कुंभनदासजी के बेटा, अष्टछाप में जिनके पद गाइयत हैं, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश - ये चतुर्भुजदास लीला में श्रीठाकुरजी के '' विशाल " सखा को प्रागट्य हैं। सो दिवस की लीला में तो ये '' विशाल " सखा हैं, और रात्रि की लीला में '' विमला " सखी हैं। ये 'ललिताजी' तें प्रगटी है। तातें उनके तामस भावरूप हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो ये चतुर्भुजदास जमुनावता में कुंभनदासजी के यहां जन्मे। सो कुंभनदासजी के प्रथम पांच बेटा हुते, तिनकौ मन लौकिक में बहोत आसक्त देखि के कुंभनदासजी के मन में बहुत ही दुःख भयो। और मन में बिचारे, जो-मेरे कोउ ऐसो पुत्र न भयो, जातें हों अपने मन को भेद कहों। पाछें कुंभनदासजी ने पांचों बेटान कों न्यारे करि दिये। और कुंभनदासजी की बहू श्रीआचार्यजी महाप्रभु की सेवक हती और एक बेटी, सोउ परम भगवदीय हती, सो वह बेटी हू

श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवक हती। ब्याह होत ही याको पुरुष तो मरि गयो। तातें वह बेटी हू (भतीजी?) कुंभनदासजी के घर रहती। सो तीनों जने जमुनावते गाम में रहतें। ता पाछें एक बेटा कुंभनदासजी के और भयो। ताको नाम कुंभनदासजी ने कृष्णदास धर्‍यो। सो कृष्णदास बड़े भये। तब श्रीनाथजी की गायन की सेवा करते। और कीर्तन कोई न आवते। सो कृष्णदास ने श्रीनाथजी की गाय बचाई, और आपु नहार के सन्मुख होय कै अपनो सरीर दियो। सो उनकी वार्ता में प्रसिद्ध है। परि कुंभनदासजी के मन में यह मनोरथ जो-कोई ऐसो पुत्र न भयो, जासों मैं अपने मन को भाव सब कहों, और सब भगवद्‌वार्ता करों। तासों कुंभनदासजी उदास रहते। ता पाछें एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी ने परासोली में कुंभनदास सों पूंछी, जो-कुंभना ! तू ! उदास क्यों है ? तब कुंभनदास ने कही, महाराज ! सत्संग नाहीं है। फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी ने मुसिक्याय कै कह्यो, जो-अरे कुंभना ! सत्संग को फल जो 'मैं' सो तेरे पाछें पाछें डोलत हों, तोहू तोकों सत्संग की चाहना है ? तब कुंभनदास ने कही, जो-महाराज ! भगवदीयन के संग बिना जीव आप के स्वरूपानंद कों कैसे जाने ? आप के स्वरूप में रह्यो, जो-आनंद, सो तो भगवदीय ही जानत हैं, और जानत नाहीं। तातें भगवदीय के संग बिना आपके स्वरूप में मन उरझत नाहीं है। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने हँसि कै

आज्ञा करी, जो-कुंभना ! तू धन्य है, जा मैंने तोकों सत्संग के लिए भगवदीय पुत्र दियो। तो हू कुंभनदासजी यह बिचारि कै उदास रहते, जो कब पुत्र होयगो, फेरि कब तो बड़ो होयगो? और न जाने वो कौन से भाव में मगन रहेगो ? ऐसे करत करत पुत्र होयवे को फेर समय भयो। सो कुंभनदासजी की स्त्री कों फेर गर्भ स्थिति भई । सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी ने आय कै श्रीमुख तें कुंभनदासजी सों कही, जो-कुंभनदास ! तू मेरे संग चलि । तब कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कै संग चले, सो एक ब्रजभक्त के घर में श्रीनाथजी पधारें। ये ब्रजभक्त दहीं माखन की मथनियां दोऊ उंचे छींका पें धरि कै आपु कछु कार्य कों गई हती। सो ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी तहां आय कै आप एक हाथ तें दहीं की मथनियां लई । तब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी को पीतांबर खुलि गयो, सो भूमि में गिरन लाग्यो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी नें आप तत्काल दोय भुजा और नीचे प्रगट करि कै पीतांबर थांभ्यो। और दोय भुजान में माखन दहीं की मथनियां लिये रहे, ता समै चतुर्भुज स्वरूप को कुंभनदासजी कों दरसन भयो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी तो सखान सहित दूध दहीं माखन सब आरोगे, बच्यो सों बनचरन कों खवाय दियो। ताही समै वह गोपिका अपने घर में दौरि आई, सो उहां देखे तो दहीं माखन श्रीठाकुरजी आरोगत हैं। तब वह गोपिका श्रीठाकुरजी

कों पकरिवे कों दौरी। तब सखा तो सब भाजि गए। तब कुंभनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े रहि गये। सो जब वह गोपिका निकट आई तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने श्रीमुख में दूध भरिकै वा गोपिका के मुख ऊपर डारे। सो या प्रकार वा गोपिका के मुख ऊपर डारे, तो वाके सगरे मुख नेत्रन में दूध भरि दियो। सो वह ठाड़ी होय रही। तब कुंभनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी वहां तै भाजे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तो अपने मंदिर में पधारे, और कुंभनदासजी जमनावते गाम में अपने घर गये। ता समै मारग में जात यह पद कुंभनदासजी ने गायो।

- राग सारंग -

आनि पाये हो हरि नीके।
चोरि चोरि दधि माखन खायो गिरिधर दिन प्रतिही के॥
रोक्यो भवन द्वार ब्रज सुंदरि नूपुर मोर अचानक ही के।
अब कैसे जइयत घर अपने में, भाजन फोरि दूध दधि पीके॥
'कुंभनदास' प्रभु भले परे फंद जान न देहों भावतें जी के।
भरि गंडूष छींट दे नैनन में गिरिधर धाय चले दे कीके॥

यह कीर्तन कुंभनदासजी करत चले। चतुर्भुज स्वरूप को जो दरसन भयो हतो, सो कुंभनदासजी ताके भाव में रस सों भरे अपने आप घर आये। ताही समै कुंभनदास की स्त्री के बेटा भयो। सो सुनि कै कुंभनदास ने कह्यो, जो-या लरिका कौ नाम चतुर्भुजदास है। पाछें उत्थापन के समै श्रीगुसांईजी के पास आय कै कुंभनदासजी ने दंडवत् कियो, तब श्रीगुसांईजी मुसिक्याय कै कुंभनदासजी सों पूछे,

जो-चतुर्भुजदास आछे है ? तब कुंभनदासजी ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! जाकै ऊपर आप ऐसीं कृपा करत हो सो तो सदा ही आछे हैं । ताको सब ठौर कल्यान ही है । तब श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-या पुत्र सों तुम कों बोहोत ही सुख होयगो । सो तुमारे मन में जैसो मनोरथ हतो ताही भांति सों तुमारे मनोरथ सब सिद्ध भये हैं । पाछें पिंडरु होय चुक्यो, तब कुंभनदासजी आछे सुद्धि होय पुत्र कों स्नान करायो। और वाकों अपनी गोदि में ले, श्रीगुसांईजी कों आय कै कुंभनदासजी ने दंडवत् करी । पाछें चतुर्भुजदास कौ मस्तक श्रीगुसांईजी के चरन कमल सों परस कराय कै कुंभनदासजी ने बिनती करी, जो-महाराज ! कृपा करि कै चतुर्भुजदास को नाम सुनाइये । तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्याय कै कहे, जो-राजभोग सरे पाछें नाम निवेदन दोइ संग करवावेंगे । यह सुनि कै चतुर्भुजदास ताही समै किलक कै हँसे । तब कुंभनदासजी हू मन में बोहोत प्रसन्न भये । पाछें राजभोग सराइवे कौ समय भयो तब 'माला' बोली । तब श्रीगुसांईजी ने भीतरियान कों आज्ञा दीनी, जो-तुम बाहिर जाओ । तब सब भीतरिया, पौरिया सब बाहिर जाय बैठे । ता समै मंदिर में श्रीगोवर्द्धननाथजी और कुंभनदासजी (रहे) । ता समय श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदास कों नाम सुनाय, पाछें तुलसी ले कै कुंभनदास तें कहे, जो-चतुर्भुजदास कों (आगे) लाओ । सो

श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख चतुर्भुजदास कों ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछें तुलसी श्रीगोवर्द्धननाथजी के चरण-कमल पर समर्पे। सो ताही समय सगरी लीला की स्फुरति चतुर्भुजदास कों भई, और श्रीगुसांईजी कौ स्वरूप हृदयारूढ़ भयो। तब ताही समै चतुर्भुजदास ने यह कीर्तन गायो। सो पद —

— राग सारंग —

सेवक की सुखरासि सदा श्रीवल्लभराजकुमार।
दरसन ही तें होत प्रसन्न मन श्रीपुरुषोत्तम लीला अवतार॥
सुदृष्टि चितें सिद्धांत बतायो लीला एक अनुसार।
यह त्यजि आन ज्ञान कों धावत भूले कुमति बिचार॥
जाके कहे गही भुज दृढ करि श्रीगिरिधर नंददुलार।
'चतुर्भुज' प्रभु उद्धरे पतित श्रीविट्ठल कृपा उदार॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो, सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये। और कुंभनदासजी हू प्रसन्न भये। अपने मन में आनंद पाये, और कहे, जो-मोकों जैसो मनोरथ हतो तैसे ही भगवदीय कौ संग मिल्यो। ता पाछें मंदिर के किंवाड खुले। सब लोगन कों दरसन भये। पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की आरती उतारि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करवाये। और माला बीडा ले कै श्रीगुसांईजी परवत तें नीचे उतरि, अपनी बैठक में पधारे। तहां सब वैष्णव हू आये। तहां कुंभनदासजी हू चतुर्भुजदास कों ले कै आये। तब सबन के आगे चतुर्भुजदास मुग्ध बालक होय चुप करि रहे। ता पाछें श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन कों बिदा किये। पाछें आप श्रीगुसांईजी भोजन करिवे को पधारे। ता पाछें

श्रीगुसांईजी आप कृपा करि कै अपने श्रीहस्त सों कुंभनदास, चतुर्भुजदास कों अपनी जूठन की पातर धरी । सो उन दोउ जनेंन नें महाप्रसाद लियो । पाछें श्रीगुसांईजी गादी ऊपर विराजे । सो आप बीड़ा आरोगत हते, तब कुंभनदासजी, चतुर्भुजदासजी आचमन करि कै श्रीगुसांईजी के पास आये । तब श्रीगुसांईजी कृपा करि कै दोउन कों न्यारो न्यारो उगार दिये, सो कुंभनदास चतुर्भुजदास ने लियो । ता पाछें श्रीगुसांईजी विसराम करन कों पधारे । तब कुंभनदासजी चतुर्भुजदास कों गोदि में लै कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि के जमनावते गाम में अपने घर में आये । सो जब एकांत में कुंभनदासजी बैठे होई तब चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी की वार्ता, लीला कौ भाव और श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की वार्ता करें । तब दोऊ जनें परस्पर आनंद कों पावे । और जब कोऊ तीसरो जनो आवे तब चतुर्भुजदास बालक की नांई मुग्ध होय रहे । और जा दिन तें चतुर्भुजदास नाम-समर्पन पाये हतु ता दिन तें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये बिना चतुर्भुजदास दुध हू न पीवते । ऐसे करत करत बरस पांच के भये । सो चतुर्भुजदास नेम सों दरसन करते । सों वे चतुर्भुजदास ऐसे भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - २

और एक दिन श्रीनाथजी ने कह्यो, जो-चतुर्भुजदास ! आज तू मेरे साथ गाय चरावन कों चलियो । तब चतुर्भुजदास

राजभोग आरती के दरसन करि कै आप गोविंदकुंड ऊपर जाय कै बैठि रहे। तब मंदिर में कुंभनदासजी ने सबन सों पूछी, जो-चतुर्भुजदास आज कहां गयो ? तब सबन ने कह्यो, जो-दर्शन में तो देखे हे, और पाछें तो हमने देखे नाहीं। तब कुंभनदासजी अपने मन में विचार करन लागे, जो-चतुर्भुजदास कहां गयो ? पाछें श्रीगुसांईजी (जब) श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर कराय कै अपनी बैठक में बिराजे। तब कुंभनदासजी ने आय कै दंडवत् कीनी। तब श्रीगुसांईजी ने कुंभनदास सों कह्यो, जो-कुंभनदास ! तुम उदास क्यों हो ? तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-महाराज ! चतुर्भुजदास आज दर्शन में तो हतो, सो अब नाहीं देखियत है, सो कहां गयो ? तब श्रीगुसांईजी ने कुंभनदास सों कह्यो, जो-तुम आज पाछें चतुर्भुजदास की चिंता मति करो। श्रीगोवर्द्धनानथजी वाकों आज्ञा किये हैं, जो-तू मेरे संग गाय चरावन कों चलि हो। तातें चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै तत्काल गोविंदकुंड के ऊपर जाय कै बैठ्यो है। सो अब श्रीगोवर्द्धननाथजी गायन कों, चतुर्भुजदास कों संग लेकै बन में पधारत हैं, श्रीबलदेवजी सखान सहित। सो अब कोई घड़ी एक में श्यामढाक कों पधारेंगे। सो-तुम कों जानो होय तो सूधे श्यामढाक कों जाओ। तहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजी, चतुर्भुजदास समाज सहित मिलेंगे। यह सुनि कै कुंभनदास तहां तें चले, सो सूधे श्यामढाक कों

आये । तहां देखै, तो-श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सहित बिराजत हैं । सो सखा तो सब बैठे हैं, और चहुं दिस गाय सब चरत हैं । तब कुंभनदासजी ने जाय कै दंडवत् कीनी । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कुंभनदासजी तें हँसि कै कह्यो, जो-कुंभनदास ! आओ बैठो । तब कुंभनदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत् कीनी, फेर बिनती कीनी, जो-महाराज ! आज चतुर्भुजदास पर बड़ी कृपा करी । तातें याके परम भाग्य हैं । यह सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी चुप होय रहे । सो या भाँति श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास के ऊपर कृपा करन लागे ।

वार्ता प्रसंग - ३

और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजवासिन के घर दुध दहीं, माखन की चोरी करन कों पधारे । तब चतुर्भुजदास कों यह आज्ञा करे, जो-कुंभनाके ! तू हू चलियो । सो जाय कै एक ब्रजवासी के घर में पैठे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी दुध दहीं माखन सब खाये । ता पाछें वा ब्रजवासी की बेटी ने चतुर्भुजदास कों देखे । श्रीठाकुरजी तो वासों दीसे नाहीं । तब वह अपने बाप कों पुकारी, जो-या कुंभना के बेटा ने हमारो दुध, दहीं माखन सब खायो है । तब यह बात सुनिकै दस पांच ब्रजवासी दौरि आये । तब श्रीठाकुरजी तो सखान सहित भाजि गये, वे तो चोरी की रीत जानत हते । और चतुर्भुजदास तो प्रथम ही इनके संग आये हते । सो ये तो कछु जानत नाहीं ।

तातें उहां ठाड़े होय रहें। सो सब ब्रजवासी आय कै चतुर्भुजदास कों पकरि कै भली-भांति सों मार्‍यो। पाछें वे ब्रजवासी चतुर्भुजदास तें कहें, जो-आज पाछें कबहू चोरी करन कों पैठेगो तो हम तेरे बाप कुंभना कों पकरि लावेंगे। ऐसे कहि कै ब्रजवासिनने चतुर्भुजदास कों छोड़ि दियो। तब चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास आये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सखान सहित बोहोत ही हँसे। तब चतुर्भुजदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-महाराज! दुध, दहीं, माखन तो सखान सहित आप आरोगे और मार मोकों खवाई? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने चतुर्भुजदास सों कह्यो, जो-तैंने हू दुध, दही, माखन क्यों न खायो? और जहां मैं भाज्यो और सब सखा भाजे, तहां तू हू क्यों न भाज्यो? तू क्यों मार खाय रह्यो? तब चतुर्भुजदास सुनि कै चुप होय रहे। सो वे चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के तथा श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ४

और एक समै कुंभनदासजी और चतुर्भुजदास 'ज़मुनावता' गाम में अपने घर में बैठे हुते, सो अर्द्ध रात्रि के समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में दीया बरत देखे। तब कुंभनदासजी ने चतुर्भुजदास सों यह सुनाय कै कही, जो -

वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े उंची चित्रसारी।

सो कुंभनदासजी इतनो कहि कै चुप होय रहे। तब यह

सुनि कै चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो -

" सुंदर बदन निहारन कारन राखे हैं बहुत जतन करि प्यारी । "

यह सुनि कै कुंभनदासजी बोहोत प्रसन्न भये। और पूछ्यो, जो-तोकों या लीला कौ अनुभव भयो ? तब चतुर्भुजदास ने कुंभनदासजी तें कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी की कृपा तें और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कानि ते यह लीला कौ अनुभव श्रीगोवर्द्धननाथजी आप जतावत है । तब कुंभनदासजी यह सुनि कै आपु बहोत प्रसन्न भये । और यह कीर्तन संपूर्ण करि कै भाव सहित चतुर्भुजदास कों सुनायो । सो पद -

- राग बिहाग -

वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढे उंची चित्रसारी ।
सुंदर बदन निहारन कारन राखे हैं बोहोत जतन करि प्यारी ॥
कंठ लगाय भुज दे सिरहाने अधर अमृत पीवत पिय प्यारी ।
तन मन मिली प्रान प्यारे सों नौतन छबि बाढी अति भारी ॥
'कुंभनदास' प्रभु सौभग सींवा जोरी भली बनी इकसारी ।
नवनागरी मनोहर राधे नवल लाल श्रीगोवर्द्धनधारी ॥

और चतुर्भुजदास सों कुंभनदास ने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तोसों छिपाये नाहीं तो मैं हूं तोसों न छिपाऊंगो। ता दिन तें कुंभनदासजी रहस्य लीला वार्ता सब चतुर्भुजदास सों करते । कछु गोप्य न राखते । सो वे कुंभनदासजी, चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के ऐसे अंतरंगी सखा हते, कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - ५

और एक दिवस श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को जनम दिवस

आयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार हते सो नाना प्रकार की सामग्री सिंगार सब जन्माष्टमी की रीत करी। ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के सिंगार के दर्शन करि कै चतुर्भुजदास ने यह कीर्तन सुनायो, सो पद -

- राग बिलावल -

सुभग सिंगार निरखि मोहन कौ ले दरपन कर पिय ही दिखावे।
आपुन नेक निहारिए बलि जाऊं आज की छबि कछु कहत न आवे॥
भूषन बसन रहे फबि ठांय ठांय अंग अंग सोभा चित्त हि चुरावे।
रोम रोम प्रफुलित ब्रजसुंदरि फूलन रचि रचि माल बनावे॥
अंचल वारि करति नोछावरि तनमन अति अभिलाख बढावे॥
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर कौ स्वरूप सुधा पीवत नेनन पुट तृपति न पावे॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो, सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भये। ता पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग धरि कै गोविंदकुंड पै संध्यावंदन करिवे कों पधारे। तब चतुर्भुजदास और एक वैष्णव श्रीगुसांईजी के साथ हते। तब श्रीगुसांईजी सों वा वैष्णव ने पूछ्यो, जो-महाराज! आप तो नित्य ही भांति भांति सों सिंगार करत हो, दरसन करावत हो, दरसन दिखावत हो। और चतुर्भुजदास ने तो आज कीर्तन में कह्यो, जो-'आज की छबि कछु कहत न आवे' जो-महाराज ताको कारन कहा? तब श्रीगुसांईजी ने आप श्रीमुख तें वा वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम यह बात चतुर्भुजदास ही तें पूछो। तब वा वैष्णव ने चतुर्भुजदास सों पुछ्यो, जो-तुम आज यह कीर्तन किये, ताको कारन कहा ? तब चतुर्भुजदास ने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-सुनो! ता पाछें चतुर्भुजदास ने तहां गोविंदकुंड ऊपर दूसरो

पद गायो, सो पद —

— राग बिलावल —

माईरी आज और काल्हि और दिनप्रति और और देखिए रसिक श्रीगिरिराजधरन । छिन प्रति नव छबि बरने सो कौन कवि नित ही सिंगार बागे बरन बरन ॥१॥

सोभा सिंधु अंग अंग मोहित कोटि अनंग छबि की उठत तरंग विश्व कौ मन हरन । 'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधर कौ स्वरूप सुधा पान कीजे जीजे रहिए सदा ही सरन ॥२॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो, तब श्रीगुसांईजी आप चतुर्भुजदास की ओर देखि कै मुसिकाये। ता पाछें वह वैष्णव कों और हू संदेह भयो । जो-चतुर्भुजदासजी ने दोय कीर्तन किये ताको भेद मैंने न जान्यो । पाछें श्रीगुसांईजी आप संध्यावंदन करि चुके तब राजभोग कौ समय भयो हतो। सो श्रीगुसांईजी तो मंदिर में पधारे । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ राजभोग सराय कैं राजभोग आरति करि कैं श्रीगोवर्द्धन पर्वत तें नीचे उतरे। पाछें बैठक में आय कै श्रीगुसांईजी आप गादी ऊपर बिराजे । पाछें सब वैष्णवन कों बिदा करि कै श्रीगुसांईजी आपु भोजन कों पधारे । सों भोजन करि कै आचमन ले कै श्रीगुसांईजी आप गादी ऊपर बिराजे, बीड़ा आरोगत हते। तब सब वैष्णव तो अपने२ डेरा गये हुते, और श्रीगुसांईजी सों वा वैष्णव ने बिनती करी, जो-महाराज! आज चतुर्भुजदास ने दोय कीर्तन सिंगार के समै किये तिनकौ भेद मैं न समझ्यो, जो-आप कृपा करि कै मेरो संदेह दूरि करो। तब श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णव सों कहे, जो-आज

श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ जनम उत्सव हतो । तातें आज श्रीस्वामिनीजी अपने अपने मनोरथकी सामग्री, सब सिंगार अपने हाथ सों धराये हैं । तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बोहोत ही प्रसन्न भये हैं । यातें चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो - 'आज और काल और, जो-आज की छवि कछु कहत न आवे ।' और गोविंद कुंड पै दूसरो कीर्तन कियो, ताकौ भाव ये है, जो नित्य जितने ब्रजभक्त हैं सो अपने २ मनोरथ की सामग्री धरावत हैं । अपने २ वस्त्र आभूषन धरावत हैं । तातें 'आज और', सो क्षण २ में अनेक ब्रजभक्तन कौ सनमान करत हैं । सो जैसो ब्रजभक्तन कौ भाव है, जो उनके मनोरथ हैं, तैसे श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हु उनके मनोरथ सिद्ध करत हैं । तातें क्षण क्षण में श्रीगोवर्द्धननाथजी की सोभा होत है । जो या भांति सों श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहे । तब वा वैष्णव ने अपने मन में कही, जो-या चतुर्भुजदास कौ बड़ो भाग्य है, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी सब लीला सहित दरसन देत हैं । सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये।

वार्ता प्रसंग - ६

और एक समय 'आन्योर' में रासधारी आये हते । सो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल हते । और श्रीगिरिधरजी, श्रीगोविंदरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी और श्रीरघुनाथजी ए पांचों बालक श्रीनाथजीद्वार हते । और जदुनाथजी, श्रीगोकुल में हे और श्रीघनश्यामजी कौ प्रागट्य

भयो न हतो। सो ए रासधारी श्रीगोकुलनाथजी के पास आए। और बहोत बिनती कीनी, जो-आप पधारो तो हम रास करें। तब श्रीगोकुलनाथजी नें रासधारीन तें कह्यो, जा-मैं श्रीगिरिधरजी तें पूछि कै कहुंगो । ता पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेन आरती होय चुकी और अनोसर भये, पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगिरिधरजी सों पूछ्यो, जो-तुम कहो तो मैं रास कराउं, और हू बालकन कौ मन है, और तुम हू रास में आओ तो आछो है। तब श्रीगिरिधरजी ने कह्यो, जो-इहां श्रीगुसांईजी तो है नाहीं, होते तो उनते पूछि कै रास करावते। तातें मति (कहुं) मेरे ऊपर श्रीगुसांईजी आप खीजे तो। तातें तुमारो मन होय तो परासोली चंद्रसरोवर के ऊपर रास करावो । और मेरो आवनो तो न होयगो । तब श्रीगोकुलनाथजी आदि दे कै सब बालक रासधारीन कों लै कै संग, परासोली चंद्रसरोवर पें आये। सो श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदास हू कों अपने संग लै गये हते। और श्रीगिरिधरजी तो आप श्रीगुसांईजी की बैठक में सेन कर रहे हते। सो जब प्रहर एक रात्रि गये तब चंद्रसरोवर पै रास कौ मंडान भयो। चैत्र सुदी पूर्णिमा कौ दिन हुतो। सो जब तीन प्रहर रात्रि गई और एक प्रहर रात्रि रही, तब श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदास सों कह्यो, जो-चतुर्भुजदास ! कछु गाओ। तब चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो-मैं तो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों रास करत देखों तब

गाऊं, जो-रास के करनवारे तो श्रीगिरिधरजी के निकट हैं। तब श्रीगोकुलनाथजी ने चतुर्भुजदास सों कही, जो-अब कहा करिये ? रात्रि प्रहर तो एक बाकी रही है; और अब, जो बुलायवे जइये तो जात आवत ही में भोर होय जाय। फेर उनके मन में आवे तो वे आवें, नांतरु नाहीं आवें। जो-अब कहा करिये ? तब चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो-चिंता मति करो। कोई एक घड़ी में श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीगिरिधरजी इहां पधारत हैं। ताही समैं श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिधरजी की बैठक में श्रीगिरिधरजी के पास पधारे, और उनसों कह्यो, जो-परासोली चंद्रसरोवर ऊपर चलें, जो-उहां रास करिये। तब श्रीगिरिधरजी तहां तैं अकेले ही चलै, सो दोऊ जने चंद्रसरोवर ऊपर आये। तब रासधारीनकों श्रीगिरिधरजी के दर्शन भये, और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दर्शन भये। और सब बालकन कों दर्शन भये। पाछें श्री गोवर्द्धननाथजी अपने ब्रजभक्तन के संग रासलीला करी, सो रात्रि हू बढ़ि गई, और चंद्रमा हू और भांतिसों सोभा देन लाग्यो ता समै चतुर्भुजदास ने यह कीर्तन गायो। सो पद -

- राग केदारो -

अद्‌भुत नट भेरव धरे जमुना तट स्यामसुंदर गुन-निधान गिरिवरधरन रासरंग राचे। जूवती - जूथ संग मिलि गावत केदारो राग अधर बेनु मधुर-मधुर सप्त सुर सांचे॥ उरप तिरप लाग डाट ततततततततथेई उघटत सब्दावली गति भेद कोऊ न बांचे।'चतुर्भुज प्रभु' बन बिलास मोहे सब सुर आकास निरखि थक्यो चंदरथ पश्चिम के खांचे॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो, तब सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा करे, जो-चतुर्भुजदास ! यह बिरियां कौन है ? तब चतुर्भुजदास ने वह दूसरो पद गायो । सो पद-

- राग भैरव -

प्यारी भुज ग्रीवा मेलि निर्तत पिय सुजान ।
मुदित परस्पर लेत गति मै सुगति गुण रास राधे गिरिधर गुन निधान ॥
सरस मुरली धुनि मिले मधुर सुर रासरंग भीने गावे ओघट तान बंधान ।
'चतुर्भुज प्रभु' स्याम स्यामा की नटनि देखि मोहे खग मृग वन थकित व्योम विमन॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो, सो सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भये, और चतुर्भुजदास के सामने मुसिक्याए । तब चतुर्भुजदास ने जान्यो, जो-मेरो भाग्य है । सो ऐसे ऐसे बहोत कीर्तन चतुर्भुजदास ने रास के गाये । ता पाछें रात्रि घड़ी दोय रही, तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मंदिर में पधारे । पाछें श्रीगिरिधरजी चतुर्भुजदास कों संग लै के गोपालपुर आये । ता पाछें रासधारीन कों श्रीगोकुलनाथजी ने कछु द्रव्य देकै विदा किये, पाछें सब बालकन सहित आप गोपालपुर आये । ता पाछें कछुक दिन रहि कै श्रीगोकुल पधारे। ता पाछें जब श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीनाथजीद्वार पधारे, तब श्रीगिरिधरजी ने रास कै समाचार सब कहे, श्रीगुसांईजी सों । तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो-आपुन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी सों हठ करनो योग्य नाहीं । श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रम होत है, और श्रीगोवर्द्धननाथजी तो अपनी इच्छा तें नित्य रास करत हैं । सो या भांति सों

श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी सों कह्यो । तब सुनि कै श्रीगिरिधरजी चुप करि रहे । सो वे चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता प्रसंग - ७

और एक दिन श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदास सों कहै, जो-तुम 'अपछरा' कुंड ऊपर जायके रामदासजी कों इहां पठाय दीजो, और तुम रामदास कों पठाय कै कछु फूल मिले तो लेते आइयो। तब चतुर्भुजदास आप अपछरा कुंड ऊपर आये, तहां इन कों रामदासजी मिले । तिन सों चतुर्भुजदास ने कही, जो-तुम कों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं, सो तुम बैगे जाओ । यह सुनि कै रामदासजी श्रीगुसांईजी के पास चले, सो चतुर्भुजदास अकेले ही फूल बीनत बीनत श्रीगोवर्द्धन की कंदरा के पास आय निकसे । तहां देखे तो श्री-गोवर्द्धननाथजी और श्रीस्वामिनीजी कंदरा में तें उनींदे पधारे हैं । सो चतुर्भुजदास कों ता समय ऐसे दरसन भये । तब यह पद चतुर्भुजदास ने गायो, सो पद -

- राग बिभास -

श्रीगोवर्द्धन गिरिसघनकंदरा रनि निवास कियो पिय प्यारी ।
उठि चले भोर सुरत रंग भीने नंदनंदन वृषभानदुलारी ॥
इत बिगलित कच माल मरगजी अटपटे भूखन रगमगी सारी ।
उतही अधर मसि पाग रही धसि दुहुं दिस सोभा बाढ़ी अति भारी ॥
घूमत आवत रतिरन जीते करनी संग गजवर गिरिधारी ।
'चतुर्भुज प्रभु' निरखि दंपति छबि तन मन धन कीनो बलिहारी ॥

यह कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सुनि कै आज्ञा किये, जो-चतुर्भुजदास कछु और गावो । तब चतुर्भुजदास ने यह

दूसरो कीर्तन ताही समै गायो। सो पद -

- राग ललित -

रजनीराज लियो निकुंज नगर की रानी।
मदन महिपति जीत महारन श्रम-जल सहित जृंभानी ॥१॥
परम सूर-सौंदर्य भ्रुकुटी-धनुष अनियारे नयन-बाण संधानी।
'दास चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर रससंपति बिलसत ज्यों मनमानी ॥२॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने गायो। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत् करि कै ताही समै चतुर्भुजदास आनंद में फूल लेकै, श्रीगुसांईजी कों आयकै दंडवत् करे। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-चतुर्भुजदास ! तू फूल लेन कों गयो सो अब तांई कहां रह्यो ? तब चतुर्भुजदास ने सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी सुनि कै चतुर्भुजदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। ता दिन तें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो-चतुर्भुजदास ! जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ शृंगार होय, ता समै तू नित्य दरसन कों आयो करि। पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ शृंगार होतो तब चतुर्भुजदास ठाड़े दरसन करते।

वार्ता प्रसंग - ८

फेर पाछें चतुर्भुजदास ब्याह न करते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने चतुर्भुजदास सों कह्यो, जो-चतुर्भुजदास ! तू ब्याह करि। तब चतुर्भुजदास ने कही, जो-महाराज! मैं यह सुख छांड़ि कै आपदा में क्यों परौं ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने फेर आज्ञा करी, जो-बेगि ब्याह करि।

तब श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा मानि कै चतुर्भुजदास ने ब्याह कर्‍यो । सो कछुक दिन पाछें चतुर्भुजदास की बहू मरि गई । तब चतुर्भुजदास कों अटकाव (सूतक) भयो, तब वे अत्यंत बिरह करि कै आतुर भये । तब चतुर्भुजदास के अंतःकरण की श्रीगोवर्द्धननाथजी ने जानी । सो बन में चतुर्भुजदास बैठे बैठे बिरह करते । सो कीर्तन करि कै दिन बितीत किये । ता समै चतुर्भुजदास ने कीर्तन गाये । सो पद -

— राग भैरव —

भोर भांवतो श्रीगिरिधर देखों ।
सुभग कपोल लोल लोचन छबि निरखि नैन सुफल करि लेखों ॥१॥
नखसिख रूप अनूप बिराजत सोभा मन्मथ कोटि विसेखों ।
'चतुर्भुज' प्रभु रसरास रसिक कौ परम भाग बलि इकटक पेखों ॥२॥

— राग ललित —

स्याम सुंदर प्रान प्यारे छिन्न जिनि होऊ न्यारे ।
नेन की ओट मीन ज्यों तलफत इन नैनन के तारे ॥१॥
मृदुमुसिकान बंक बिलोकत डगमग चलत सहज में सुढ़ारे ।
'चतुर्भुज प्रभु ' गिरिधर की बानिक पर कोटिक मन्मथ वारे ॥२॥

— राग धनाश्री —

गोपाल कौ मुखारविंद जियमें बिचारों। कोटि भान कोटि चंद मदन कोटि वारों ॥१॥
सरस सरोज सुधा नैन भर पाई । सुख समुद्र सो कापे कहिय जाई ॥२॥ ★
धर्म अर्थ काम मोक्ष सबही जाके हाथ ।
'चतुर्भुज प्रभु ' गोवर्द्धनधर श्रीगोकुल के नाथ ॥३॥

ऐसे ऐसे प्रार्थना के चतुर्भुजदास ने बहोत कीर्तन करि कै सूतक के दिन बितीत किये, ता पाछें सुद्ध होई कै श्रीनाथजी

★ कमल नैन चारु बैन मधुर हास सोहे। बंकन अवलोकन पर जुवती सब मोहे।। एसो हू पाठ है।

के शृंगार के दरसन चतुर्भुजदास ने किये। तब साष्टांग दंडवत् करि कै हाथ जोरि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के साम्हें चतुर्भुजदास ठाढ़े भये। तब श्रीनाथजी उन की सामने देखि कै मुसिक्याये। ता पाछें ग्वाल के, राजभोग के दरसन करि कै चतुर्भुजदास मन में विचारे, जो-घर चलिये। तब फेर श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास सों कहें, जो-चतुर्भुजदास ! तू दूसरो विवाह करि। तब चतुर्भुजदास तो ने कही, जो-महाराज ! जाति में लरिकिनी कोई नाहीं है। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने चतुर्भुजदास सों फेरि कह्यो, जो-तू धरेजा करि। तब वह बात सुनि कै चतुर्भुजदास कछु बोले नाहीं। ता पाछें नित्य दिन ५ - ७ लों आप श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, परंतु चतुर्भुजदास के मन में यह बात न आई। तब यह बात श्रीनाथजी ने सदूपांडे सों जताई, जो-तुम ढूंढि कै चतुर्भुजदास कौ धरेजो कराय देउ। तब सदूपांडे ने चतुर्भुजदास तें कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी ने यह आज्ञा करी है, तातें अवश्य श्रीप्रभुजी की आज्ञा करी चहिये। तब चतुर्भुजदास ने कही, जो-वे तो मेरे पाछें परे हैं, अब कहा करें? ता पाछें एक मुकदम की बेटी रांड हती, सो वासों सदूपांडे ने कहि कै चतुर्भुजदास कौ धरेजो करायो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास सों हसन लागे, जो-यह देखो कुंभनदासजी सरिखे कौ बेटा होय कै, स्त्री मरि गई तोऊ दोई च्यारि महिना हू न रह्यो गयो, सो तुरत ही धरेजो कियो, और

तोहू संतोष नाहीं। सो या भांति सों चतुर्भुजदास की हाँसी श्रीगोवर्द्धननाथजी सखा सहित नित्य करते। सो एक दिन चतुर्भुजदास ने हू यह सुनी, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-मोकों तो तुम नित्य ऐसे कहत हो, परंतु तुम हू तो घर घर ब्रजवधून के संग लागे रहत हो, (और) संग डोलत हो। यह सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी लज्या पाये। सो चतुर्भुजदास तें तो कछु बोले नाहीं, परि श्रीगोवर्द्धननाथजी (ने) श्रीगुसांईजी सों जाय कै कह्यो, जो-मोकों चतुर्भुजदास या भांति सों कहत है। तातें तुम वाकों बरजि दीजो, ज़ो-अब ऐसे कबहु न कहे। पाछें जब चतुर्भुजदास मंदिर में दरसन करन कों आये तब श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदास कों बुलाय कै कहे, जो-तू श्रीगोवर्द्धननाथजी सों ऐसे क्यों कह्यो ? तब चतुर्भुजदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की बात सब श्रीगुसांईजी के आगे कही, जो महाराज ! ये मेरी नित्य हाँसी करत हैं, जो-एक बार मैंने हू ऐसे कह्यो। तब श्रीगुसांईजी ने चतुर्भुजदास सों कह्यो, जो-आज पाछें ऐसे तुम मति कहियो। ता दिन तें श्रीगोवर्द्धननाथजी कहते, परि चतुर्भुजदास कछु न कहते। और श्रीनाथजी आप तो हाँसी करते। ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास की ऊपर करते। सो वे चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजी सों ऐसे सानुभावता सों बातें करते। तातें वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र

भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - १

और एक समय श्रीगुसांईजी आप परदेस पधारे। सो फागुन वद ७ कों श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मथुरा में श्रीगुसांईजी के घर पधारे हते। तब श्रीगिरिधरजी आदि सब बालक बहू-बेटीन ने सगरो घर, गहेना, वस्त्रादि सब श्रीगोवर्द्धननाथजी की भेंट करि दियो। तब एक बेटीजी ने सोने की मुंदरी छिपाय राखी हती। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिधरजी सों कहे, जो-मेरी भेंट फलानी बेटी के पास है, सो तुम लै आओ। तब गिरिधरजी ने आय कै कह्यो, जो-अपनो घर श्रीगोवर्द्धननाथजी की भेंट कर्‍यो है, तामें तें तुम कछु राख्यो है, सो देहु। तब उनने मुंदरी राखी हती सो दीनी। ता पाछें सब बहू बेटी बोहोत ही प्रसन्न भये, जो-हमारी सत्ता की वस्तु श्रीगोवर्द्धननाथजी ने अत्यंत प्रीति सों मांगि कै अंगीकार कीनी, सो अपनो बड़ो भाग्य है। सो जा समै श्रीगोवर्द्धननाथजी मथुरा पधारे, ता समै चतुर्भुजदास जमुनावता अपने घर हते। सो जान्यो नाहीं, जो-श्रीगोवर्द्धन-नाथजी आप मथुरा पधारे हैं। सो चतुर्भुजदास उत्थापन के समै श्रीनाथजी के मंदिर में आये। तब श्रीगिरिराज पर्वत के ऊपर श्रीनाथजी कों न देखे। तब सबन सों पूछे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कहां पधारे हैं ? तब पौरिया ने और सब सेवकन ने कह्यो, जो श्रीनाथजी तो मथुराजी पधारे

हैं। यह सुनि कै चतुर्भुजदास के मन में बोहोत विरह भयो। तब श्रीगिरिराज के ऊपर बैठि कै विरह के कीर्तन करन लागे। सो पद -

- राग गोरी -

बात हिलग की कासों कहिए।
सुनरी सखी बिबस्था या तन की समझ समझ मन चुप करि रहिए।
मरमी बिना मरम को जाने यह उपहास जानि जग सहिए।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधरन मिले जब तब ही सब सुख लहिए॥

- राग गोरी -

मोहन मोहनी पढ़ि मेली।
मुख देखत तनदसा भुलानी को घर जाय सहेली॥
काके तात भ्रात अरु माता को पति नेह नवेली।
काके लोक-लाज और कुल-डर को बन फिरत अकेली॥
याही ते कहति मूल मंत्र तोसों एक संग मिलि खेली।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर रस अटकी श्रुति मरजादा पेली॥

ऐसे ऐसे कीर्तन चतुर्भुजदास ने बोहोत किये।

ता पाछें नृसिंह चतुर्दशी को एक दिवस बाकी रह्यो, तब तेरस के दिन संध्या-आरती के समय चतुर्भुजदास गिरिराज पर्वत के ऊपर आये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी बिना मंदिर देख्यो न गयो। तब चतुर्भुजदास के मन में अत्यंत विरह भयो। तब यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने कियो। सो पद —

— राग गोरी —

श्रीगोवर्द्धनवासी सांवरे लाला, तुम बिनु रह्यो न जाय हो।
ब्रजराज लडेतें लाडिले ॥ध्रुव०॥
बंक चिते मुसिकाइ कै लाल, सुंदर बदन दिखाय।
लोचन तलफे मीन ज्यों लाल, पल छिनु कल्प बिहाय हो ॥ब्रज० १
सप्त सुरन बंधान तें लाल, मोहन बेनु बजाउ।

सुरत सुहाई बांधि कै नेक, मीठे मधुरे स्वर गाउ हो ।। ब्रज० २
रसिक रसिली बोलनी लाल, गिरि चढ़ि गैयां बुलाउ ।
गांग बुलाई धुमरी नेक, उंची टेर सुनाऊ हो ।। ब्रज० ३
दृष्टि परे जा दिवस तें लाल, तब तें रुचे नहीं आन ।
रजनी नींद न आवही, मोहि बिसर्‍यो भोजन पान हो ।। ब्रज० ४
दरसन कों नैनां तपे लाल, बचन सुनन कों कान ।
मिलिवेकों हियरा तपे, मेरे जिय के जीवन प्रान हो ।। ब्रज० ५
मन अभिलाखा यह रहे लाल, लागे न नयन निमेष ।
इक टक देखों आँवतो प्यारो, नागर नटवर भेष ।। ब्रज० ६
पूरन ससी मुख देखि कै लाल, चित्त चोट्यो वाही ओर ।
रूप सुधारस पान कै लाल, सागर कुमुद चकोर हो ।। ब्रज० ७
लोक लाज कुल वेद की लाल, छांड्यो सकल विवेक ।
कमल कली रवि ज्यों बढ़े लाल, छिनु छिनु प्रीति बिसेस ।। ब्रज० ८
मनमथ कोटिक वारने लाल, निरखि डगमगी चाल ।
जुवती जन मन फंदना लाल, अंबुज नैन विसाल ।। ब्रज० ९
यह रट लागि लाडिले लाल, जैसे चातक मोर ।
प्रेम नीर बरखा करो पिय, नवघन नंदकिसोर ।।ब्रज० १०
कुंज भवन क्रीडा करो लाल, सुखनिधि मदन गोपाल ।
हम श्रीवृंदावन मालती, तुम भोगी भँवर भूपाल ।। ब्रज० ११
जुग-जुग अविचल राजिए लाल, यह सुख शैल निवास ।
श्रीगोवर्द्धनधर रूप पर, बलिहारी ' चतुर्भुजदास' ।। ब्रज० १२

या भांति सों अत्यंत विरह के कीर्तन चतुर्भुजदास ने किये। सो प्रथम तो गायन के झुंडन के दर्शन चतुर्भुजदास कों भये। ता पाछें सखान के मध्य श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीबलदेवजी के दरसन भये। तब चतुर्भुजदास ने निकट जाय कै दंडवत् करि कै श्रीनाथजी सो बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप कृपा करि कै मोकों श्रीगोवर्द्धन पर्वत ऊपर दरसन कब देउगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास सों कहें, जो-मैं काल्हि श्री

गोवर्द्धन पर्वत ऊपर पधारूंगो । ऐसे चतुर्भुजदास कों धीरज दे कै श्रीनाथजी आप तो अंतर्धान भये । सो चतुर्भुजदास ने सगरी रात्रि विरह के पद गाये । ता पाछें प्रहर एक रात्रि गई। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने श्रीगिरिधरजी सों जताई, जो-काल्हि प्रात मोकों गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर पधरावो । जो-काल्हि श्रीगुसांईजी उहां पधारेंगे, तातें तुम अब ढील मति करो । पाछें श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगिरिधरजी सों कह्यो, जो-श्रीगुसांईजी दोय चार दिन में पधारिवे वारे हैं, सो अपने घर में श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ दरसन श्रीगुसांईजी करें तो आछो । तातें श्रीनाथजी कों चारि दिन और राखो । तब श्रीगिरिधरजी ने कह्यो, जो-तुम कहो सो तो सांच, परंतु श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा ऐसी है, तातें प्रातःकाल अवश्य श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रीगोवर्द्धन पर्वत ऊपर पधरावने । पाछें रात्रि कों सब तैयारी करि राखी । ता पाछैं रात्रि घड़ी ४ रही, तब श्रीनाथजी कों जगाय कै मंगल भोग समर्पे । पाछें मंगला आरती करि रथ पर श्रीगोवर्धननाथजी कों पधराय कै सब बालक, बहू-बेटी सब संग चले । और इहां चतुर्भुजदास गिरिराज पर्वत के ऊपर चढि कै बारंबार देखत हैं, जो-अब श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारेंगे। तब चतुर्भुजदास ने ता समय यह कीर्तन गायो -

- राग सारंग -

तब तें जुग समान पल जात ।
जा दिन तें देखे सखी मोहन मोतन मुरि मुसिकात ॥
दरसन देत ठगोरी मेली तब तें कछु न सुहात ।

बीतत घरी घरी क्रम-क्रम अब कर मीडत पछितात ॥
मन में गड़ी मदन मूरति वह मन अटक्यो सामल गात ।
'चतुर्भुज ' प्रभु गिरिधरन मिलन कों नैन बहोत अकुलात ॥

यह कीर्तन चतुर्भुजदास ने कह्यो । इतने में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन चतुर्भुजदास कों भये । ता पाछें श्रीगिरिधरजी आदि सब बालकन कों दंडवत् किये । पाछें श्रीगिरिधरजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ शृंगार कियो और राजभोग की तैयारी होन लागी । ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गुजरात के परदेस तें पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के उत्थापन भोग को समो हतो । तब श्रीगुसांईजी आय कै अपनी बैठक में पधारे, सो श्रीगिरिधरजी आदि सब बालक आय कै मिले। ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग की माला बोली । तब श्रीगुसांईजी ने श्रीगिरिधरजी सों पूछी, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के इहां राजभोग की इतनी अवार काहे कों है ? तब श्रीगिरिधरजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-आज श्रीगोवर्द्धननाथजी मध्याह्न समै मथुरा तें इहां पधारे हैं । तातें आज इतनी ढील भई है । तब श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-हम तो दादा तें कहे हुते, जो-दोय दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अपने घर और राखो, तातें श्रीगुसांईजी आपु अपने घर में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करें तो आछो। परि दादा ने न मानी, सो आज ही श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पधराये हैं । तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी के ऊपर बोहोत

प्रसन्न भये। और श्रीगिरिधरजी सों कहे, जो-तुमने मेरे मन कौ अभिप्राय जान्यो, जो-मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी कों श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर न देखतो तो मोसों रह्यो न जातो। ता पाछें श्रीगुसांईजी तुरत ही स्नान करि कै श्रीनाथजी के मंदिर में पधारे, सो नृसिंह जयंती कौ उत्सव कियो। ता दिन तें प्रति वर्ष नृसिंह जंयती के दिन सेन आरती के समय श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग आवे, फेरि माला बोले, जो-यह रीत भई। सो चतुर्भुजदास कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि कै बड़ो आनंद भयो। ता पाछें अनोसर करि कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठक में पधारे। तब चतुर्भुजदास नें श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि कै सब समाचार कहे, जो-या भांति सों श्रीगोवर्द्धननाथजी मथुरा पधारे। ता पाछें आज यहां श्रीगोवर्द्धन पर्वत पै पधारे हैं। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहे, जो-श्री गोवर्द्धननाथजी परम दयाल हैं। अपने जनकी आरति सहि सकत नाहीं हैं।पाछें आप श्रीगुसांईजी पोढिरहे। सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - १०

और एक समय श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगुसांईजी सों पूछ्यो, जो-आप आज्ञा करो तो एक बार चतुर्भुजदास कों श्रीगोकुल लै जाउं। तब श्रीगुसांईजी कहैं, जो-चतुर्भुजदास आवे तो ले जाऊ। ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदास सों

कह्यो, जो-पेंठ्यो गाम है (तहां) हम कों कछु काम है, सो तुम हमारे संग चलो। तब चतुर्भुजदास श्रीगोकुलनाथजी के साथ चले। जब पेंठ्यो गाम में श्रीगोकुलनाथजी आये तब चतुर्भुजदास सों यों कह्यो, जो-हम कों श्रीगोकुल जानो है, जो-हमारे संग खवास कोऊ नाहीं है, तातें तुम हमारे संग श्रीगोकुल तांई चलो। तहां श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करि के तुम कों फेरि हम यहां लै आवेंगे। तब श्रीगोकुलनाथजी घोड़ा ऊपर असवार होय कै पधारे। तब चतुर्भुजदास हू संग चलै। पाछें श्रीगुसांईजी यह सुनि कै श्रीगिरिधरजी कों श्रीनाथजी के पास राखि कै आप हू घोड़ा ऊपर असवार होय कै श्रीगोकुल पधारे। सो उत्थापन कौ समय हतो। सो श्रीगुसांईजी स्नान करि कै श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाये। ता पाछें संध्यार्ति के समय श्रीगोकुलंनाथजी ने और चतुर्भुजदास नें सुन्यो, जो-श्रीगुसांईजी आप यहां पधारे हैं। तब श्री गोकुलनाथजी और चतुर्भुजदास बोहोत प्रसन्न भये। सो तत्काल श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में आये। तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे, और चतुर्भुजदास कों बुलाय कै श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करवाये। सो दरसन करि कै ता समै चतुर्भुजदास ने गायो। सो पद -

- राग बिलावल -

महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम।
प्रेम मुदित गोपी जस गावति ले ले स्याम सुंदर कौ नाम॥

जहां तहां लीला अवगाहत खरिक खोर दधि मथंन धाम ।
परम कौतुहल निस और बासर आनंद ही में बीतत जाम ॥
नंद गोप सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम ।
' चतुर्भुज प्रभु ' गिरिधर आनंद निधि नखसिखरूप सुभग अभिराम ॥

- राग रामकली -

अंगुरी छांडि रेंगत अरग थरग । नू पुर बाजत त्यों त्यों धरनी धरत पग ॥१॥
कबहू वसुधा मांहि भुजा पसारि हंसि डगमगाय कै उलटि भरत डग ।
जननी मुदित मन चिते सिसुतन कंठ लाय सुंदर स्याम सुभग ॥२॥
मृदु बानी तुतरात माँगि नवनीत खात भोजन जनावत जैसें बाल खग ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर के बाल विनोद नंद आनंद देखें ठाढ़े टग टग ॥३॥

या भांति सों लीला सहित चतुर्भुजदास ने और हू कीर्तन गाये । सो सुनि कै श्रीगुसांईजी ने चतुर्भुजदास तें कह्यो, जो-चतुर्भुजदास ! तोकों चहिये सो मांगि । तब चतुर्भुजदास ने श्रीगुसांईजी सों हाथ जोरि कै बिनती कीनी, जो-महाराज ! आप तो अंतरगत की जानत हो, तातें आप मोकों कृपा करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कराओ । तब श्रीगुसांईजी ने चतुर्भुजदास सों कह्यो, जो-काल्हि श्रीनवनीतप्रियजी कौ शृंगार करि कै, पालना झुलाय कै हम हू चलेंगे, तब तुम हू संग चलियो । तब तो चतुर्भुजदास मन में बोहोत प्रसन्न भये । ता पाछें रात्रि कों तो चतुर्भुजदास सोय रहे । पाछें प्रातःकाल होत ही चतुर्भुजदास ने आय कै श्रीगुसांईजी कों दंडवत् किये। ता समै मंगला के दरसन भये, तहां चतुर्भुजदास ने यह पद गायो । सो पद -

- राग बिलावल -

हों वारी नवनीतप्रिया ।
नित उठि देन उराहने आवत चोरी लगावत घोखतिया ॥
तुम बलिराम संग मिलि कै इन आंगन खेलो दोऊ भैया ।
निरखि निरखि नैनन सचु पाउं प्रान जीवन धन सांवलिया ॥
जो भावे सो लेउ मेरे मोहन मधु मेवा दधि दूध घैया ।
'चतुर्भुज प्रभु ' गिरिधर काके घर तुम हू ते कछू बोहोत श्रिया ॥

- राग देवगंधार -

दिन दिन देन उराहनो आवें ।
यह ग्वालिनि जोबन मदमाती झूंठे हि दोष लगावें ॥१॥
कहां धों बासन धरे पराए कहां मेरो मोहन पावें ।
लरिका अति सुकुमार गहें कर हलधर संग खिलावें ॥२॥
कबहूक कहति कंचुकी फारी कबहूक ओर बतावें ।
कबहूक रई मथनियाँ ले कै आँगन हाथ नचावें ॥३॥
मन लाग्यो कान्ह कमल दल लोचन उत्तर बोहोत बनावें ।
'चतुर्भुज प्रभु ' गिरिधर याही मिस छिन छिन देख्यो भावें ॥४॥

ऐसे ऐसे कीर्तन चतुर्भुजदास ने तहाँ गाये ।

पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों भोग सराय कै शृंगार करि कै पालने झुलाये । ता समय चतुर्भुजदास ने यह पालना कौ पद गायो -

- राग रामकली -

अपने री बाल गोपाले हो, रानी जू पालने झुलावे ।
वारंवार निहारि कमल मुख प्रमुदित मंगल गावे ॥१॥
लटकन भाल भ्रकुटी मसि बिंदुका कठुला कंठ बनावे ।
सद माखन मधु सानि अधिक रुचि अंगुरिन करि कै चटावे ॥२॥
कबहूक सुरंग खिलौना ले ले नानाभांति खिलावे ।
देखि देखि मुसिकाय सांवरो द्वे दतियां दरसावे ॥३॥
सायर कुमुद चकोर चंद ज्यों रूपसुधा रस प्यावें ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधरन चंद कों हँसि हँसि कंठ लगावे ॥४॥

- राग रामकली -

झुलो पालने गोविंद ।
दधि मथों नवनीत काढों तुमकों आनंद कंद ॥१॥
कंठ कठुला ललित लटकन भ्रकुटि मन के फंद ।
निरखि छबि छिनु छिनु झुलाऊं गाऊं लीला छंद ॥२॥
दूध की दतियां सुख की निधियाँ हसत जब कछु मंद ।
'चतुर्भुज प्रभु' जननी जु बलि गिरिधरन गोकुलचंद ॥३॥

यह पालना चतुर्भुजदास ने गाये, सो सुनि कै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये । ता पाछें श्रीगुसांईजी घोड़ा मंगाय, ता ऊपर सवार होय कै चतुर्भुजदास कों संग लै कै गिरिराज पधारे। उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग कौ समय हतो । सो श्रीगुसांईजी आप तत्काल स्नान करि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग समर्प्यो । पाछें समो भयो भोग सरायो । जब दरसन के किंवाड़ खुले, तब चतुर्भुजदास सों कुंभनदास ने कही, जो-कछु कीर्तन गाऊ । तब चतुर्भुजदास ने यह कीर्तन गायो । सो पद -

- राग सारंग -

तब तें और कछू न सुहाय ।
सुंदर स्याम जबहि तें देखे खिरक दुहावत गाय ॥१॥
आवत हुती चली मारग में सखी हौं अपने सत भाय ।
मदनगोपाल देखि कै एकटक रही ठगी मुरझाय ॥२॥
बिसरी लोक लाज गृह कुल ब्रत बंधु पिता और माय ।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिवरधर तनमन लियो है चुराय ॥३॥

यह सुनि कै श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदास के साम्हे देखि कै मुसिक्याये । तब चतुर्भुजदास ने दंडवत् करि कै कह्यो, जो आज मेरो धन्य भाग्य है, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के दर्शन

भये। पाछें इतने में टेरा आयो। तब चतुर्भुजदास दंडवत् करि कै बाहिर आये। तब कुंभनदास चतुर्भुजदास तें पूछे, जो-चतुर्भुजदास ! तू कहाँ गयो हतो ? तब चतुर्भुजदास ने कुंभनदास सों कह्यो, जो-श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल लिवाय गये हते। सो अब हि श्रीगुसांईजी के संग आयो हूँ ! तब चतुर्भुजदास तें कुंभनदासजी नें कह्यो, जो-तू प्रमान में जाय पर्‍यो। तब यह बात कुंभनदास के मुख ते सुनि कै श्रीगुसांईजी आप मंदिर में हँसे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करि कै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठक में पधारे। तब चतुर्भुजदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! कुंभनदासजी ने मोतें कह्यो, जो-तू कहाँ गयो हतो ? तब मैं कह्यो, जो-श्रीगोकुलनाथजी के संग श्रीगोकुल गयो हतो। तब उन मोतें कह्यो, जो-तू प्रमान में जाय पर्‍यो। सो श्रीगोकुल कों प्रमान क्यों गिने ? तब श्रीगुसांईजी आपु चतुर्भुजदास सों कहे, जो-कुंभनदास कौ मन श्रीगोवर्द्धननाथजी में लाग्यो है, जो-एक क्षण हू न्यारे नाहीं होत हैं। तातें ए और लीला कों प्रमान जानत हैं, और हैं तो दोऊ लीला एक ही। ता दिन तैं चतुर्भुजदास श्रीगिरिराजजी की तरहटी छांड़ि कै कहूं न जाते। ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो भोजन करि कै विसराम किये। तब चतुर्भुजदास दंडवत् करि कै अपने घर आये। श्रीगोवर्द्धननाथजी हू चतुर्भुजदास पै परम कृपा करते। सो ये

चतुर्भुजदास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता प्रसंग - ११

और कितेक दिन पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगिरिराज की कंदरा में होय कै, लीला में पधारे, तब श्रीगिरिधरजी कों अपनो उपरेना दिये। और यह कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा में रहियो। जामें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न रहे सोई कीजो, और सब बालकन कौ समाधान राखियो। श्रीनाथजी के सेवक, और जो-वैष्णव हैं इन सबन कौ समाधान राखियो। और ये जो मेरे अंग कौ उपरेना है, ताकों सब लौकिक संस्कार करियो। काहेतें, जो-संस्कार न करोगे, तो फिरि कोई कर्म-संस्कार न करेगो। तातें तुम अवश्य करियो, और काहू बात की चिंता मति करियो। सब वस्तु के कर्ता श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। ऐसे श्रीगिरिधरजी कौ समाधान करि कै श्रीगुसांईजी आप तो गिरिराज की कंदरा में होय कै लीला में पधारे। ता पाछें श्रीगिरिधरजी आदि दे सब बालकन सहित, सब सेवकन सहित, महाविरह करि कै महाव्याकुल भये। सो ता समय कौ विरह कछु कहिवे में न आवे। पाछें फेर धीरज धरि कै श्रीगुसांईजी ने जा उपरेना की जैसे आज्ञा कीनी हती, तैसेई श्रीगिरिधरजी ने वा उपरेना कों अग्निसंस्कार कियो। पाछें वेदोक्तविधि सों सब कर्म दस गात्र विधान कियो, और हू लौकिक विधि सों सब करि सुद्ध होये। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में सावधान भये। सो जा समय

श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा में होय कै लीला में पधारे, ता समै चतुर्भुजदास जमुनावता गाम में अपने घर में हुते। सो सुनि कै चतुर्भुजदास दौरे ही आये, सो आय कै महाव्याकुल होय कंदरा के आगे गिरि परे, और महाविलाप करन लागे। जो-महाराज ! पधारत समै मोकों आप के दरसन हू न भये। और मैं आप बिना पृथ्वी ऊपर कौनकों देखूंगो ? तातें अब या पृथ्वी ऊपर मोकों मति राखो। मोहू कों आप के चरनारविंद कै पास निकट ही राखो, मोहूं कों बुलाय लीजे। ऐसे महाबिरह संयुक्तहोय कै चतुर्भुजदास ने तहां यह कीर्तन गायो। सो पद —

— राग केदारो —

फिर ब्रज बसहू श्रीविट्ठलेस।
कृपा करि कै दरस दिखावहु वह लीला वह वेस॥
संग गाय अरु ग्वाल लै गोकुल गाँव करहु प्रवेस।
नंदराय ज्यों बिलसी संपति बहु उदार नरेस॥
भक्ति- मारग प्रकट करि कलिजन देहु उपदेस।
रचो रास विलास वह सब गिरि गोवरधन देस॥
वदन इंदु तें विमुख नैन चकोर तपत विसेस।
सुधापान कराई मेटहु विरह कौ लवलेस॥
श्रीवल्लभनंदन, दुःख निकंदन, सुनहु चित्त संदेस।
'चतुर्भुज' प्रभु घोखकुल के हरहु सकल कलेस॥

जो ऐसे विरह के कीर्तन चतुर्भुजदास ने बहुत किये। तब श्रीगुसांईजी ने चतुर्भुजदास की बोहोत आरति जानि कै महा-आनंद स्वरूप (सों) चतुर्भुजदास के हृदय में आय कै आपु दरसन दिये। और कहे, जो-चतुर्भुजदास ! तू इतनो विरह

काहे कों करत है ? मैं तो सदा, तेरे पास ही हूं। तातें तू अब इतनो खेद मन में मति करे। और अब तो मेरो दरसन तू श्रीगोवर्द्धननाथजी के निकट ही कस्यो करि। जहां श्रीगोवर्द्धननाथजी है (वहां) सदैव मोहू कों तिनके पास जान्यो करि, तहां ही मैं रहत हों। ऐसे चतुर्भुजदास कौ समाधान करि के श्रीगुसांईजी तो आप अन्तर्धान भये। पाछें चतुर्भुजदास ताही स्वरूपानंद में मगन होय कै तहां यह कीर्तन गाये। सो पद -

- राग केदारो -

श्रीविट्ठल प्रभु भये न ह्वै हैं।
पाछें सुनै न आगे देखै यह छबि फेर न बनि हैं ॥१॥
मनुष देह धरि भक्त हेत कलिकाल जनम को लै हैं।
को फिरि नंदराय कौ वैभव ब्रजबासिन बिलसै हैं ॥२॥
को कृतज्ञ करुणा सेवक तन कृपा सुदृष्टि चितै हैं।
ग्वाल गाय सब संग ले कै को फिरि गोकुल गाम वसै हैं ॥३॥
धर्मखंभ होय ज्ञान कर्म, को जगत भक्तिप्रगटै हैं।
को करकमल सीस धरि कै अधमनि वैकुण्ठ पठैं हैं ॥४॥
रासविलास महोच्छव करि को राग भोग सुख दैहैं।
को सादर गिरिराजधरन की सेवा सार दृढै हैं ॥५॥
भूषन बसन गोपाललाल के को सिंगार सिखै हैं।
को आरति वारत श्रीमुख पर आनंद प्रेम बढै हैं ॥६॥
मथुरा-मंडल खग मृग की को महिमा कहि बरनै हैं।
को वृंदावनचंद गोविंद कौ प्रगट स्वरूप दिखै हैं ॥७॥
का कौ बहोरि प्रताप जु ऐसो प्रकट पुहुमि में छै हैं।
का के गुन कीरत लीला जसु सकल लोक चलि जै हैं ॥८॥
श्रीवल्लभसुत दरसन कारन अब सब कोउ पछितै हैं।
'चतुर्भुजदास' आस इतनी जो यह सुमिरित जन्म सिरै हैं ॥९॥

ऐसे ऐसे बोहोत कीर्तन चतुर्भुजदास ने करि कै श्रीगुसांईजी के चरणारविंद में मन राखि, अपनी देह छोड़ि कै आप हू लीला में जाय प्राप्त भये। सो चतुर्भुजदास की यह लीला देखि कै और जो वैष्णव हते तिन कै (और) सेवकन के मन में बोहोत दुःख भयो। ता पाछें चतुर्भुजदास के एक बेटा हतो राघौदास सो आयो, और वैष्णव सब आये। तिन सबन ने मिलि कै चतुर्भुजदास कौ अग्निसंस्कार कियो। और क्रिया कर्म दसगात्र करि सुद्ध होये।

सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए।

वार्ता ॥२५०॥

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक माधवदास दलाल, खंभाइच के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - लीला में इनकौ नाम ‘ कोकिलकंठी ’ हैं, सो ऊपर कहि आए हैं। ये ‘ललिताजी’ तें प्रगटी हैं। तातें उनके सात्विक भाव रूप है।

सो माधवदास खंभाइच में एक बनिया के प्रगटे। सो माधवदास कौ पिता दलाली करतो। सो माधवदास हू बड़े भए तब दलाली करन लागे। सो माधवदास कों सहजपाल दोसी, और जीवा पारख कौ संग भयो। सो ये तीनों गाढ़े मित्र हे। सो ये तीनों चाचा हरिवंशजी के संग तें श्रीगुसांईजी की सरनि आये हैं।

वार्ता प्रसंग - १

सो माधवदास पर चाचा हरिवंसजी की कृपा भई है। सो इनकी बानी अचल भई। सो श्रीगुसांईजी माधवदास की बानी सुने पाछें श्रीगोकुल बास किये।

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे। तब इन तीनों जनेंन आपुस में बिचार किये, जो-श्रीगुसांईजी कों खंभाइच अवश्य पधरावने। तब ये तीनों जनें राजनगर आए। सो श्रीगुसांईजी सों बिनती करि राजनगर तें खंभाइच पधराए। पाछें तीनों श्रीठाकुरजी की सेवा पधराए। सो प्रीतिपूर्वक सेवा करते। सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप भोजन करि प्रसन्नता में गादी-तकियान पै बिराजे हते तब सहजपाल दोषी और माधवदास ने बिनती कीनी, जो-महाराज! हम व्यौपार में झूंठ बोले हैं। सो दोष लगे के नाहीं ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-'नानृतात्पातकं परमिति' झूंठ सों बढकर और कोई पाप नाहीं। तब माधवदास ने बिनती करी, जो-महाराज! आज पाछें मैं झूंठ सर्वथा न बोलुंगो। और ग्राहक कों आछी रीति सों माल दिवाउंगो। पाछें सहजपाल दोषी ने कही, जो-मैं एक आना नफा लउंगो, कहि कै। जाकों लेनो होइ सो ले। या प्रकार वे तीनों सत्य बोलते। सो श्रीठाकुरजी आप बहुत प्रसन्न रहते। और तीनों मिलि कै श्रीठाकुरजी के गुणानुवाद गाते, सो गदगद होइ जाते।

सो एक दिन माधवदास दलाल सों जीवा पारख ने पूछी, जो-अन्याश्रय काहेतें कहे ? तब जीवापारख तें माधवदास ने कही, जो-श्रीकृष्ण बिना और काहू कौ भजन करे सो अन्याश्रय। तातें अंशअवतारन कौ हू भजन कर्तव्य नाहीं।

करें तो निश्चै अन्याश्रय होई। और सर्वत्र ब्यापक मानि कै जो दूसरे देव की पूजा करे तोहू बाधक है। पतिव्रता धर्म की हानि होई। तातें एक पूर्ण पुरुषोत्तम ही की सेवा करे। पाछें सहजपाल दोषी ने पूछी, जो-श्रीठाकुरजी ने सात दिन तांई श्रीगिरिराजजी धारन किये, ताकौ कारन कहा ? तब माधवदास कहे, जो-श्रीनंदरायजी, प्रभृति सब ब्रजवासीन में सात प्रकार के अन्याश्रय हते, सो गिरिराज पूजन आदि करि कै सात प्रकार कौ अन्याश्रय मिटायो। सो सात प्रकार के अन्याश्रय कहत हैं। १ देवऋृण, २ ऋृषिऋृण, ३ पितृऋृण, ४ देह के बल कौ अभिमान, ५ कुटुंबीन कौ अभिमान, ६ लोकनिंदा तें कियो अहंकार-कार्य, ७ तीनों ऋृण तें मेरो परलोक बिगरेगो। या प्रकार के अन्याश्रय कौ आप निवारन किये। पाछें निःसाधन करि भगवदाश्रय दृढ कराए। यह सुनि कै सहजपाल दोषी बोहोत प्रसन्न भए।

पाछें माधवदास श्रीगोकुल आए। सो श्रीगोकुल कौ वैभव देखि माधवदास कौ मन श्रीगोकुल में लगि गयो। तब इन ने बिचार कियो, जो-अब तो श्रीगोकुल छोरि कै कहूं न जानो। सो श्रीगुसांईजी पास आय माधवदास बिनती किये, जो-महाराज ! आप की कृपा तें श्रीगोकुलबास पायो है। सो अब ऐसी कृपा कीजिये जो श्रीगोकुल न छूटे। तब श्रीगुसांईजी कहे, तथास्तु। ऐसेंई होईगो। पाछें माधवदास ने श्रीगुसांईजी

के सन्निधान श्रीगोकुल के नये पद करि कै गाए। सो पद -

- राग रामकली -

श्रीगोकुल अति सुख बास बसीजे।
दिन दिन को मज्जन अघ गंजन अति पुनीत जमुना जल पीजे।
श्रीविट्ठल सह कुटुंब बिराजत छिनु छिनु नैनन दरसन कीजे।
'माधोदास' श्रीवल्लभ सुत पर सर्वसु नित न्योछावर कीजे।

- राग रामकली -

सुखनिधि श्रीगोकुल कौ बसिवो।
छिन छिन वारंवार सखी री श्रीवल्लभ सुत सदन बिलसिवो।
गृह-गृह कुंज कुंज नाना विधि पिया संग केलि परस्पर हसिवो॥
श्रीजमुना-कुल महा गज सों मिलि भावे अंग-अंग को परसिवो।
ऐसी सरस कसोटी ऊपर सुंदर सुभग कनक तन कसिवो।
दंपति रूप-रासि तन सींवा 'माधोदास' यही रंग रसिवो।

- राग रामकली -

गोकुल गाम कौ पेंडोई न्यारो।
मगंल रूप सदा सुखदायक देखियत तीन लोक उजियारो।
श्रीवल्लभसुत निर्भय बिराजत भृत्य जनन के प्रानन प्यारो।
'माधवदास' बलि बलि प्रताप बलि श्रीविट्ठल सर्वस्व हमारो।

सो माधवदास ऐसे बोहोत पद गाए। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तोकों श्रीगोकुल कौ स्वरूप स्फुर्द भयो। ता पाछें माधोदास को आप श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान कीर्तन गाइवे की आज्ञा कीनी। सो माधोदास श्रीनवनीतप्रियजी के सन्निधान नए पद करि गावते। पाछें श्रीगुसांईजी माधवदास कों संग लेकै श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन माधवदास ने किये। तब श्रीगुसांईजी माधवदास कों कहे, जो-माधवदास ! श्रीगोवर्द्धननाथजी को कछु कीर्तन सुनावो। तब माधवदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पद सुनाए।

सो श्रीगोवर्द्धननाथजी पद सुनि कै बोहोत प्रसन्न भये । सो माधवदास ने श्रीठाकुरजी के, श्रीआचार्यजी के, श्रीगुसांईजी के, सात बालकन के और श्रीगोकुल के बोहोत पद किये हैं ।

भावप्रकाश - या वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-भगवदीय कौ संग ऐसो फलदायी है, जो-चाचाजी के रंच संग तें माधोदास पर या प्रकार कृपा भई । तातें भगवदीय कौ संग सर्वथा करनो ।

सो माधवदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये । सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ।वार्ता ।।२५१।।

★ ★ ★

अब श्रीगुसांईजी के सेवक रामराय हितभगवानदास आगरा के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश - ये रामराय श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी है । लीला में इनकौ नाम 'मुक्तेश्वरी' है । और 'मुक्तेश्वरी' की एक सखी और है । ताकौ नाम 'वरदेश्वरी'। सो इहां भगवानदास भए । ये दोऊ ललिताजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके राजस भावरूप हैं ।

वार्ता प्रसंग - १

सो भगवानदास आगरा में सुबा की दीवानगिरि करते । सो पहले ये गोविंददेव के सेवक हुते । सो कछुक दिन वृंदावन में आय कै रहते । गोविंददेव की सेवा करते । सो भगवानदास रामराय सारस्वत ब्राह्मन के यजमान हते । सो रामरायजी श्रीगुसांईजी के सेवक हते । सो एक समै रामरायजी वृंदावन में भगवानदास के ऊहां आये । तब रामरायजी ने श्रीगुसांईजी कौ एक पद करि कै गायो, सो पद —

— राग सारंग —

जयति वल्लभसुवन श्रुति उद्धार, फेरि नंद के भवन की केलि ठानी ।
इष्ट गिरिवरधरन सदा सेवत चरन, द्वार चारों बरन, भरत पानी ।।

वेद-पथ व्यास से हनुमान दास से ज्ञान कों कपिल से कर्मयोगी ।
साधु लच्छमन निपुन, मनहु ब्रजराज सुत, प्रगट सुखरास मानो ईंद्रभोगी ॥
सिंधुसम गंभीर, विमल मन अति धीर, प्रीति कों जल-क्षीर, ब्रज उपासी ।
ध्यान कों सनकसे, भक्तिकों फनिगसे, याही तें सद्य किये ब्रज में बासी ॥
मनहु इंद्रिय जीति, कृष्ण सों करी प्रीति, निगम की चली नीति अति विसेसी ।
रहित अभिमान तें,बड़े सन्मान तें, सील और दाम गोविंद टेकी ॥
सदा निर्मल बुद्धि, अष्ट सिद्धि नवनिधि, द्वार सेवत तहां मुक्तिदासी ।
'रामराय' गिरिधरन जानि आयो सरनि, दीन के दुःख हरन घोखबासी ॥

सो यह पद रामरायजी ने गायो । सो ता समय भगवानदास उहां ठाढ़े हते । सो पद सुनि कै चक्रत व्है रहे । पाछें रामरायजी सों कहे, जो-कृपा करि मोकों उनकौ सेवक कराओ । तब रामरायजी कहे, तुम तो गोविंददेवजी के सेवक हो । तब भगवानदास ने कही, इन में और गोविंददेव में कहा भेद है ? गोविंददेवजी की कृपा तें तुम मिले हो । और अब तुम्हारी कृपा तें श्रीगुसांईजी मिलेंगे । तातें अब तुम मोकों बेगि ही श्रीगुसांईजी कौ सेवक कराउ तो भलो है । तब रामरायजी भगवानदास कों संग ले गोपालपुर में आये । सो श्रीगुसांईजी के दरसन किये । सो जैसे रामरायजी ने पद गायो हतो, तैसे ही दरसन भगवानदास कों श्रीगुसांईजी के भये । सो भगवानदास तो दरसन करि कै थकित होंई रहे । पाछें श्रीगुसांईजी सों रामराय ने बिनती करी,जो-महाराज ! भगवानदास कों सरनि लीजिए । सो वा दिन जन्माष्टमी हती । सो भगवानदास कों श्रीगुसांईजी आपु राजभोग के समै नाम-निवेदन कराए । सो उनकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख

निवेदन भयो। सो निवेदन होत मात्र ही भगवानदास कों भगवद्लीला स्फुर्द भई। सो जन्माष्टमी की लीला में मगन होइ गए। तब भगवानदास ने एक पद नयो करि कै गायो, सो पद-

— राग बिहाग —

श्रवन सुनि सजनी! बाजे मंदिलरा आज निस लागत परम सुहाई।
अति आवेस होत तन मन में श्रीगोकुल बजत बधाई ॥१॥
दे दे कान सुनत अरु फूलत रावल के नरनारी।
नंदरानी ढोटा जायो है होत कुलाहल भारी ॥२॥
अति ऊँचे चढि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल।
गैया बगदावो रे भैया भयौ नंद के लाल ॥३॥
आनंद भरि अकुलाय चली सब सहज सुंदरी गोपी।
प्रादुर्भाव जसोदा सुत कौ तामें तन मन ओपी ॥४॥
चंचल साजि शृंगार चंदमुखी, चंचल कुंडल हारा।
हाथन कंचन थार बिराजत, पद नूपुर झनकारा ॥५॥
बरखत कच कुसुमन शोभित गली दरस चोंप जिय भाई।
गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई ॥६॥
धन्य दिवस धन्य राति आज की धन्य धन्य यह सब गोरी।
स्यामसुंदर चंदे निरखत मानों अँखियां तृषित चकोरी ॥७॥
सोभा युत आई कीरति अपने गृह मानि बधाये।
याचक जन घन घन ज्यों बरखत भान गोप तहां आये ॥८॥
आय जुरे सब गोप ओप सों भयो जो मन कौ भायो।
पंचामृत सीसन तें ढारत नाचत नंद नचायो ॥९॥
नाचत ग्वाल बाल रस भीने हरद दहीं भरि राजे।
इत निसान उत भेरि दुंदुभी हरखि परस्पर बाजे ॥१०॥
खग मृग द्रुम दिस दिस भवनन में देखियत है सरसाने।
प्रानन के आये इंद्रिय ज्यों यों ब्रजजन हुलसाने ॥११॥

ध्वजा वंदन मालालंकृत नंदभवन में सोहे ।
व्योम विमानन भीर भई लखि अमरन कौ मन मोहे ॥१२॥
महाराज ब्रजराज नंद पे जो मांग्यो सो पायो ।
जाके ऐसो पूत भयो ताकौ न्याय जगत यस छायो ॥१३॥
जिनकौ सुख सुमिरत ब्रह्मादिक यों हुलसे ब्रजगेही ।
'कहि भगवान हित रामराय' प्रभु प्रगटे प्रान-सनेही ॥१४॥

सो भगवानदास कों समय की सुधि रही नाहीं । तब श्रीगुसांईजी भगवानदास की ओर देखि कहे, जो-भगवानदास! यह कौन समय है ? तब भगवानदास सावधान भए । पाछें सारंग में और हू बधाई गाई । सो ता दिन तें भगवानदास जो पद गावते, तामें 'कहि भगवान हित रामराय' या प्रकार छाप धरते ।

सो भगवानदास ने रामरायजी की कृपा मुख्य मानी । सो उन ने हजारन पद किये परि सब में रामरायजी कौ नाम संग धरे हैं ।

वार्ता प्रसंग - २

पाछें भगवानदास वृंदावन आये । तब यह बात गोविंददेवजी के अधिकारी ने सुनी । जो-भगवानदास श्रीगुसांईजी के सेवक भए हैं । तब वाने भगवानदास कों गोविंददेवजी के दरसन कों न आयवे दिए । तब गोविंददेवजी के शयन-भोग धर्यो तब गोविंददेवजी ने आज्ञा करी, जो-भगवानदास भोग धरेगो तब ही आरोगूंगो । यह सुनि कै अधिकारी भगवानदास के घर आई भगवानदास के पाँवन पर्यो । फेरि बिनती करि कै ले आयो, मंदिर में । तब

भगवानदास ने गोविंददेवजी कों भोग धर्यो और कह्यो जो-महाराज ! भोग आरोगो । तब आरोगे । सो भगवानदास श्रीगुसांईजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता ॥२५२॥

★ ★ ★

तृतीय खण्ड समाप्त

★ ★ ★